"*SANJEEV KE UPANYASON MEIN LOK JEEVAN*"

A thesis submitted during 2010 to the University of Hyderabad in partial fulfillment of the award of a Ph.D. degree in Department of Hindi School of Humanities.

By

GAJULA RAJU

Department of Hindi
School of Humanities

University of Hyderabad
(P.o) Central University, Gachibowli
Hyderabad-500 046
Andhra Pradesh
INDIA.

DECLARATION

I **GAJULA RAJU** hereby declare that this thesis entitled ***"SANJEEV KE UPANYASON MEIN LOK JEEVAN "*** submitted by me under the guidance and supervision of **Dr. M. Shyamrao** is a bonafide research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Date : Name : **GAJULA RAJU**

Signature of the Student

Regd.No. **05HHPH07**

<u>CERTIFICATE</u>

This is to certify that the thesis entitled ***" SANJEEV KE UPANYASON MEIN LOK JEEVAN"*** submitted by **GAJULA RAJU** bearing Reg. No.**05HHPH07** in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in **Hindi** is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance.

The thesis has not been submitted periously in part or in full to this or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Signature of the Supervisor

// Countersigned //

Head of the Department

Dean of the School

अनुक्रमणिका

<u>अनुक्रमणिका</u>

सं ीव के उपन्यासों में लोक- ीवन

पृ.सं.

भूमिका **I-IV**

प्रथम अध्याय **1-29**

लोक ीवन : सिद्धांत निरूपण

1.0 विषय प्रवेश

1.1 लोक का स्वरूप

1.2 लोक की परिभाषा

1.3 वेद बनाम लोक

1.4 शास्त्र बनाम लोक

1.5 लोक- ीवन का अर्थ एवं परिभाषा

1.6 लोक ीवन बनाम अभि ात्य

1.7 लोक ीवन बनाम न ाति ीवन

1.8 लोक ीवन बनाम आं लिकता

1.9 लोक ीवन बनाम भूमंडलीकरण

1.10 लोक ीवन बनाम आधुनिकता

द्वितीय अध्याय **30-47**

सं ीव : व्यक्तित्व और कृतित्व

2.0 विषय प्रवेश

2.1 न्म

2.2 माता-पिता

2.3 ब पन

2.4 शिक्षा

2.5 पारिवारिक ीवन

2.6 वैवाहिक ीवन

2.7 व्यवसाय

2.8 र नाकार सं ीव

2.9 पुरस्कार एवं सम्मान

तृतीय अध्याय **48-154**

सं ीव के उपन्यास : लोक ीवन के विविध आयाम

3.1 सामा िक आयाम

3.2 सांस्कृतिक आयाम

3.3 धार्मिक आयाम

3.4 आर्थिक आयाम

3.5 रा नीतिक आयाम

3.6 प्रशासनिक आयाम

3.7 शैक्षणिक आयाम

ातुर्थ अध्याय **155-199**

सं ीव के उपन्यासों में शिल्प-विधान

4.0 विषय प्रवेश

4.1 कथानक या कथावस्तु

4.2 पात्र-यो ना एवं ारित्र- ित्रण

4.3 संवाद-यो ना

4.4 देशकाल एवं वातावरण

4.5 शैली

4.5.1 आत्मकथात्मक शैली

4.5.2 वर्णनात्मक शैली

4.5.3 संवादात्मक शैली

4.5.4 पत्रात्मक शैली

4.5.5 पूर्वदीप्ति शैली

4.5.6 डायरी शैली

4.5.7 भाषण शैली

4.5.8 व्यंग्यात्मक शैली

4.5.9 फंतासी (फैंटेसी) शैली

4.6 भाषा

4.6.1 भो ापुरी का प्रयोग

4.6.2 बांगला का प्रयोग

4.6.3 अवधी का प्रयोग

4.6.4 आदिवासी बोलियाँ

4.6.5 बोल ाल की भाषा

4.6.6 विभिन्न भाषागत शब्द

4.7 उद्देश्य

उपसंहार **200-206**

संदर्भ ग्रंथ सू ी **207-212**

भूमिका

भूमिका

कथाकार का संबंध सीधे ीवन से है और आलो क का उनके साहित्य से होता है। कथाकार की सृष्टि आलो ना का आधार है और कथाकार की सृष्टि का आधार है-समा , न ीवन। उपन्यासकार की सामग्री उसके समा में है। परंतु उपन्यासकार कुछ ितेरा सा है, ो ित्र बनाता है, बाह्य वस्तु को सृ नात्मक रूप प्रदान करता है। सामग्री बाह्य है, सिर्फ परिवेश, दृष्टिकोण आंतरिक है और व्यक्तिगत है। न ीवन और समा का बहुत सा भाग अवर्गीकृत है। प्रबुद्ध समा , िसको लोक समा से िंतन की सुविधा के लिए पृथक माना ा सकता है, इस लोक समा से यादा भिन्न नहीं है।

अभिव्यक्ति कुछ भी हो, सारे मानव समा में एक भावनात्मक एकता है। मानव के सुख-दुःख एक से हैं। उसकी आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ एक सी हैं। इसलिए इन दोनों में कोई विशेष भेद नहीं है। ीवन प्रक्रिया और संघर्ष एक ही है, सिर्फ वेश-परिवेश मात्र भिन्न है। इस न- ीवन और समा की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर सामा िक धरातल तक पहुँ ने वाला ही विशिष्ट रूप से लोक नायक व लोक कथाकार माना ाता है। ऐसी विशेषताएँ सं ीव के उपन्यासों में मिलती है। इसीलिए मैं उन्हें लोक कथाकार व यथार्थपरक उपन्यासकार मानता हूँ।

सं ीव बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में नई भावभूमि के साथ उभरे ऐसे कथाकार हैं, िनके उपन्यासों का एक अलग दृष्टिकोण है और इन्हीं से सं ीव की अलग पह ान बनती है। उनके उपन्यासों में समकालीन ीवन यथार्थ को रेखांकित करने

की गहरी बे ैनी ालकती है। वे अत्यन्त मेहनती र ानाकार हैं। उनकी र ानाएँ गहरी शोधपरक, अध्ययन, िंतन, मौलिकता से परिपूर्ण हैं। उनके लेखन की मुख्य कथावस्तु वे लोग होते हैं, िन्हें दलित, आदिवासी, उपेक्षित और पीड़ित कहा ाता है और उनकी व्यथा को वे अपनी वेदना सम ाकर मार्मिकता के साथ व्यक्त करते हैं।

सं ीव खुद को निम्नवर्गीय परिवेश के कथाकार मानते हैं। वे गाँव, अं ाल से ुड़े हुए व्यक्ति हैं। वे वहाँ के 'लोक' और उनकी ीवन स्थिति को अ छी तरह से ानते हैं। इसलिए उनके उपन्यासों की कथावस्तु भी उसी 'लोक' से ुड़ी हुई रहती है। सं ीव िस परिवेश से ुड़ते हैं, वहाँ की स्थितियों से वाकिफ़ होते हैं। वहाँ की समस्याओं को, वहाँ के ीवन को अपने र ानात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं और उसे एक ीवंत रूप देकर पाठकों के सामने रखते हैं।

रा ेंद्र यादव का मानना है कि सं ीव को 'प्रेम ंद' और 'रेणु' के समकक्ष रखा ाय, क्योंकि उनकी र ानाओं में 'प्रेम ंद' ैसा सीधा-साधा ित्रण या यूँ कहें कि यथार्थ ित्रण और 'रेणु' के आं ालिकता का परिवेश दृष्टिगो ार होता है। वे अपने समा ा के हर पहलू को देखते हैं और उनके अंदर ेतना ागाने के लिए वे एक आवाज़ बनकर सामने आते हैं।

सं ीव उन लेखकों में से हैं, ो साहित्य को ान ेतना का माध्यम भी मानते हें। तथाकथित लोक समा ा उसके लिए ेतावनी सा है, िसके परिष्कार में साहित्यकार का भी हाथ है। इस दृष्टि से लोक हमेशा सं ीव को प्रभावित करता आया है। ो साहित्य को ान ेतना मानते हैं, वे प्रधानतः यथार्थवादी होते हैं। वे स्वान्तः सुखाय नहीं लिखते, बल्कि दूसरों की वेदना को और यथार्थवादी दृष्टि से देखकर उसी समा ा को प्रक्षिप्त करते हैं, िसका वे स्वयं प्रबुद्ध अंग है।

सं ीव के उपन्यासों के कई पात्र ीते- ागते व्यक्तियों के ीवन के कुछ समन्वित, मिश्रित एवं प्रतीक रूप हैं। उनके मॉडल समा ा, अं ाल और पहाड़ों में है। उनके उपन्यासों की यही खासियत है कि वे अपने ज़मीन, परिवेश को और लोक ीवन के यथार्थ को महत्व देते हैं।

मेरे शोध का विषय है-**"सं ीव के उपन्यासों में लोक ीवन।"** मैंने अपने शोध विषय को अध्ययन की सुविधा के लिए ार अध्यायों में विभा ित किया है। प्रथम अध्याय **"लोक- ीवन:सिद्धांत निरूपण"** है। इसमें मैंने लोक और लोक ीवन का संक्षिप्त परि ाय दिया है, ैसे अर्थ, परिभाषा और स्वरूप। साथ ही लोक और शास्त्र के बी ा का संबंध और उनमें अंतर को देखने का प्रयास किया गया है। आधुनिक संदर्भ में लोक ीवन के व्यापक स्वरूप को उ ागर करने का भी प्रयास किया है। आँ ालिकता, न ाति, अभि ात, भूमंडलीकरण और आधुनिकता से लोक ीवन कैसे भिन्न है, ि ासके कारण लोक ीवन को सीमित अर्थ में न लेकर व्यापक अर्थ में लिया ा रहा है-आदि की ा र्ा की गयी है।

द्वितीय अध्याय है-**"सं ीव:व्यक्तित्व और कृतित्व"।** इसमें मैंने स ीव के संपूर्ण ीवन का संक्षिप्त परि ाय दिया है। उनका न्म, माता-पिता, शिक्षा पारिवारिक ीवन और व्यवसाय आदि के साथ-साथ उनकी र ाना-प्रक्रिया, प्रेरणास्रोत और उनके पुरस्कार एवं सम्मानों के बारे में भी बताया है।

तृतीय अध्याय है-**"सं ीव के उपन्यास:लोक ीवन के विविध आयाम।"** इस अध्याय में मैंने उनके सारे उपन्यासों को लेकर उसमें लोक ीवन के विविध आयामों को ैसे-सामा िक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, रा ानीतिक और शैक्षणिक आदि की व्यापक रूप से ा र्ा की है। सं ीव के उपन्यासों में यह लोक ीवन, मुख्य रूप से दलित, आदिवासी और निम्न वर्ग के संदर्भ में देखा गया है। सामा िक परिवेश में उनकी क्या स्थिति है, सांस्कृतिक आ ार-वि ार, रीति-रिवा ा, लोक ार आदि के बारे में भी वि ार किया गया है। साथ ही आर्थिक, रा ानीतिक और शैक्षणिक स्तर पर उनकी ीवन स्थिति के यथार्थ ि ात्रण का प्रयास किया गया है।

 ातुर्थ अध्याय **"सं ीव के उपन्यासों का शिल्प-विधान"** में कथावस्तु, ारित्र ि ात्रण, संवाद और भाषा के विभिन्न पक्षों के साथ-साथ, शैलीगत विशेषताओं का संक्षिप्त परि ाय दिया गया है।

इस शोध प्रबंध की मूल मान्यताओं को संक्षेप में '**उपसंहार**' में प्रस्तुत किया गया है तथा संदर्भ सू ी के अंतर्गत आधार और सहायक ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध डॉ.एम.श्यामराव ी के निर्देशन में संपन्न हुआ है। इनके सहयोग के बिना मेरा यह शोध कार्य संपन्न नहीं होता और साथ ही प्रो.सुवास कुमार और कथाकार सं ीव ी के विशेष सहयोग और प्रोत्साहन का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। इसके साथ ही विभाग के गुरु नों, अग्र ों-अनु ों एवं मित्रों का स्नेह और सहयोग मिला, िसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही मेरे पू नीय माता-पिता, अन्य परिवार नों का भी विशेष रूप से आभारी हूँ, िन्होंने प. ने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में सहयोग प्रदान किया।

- गा ुला रा ू

प्रथम अध्याय

लोक   ीवन : सिद्धांत निरूपण

प्रथम अध्याय

लोक ीवन : सिद्धांत निरूपण

1.0 विषय प्रवेश

1.1 लोक का स्वरूप

1.2 लोक की परिभाषा

1.3 वेद बनाम लोक

1.4 शास्त्र बनाम लोक

1.5 लोक- ीवन का अर्थ एवं परिभाषा

1.6 लोक ीवन बनाम अभि ात्य

1.7 लोक ीवन बनाम ान ाति ीवन

1.8 लोक ीवन बनाम आं ालिकता

1.9 लोक ीवन बनाम भूमंडलीकरण

1.10 लोक ीवन बनाम आधुनिकता

1.0 विषय प्रवेश

किसी भी राष्ट्र या देश का सही अध्ययन तभी हो सकता है ाब उसके ‘लोक’ और लोक ाीवन का अध्ययन पूर्ण होता है। यह वह ‘लोक’ है, ि ासको आदिम सभ्यता से ाोड़कर देखा ााता है, और वह ि ासे ग्रामीण, देहाती और अं ाल व ानपदवासी के रूप में लिया ााता है। भारतीय मनीषी वैदिक युग से लेकर या उससे पहले से, वर्तमान युग तक लोक एवं लोकांक्षाओं को अपने साहित्य एवं कलाओं में ि ात्रित करने का प्रयास निरंतर करते आए हैं। साथ ही उस लोक की ाीवन स्थिति को ाानना भी आवश्यक है। क्योंकि लोक ाीवन से ही ‘लोक’ का यथार्थ रूप सामने आ सकता है। ‘लोक’ में ि ानकी आवश्यकता है वह लोक ाीवन के लिए भी अनिवार्य बन ााता है क्योंकि यह ‘लोक’ का ही अंग है। अतः हमें यह देखना है कि ‘लोक’ वास्तव में क्या है और उसका स्वरूप कैसा है। साथ ही यह भी ाानना होगा कि लोक ाीवन से तात्पर्य और उसका विभिन्न प्रकार के स्थितियों से ताल-मेल कैसा है।

1.1 लोक का स्वरूप

इसमें हम पहले ‘लोक’ के अर्थ को देखेंगे। ‘लोक’ शब्द अत्यन्त प्रा ाीन है। सिद्धांत कौमुदी में "‘लोक’ शब्द संस्कृत के लोक दर्शन धातु में धञ् प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुआ माना गया है।"[1] इसका अर्थ है देखना। इसका अन्य पुरुष एक व ान रूप होगा ‘लोकते’। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि लोक शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला, अतः समू ाा ान्-समष्टि, ाो इस कार्य को करता है, ‘लोक’ कहलाया। यहाँ ‘लोक’ शब्द का दो अर्थ स्पष्ट होता हैं-देखना और ान-समुदाय।

आरंभ में ाब ‘लोक’ शब्द का अर्थ असाक्षर, असंस्कृत ाैसे लोगों से किया गया तो उसका मूल आधार सामाा िक था। फिर ाब उसे आदिम समा ाों के

---

[1] सिद्धांत कौमुदी, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई 1989-पृ.417

साथ ोड़ा गया तो उसका मूलाधार ातीय था। फिर ाब उसे कृषक समा ों अथवा ग्राम-समा ों के साथ संयुक्त किया गया तो उसका मूल आधार भौगोलिक था।

लोक-ऐसा स्थान है ि ासका बोध प्राणी को हो अथवा ि ासकी उसने कल्पना की हो। शब्द कोषों में 'लोक' शब्द के अनेक अर्थ मिलेंगे, ि ानमें से साधारणतया दो अर्थ विशेष रूप से प्र ालित हैं-एक तो वह, ि ाससे इहलोक, परलोक अथवा त्रिलोक का ज्ञान होता है, दूसरा अर्थ ान सामान्य का बोध है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से आंग्ल भाषा के फोक (Folk) से वोल्क (Volk) शब्द की उत्पत्ति मानी ाती है। यह एंग्लोसैक्सन शब्द है तथा ार्मनी में वोल्क रूप में प्र ालित है। 'फोक' शब्द का प्र ालन अंग्रेज़ी में मुख्यतः दो रूपों में किया गया है। पहला असंस्कृत समा ा के लिए तथा दूसरा सर्वसाधारण के लिए। डब्ल्यू. ो.थामस का वि ार है-"प्रा ीन असभ्य और पिछड़ी ातियों के अंधविश्वास, उनके रीति-रिवा ा तथा उनकी प्रथाएँ आदि के विशिष्ट अंश ही आगे सभ्य कहलाने वाली ातियों में प्राप्त होते हैं।"[2] यानी ो पहले का समा ा या लोक है वही आगे ालकर सभ्य कहलाने वाली ातियों में मिलते हैं। ि ानका अलग आ ार-वि ार, रीति-रिवा ा आदि विशिष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं।

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका में "'फोक' का भाव आदिम ाति के उन सभी व्यक्तियों का बोधक है, ि ानसे यह समुदाय बना है। यदि इस शब्द का व्यापक अर्थ लें तो यह सभ्य राष्ट्र की समग्र ानसंख्या के लिए प्रयोग में आ सकता है।"[3] इसका तात्पर्य यह है कि इस 'फोक' का अर्थ सीमित न करके व्यापक रूप में लिया ाा रहा है। ि ास तरह 'फोक' या 'लोक' को एक विशेष स्थान दिया गया है यह उसका महत्व है कि प्रा ीन काल से लेकर आधुनिक काल तक उसके अर्थ को सीमित न बनाकर उसे व्यापक धरातल पर ला खड़ा किया है। आ ा 'लोक' विश्व व्यापी है।

---

[2] एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्से ा, ि ाल्द 5-पृ.288

[3] एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका, ि ाल्द 9-पृ.518

स्वरूप

'लोक' का स्वरूप बहुत व्यापक माना ा सकता है। क्योंकि यह शब्द वेदों से ाला आ रहा है। वेदों में भी इसका प्रयोग हुआ है। उतना ही नहीं महाभारत में भी 'लोक' का प्रयोग साधारण ान के लिए किया गया है। कहा ाता है कि भरतमुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में 'लोक' शब्द का प्रयोग साधारण ान, ागत, संसार, विश्व एवं सर्वलोक आदि के अर्थों में किया है। प्राकृत, अपभ्रंश में 'लोक ात्ता', 'लोअप्पवाय' आदि शब्दों का प्रयोग साधारण ान समूह के लिए किया गया प्रतीत होता है। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के अतिरिक्त हिंदी में भी 'लोग' शब्द का प्रयोग विविध प्रसंगों में विविध अर्थों में किया गया है। हिंदी साहित्य में कहीं तो लोक का प्रयोग मृत्यु लोग तथा पृथ्वी के संदर्भ में है, कहीं लोक का अर्थ सारे संसार के अर्थ में व्यापक रूप से किया गया है।

आ ार्य राम ंद्र शुक्ल ी ने ' िंतामणि' में लोक मंगल, लोक धर्म, लोक व्यवहार आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इनके दृष्टि में शायद लोक का विस्तृत अर्थ समा ा और संस्कृति हैं।

यूरोपीय भाषाओं में लोग शब्द का समानार्थी फोक (Folk) शब्द प्र ालित है। अंग्रेज़ी के फोक शब्द की उत्पत्ति 'फल्क' (Fok) से हुई है। यह एंग्लोसैक्सन शब्द है तथा ार्मनी में 'वोल्क'(Volk) रूप में प्र ालित हैं, आंग्ल भाषा में एक ओर इसका असंस्कृत के लिए भी प्र ालित है।

वैसे तो 'लोक' के द्वारा ही सारी धारणाएँ उप ी हैं। लोक में होने वाले हर कार्य व परिवर्तन को समा ा की स्थिति के अनुसार परिवर्तन कर, वह रूप धारण करता है। 'लोक' में मात्र ानपद, गाँव ही नहीं आते हैं वरन् नगर और ानपद के द्वंद्व से वह तमाम ान आते हैं, ो गाँव की संस्कृति को, वहाँ के लोक गीतों आदि को नगर में लाकर एक ऐसे 'लोक' का सृ ान कर रहे हैं, ो परंपरा से ाली आयी 'लोक' की धारणा को, उसकी ेतना को एक तरह से व्यापक बना रही हैं।

यदि आ ा की स्थिति को देखें तो 'लोक' का एक अंश सर्वहारा किसान तथा दलित वर्ग नगर-निवासी हो रहा है, ो नगर में रहकर भी 'लोक' से अपना संबंध वि छेद पूरी तरह नहीं कर पाया है और नगर की सभ्यता से वह आकर्षित होकर लोक की भावना को एक नया संदर्भ भी दे रहा है। इस लोक की धारणा में सिर्फ देहाती, ानपदवासी, आदिवासी ही नहीं है, बल्कि उसमें नगर के सर्वहारा, मध्यवर्ग, नारी तथा वह बड़ा समूह भी है, ो अपने श्रम से उत्पादन करता है, पर उसका उपभोक्ता वह पहले से कहीं यादा है। इस प्रकार इस 'लोक' की धारणा में अनेक वर्ग हैं, ो अपनी अंतःक्रियाओं द्वारा लोक के व्यापक परिदृश्य को संकेतित कर रहे हैं।

1.2 लोक की परिभाषा

'लोक' शब्द का विस्तृत अर्थ और व्यापक स्वरूप के बाद हम यह ान सकते हैं कि लोक को सीमित अर्थ में न लेकर व्यापक रूप से लिया ाय। 'लोक' के संदर्भ में कई विद्वानों ने अपने मंतव्य प्रकट किये हैं। उन्होंने अपने वि ारों को व्यक्त करते हुए परिभाषाएँ दी हैं। डॉ.कुं ा बिहारी दास का मानना है कि " ो सुसंस्कृत और सुसभ्य प्रभावों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते हैं, लोक है।"[4] यानी ो नागरिकता से दूर अपनी आदिम संस्कृति से ुड़ा हुआ रहता हो वह लोक कहा ाता है।

डॉ.बापूराव देसाई के वि ारानुसार-"लोक वह मनुष्य समा ा है ो अपनी परंपराओं में प्र ालित रीति-रिवा ा, खान पान, रहन-सहन, लेन-देन और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने से अशिक्षित कहलाता है।"[5] यानी वह एक परंपरागत रू ि.वादिता का द्योतक माना गया है।

इसी प्रकार लोक शब्द की व्याप्ति को मद्देनज़र रखते हुए डॉ.श्याम परमार ने प्रभावशाली शब्दों में कहा है कि-"लोक साधारण ान समा ा है, ि ासमें भू-भाग

---

[4] लोक साहित्यः स्वरूप एवं सर्वेक्षण, डॉ. ावाहरलाल हाण्डू, डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल-पृ.233

[5] लोक साहित्य, डॉ.बापू राव देसाई-पृ.18

पर फैले हुए समस्त प्रकार के मानव सम्मिलित हैं। यह शब्द वर्ग भेद रहित व्यापक एवं प्रा ीन परंपराओं की श्रेष्ठ राशि सहित आर्वा ीन सभ्यता संस्कृति के कल्याण व विकास का द्योतक है। भारतीय समा ा में नागरिक एवं ग्रामीण दो भिन्न संस्कृतियों का प्रायः उल्लेख किया ााता है, किंतु लोक दोनों संस्कृतियों में विद्यमान है। वही समा ा का गतिशील अंग है।"[6] इनकी परिभाषा अत्यन्त वैज्ञानिक एवं संतुलित है। यह लोक दोनों संस्कृतियों से पृथक है, इसीलिए वह विशिष्ट है।

डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय के मत के अनुसार-"आधुनिक सभ्यता से दूर, अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली, तथाकथित अशिक्षित एवं असंस्कृत ानता को ‘लोक’ कहते हैं ि निका आ ाार-वि ाार एवं ाीवन परंपरायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है।"[7] इससे स्पष्ट होता है कि इनकी दृष्टि में ाो लोग सुसंस्कृत तथा परिष्कृत लोगों के प्रभाव से बाहर रहते हुए अपनी पुरातन स्थिति में वर्तमान हैं उन्हें ‘लोक’ कहा ााता है।

लोक साहित्य के मर्मज्ञ एवं मनीषी डॉ.सत्येंद्र ने अपने वि ाार व्यक्त करते हुए कहा है-"लोक मनुष्य समा ा का वह वर्ग है ाो अभि ाात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य ोतना के अहंकार से शून्य है और ाो एक परंपरा के प्रवाह में ाीवित रहता है।"[8]

यह अधिक सार्थक प्रतीत होता है। ‘लोक’ एक ऐसा समुदाय है ाो आधुनिक सभ्यता एवं शिक्षा से वं ाित होते हुए प्रा ीन विश्वासों तथा अनुष्ठानों को सुरक्षित रखा हुआ है।

डॉ.कुंदन लाल उप्रेती के शब्दों में-"लोक ज्ञानाहं, बौद्धिक ोतना, सुसंस्कृत तथा परिष्कृत रु ा वाले मनुष्यों के समुदाय से इतर अभि ाात संस्कार एवं शिक्षा से हीन अथवा अल्पशिक्षित मनुष्यों का एक ऐसा समुदाय है ाो मानव की आदिम प्रवृत्तियों तथा पंरपराओं की धारा में बहता हुआ अकृत्रिम ाीवन ाीने में विश्वास

---

[6] भारतीय लोक साहित्य, श्याम परमार-पृ.101

[7] लोक साहित्य की भूमिका, डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय-पृ.11

[8] लोक साहित्य विज्ञान, डॉ.सत्येंद्र-पृ.30

रखता है।"[9] इनके वि ारानुसार वह लोक सीमित दायरे में खड़ा है, वह परंपरागत धारा में रहता है, लेकिन यह अधिक उ ात नहीं है।

डॉ.आनंद मोहन उपाध्याय के शब्दों में-"लोक मानव समा ा का वह वर्ग है, ाो बौद्धिक ोतना, सुसंस्कृत तथा परिष्कृत रु ा रखने वाले वर्ग से असंपृक्त, अशिक्षित, आधुनिकता से परे, अकृत्रिम व सह ा ाीवन ाीने के अभ्यस्त हैं।"[10] कहने का उद्देश्य यह है कि वह नागरिक सभ्यता से दूर अपने ही ाीवन से सम्पृक्त होनेवाला लोक है।

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखने के बाद 'लोक' का विस्तृत रूप सामने आता है। इस आधार पर लोक को इस प्रकार परिभाषित करना ााहूँगा-"लोक वह समुदाय है, ाो वैज्ञानिकता, बौद्धिकता, शिक्षा एवं सुसंस्कृत नागरिक समा ा से दूर अपनी सह ा संस्कृति और परंपराओं से लुप्त विश्वासों का पालन करने वाला वह अशिक्षित, असंस्कृत एवं अकृत्रिम ाीवन व्यक्त करने वाला ही लोक है।"

1.3 वेद बनाम लोक

वेद विश्व के सर्वाधिक प्रा ाीन ग्रंथ हैं। पहले 'वेद' शब्द का प्रयोग संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद सहित संपूर्ण वैदिक वांङ्मय के लिए होता था। अब केवल संहिता के लिए वेद शब्द का प्रयोग होता है। संहिता अर्थात मैत्र भाग भी पहले एक ही था। फिर यज्ञों के आवश्यकता के अनुसार तीन विभाग किए गए ाो 'वेदत्रयी' कहलाए। पर पूरे वेद-व ान इस विभा ान में नहीं आ सकते थे। उनमें इसके अतिरिक्त लौकिक कृत्यों और ाादू-टोना आदि का भी समावेश था।

भारतीय परंपरा वेदों को अपौरुषेय मानती है। इनमें निहित ज्ञान सदा से रहा है। इसलिए वेदों का कोई र ायिता नहीं है। ि ान व्यक्तियों को तपोबल से यह ज्ञान प्राप्त हुआ और ि ानमें स्त्री-पुरुष दोनों थे, वे ऋषि कहलाए तथा वेद मंत्रों के र ायिता न होकर उनके 'द्रष्टा' माने गए।

---

[9] लोक साहित्य के प्रतिमान, कुंदनलाल उप्रेती-पृ.5

[10] फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, डॉ.आनंदमोहन उपाध्याय-पृ.18

भगवान सिंह आलो ाना पत्रिका के वैदिक संस्कृति का आत्मवादी पाठ शीर्षक आलेख में एक वक्तव्य का उल्लेख करते हैं-"वे (वेद) ज्ञान-विज्ञान को व्यक्त करनेवाली विपुल ग्रंथ राशि है ो किसी रहस्यात्मक अर्थ में नित्य या अनादि, अपौरुषेय या ईश्वरकृत मानी ाने पर भी अपत्तितः अलौकिक प्रेरणा और अंतर्ज्ञान से अनुप्राणित मनीषियों की र नाएँ हैं ो एक सुदीर्घ युग की ज्ञान-साधना प्रकट करती है।"[11] वेद का एक विशाल रूप सामने आता है, ो कि ईश्वरकृत मानने के बाव ूद भी वह मानव र नाएँ हैं, ि ासमें ज्ञान की बातें निक्षिप्त हैं।

आधुनिक विद्वान वेदों को अपौरुषेय न मानकर प्रा ीन ऋषियों की र ना मानते हैं। उन्होंने इनका र ना-काल 6000 ई. पू. से 2500 ई. पू. तक निर्धारित किया है।

हिंदी विश्वकोश में बताया गया है कि प्रत्यक्ष या अनुमान द्वारा ो उपाय नहीं ाना ाता, वेद द्वारा वह उपाय प्राप्त किया ाता है। यही वेद का वेदत्व है।

हिंदी विश्वकोश में वेद के अर्थ को विभिन्न रूपों में बताया गया है। आपस्तंव यज्ञपरिभाषा सूक्त में वेद के स्वरूप संबंध में कहते हैं- "मन्त्रब्राह्मणयोवेदनामधेयम्"[12] अर्थात् मंत्र और ब्राह्मण ये दोनों ही वेद नाम से अभिहित होते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि प्रा ीन काल में वेद शब्द विद्या शब्द के दूसरे पर्याय के रूप में व्यवहृत होता था। सब मंत्र सर्वविद्या के निधान हैं। यहाँ महिधर ने वेद शब्द के दो अर्थ किये हैं-"एक अर्थज्ञान और दूसरा त्रयीविद्या।"[13] शेषोक्त अर्थ ही सुसंगत है। सब संहिताओं में ही त्रयी शब्दार्थ वा ाक वेद शब्द का उल्लेख है। वेद काल में वेद को केंद्र में रखकर ही सारे विषयों को देखा ाता था। वह सब कुछ वेदन के अंतर्गत ही आ ाते थे। इसीलिए वेद बहुत ही प्रा ीन और सर्वव्यापी माना ाता है।

---

[11] आलो ाना, (नवरी-मा ा) 2004-पृ.96
[12] हिंदी विश्वकोश, नरेंद्रनाथ वासु-पृ.101
[13] हिंदी विश्वकोश, नरेंद्रनाथ वासु-पृ.102

'लोक' और वेद को देखा ााय तो यह स्पष्ट होता है कि " ाो 'वेद' में स्पष्टतः नहीं है, वह यदि लोक में हो अथवा ाो वेद में है, उसके अतिरिक्त 'लोक' में हो वह लौकिक है।"[14] अर्थात् यह कह सकते हैं कि वेद में होने के अतिरिक्त वह लोक में उसका विवरण मिलता हो वह लौकिक है।

लोक शब्द अत्यन्त प्रा ाीन है, यहाँ तक कि वेदों में भी इसका उल्लेख पाया ााता है। साधारण ानता के अर्थ में इसका प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थानों में किया गया है। इस वेद में लोक शब्द के लिए ' ान' शब्द का प्रयोग उपलब्ध होता है।

आर्यों के आगमन पर आर्य तथा आर्येतर ाातियों में ाो सांस्कृतिक संघर्ष हुआ उसके फलस्वरूप 'वेद' तथा 'वेदेतर' संस्कृति का ान्म हुआ। इससे एक नवीन अर्थ की उद्भावना हुई। अब 'लोक' शब्द का अर्थ वेद-विरोधी हो गया। इससे वेद की प्रतिष्ठा के साथ-साथ 'लोक' का स्वतंत्र महत्व भी हो गया। भारतीय संस्कृति में तो 'लोक और वेद' का यह आदान-प्रदान खुलकर हुआ है। वैसे यहाँ स्पष्ट है कि वेद का अभिप्राय ऋग्वेद, य ाुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद न होकर समग्र मनीषी साहित्य से है। डॉ.वासुदेव शरण अग्रवाल ने इसी तथ्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है-"भारतीय संस्कृति की वेगवती धारा लोक और वेद इन दो किनारों के बी ा बही है। 'लोकेवेद ा' यह भारतीय संस्कृति को अर्थ देने का मूल सूत्र है। वेद की परंपरा में समस्त शास्त्रों का नि ाोड़ है। ... लोक और वेद दोनों से खुलकर आदान-प्रदान हुआ है। वे एक दूसरे से ब ाते नहीं और परस्पर निराकरण की भावना भी उनमें नहीं है। ैसे समुद्र का ाल मेघों द्वारा ऊपर उठकर पहाड़ की ाोटियों पर पहुँ ाता है और वहाँ से बहकर पुनः समुद्र में ाा मिलता है, वैसे ही आदान-प्रदान का वेगवान ाक्र लोक और वेद के बी ा घूमता रहा है।"[15]

अग्रवाल ाी की इस उक्ति से स्पष्ट होता है कि लोक और वेद का ाो संबंध है वह भारतीय संस्कृति के अंतर्गत है। उतना ही नहीं इन दोनों के बी ा एक गहरा संबंध है ि ासके कारण वह आदान-प्रदान का कार्य हो रहा है।

---

[14] हिंदी साहित्य कोश (भाग-1), धीरेंद्र वर्मा-पृ.747

[15] भारतीय लोक ाीवन के आख्याताःअब्दुर्रहीम खानखाना, हरीश कुमार सेठी-पृ.84

वेदों में भी लोक की ा ा हुई है। वह पौर ीवन का उल्लेख मिलता है। उनकी ीवन स्थिति, रा ा-का ा, यातायात के साधन, विविध क्षेत्रों के पेशेवार लोगों के काम-का ा आदि का ि त्रण किया गया। इससे यह स्पष्ट हो ाता है कि वेद का लोक से ो संबंध है, वह बहुत ही प्रा ीन है।

1.4 शास्त्र बनाम लोक

लोक और शास्त्र का संबंध एक ऐतिहासिक घटना है ो सापेक्ष होते हुए भी द्वंद्वात्मक रही है। आदिम साम्यवादी युग में वहाँ लोक और शास्त्र की दो समानांतर या सापेक्ष परंपराएँ नहीं थी। वहाँ तो केवल एक वर्गहीन समा ा की परंपरा थी। यह वर्गहीन समा ा ही, व्यापक अर्थ में इतिहास के उस आदिम युग में एक वर्ग ही 'लोक' था। इस दृष्टि से काल-क्रम के संदर्भ में लोक का संप्रत्यय शास्त्र की अपेक्षा कहीं अधिक प्रा ीन है अथवा दूसरे शब्दों में यह भी कहा ा सकता है कि लोक शास्त्र की वह पूर्व पीठिका है ि ासके बगैर हम शायद 'शास्त्र' की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

शास्त्र की यह अभिनव परंपरा ो लोक से ही विकसित हुई, वह आगे ालकर लोक की अपेक्षा अधिक नियमबद्ध, अनुशासिक और अलंकृत होती गयी। यह शास्त्रीय परंपरा, लोक से ऊ ाा और प्रेरणा तो लेती रही, पर इसी के साथ वह अधिक नियमबद्धता एवं अलंकृत या परिष्कृत भाषा के प्रयोग के कारण, एक अलग परंपरा के रूप में विकसित हुई, लेकिन उसके साक्ष्य और सामग्री लोक से ही लिए गए।

हिंदुओं के अनुसार ऋषियों और मुनियों आदि के बनाए हुए वे प्रा ीन ग्रंथ ि ानमें लोगों के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बताए गए हैं और अनु ि ात कृत्यों का निषेध किया गया है, अर्थात् वे धार्मिक ग्रंथ ो लोगों के हित और अनुशासन के लिए बनाये गये हैं। हमारे यहाँ वे ही ग्रंथ शास्त्र माने गए हैं ो वेद मूलक हैं। 'वेद' शास्त्र ही है। शास्त्र, तीन कारणों से होता है-शंसन, शासन तथा

अनुशासन। अनुशासन के कारण केवल ‘व्याकरण’ और ‘साहित्य’ शास्त्र को शास्त्र कहा ाता है।

मत्स्य पुराण में शास्त्र की उत्पत्ति का विषय इस प्रकार लिखा है-"पहले देवताओं के पितामह ने कठोर तपस्या आरंभ कर दी। उससे संगोपांग वेद आदि शास्त्र आविर्भूत हुए।"[16] यह बहुत ही पुरानी अवधारणा है और वह वेद का ही एक रूप शास्त्र कहा गया है।

अर्थात् देखने से यह पता ालता है कि भरतमुनि के ‘नाट्य शास्त्र’ महर्षि व्यास के ‘शतसाह स्त्री संहिता’ ओर भगवतगीता आदि ग्रंथों में शास्त्रों के उक्ति के साथ-साथ ‘लोक’ के प्रवृत्तियों का भी उल्लेख है। भारतीय शास्त्रों ने लोक को कभी अपने से दूर नहीं रखा है। ये दो अलग ध्रुव हैं ही नहीं। ैसे, लोक से ही पर्यन्ततः शास्त्र की उत्पत्ति होती है। लोक मानव मन की उप ा है, मानवीय आवश्यकताओं की परिणति है। उसका परिष्कार और विस्तार ही शास्त्र है।

विरेंद्र सिंह के शब्दों में-"वर्गीकृत समा ा में ये दोनों धाराएँ (लोक-शास्त्र) सापेक्ष एवं समानांतर ालती है। यदि हम भारतीय मिश्र संस्कृति के आरंभिक काल को ले तो हमें ये दो धाराएँ वैदिक और अवैदिक रूपों में मिलती है। वैदिक परंपरा के ब्राह्मणों तथा पुरोहितों ने इस यज्ञपरायण ‘लोक’ के अंतराल से ीवन को व्यवस्थित एवं संगठित कर एक विशिष्ट शास्त्रीय परंपरा को विकसित किया।"[17]

अर्थात् यह दो स्पष्ट परंपराओं का द्वंद्व दिखाई देता है-एक वैदिक परंपरा ो ‘शास्त्र’ की पक्षधर थी और दूसरी अवैदिक परंपरा ो लोकायत की पक्षधर थी।

यदि गहराई से देखा ाए तो ‘शास्त्र’ की अवधारणा में यह द्वंद्व और संवाद सदा ाला करता है, ो उसके विकास में सहायक होता है और ो ‘शास्त्र’ इस द्वंद्वात्मक प्रक्रिया को ग्रहण नहीं कर पाते हैं, वे या तो अप्रासंगिक हो ाते हैं या अपनी सीमा का अतिक्रमण न कर सकने के कारण कुंठित हो ाते हैं। एक उदाहरण से हम इन दोनों की प्रासंगिकता को देखते हैं ‘ ो गुरु के ारण कमलों में श्रद्धा

---

[16] हिंदी विश्व कोश, नरेंद्र वासु-पृ.761

[17] रंगायन, ुलाई-सितंबर-पृ.61

रखते हैं उन्हें वेद (शास्त्र) भी भाग्यशाली कहते हैं, लोक भी।' यह द्वंद्वात्मकता है वह पुराने काल से ाली आ रही है। वह 'शास्त्र' में िनका उल्लेख किया ाता है, वे 'लोक' में भी प्र ालित हुआ करती है। इसीलिए यह कहा ाता है कि 'शास्त्र' की उत्पत्ति ही लोक से हुई है।

कलानाथ शास्त्री अपने लेख 'लोक और शास्त्रःअंतःसंबंध' में इन दोनों के द्वंद्व के संबंध में कहते हैं-"एक ओर लोक का व्यवहार लोक भावना, सामान्य ान के मन की बात, दूसरी ओर वेद या शास्त्र या शासन अभि ात वर्ग का सिद्धांत। मैं तो यह भी मानता हूँ कि ाब कबीर कहते हैं कि 'मैं कहता आँखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी' तो वे भी इसी द्वैत का संकेत कर रहे हैं। आँखिन की देखी है लोक, कागद की लेखी है शास्त्र।"[18] इनका कहने का तात्पर्य यह है कि 'लोक' का अभिप्राय सामान्य लोगों से है और 'शास्त्र' का विशिष्ट व अभि ात्य लोगों से।

शास्त्र वेद से ही अधिकार ग्रहण करता है किंतु लोक और शास्त्र ये दोनों ही युग्म एक सी ही अवधारणा के वा ाक हैं। इस अवधारणा पर काव्य और कला के शास्त्रों ने खूब वि ार किया है क्योंकि ये दोनों लोक से भी ुड़ी हुई हैं, लोक से ान्म लेती है तथा लोक को ही समर्पित हो ाती है पर उनका शास्त्र भी बनता ाता है। इस तरह लोक से शास्त्र पनपता है और उसका उद्देश्य होता है उस लोक तत्व को सार्वदेशिक और सार्वकालिक बनाना। पतं ालि का मानना है कि-शब्द का ान्म लोक में होता हे। उसे अर्थ भी लोक ही देता है। पर एक शब्द को उस एक अर्थ में ही अलग-अलग तरीके से बोलेंगे तो व्यापक क्षेत्र में अर्थ ग्रहण नहीं हो सकेगा, इसलिए शास्त्र उतरता है और उस शब्द का एक साधु रूप बनाता है, उसका वही एक अर्थ होगा यह बताता है। इस प्रकार वहाँ शास्त्र नियम बनाता है। तब यह अर्थ स्थायी और व्यापक हो ाता है।

अंततः यह कहना उ ित होगा कि लोक और शास्त्र का संबंध एक ऐतिहासिक घटना है ो सापेक्ष होते हुए भी द्वंद्वात्मक रही है। इन दोनों के बी ा का

---

[18] रंगायन, ुलाई-सितंबर-पृ.65

पारस्परिक संबंध अटूट बनता नज़र आता है। ि ासके कारण वह एक तरह का साम्य उत्पन्न होने लगता है। लोक ि ातना पुराना और प्रामाणिक है, शास्त्र भी उतना ही पुराना है साथ ही वह अक्षर रूप/बद्ध भी। ि ासके कारण वह अधिक प्रामाणिक लगता है।

1.5 लोक- ीवन का अर्थ एवं परिभाषा

लोक मानव समा ा का वह वर्ग है, ाो बौद्धिक ोतना, सुसंस्कृत तथा परिष्कृत रु ा रखनेवाले वर्ग से असम्पृक्त, अशिक्षित आधुनिकता से परे, अकृत्रिम सह ा व सपाट ीवन ीने का अभ्यस्त है। इसी को लोक ीवन कहा ाता है। लोक ीवन को लोकतत्व की संज्ञा भी दी ाती है। इसे अंग्रेज़ी में 'फोक-लाइफ' कहा गया है। "लोक ीवन वह है, ाो समस्त समा ा के संदर्भ में कहा ाता है। लेकिन ाब इसके सीमित रूप को देखा ााय तो वह उस गाँव, देहात, ानपद या अं ाल या परिवेश के ीवन को लोक ीवन कहा ाा सकता है। ि ानका ीवन समा ा के अन्य लोगों और संस्कृति से अलग है।"[19] लोकतत्व, लोक- ीवन की पारस्परिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, लोकतत्व का धीरे-धीरे क्रमिक विकास हुआ है और आ ा इसका समग्र क्षेत्र अभिव्यक्तिपरक हो गया है।

मूलतः लोक- ीवन को सामान्य शब्दों में सम ाा ाा सकता है। "लोक ीवन वह है, ि ानका ीवन यापन ग्राम्य, अं ाल से संबंध रखता है। वे लोग ि ानकी अपनी अलग संस्कृति, सभ्यता, आ ाार-वि ाार, रीति-रिवा ा, खान-पान, वेश-भूषा, लोक-गीत, लोका ाार, लोक-नाट्य, परंपरा, रू ि आदि हुआ करते हैं।"[20]

लोक ीवन का अर्थ सीमित न होकर, व्यापक रूप से देखा ाता है। वह समस्त विश्व का प्रतिनिधित्व करता है। लोक ीवन का स्वरूप विश्वव्यापी है। लोक ीवन लोक के द्वारा लोक समा ा के अंतर्गत ीवन यापन करने का आधार है

---

[19] लोक साहित्य : स्वरूप एवं सर्वेक्षण, डॉ. ावाहरलाल हाण्डू, डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल-पृ.200-201

[20] रंग प्रसंग, ानवरी- ून, 2003-पृ.283

ि ासका सहारा 'लोक' है। लोक ीवन को लोक से अलग करके नहीं देखा ा सकता।

लोक ीवन को पह ानने व ानने के लिए लोक की समस्त विषयों व सांस्कृतिक परिवेश से परि ित होना आवश्यक है। लोक ीवन को लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कला एवं लोक-साहित्य आदि के द्वारा हम ान सकते हैं। भारतीय समा । में यह उक्ति अधिक सार्थक लगती है।

परिभाषा

लोक ीवन सिर्फ गाँव के परिवेश से ही नहीं वरन् उन सभी वर्गों से, ो श्रम का ीवन ीते हैं, ि नका थकान, सुख-दुःख, परंपरा, शोषण आदि से भी संबंध है। लोक को लोक ीवन से अलग करके नहीं देख सकते, क्योंकि लोक का ीवन ि त्रण ही लोक ीवन है। इस लोक ीवन को दर्शाने के लिए लोक साहित्य व लोक-संस्कृति को माध्यम बनाया ा रहा है ो सफलतापूर्वक सामने आ रहा है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि लोक ीवन का अध्ययन केवल मौखिक परंपरा के द्वारा हो सकता है। बल्कि लोक साहित्य से उपलब्ध निष्कर्षों का संबंध हूबहू सामा िक यथार्थ से होता है। फिर भी यह स्वीकार किया ाना ाहिए कि लोक ीवन के मूल्यों, दृष्टिबिंदुओं और सामा िक संबंधों की ि टिलताओं के संबंध में मौखिक परंपराएँ हमें कुछ निश्ि ात उपकल्पनाएँ अवश्य देती हैं ओर यह उपकल्पनाएँ ग्रामीण ीवन के विश्लेषण में मूल्यवान सिद्ध हो सकती हैं।

लोक ीवन से संबंध सार्थक परिभाषा के रूप में देवशंकर नवीन की परिभाषा को ले सकते हैं। 'लोक ीवन के अलौकिक रंग' शीर्षक आलेख में उन्होंने लोक ीवन की परिभाषा करते हुए कहा कि-"असल में लोक ीवन, लोक परंपरा, लोक कला, लोक संस्कृति, लोक साहित्य का मूल स्वरूप वहीं ाकर तलाशा ा सकता है, ि हाँ मशीन का प्रवेश अभी भी नहीं हो पाया है। ऐसे स्थानों की स्मृति अभी भी ि नके पास ब ी हो, वे बता सकते हैं कि रस्सी बटने, ौपाल में बैठकर रात-रात भर किस्सा सुनने, खेतों में धान रोपते हुए... ऋतुगीत अथवा श्रमगीत

गाने, ती ा-त्यौहारों अथवा अन्य अवसरों पर प्रफुल्लित स्त्रियों को लोकगीतों, लोक नृत्यों में लिप्त देखने... अर्थात् ीवन में लोक और लोक में ीवन के अन्योन्याश्रय संबंधों के सूत्र किस रहस्य लोक में समा गए।"[21] यह देवशंकर का कहना है कि िनको 'लोक' संस्कृति के अंतर्गत आ ा भी किसी प्रकार परिवर्तन नहीं हुआ है और वे अपने ीवन को उसी अंदा ा में ी रहे हों, वैसे ीवन को लोक ीवन कहा ाना उ ित होगा।

लोक का सीधा संबंध ीवन से है। मधुबाला नयाल 'कथाशिल्प में गुम्फित लोक' शीर्षक आलेख में लोक ीवन के स्वरूप का निर्धारण करते हुए कहती हैं- "... वा िक परंपरा का अनुकरण करता लोक ीवन से भागता नहीं, उसे ेलता है। वह एक ओर प्रकृति और परिवेश से ु ारूपन की शक्ति लेता है, दूसरी ओर मांगलिक परिवेश करता है। लोकदर्शन ीवन को नश्वर मानते हुए भी उसे अन्त्यात्मक नहीं मानता। परिणामतः लोक- ीवन क्राकार परिधि में घूमता रहता है।"[22]

कहने का तात्पर्य यह है कि वह अपनी वा िक परंपरा का अनुकरण करते हुए ीवन क्र को अपने अनुकूल लाते रहते हैं। यह लोक और लोक ीवन एक दूसरे के पूरक बन ाते हैं।

डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय का मत है कि "लोक-संस्कृति के अंतर्गत न ीवन से संबंधित ितने भी आ ार-वि ार, रहन-सहन, विधि-निषेध, प्रथा-परंपरा, धर्म-कर्म, पू ा-पाठ, खान-पान, वेश-भूषा और मू ाग्रह-अनुष्ठान आदि हैं वे सभी इसके अंतर्गत आते हैं।"[23]

लोक- ीवन में अनेक प्रकार के विश्वास, अंधविश्वास व मान्यताएँ प्र लित हैं। नज़र लगाना, टोना-टोटका, ाड-फूंक आदि के प्रति अंध श्रद्धा रखना। लोक

---

[21] रंग प्रसंग, नवरी- ून, 2003-पृ.280
[22] आलो ना, अक्तूबर-सितंबर, 2009-पृ.106
[23] लोक संस्कृति की रूपरेखा, डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय-पृ.2

विश्वास लोक-संस्कृति के वैकासिक क्रम में लोक- ीवन में अनेक विश्वास प्र ालित हुए ो कालांतर में परंपरा के क्रम में प्र ालित होते हुए रू ़ हो गए।

लोक- ीवन के उत्सव, प्रकृति के साथ ुड़े हुए हैं। इसका मूल कारण है- कृषि प्रधान लोक- ीवन प्रकृति से सीधा ुड़ा हुआ है, अतः उसके त्यौहार भी प्रकृति से ुड़ हुए हैं, ैसे-होली, श्रावणी, दीपावली, वसंतपं ामी आदि। लोक ीवन का सीधा संबंध प्रकृति से होता है। किसी न किसी रूप में यह प्रकृति से सम्पृक्त है।

लोक- ीवन में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वे अपने श्रम के समय या किसी उत्सव आदि में गीतों के माध्यम से उल्लास का वातावरण उत्पन्न करते हैं।

अंततः यह सकते हैं कि लोक ीवन उन तमाम विषयों का समाविष्ट है, ो लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कला, लोक-कथा एवं लोक-विश्वास आदि से परिपूर्ण द्योतक होने लगता है। वह लोक ीवन इन्हीं सारी विशेषताओं के कारण आ ा भी अपना अस्तित्व बनाये रखा है।

1.6 लोक ीवन बनाम अभि ात्य

अभि ात्य वर्ग एवं लोक- ीवन में घनिष्ठ संबंध है। वे दोनों कभी एक ही रहे होंगे परंतु कालांतर में मानवीय विकास प्रक्रिया में दोनों में निरंतर दूरी ब ़ती गई। सूक्ष्मता से वि ार करें तो प्रतीत होगा कि अभि ात्य वर्ग लोक से ही निःसृत एक श्रृंखला है, ो समय व सभ्यता के निरंतर परिवर्तन के फलस्वरूप लोक से असंपृक्त होकर एक सभ्य एवं शिष्ट ीवन व्यतीत करता है। पहले ानपदीय न पुरों तथा गाँवों में रहते थे और पारंपरिक अंधविश्वास युक्त, धार्मिक ीवन व्यतीत करते थे। कालोपरांत मध्यकाल में तीर्थों का विकास हुआ, हाँ लोगों को एकत्र होकर मानवीय भावनाओं, धार्मिक वि ारों को सुनने का अवसर मिला, िससे उनका आध्यात्मिक विकास हुआ।

इस प्रकार मध्यवर्ग ने सामान्य न की रा नैतिक और सांस्कृतिक सत्ता को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया और उसके कारण अभि ात्य संस्कृति का न्म

हुआ। विज्ञान, तकनीक के सं ार माध्यम, औद्योगीकरण ने लोक-संस्कृति को प्रभावित किया। फलस्वरूप लोक- ीवन व्यतीत करने वाले लोग आर्थिक दबाव के कारण शहरों में पहुँ े और अपनी संस्कृति और साहित्य को भूलकर एक नया एवं विशिष्ट ीवन व्यतीत करने लगे और इन्हें 'अभि ात्य वर्ग' कहा ाने लगा।

हिंदी साहित्य कोश ने लोक की शास्त्रीय परिभाषा दी है, िससे अभि ात्य वर्ग का अलग पह ान दिखाई देता है। "लोक मानव समा का वर्ग है, ो अभि ात्य संस्कार, शास्त्रीयता, पांडित्य की ेतना और पांडित्य के अहंकार के शून्य और ो एक परंपरा के प्रवाह में ीवित रहता है।"[24]

लोक परंपराओं से संपृक्त होता है। इसकी अपनी एक परंपरा होती है, िसके आधार पर लोक- ीवन क्रियाशील रहता है।

आनंद मोहन उपाध्याय का मानना है-"शिष्ट या अभि ात्य वर्ग में अहं मुखर होता है, बकि लोक- ीवन का प्रस्थान बिंदू ही 'स्व' के विगलन से प्रारंभ होता है अर्थात् यहाँ व्यक्तिगत ेतना, समष्टिगत ेतना में तदाकार हो ाती है। आधुनिक ीवन के विकसनशील परिवेश में लोक ीवन व अभि ात्य- ीवन में गहरा भेद है।"[25] यह लोक- ीवन और अभि ात्य ीवन के बी में ो भेद है, वह 'स्व' और 'अहं' से बना हुआ है ान पड़ता है।

लोक ीवन और अभि ात्य में अंतर के साथ-साथ अंतःसंबंध भी है। डॉ.सेन गुप्ता ने दोनों की तारतम्यता को स्पष्ट करते हुए कहा है-"लोक-संस्कृति में अभि ात्य वर्ग के 'अहं' और 'स्व' के प्रति विद्रोह का स्वर उतना ही मुखर होता है, ितना प्रखर समा में वर्गों और ातियों के बी भेदभाव होता है।"[26] यह स्पष्ट होता है कि दोनों के बी का संबंध सामान्य रूप से बनता ाता है। वह समा के भीतर का ो भेदभाव है, वही लोक ीवन और अभि ात्य में है।

---

[24] हिंदी साहित्य कोश, ज्ञान मंडल, वारणासी-पृ.686

[25] फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, डॉ.आनंद मोहन उपाध्याय-पृ.21

[26] फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, डॉ.आनंद मोहन उपाध्याय-पृ.16

डॉ.रामशरण गौड़ लोक-संस्कृति को परिभाषित करते हुए अभि ात्य संस्कृति से उसकी पृथकता इन शब्दों में सिद्ध करते हैं-"लोक-संस्कृति उस न-सामान्य की द्योतक है, ो अकृत्रिम ीवन ीता है तथा अभि ात्य संस्कृति उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है ो औप ारिक और कृत्रिमता में ीती है। अभि ात्य वर्ग की शिष्टता औप ारिक होती है, बकि लोक-समा की शिष्टता सह और स्वाभाविक।"[27] यहाँ कृत्रिम और अकृत्रिम ीवन के बारे में बताते हुए यह ज्ञात कराने का प्रयास किया गया कि लोक ीवन सह है, वह शिष्ट समा की तरह असह नहीं।

अभि ात्यता लोक- ीवन की विकास यात्रा का एक पड़ाव है, पर दृष्टिबोध में अंतर है। लोक- ीवन व अभि ात्य- ीवन की अंतःक्रियात्मक परिणति है-लोक संस्कृति। भारत में लोक ीवन की परंपरा अक्षुण्ण रही है। भारतीय लोक ीवन ग्रामों और नगरों दोनों में ही लोक संस्कारों, अंधविश्वासों, परंपरागत रू ़ियों आदि से संबंध होकर लोक की यथार्थता को प्रकट करता है।

अभि ात्य में शास्त्रीयता का बोध होता है, लोक में अनुभूति की प्रबलता का ाहाँ अभि ात्य में अहं प्रबल होता है, वहीं लोक में समष्टिगत ेतना का संस्पर्श। लोक ीवन की सार्थकता लोक गत से होती है, बकि अभि ात्य का फलक विस्तृत व आधुनिकता बोध को लिए हुए होती है।

1.7 लोक ीवन बनाम न ाति ीवन

आधुनिक युग में न ाति एक ऐसा रो क विषय बना है। इन्हें आ के संदर्भ में भिन्न-भिन्न नामों से बुलाया ाता है। ैसे-आदिवासी, वनवासी आदि नामों से ाना ाता है। न ाति या वन्य ाति से ऐसे समूह का बोध होता है िसके सदस्य आदिम सभ्यता, संस्कृति व अवस्था में निवास करते हैं। इस समूह का एक निश्ि ात भू-प्रदेश होता है तथा उसकी अपनी एक विशेष प्रकार की भाषा, धर्म, प्रथा और परंपराएँ होती है। डॉ.रिवर्स ने सामान्य निवास-स्थान को महत्व न

---

[27] भारतीय लोक ीवन के आख्याताःअब्दुर्रहीम खान खाना, हरीश कुमार सेठी-पृ.30

देते हुए ान ाति को ऐसे सरल प्रकार का सामा िक समूह बताया है ि ासके सदस्य एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हो तथा युद्ध आदि सामान्य उद्देश्यों के लिए सम्मिलित रूप से कार्य करते हो। डॉ.रिवर्स ने सामान्य निवास-स्थान को संभवतः इसलिए महत्व नहीं दिया क्योंकि अनेक ान ातियाँ घुमंतू या खानाबदोश होती है। परंतु इस संबंध में डॉ.म ूमदार का कथन है कि इसका अभिप्राय यह नहीं कि ान ातियों का अपना एक सामान्य क्षेत्र नहीं होता। घुमंतू प्रकृति का होते हुए भी उनका एक विशिष्ट स्थान भी होता है।

डॉ.म ूमदार ने अपनी परिभाषा में एक ान ाति की प्रायः सभी विशेषताओं को स्पष्ट किया है। आपके ही शब्दों में-" ान ाति परिवारों या परिवारों के समूह का एक संकलन होता है, ि ासका एक सामान्य नाम होता है। ि ासके सदस्य एक निश्ि ात भू-भाग पर रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं और विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं तथा एक निश्ि ात एवं उपयोगी परस्पर आदान-प्रदान की व्यवस्था का विकास करते हैं।"[28] अतः स्पष्ट है कि ान ाति वह क्षेत्रीय-समूह है ाो भू-भाग, भाषा, सामा िक नियम और आर्थिक कार्य आदि विषयों में एक समानता के सूत्र में बंधा होता है।

इस परिभाषा को देखने के बाद यह ज्ञात होता है कि ान ाति- ाीवन और लोक ाीवन में समाविष्ट है। उनमें यादा अंतर नहीं दिखाई देता है। वे लगभग समान हैं क्योंकि लोक ाीवन भी वैसा ही है ैसे कि ान ातियों का ाीवन। लोक ाीवन उसे कहा ाता है ाो एक विशिष्ट आ ार-वि ार, संस्कृति-सभ्यता, रीति-रिवा ा, वेश-भूषा आदि से समाहित होता है।

किसी भी ान ाति की सभ्यता और संस्कृति का परि ाय हमें उनके साहित्य से मिलता है। इस साहित्य को लोक साहित्य भी कहा ाता है। ि ासके अंतर्गत लोक गीत, लोक नृत्य, लोक कथा आदि हैं और उनसे उनके ातीय गुण धर्मों का पता ालता है। लोक- ाीवन की सामूहिक ेतना, उनकी आशा-निराशा, दुःख-सुख

[28] आदिवासी सत्ता, ानवरी 2010-पृ.27

आशाएँ-स्वप्न और संघर्ष की मार्मिक अभिव्यं ना का ि त्रण हमें उनके लोक साहित्य में मिलता है। साथ ही त्योहारों, उत्सव और और संस्कारों के समय के हर्ष-विषाद के सुंदर ि त्र उपलब्ध होते हैं। वे प्राकृतिक ीवन के सहगामी हैं और उसी का नाम आदिवासी संस्कृति है। लोक-कथाएँ आदिवासी ीवन का महत्वपूर्ण अंग है। कहानी कहने की प्रवृत्ति का इतिहास उतना ही पुराना है, ि तना स्वयं मनुष्य की वाणी का। इन लोक कथाओं में आदिवासी ीवन का अंतरंग ालकता है।

ान ातीय लोगों का लोक- ीवन नृत्य, गीत और संगीत से परिपूर्ण है।

यह वह ादू है ि सके बल पर ये लोग ीवन की क्रूर विभीषिकाओं, क्षुधा-पिपासा की विडंबनाओं तथा अशिक्षा और अपेक्षा के घात-प्रतिघातों को भी छूमंतर करते आए हैं। ान ातीय लोगों के लोक गीत इन लोगों की ीवन-पद्धति और ातीय संस्कृति का सम्यक दर्पण है। ीवन में घटित होनेवाले सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, घात-प्रतिघात, हास्य-विनोद, संयोग-वियोग, आशा-निराशा, क्षोभ-विक्षोभ आदि के आकर्षक शब्द ि त्र इन लोक गीतों के दर्पण में साफ-साफ प्रतिबिंबित हैं।

सारांशतः यह कह सकते हैं कि ान ातीय ीवन का ि त्रण वह लोक ीवन से मिलता- ुलता है। दोनों में एक ही तरह की प्रथाएँ, रीति-रिवा ा और लोक-कथाएँ, लोक-गीत आदि का समाविष्ट है। वह लोक ीवन की तरह ीवन का भी अनिवार्य अंग बन ुके हैं।

1.8 लोक ीवन बनाम आं ालिकता

सामान्यतः अं ाल या आँ ाल का प्रयोग किसी क्षेत्र या ग्राम के सीमांत प्रदेश के लिए किया ाता है। अं ाल का पर्यायवा ी है अंग्रेज़ी का 'री ान'। अं ाल शब्द के साथ स्पष्ट होता है एक भू-खंड विशेष और उस 'खंड' विशेष का समग्र- ीवन, ो स्थानीय रंगों से बिल्कुल भिन्न प्रकार के ीवन-लक्षण का द्योतक है।

'आं ाल' मूलतः संस्कृत के 'अं ाल' से लिया गया है ो पाणिनीय व्याकरण के अनुसार 'अ- ा' धातु में अं ाल प्रत्यय लगाने से बना है। हिंदी राष्ट्रभाषा कोश में अं ाल शब्द का अर्थ "अं ाल-संज्ञा पुलिंग (संस्कृत) आं ाल,

पल्ला, साड़ी का छोर, देश का वह भाग या प्रांत ाो सीमा के पास हो, नदी के किनारे की भूमि, तट, किनारा या क्षेत्र"[29] इत्यादि दिया गया है। संस्कृत एवं हिंदी के प्रायः सभी शब्दकोशों में उपर्युक्त अर्थ ही दिये गये हैं। इस प्रकार दोनों भाषाओं में इस शब्द के अर्थ में साम्य है।

आं ालिकता का अर्थ बहुत से लोगों ने स्थानीय-रंगत से लिया है, किंतु यह भ्रम है। "आं ालिकता का अर्थ है क्षेत्र-विशेष के सत्य का उद्‌घाटन करता हुआ ाीवन, ाो किसी एक परिवेश विशेष नहीं वरन् उस खंड की समग्र क्षेत्रीयता का प्रतीक है।"[30] इस खास क्षेत्र के सामान्य ाीवन-सत्यों का अंतर या एकरूपता का निर्देशन, देश-काल, भौगोलिक स्थिति, रीति-नीति के मनोवैज्ञानिक रहस्य के बी ा स्थापित क्षेत्रीय ाीवन की स्वीकृति आं ालिकता को व्यक्त करती है।

एक विशिष्ट स्थान की भाषा, रीति-रिवा ा, वि ाार, भावों व कार्यों को आं ालिकता कहा ाा सकता है। अतः अब यह स्पष्ट है कि अं ाल शब्द का अर्थ किसी ऐसे भूखंड, प्रांत-भाग या देश विशेष से है, ि ासकी अपनी एक विशेष भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, भाषा और अपनी समस्याएँ हों। अपना एक ाीवित व्यक्तित्व हो और ाो सामान्य के अंदर से अपनी 'विशिष्टता' ाताता हो, बाहरी प्रभावों ने ि ासके 'वैशिष्ट्‌य' को समाप्त न कर दिया हो।

प्रत्येक अं ाल की अपनी एक विशिष्टता है, ि ासकी आत्मा की ालक 'आं ालिकता' शब्द में परिलक्षित होती है।

लोक- ाीवन कृत्रिम से दूर, सह ा व सपाट ाीवन शैली है। ाीवन में ाो कुछ सो ाा और किया ााता है, उसका प्रत्यक्षीकृत रूप लोक- ाीवन है। वस्तुतः ाो कुछ हमने सो ाा, किया और सहा, उसका प्रकट रूप हमारा लोक ाीवन है। लोक राष्ट्र की अमूल्य निधि है। हमारे इतिहास में ाो भी सुंदर ते ास्वी तत्व है, वह लोक में कहीं-न-कहीं सुरक्षित है। हमारी कृषि, अर्थशास्त्र, ज्ञान, साहित्य कला के नाना

---

[29] हिंदी राष्ट्रभाषा कोश, सं. श्रीवास्तव एवं ातुर्वेदी-पृ.129

[30] आं ालिकता और हिंदी उपन्यास, डॉ.नगीना ैन-पृ.5

रूप, भाषाएँ और शब्द के भंडार ीवन के आनंद पर्वोत्सव, नृत्य, संगीत, कथावार्ताओं, आ ार-वि ार सभी कुछ भारतीय लोक में ओतप्रोत हैं।

डॉ.नगीना ैन के अनुसार "आधुनिक ीवन को विज्ञान की उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैंःवे अं ालों (ग्रामीणां ालों) में पहुँ ाती हैं। परंतु अभी तक अं ाल के अछूतेपन या कौमार्य को पूर्णतः भंग नहीं कर सकी हैं। यहाँ प्रगति पहुँ ा रही है, किंतु परम्परा कायम है, विज्ञान प्रवेश कर ुका है पर अंधविश्वास समूल नष्ट नहीं हुआ है, शिक्षा पहुँ ा रही है, पर अज्ञान का कोहासा पूर्णतः छटा नहीं है, स्वार्थलिप्सा तीव्र हुई है।"[31]

इसका तात्पर्य यह है कि आधुनिक वैज्ञानिकता का प्रभाव आं ालिक ीवन पर उतना नहीं रह गया ितना कि होना ाहिए। आ ा भी वह अं ाल विशेष की कुछ रू ि याँ, संस्कृति आदि विद्यमान हैं।

अंततः यह कह सकते हैं कि आं ालिकता और लोक ीवन में कोई प्रमुख अंतर स्पष्ट नहीं होता है। यह भी किसी विशेष परिवेश और क्षेत्र के ीवन ित्रण का ही एक रूप है। ो कि लोक ीवन और आं ालिकता में दिखाई देती है।

1.9 लोक ीवन बनाम भूमंडलीकरण

हर युग के इतिहासकरों द्वारा एक नाम दिया गया है तो उस युग के सूत्रधार स्वयं भी अपने लिए कोई अ छा सा नाम ुन लेते हैं। नाम का यह ायन इस तरह किया ाता है मानो यह युग अतीत में गंभीर अर्थों में अलग हो। इस नामकरण द्वारा ाहाँ सामा िक वैधता हासिल की ाती है वही यह नाम व्यवस्था सं ाालन में भी सहायक होता है। आ ा के इस औद्योगिक क्रांति के युग को बहुतों ने 'भूमंडलीकरण' नाम दिया, तो कुछ ने 'वैश्वीकरण' का नाम। इस नाम के पीछे एक ही लक्ष्य प्रतीत होता है, वह है सारे विश्व को एक सूत्र में बांधना। िसका उद्देश्य स्पष्ट है कि विश्व भर के सारे गाँव, अं ाल, कस्बे, शहरों को समेट कर एक नये रूप को सामने लाना है।

---

[31] आं ालिकता और हिंदी उपन्यास, डॉ.नगीना ैन-पृ.53

भूमंडलीकरण को किसी सर्वसामान्य परिभाषा में नहीं बाँधा ा सकता। इसकी एक सुसंस्कृत सरल परिभाषा दी गयी है कि ‘तकनीकी और सं ार-क्रांति ने विश्व को समेटकर एक विश्वग्राम’ यानी ‘ग्लोबल विले ा’ में बदल दिया है। विश्वग्राम की परिकल्पना मार्शल मैक्कूहान की थी, लेकिन हमारे यहाँ इस अवधारणा के मूल स्वर पहले से ही विद्यमान हैं। ैसे कि लोक- ीवन में वैश्वीकरण के पहले आर्थिक समृद्धि का लाभ कामोबेश सभी वर्गों और समुदायों तथा देशों को मिलता था। वैश्वीकरण के आर्थिक लाभ मुख्य रूप से थोड़े से देशों और लोगों को मिल पाते हैं। लेकिन एक बात स ा है कि वैश्वीकरण के कारण आ ा का ग्रामीण, देश-विदेश की कृषि, वर्षा संबंधी ानकारी क्षणों में लेता है। वैश्वीकरण का प्रभाव ग्रामीण ीवन पर अधिक नहीं पड़ा।

हमारे मिथकों में अगर भूमंडलीकरण से प्रभावित आ ा हालात की कोई मिसाल मिल सकती है तो वह सिर्फ समुद्र मंथन की पुराणगाथा ही है, िसमें सभी पक्ष ुटे हुए थे और किसी को ठीक-ठीक नहीं पता था कि सुमेरू पर्वत से बनी उस विराट मथनी से क्या-क्या निकलेगा। लेकिन मंथन में शामिल होने के कारण वे सभी उन परिणामों का फल भोगने के लिए अभिशप्त थे।

लोक- ीवन में देखा ाए तो यह सही नज़र आता है, क्योंकि िस तरह से वे अपने ही समा ा और संस्कृति के आ ार-व्यवहारों का पालन करते हुए ीवन व्यतीत कर रहे थे, अ ानक उनके बी ा भूमंडलीकरण की छाया पड़ने लगी। िसके कारण उनके ीवन में परिवर्तन होने लगा और उसका फल आ ा सभी लोग भुगत रहे हैं।

दरअसल, भूमंडलीकरण उस सफर का नाम है ो उन्नीसवीं सदी के सातवें दशक में आधुनिकता ने शुरू किया था। ाब तक भूमंडलीकरण का यथार्थ अपने पूरे विस्फोट के साथ प्रकट नहीं हुआ था, विविधता और बहुलता को आधारभूत सिद्धांत मानने वाले िंतक किस्म-किस्म की आधुनिकताओं का विमर्श ालाने में लगे हुए थे। एज़ा ा अहमद अपने लेख में भूमंडलीकरण के बारे में कहते हैं कि

भूमंडलीकरण शब्द से इसकी रहस्यात्मकता को हटकार, इस रहस्यात्मकता के पीछे छुपी वास्तविक प्रवृत्ति को ठीक से सम ाना हमारा पहला काम है।

लोक ीवन का ो ेहरा है वह आ ा भी निर्मम, निष्कपट और बहुत ही पारदर्शी है। वह लोक ीवन को अपने शब्दों में दर्शाने का प्रयास करते हुए डॉ.भीष्म मखी ा कहते हैं-"लोक- ीवन सुदीर्घ परंपरागत पैतृक उत्तराधिकार में प्राप्त वह परंपरागत ीवन है, ो निसर्ग, सौंदर्य, प्रा ुर्य, सारल्य, त्याग, अध्यात्म, स्वाभाविकता आदि अलंकारों से सुशोभित है। इसमें किसी प्रकार का बाह्य प्रदर्शन नहीं है। निरंतर प्रवाहमान एवं गतिशील लोक- ीवन में श्रद्धा व विश्वास की भावना लोक के उत्सवों अनुष्ठानों तथा उसके विविध कार्य कलाप में स्पष्ट परिलक्षित होता है।"[32] अर्थात् लाक- ीवन में सरसता है, माधुर्य है। यह कृत्रिमता से दूर होता है, लोक श्रद्धा व विश्वास की व्यं ाना लोक क्रियाकलापों में देखने में आती है।

लोक ीवन में उसकी अपनी एक संस्कृति है, िसके कारण आ ा भी वह भिन्न प्रतीत होता है। लेकिन आ ा भूमंडलीकरण से सबसे अधिक खतरा लोक समा ा की सांस्कृतिक पह ान को है। प्रत्येक समुदाय की आपसी सांस्कृतिक भिन्नता को खारि ा तो नहीं किया ा सकता, कोई भी समुदाय यदि सां ो की इतिहास परंपरा और मूल्यांकन की धारणा से अपनी छवि निर्मित करता है तो उसके साथ एक पूरी सामा िक और नैतिक व्यवस्था भी रूपांतरित होती है। सू ाना क्रांतिपरक समा ा में उत्तर-रू ि़वादी नैतिक वस्तुपरकता के दावे को स्वीकारना भी संभव नहीं।

गिरीश मिश्र का कहना है कि-"यह भूमंडलीकरण का ामाना है। दावा किया ा रहा है कि उसके ब ़ते कदम राष्ट्रीय सीमाओं को मिटा देंगे, दुनिया को एकीकृत बा ार में बदलकर क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय संस्कृतियों, परंपराओं, रीति-रिवा ों और मिथकों को निष्प्राण कर देंगे। ... इतना ही नहीं, उसका साहित्य, उसकी विभिन्न विधाएँ और शैलियाँ गंभीर रूप से प्रभावित होंगी।"[33]

---

[32] डॉ. ंद्रभानु सीताराम सोनवणे, कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु-पृ.5
[33] आलो ाना, अप्रैल- ून-2002-पृ.81

इनका तात्पर्य यह है कि भूमंडलीकरण के फैलाव के कारण लोक ीवन का स्वरूप, उसकी स्वाभाविकता में परिवर्तन आ सकता है। िससे उसकी पह ान मिटने की संभावना है।

एक विश्वग्राम का स्वप्न हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देखा था। 'ग्राम स्वरा य' की बात करते हुए उन्होंने कहा था, "मैं नहीं ाहता कि मेरा घर ारों ओर से दीवारों से घिरा रहे, न मैं अपनी खिड़कियों को ही कसकर बंद रखना ाहता हूँ। मैं तो सभी देशों की संस्कृति का सं ार अपने घर में बेरोकटोक ाहता हूँ। पर ऐसी संस्कृति के किसी ारोके से मेरे पाँव उखड़ ाएँ, यह मु ो मं ूर नहीं।"[34]

गाँधी ने ग्राम ीवन व लोक ीवन को किसी भी तरह बदलने से इनकार किया है, क्योंकि वे उस लोक ीवन की संस्कृति को हमेशा के लिए बनाये रखना ाहते हैं।

अंततः कह सकते हैं कि भूमंडलीकरण की वैज्ञानिकता इतनी आक्रामक है कि वह हमारे घरों में िस तरह दाखिल हो ाता है, उस तरह औपनिवेशिक सांस्कृतिक मिशनरियाँ कभी नहीं हो सकती थीं। इसके अलावा न-संस्कृति और मनोरं न के वे माध्यम िनकी देहातों तक में पहले की तुलना में बहुत गहरी पहुँ है। भूमंडलीकरण के कारण विश्व के स्तर पर सभी संस्कृतियों, वि ारधाराओं, गतिविधियों, आ ार-वि ारों एवं सामा िक स्थिति आदि में खासा परिवर्तन आने लगा है। आ लोक ीवन में ो अपनापन है, उसकी अपनी संस्कृति, सभ्यता और सामा िक ीवन आदि पर भूमंडलीकरण का प्रभाव अधिक मात्रा में हुआ है, िसके कारण लोक ीवन में भी आवश्यक परिवर्तन हो रहे हैं।

---

[34] भूमंडलीकरण और मीडिया, कुमुद शर्मा-पृ.13

1.10 लोक ीवन बनाम आधुनिकता

सामान्य प्रयोग में 'आधुनिक' शब्द को बहुत दूर तक समय सापेक्ष मान लिया ाता है। "ि से हम आधुनिकता कहते हैं, वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंधविश्वास से बाहर निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया है। ... आधुनिकता वह है, ो मनुष्य की ऊँ ाई, उसकी ाति या गोत्र से नहीं, बल्कि उसके कर्म से नापता है। आधुनिक वह है, ो मनुष्य-मनुष्य को समान सम ाता है।"[35]

ब ान सिंह का यह कथन आधुनिकता की असली पह ान कराती है। वे उसको मूल उद्देश्य को स्पष्ट करना ाहते हैं। वह मनुष्य को एवं मानवता को महत्व देनेवाला ही आधुनिकता है।

नैतिकता, सौंदर्यबोध और आध्यात्म के सामने आधुनिकता कोई शाश्वत मूल्य नहीं है। वह कई ीज़ों का एक सम्मिलित नाम है। साक्षरता का सर्वव्यापी प्रसार आधुनिकता की सू ाना देता है। नगर-सभ्यता का प्राधान्य आधुनिकता का गुण है।

डॉ.नगीना ैन के अनुसार "आधुनिक ीवन को विज्ञान की उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैंःवे अं ालों (ग्रामीणां ालों) में पहुँ ाती रही है। परंतु अभी तक अं ाल के अछूतेपन या कौमार्य को पूर्णतः भंग नहीं कर सकी है। यह प्रगति पहुँ ा रही है, किंतु परंपरा कायम है, विज्ञान प्रवेश कर ुका है पर अंधविश्वास समूल नष्ट नहीं हुआ है, शिक्षा पहुँ ा रही है, पर अज्ञान का कोहासा पूर्णतः छटा नहीं है, स्वार्थलिप्सा तीव्र हुई है।"[36] दूसरी ओर शहर की भी भौगालिक सीमाओं मं बदलाव आया है। शहर में वैयक्तिक प्रवृत्तियाँ प्रबल हुई हैं। वहाँ वर्ग या धर्म का कोई महत्व नहीं है, वर्ग टूट रहा है, ातिगत संस्कार टूट रहे हैं। नगरीय महानगरी सभ्यताओं पर आधुनिकता का प्रभाव है।

---

[35] आधुनिक हिंदी आलो ाना के बी ा शब्द, ब ान सिंह-पृ.28

[36] आं ालिकता और हिंदी उपन्यास, डॉ.नगीना ैन-पृ.53

फिर भी आ ा कुछ गाँव अपनी लोक-संस्कृति भूलकर शहर हो गए हैं, वैसे ही कुछ शहरों की अपनी संस्कृति सुरक्षित है। संस्कृति वस्तुतः व्यक्ति और समा ा के मानसिक विकास का परि ाायक है। लोक ाीवन तो इसी संस्कृति का कुबेर है। लोक संस्कृति ान- ान के श्रम से सिंि ात होकर प्रकृति की गोद में पलती-पनपती रही है। मानव का मानव के प्रति सह ा प्रेम की लोक संस्कृति का साध्य रहा है। श्रम की पू ाा के साथ ही पारस्परिक प्रेम से भरी विश्व बंधुत्व की भावना हमारे लोक ाीवन का मुख्य आधार रही है। वेद प्रकाश अमिताभ गवेषणा के अपने लेख में लिखते हैं-"लोक ाीवन के सांस्कृतिक मूल्यों का आधुनिक ाीवन के स्वस्थ और उदात्त मूल्यों से कोई विरोध नहीं है। आधुनिकता से ाुड़े रूि विरोध, वैज्ञानिक तार्किकता, सामूहिक संघर्षशीलता, मनुष्यता को ब ााये रखने का आग्रह आदि अनेक वि ाारों से लोक संस्कृति का कोई विरोध नहीं दिखायी देता है।" लोक ाीवन में ाो सुंदर है और आधुनिकता का संस्पर्श ि ान ाीज़ों को सुंदर बना सकता है, वह एक-दूसरे से पृथक होने का आभास कराते हैं।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में संवेदनशून्यता ब ़ रही है। सामाि ाक सरोकारों में कमी दिखाई पड़ती है। ऐसा लगता है रूि यों से हमें ब ाना है और संस्कृति को ब ााना भी है। इतिहास यह ारूर बताता है, लोक ाीवन प्रारंभ से ही संघर्षशील रहा है। लोक की परंपरा से हम लगातार सीखते ााते हैं। लोक ाीवन, लोक भाषा स्वयं गतिमान है। हमारी ि ांता के बिना भी लोक संस्कृति अपनी सुरक्षा करने में स्वयं समर्थ रही है।

आधुनिक समा ा में उन्मुक्तता होती है। उस समा ा के लोग अन्य समा ाों के लोगों से मिलने- ाुलने में नहीं घबराते, न वे उन्नति का मार्ग खास ाातियों और खास गोत्रों के लिए सीमित रखते हैं।

परंपरा और आधुनिक ोतना का यह समन्वय भी लोक ाीवन की शक्ति है। लोक की ाड़ें अतीत में होने के बाद भी वह अपने समय को, अपने वर्तमान को

अभिव्यक्त करने के लिए स ोत रहती है। निरंतरता का यह अद्‌भुत सामर्थ्य उसे आधुनिक समस्याओं से ोड़ता है।

अंततः यह कह सकते हैं कि आधुनिकता के कारण लोक ीवन में खास परिवर्तन होने लगा है, इसके साथ ही अपनी संस्कृति और अपनी रू ि़यों के वि ालन का आभास भी होने लगता है। वैसे तो आधुनिकता से ि ातना लाभ मिला है, उतना ही शायद लोक ीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन भी हुआ हो। यह आधुनिकता, लोक ीवन से ही उत्पन्न हुई है और उसी में विलीन भी हो रही है या होगी। आधुनिकता के कारण लोक ीवन में ोतना एवं परिवर्तन के साथ समस्याएँ भी ुड़ती ाली ाा रही है।

निष्कर्ष

लोक मानव समा ा का वह वर्ग है, ाो बौद्धिक व अभि ाात्य से असम्पृक्त 'एथनिक' व सह ा ीवन ीने का अभ्यस्त है। इनका लोक में प्र ालित रीति रिवा ाों, अंधविश्वासों, लोक-साहित्य प्रगति के प्रति गहरा लगाव है। 'लोक' वह है ाो सह ा, साधारण और अकृत्रिम ीवन व्यतीत करता हुआ अपनी संस्कृति को ब ााये रखने वाला समुदाय ही 'लोक' माना गया है।

लोक बहुत पुरानी अवधारणा है, वेद काल में भी इसका प्रयोग किया गया है। वेद और शास्त्रों में इसका अर्थ व्यापक रूप से लिया गया था। ऋग्वेद में इसे ब्रह्मांड व विश्व के संदर्भ में लिया गया था। फिर भी लोक अपने आप में एक विशिष्ट पह ाान बनाये रखता है।

'लोक ीवन' को वहाँ देख सकते हैं ाहाँ आ ा भी आधुनिकता से दूर, अपनी संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवा ा, रू ि़याँ, अंधश्रद्धा एवं लोककलाओं को बनाये रखना ही लोक ीवन है। अपने ीवन में कृत्रिमता को न अपना कर सह ाता से ीवन यापन करना ही लोक ीवन कहा ाा सकता है। लोक ीवन का ाो सीमित अर्थ था वह आ ा विस्तृत अर्थ में बदल गया और वह विश्वव्यापी बन गया है। आ ा लोक ीवन, अभि ाात्य वर्ग से पृथक होता दिख रहा है। दोनों मं अंतर होने

के बाव ूद उनमें संबंध स्थापित किये ाा सकते हैं। ान ााति ीवन उतना ही पुराना है ि ातना कि लोक ीवन। इनमें अधिकतर सभ्यता दृष्टिगो ार होता है। आं ालिकता का दूसरा रूप लोक ीवन को ही मान सकते हैं। क्योंकि अं ाल विशेष की ाो संस्कृति है, उनकी अपनी एक विशिष्ट ीवन पद्धति है। वह लोक ीवन से पृथक है। आ ा लोक ीवन में कुछ ाो परिवर्तन हो रहा है, उसका मूल कारण आधुनिकता का प्रभाव और उससे उत्पन्न हुई भूमंडलीकरण का वैज्ञानिक प्रभाव है। इनके कारण लोक ीवन में ाो सह ा संस्कृति व ीवन मूल्य रहे हैं उनमें आवश्यक परिवर्तन हो रहे हैं। इनसे हम यह सम ा सकते हैं कि आ ा लोक ीवन का परिवेश विस्तृत एवं विश्वव्यापी बनता ाा रहा है।

* * *

द्वितीय अध्याय

सं ीव : व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय

सं ीव : व्यक्तित्व और कृतित्व

2.0 विषय प्रवेश

2.1 ान्म

2.2 माता-पिता

2.3 ब ापन

2.4 शिक्षा

2.5 पारिवारिक ीवन

2.6 वैवाहिक ीवन

2.7 व्यवसाय

2.8 र ानाकार सं ीव

2.9 पुरस्कार एवं सम्मान

2.0 विषय प्रवेश

समकालीन हिंदी साहित्य ागत् में वरिष्ठ कथाकार के रूप में सं ीव को ाना ाता है। सं ीव समा की परंपरागत समस्याओं को आ के संदर्भ में देखने और भविष्य के लिए पहले से ही अपने पाठकों को ेतावनी देनेवाले असीम संभावनाओं से युक्त कथाकार हैं। मानवीय उत्पीड़न से प्रेरित होकर ये सोद्देश्य साहित्य का सृ न करते हैं। सं ीव समस्या को यादा व्यापक, प्रासंगिक और औ ित्यपूर्ण बनाकर उभारने में दक्ष हैं। सं ीव की संवेदनशीलता सामा िक प्रसंगों में ही प्रभावशाली ंग से व्यक्त होती है। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में लेखन किया है ैसे, उपन्यास, बाल उपन्यास, कहानी, नाटक तथा यात्रा वृत्तांत आदि। इनकी र ना में निम्नमध्यवर्गी आदिवासी एवं शोषित वर्ग का ही ित्रण अधिक मिलता है। क्योंकि उन्हें निम्न मध्यवर्गीय मनुष्य के आ रण का गहरा अनुभव है, साथ ही पिछड़ी ातियों के प्रति उनका मार्मिक दृष्टिकोण है। सं ीव के उपन्यासों का कथ्य मौलिक नहीं वरन् संभावनाएँ लेकर अवतरित होता है। वे कथ्य में नवीनता ही नहीं ूँ ते हैं, उसकी व्यापक धरातल पर अभिव्यक्ति करते हैं। उनके उपन्यासों का कथ्य पिछड़े अं लों की त्रासदी, न ातीय अभिशप्त ीवन, औद्योगीकरण के तहत होनेवाले विस्थापन, दलित ेतना, लोक ीवन और लोक संस्कृति से ुड़े विभिन्न संदर्भों को उ ागर करता है। वे खुद गाँवों और कस्बों की िंदगी का एक ऐसा हिस्सा रहे हैं ो परिवर्तन को महसूस करता रहा है। हमें उनकी र ना प्रक्रिया के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व के बारे में भी ानना आवश्यक है।

2.1 न्म

सं ीव का न्म 06 ुलाई, 1947 में उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर िला, बाँगरकला गाँव में हुआ। उनका न्म एक बेहद गरीब परिवार में हुआ है। एक ऐसे श्रम ीवी परिवार में, हाँ साहित्य से दूर-दूर तक कोई लेना देना नहीं रहा।

अपनी न्म तिथि के बारे में स्वयं कहते हैं-" न्मतिथि मेरे ैसे परिवार के लिए कोई महत्व की बात नहीं थी, अतः पाँ वीं कक्षा में नाम लिखने के लिए हेडमास्टर साहब को ही आविष्कृत करनी पड़ी न्मतिथि 6 ुलाई, 1947."[1]

उनके ब पन का नाम था रामसं ीवन प्रसाद। उनको सं ीव नाम देने का क्षेय कथाकार कमलेश्वर को ाता है। उन्होंने अपनी पहली कहानी रामसं ीवन प्रसाद के नाम से 'सारिका' में भे ी थी, कमलेश्वर ने कहा कि सं ीवन क्या करोगे, सं ीव ही रहने दो। तब वे इसी नाम से ाने- ाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में एक प्यारा नाम है 'सं ीव'। िन्हें गाँव, पड़ोस और संबंधी लोग आ भी सं ीवन, राम स ीवन कहकर पुकारते हैं।

सभ्य समा उन्हें राम स ीवन प्रसाद कहता है। प्रसाद नाम इनके अग्र 'राम ीवन प्रसाद' से आकार ुड़ा है।

2.2 माता-पिता

सं ीव की माता का नाम ायरा ीदेवी और पिता श्री रामशरण प्रसाद थे। माता अशिक्षित थी। पिता साक्षर थे, लेकिन धार्मिक ग्रंथ प ने भर के लिए। ायराम ीदेवी तथा रामशरण प्रसाद ने ार ब ों को न्म दिया, िनमें सं ीव सबसे छोटे हैं। "पिता की ार संतानें थीं। सबसे बड़ी बहन पराना देवी, ो विधवा हो ुकी है और अपने ब ों के साथ रहती है। बाकी ब े हम तीन भाई-सबसे बड़े भाई राम ीवन प्रसाद, सुल्तानपुर में सूरापुर कस्बे में इंटर कॉले में फि िक्स के अध्यापक थे। उनसे छोटे रामशिरोमणि, ौथी क्लास तक प े थे। अतः अंत तक गाँव में ही खेतीबाड़ी करते रहे। अब मेरे दोनों बड़े भाई दिवंगत हो ुके हैं।"[2] सं ीव और उनके भाई दोनों उ शिक्षित हैं। इनके व्यक्तित्व पर उनके माता-पिता का प्रभाव रहा है।

---

[1] सर्कस, सं ीव (अपनी बात)-पृ.2

[2] सामा िक यथार्थ और कथाकार सं ीव, शहा ाहान मणेर-पृ.3

2.3 ब ापन

सं ीव का ब ापन गाँव के परिवेश में ही बीता था। ब ापन में वे दो व्यक्तियों से डर रहता था, एक डर काकी का, दूसरा भैया का। वे ब ापन में खेलना पसंद करते थे। सं ीव को ब ापन से ही खेलने की, परखने की, किसी भी ीज़ को ाँ ाने की आदत थी। ब ापन में वे नाक ुआने, मक्खियों की भिनभिनाहट से पूर्ण, धूल-गंदगी में डोलते एक ऐसे ब े थे, िसके लिए पैंट, भगवे, प ़ाई-लिखाई की कोई समस्या नहीं थी तब। वे कहते हैं-"मैं उन दिनों नंग-धडंग सियारों, नीलगायों, लोमड़ियों, गिलहरियों को ि ज्ञासू नज़रों से ाँ ाता-परखता, भैंस की पीठ पर बैठकर ारागाहों की सैर किया करता। केले की छाल की पनही, पलास के पत्तों का टोप, कूंई की कंठी, सोते का पानी आदि से खेलते हुए मस्ती भर ीवन ब ापन में बिताया।"[3] सं ीव को गरीबी का सामना ब ापन से करना पड़ा है। उनके पिता और काका कुल्टी में मज़दूर थे। उन्हें कम आय में संतुष्ट होना पड़ता था। रहने की व्यवस्था भी ठीक नहीं थी। घर में बि ाली, पानी और शौ ालय नहीं हुआ करते थे। इनका ब ापन बहुत ही गरीबी में गु ारा।

2.4 शिक्षा

सं ीव लगभग तीन- ार वर्ष की उम्र में अपने गाँव से काका के साथ इंडियन आयरन राड स्टील कंपनी के पिछड़े औद्योगिक कुल्टी में आये। वहाँ उन्होंने स्कूल की शिक्षा प्रारंभ की। प ़ाई के साथ-साथ हनुमान ालीसा, देवी-देवताओं की स्तुतियाँ, राम ारितमानस, गीता, प्रेम सागर, सुख-सागर आदि धर्मग्रंथों से आदर्श भक्ति द्वारा समस्याओं के समाधान की तलाश और ासूसी उपन्यासों से नायकत्व गुणों को अ ि ात किया।

सातवीं कक्षा में उन्होंने अपना पहला भाषण गाँधी ी पर दिया। आगे वे सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए स्कूल में प्रथम आया करते थे। कॉले ा में अपनी

---

[3] सर्कस, सं ीव (अपनी बात)-पृ.3

इ छा के विरुद्ध उन्हें विज्ञान का छात्र बनना पड़ा। उनकी शिक्षा बी.बी. कॉले ा, आसनसोल और कलकत्ते में संपन्न हुई। साहित्य के प्रति उनका मोह बना रहा। लेकिन उनके भैया उन्हें डॉक्टर या इं ीनियर बनाना ाहते थे। वे यह सब तो नहीं बन पाये किंतु सत्रह वर्ष की आयु में ही डिस्टिंक्शन के साथ बी.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की। फिर भैया ने उन्हें ए.एम.आई.ई. प ़ने के लिए दिल्ली भे ा। वह विज्ञान के विद्यार्थी होने के बाव ूद हिंदी में साहित्य-सृ न करते रहे। इसके अलावा अंग्रेज़ी, बांग्ला, उर्दू और न ातियों के कुछ बोलियों का ज्ञान भी उन्होंने हासिल किया।

2.5 पारिवारिक ीवन

सं ीव के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमज़ोर थी। उस समय सामंतों द्वारा गरीबों का शोषण भी हो रहा था। इस कारण सं ीव के परिवार वालों को अपनी मातृभूमि को छोड़ना पड़ रहा था। सं ीव के परिवार न के पास ीवन यापन के लिए डे ़ बीघा उप ाऊ और ार बीघा ऊसर भूमि थी। ि स पर परिवार के बी ा-प ीस सदस्य ीवन यापन करते थे। इनका पारिवारिक पेशा-खेती करने के अलावा दशहरे के अवसर पर देवी-देवताओं की अनग ़ मूर्तियाँ बनाना था। इनके अलावा कभी-कभी दूसरों के यहाँ मेहनत म ूरी भी करनी पड़ती थी।

सं ीव के परिवार के बारे में रामप्यारे प्र ापति कहते हैं-"परिवार की स्थिति बहुत अ छी नहीं थी। परिवार न तंगहाली में किसी तरह ीवन काट रहे थे, सं ीव ने शिल्पी ाति कुम्हार के यहां न्म लिया। उनके पिता के समय से मिट्टी का कार्य करना बंद हुआ। इसके बाबा-आ ा उसी मिट्टी के कार्य से ीवन यापन करते थे।"[4]

सं ीव अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। सबसे बड़ी बहन परानदेई थी। बड़े भाई का नाम श्री राम ीवन प्रसाद तथा उनसे छोटे भाई का नाम श्री राम शिरोमणी था।

---

[4] पाखी, सितंबर 2009-पृ.107

2.6 वैवाहिक ीवन

सं ीव का बाल विवाह हुआ था। विवाह के समय सं ीव की आयु 10 वर्ष थी और उनकी पत्नी प्रभावती ी की आयु लगभग 12 से 15 वर्ष थी। सं ीव के विवाह के बारे में रामप्यारे प्र ापति लिखते हैं-"सं ीव का विवाह हिंदूरीति वाले मंडप में नहीं हुआ था। केवल एक बांस सं ीव के दरवा े गड़ा था। वहीं सं ीव का और प्रभावती का परिणय संस्कार हुआ था।"[5]

यह ऐसा समय ाब वर-वधू दोनों को पता नहीं ाला कि उनका विवाह कैसे हुआ। बारात दुल्हन के घर से निकली थी। दुल्हन का घर सं ीव के घर से 37 कि.मी. दूर है।

सं ीव की पाँ ा संतानें हुईं। एक पुत्र संतोष और मंगू, इंदू, अं ू और अनीता ार बेटियाँ हैं।

सं ीव की पत्नी पू ा-अ ना करनेवाली है। यह सं ीव के स्वभाव की एकदम विपरीत थी। अपने वैवाहिक ीवन के बारे में सं ीव कहते हैं-"वैवाहिक ीवन बहुत अ छा न रहा। मैं लगभग तनहाइयों में ीता रहा। ये भी तो नहीं ठीक कि हर दर्द बता दें कुछ दर्द कले े से लगाने के लिए है।"[6]

उपर्युक्त कथन से पता ालता है कि सं ीव का पारिवारिक ीवन बहुत अ छा नहीं रहा। पत्नी केवल ौथी कक्षा पास थी। उनकी पत्नी कभी सं ीव की र नाओं पर राय नहीं दे पाती थीं। इतना सब होने के बाव ूद दोनों के बी ा एक केमिस्र्टी बन गई थी। इस बारे में नरेन लिखते हैं-"मैं एक तथ्य को खूब गहराई से रेखांकित करना ारूरी सम ाता हूँ कि पति-पत्नी के बी ा पूरी तरह वै ारिक वाइब्रेशन के न होने के बाव ूद दोनों के बी ा कुछ अनोखे किस्म का लगाव है कुछ वि ात्र किस्म की 'केमिस्ट्री' काम करती है दोनों के बी ा। ाल्द ही साठ को छू लेने

---

[5] पाखी, सितंबर 2009-पृ.107

[6] सामा िक यथार्थ और कथाकार, डॉ.शहा ाहान मणेर-पृ.260

की ओर अग्रसर दोनों प्राणी संभवतः अपने स्टाइल में एक दूसरे को प्यार करते हैं।"[7]

इस तरह सं ीव और प्रभावती ी अपना ीवन सुखी तो नहीं लेकिन मिल ुल कर बिताते आए हैं।

2.7 व्यवसाय

सं ीव ने वी.एस.सी. पास कर ली, लेकिन नौकरी उन्हें आसानी से नहीं मिली। ि ास तरह ि ांदगी में अन्य कारणों से संघर्ष करते रहे उसी तरह उन्हें नौकरी के लिए भी संघर्ष करना पड़ा। वे अपने आरंभिक संघर्षपूर्ण दिनों के बारे में बताते हुए कहते हैं-"साइंटिस्ट बनने के लोभ में इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी, कुल्टी पश्चि ाम बंगाल में असिस्टेंट केमिस्ट की नौकरी ॉईन की, बाद में यह मूर्खता ैसी ही लगी। कारण सारा कुछ रुटीन ॉब था। 1971 में यह लोभ दूसरी बार प्रकट हुआ ाब मैंने AIC की परीक्षा पास की उसका भी कोई बौद्धिक और आर्थिक लाभ नहीं बन पाया।"[8]

इतनी मेहनत के बाव ूद सं ीव अपने घर को ालाने के लिए धना ान नहीं कर पा रहे थे। इसलिए उन्हें नौकरी के अलावा भी कुछ कार्य करने पड़े। वे हर काम करते हैं। इस बारे में सं ाय लिखते हैं-"वैसे यह आदमी कुछ भी कर सकता है। किसी बीमा कंपनी की ऐ ोंसी ले-ले-एक ामाने में इसने ए ोंसी भी ली थी और बीमा कंपनियों के कु ाक्र पर एक कहानी लिखकर छपवा दी तो ए ोंसी छूट गयी। यह कोई छोटा-मोटा बि ानेस कर सकता है। एक ामाने में यह आदमी बहुत अ छा ट्यूटर हुआ करता था। सब सब ोक्ट प ़ाने वाला, पहले द ों से लेकर स्नातक स्तर तक का साहित्य, गणित, विज्ञान, सामान्यज्ञान, करेंट अफेयर्स, अंग्रेज़ी-हिंदी-बंगला-संस्कृत सब कुछ ठूंस देता था ब ाों के दिमाग में।"[9]

---

[7] वागर्थ से वि ाय बहादुर सिंह, अगस्त 2004-पृ.58

[8] सामा िक यथार्थ और कथाकार सं ीव, डॉ.शहा ाहान मणेर-पृ.260

[9] कथाकार सं ीव, सं.गिरीश काशिद-पृ.27

सं ीव इंडियन ऑयरन एंड स्टील कंपनी में 1965 से लेकर कंपनी बंद होने तक (2003) केमिस्ट इन- ा र्ा के पद पर कार्यरत थे। 2003 में कंपनी बंद होने के बाद स्वे छा सेवानिवृत्ति लेनी पड़ी। उसके बाद दिल्ली आकर 'रे माधव प्रकाशन' से ुड़े। 2007 से 'हंस' पत्रिका के कार्यकारी संपादक के रूप में कार्यरत हैं। दिल्ली में होने पर भी दिल्ली की ामक-धमक वाली साहित्यिक दुनिया से दूर सृ ानरत हैं। अभावों में ीनेवाला यह र ानाकार अपने साहित्य द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में ुटा हुआ है।

2.8 र ानाकार सं ीव

हर र ानाकार की तरह सं ीव के र ाना ीवन का आरंभ कविता से हुआ। यह शुरुआत स्कूली ीवन में हुई। इस विषय में सं ीव कहते हैं-"वह सन् 1955 था, मैं छठीं कक्षा का छात्र था। पहली र ाना एक कविता थी 'ड्रील' पर पुरस्कार पाने के लिए लिखी थी। बाद में 'अंताक्षरी' के लिए कविताएँ लिखीं। प्रतियोगिताओं में ईनाम बटोरे। पहली कहानी 'परिवर्तन' थी, एक हस्तलिखित पत्रिका 'पल्लव' के लिए। बड़ी पत्रिकाओं में पहली कहानी 'किस्सा एक बीमा कंपनी की ए ेंसी का' थी ो सारिका नवलेखन अंक अप्रैल 1970 में प्रकाशित हुई थी।"[10] ब ापन में सं ीव पर प्रेम ंद, पंत और सुदर्शन का प्रभाव रहा।

सं ीव का लेखन वं ाित वर्ग के लिए है। सं ीव के पात्र हाशिए के हैं। उनकी र ानाओं में सामा िक, आर्थिक, धार्मिक उत्पीड़न, अमानवीयता के खिलाफ आवाज़ मुखर हुई है। सं ीव मार्क्सवादी तो हैं, पर पार्टी के निर्देशों पर कभी लेखन नहीं करते। लेकिन मार्क्सवादी वि ारों के प्र ार के लिए लगातार कार्यरत हैं। वे अपनी पार्टी की आलो ाना करते नज़र आते हैं। सं ीव लेखनी द्वारा अपना संघर्ष मरते दम तक ारी रखना ाहते हैं। वे कहते हैं-"एक संघर्षरत योद्धा खून के आखिरी कतरे तक डटा रहता है।"[11]

---

[10] सामा िक यथार्थ और कथाकार सं ीव, डॉ.शहा ाहान मणेर-पृ.265

[11] कथाकार सं ीव, गिरीश काशिद-पृ.29

सं ीव की दृष्टि गाँव की ओर गहराई से गई और गाँव की लगभग सभी समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों में अंकित कर दिया है। सं ीव ने बहुत सारी कहानियाँ भूमि संबंधों को लेकर लिखीं। अपनी कहानियों के द्वारा वे लिखते हैं कि ामीन से लेकर किस तरह परिवार और आपसी भाई ारा टूटता है। कैसे सीमित किसान भूमिहीन हो ाते हैं और कैसे पुलिस, थाना, प्रशासन सभी ामींदार के गुलाम हो ाते हैं। उनकी अधिकतर कहानियाँ इसी कड़वे स ा को उद्घाटित करती हैं। वस्तुतः ये कहानियाँ आज़ादी के बाद के धधकते खेत के ीवंत दस्तावे ा हैं।

सं ीव की कहानी संग्रह 'तीस साल का सफरनामा' 1981 में दिशा प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस कहानी-संग्रह में कुल नौ कहानियाँ हैं। संग्रह की पहली कहानी 'अपराध' है। 'अपराध' बत्तीस पृष्ठ की लंबी कहानी है। यह कहानी 'सारिका' के सन् 1980 अंक में टाइम्स ऑफ इंडिया, सारिका सर्व भाषा कहानी प्रतियागिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त है।

'अपराध' कहानी में नक्सली समस्याओं का ित्रण हुआ है। यह कहानी इस धारणा को ध्वस्त करती है कि नक्सली अपराधी हैं। यह कहानी समा ा में पनप रही भ्रष्ट-व्यवस्था का भंडाफोड़ करती है। इस कहानी के बारे में रविभूषण कहते हैं- " ाो सत्ता और व्यवस्था में है और उसके साथ हैं, वही सबसे बड़ा अपराधी है। स्वतंत्र भारत में हिंदी की यह पहली कहानी थी, ितने स्पष्ट और दो टूक स्वरों में वास्तविक अपराधी को सामने रखा।"[12]

सं ीव की 'तीस साल का सफरनामा' कहानी में आज़ादी के तीस बाद के बाघ के भारतीय गाँवों की हालत हमारे सामने आती है। 'दो बीघे ामीन' कहानी भूमि समस्या से संबंधित है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि आ ा के सभी संबंध अर्थहीन हैं। हर व्यक्ति इससे अपना मतलब यो ाना ाहता है। दूसरे के हित-अहित की िंता उसे नहीं है। विशेषकर ग्रामीण,

[12] पहल, सं.ज्ञान रं ान, फरवरी 2000-पृ.12

ामींदार, भगत ैसे छोटे किसानों का भूमि को हड़पने का हर संभव प्रयत्न करते हैं।

'पिशा ा' कहानी भी भूमि समस्या को लेकर ही लिखी गयी है। 'भूखे रीछ' कहानी में म ादूरों के ीवन के कष्टों और अंतर्विरोधों का ित्रण किया गया है। मैने ामेंट म ाबूर, ला ार और गरीब इन्सान की भूख का फायदा उठाकर उनके श्रम का शोषण करता है।

सं ीव ने केवल समस्याप्रधान कहानियाँ ही नहीं लिखीं बल्कि प्रेम से संबंधित कहानियाँ भी लिखीं हैं। उनमें मुख्यतः ' ीवन के पार' कहानी है। िासमें एक आदिवासी के प्रेम का वर्णन है। 'सीपियों का खुलना' एक विकल प्रेम कथा है। इस कहानी के माध्यम से सं ीव ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि आर्थिक अभाव के कारण आ ा के प्रेम संबंध टूटते ाा रहे हैं। आ ा के वर्तमान समय में बेरो ागारी की समस्या भयंकर रूप से तांडव कर रही है। इसी समस्या को लेकर सं ीव ने कुछ कहानियाँ लिखी हैं। ' ाकरी' कहानी वर्तमान युग के प ़े लिखे होनहार एवं शिक्षित बेरो ागार युवकों के संघर्ष की यथार्थपूर्ण कथा है। भूमिका कहानी बेरो ागार युवाओं की कहानी है। सं ीव ने नारी समस्याओं को लेकर भी कुछ कहानियाँ लिखीं। 'आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासी महिला का दमन ित्रित किया गया है। इस कहानी का आशय है कि समा ा में अकेली असहाय औरत को ाब सामूहिक सहायता मिलती है तब वह अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने में समर्थ हो ाती है। ' ासी बहुत' कहानी में नारी शोषण और असहाय-नारी के ीवन और पुरुषों के अधिकार को दिखाया गया है। 'संतुलन' कहानी स्त्री की स्वाभिमान और व्यक्तित्व निर्माण पर आधारित है।

आ ा का युग परिवर्तनगामी हे और यह ाहता है कि हर एक विषय में यह परिवर्तन अवश्य हो ााय। इसीलिए आ ा पारिवारिक और मानवीय संबंधों में परिवर्तन आ रहा है। यह ऐसा परिवर्तन है, िासका परिणामस्वरूप परिवार में और मानवीय संबंधों में दरार उत्पन्न हो रहे हैं। 'माँ' कहानी में मानवीय रिश्तों की

पड़ताल है। यह कहानी एक माँ के ीवन के मार्मिक पक्ष को उद्घाटित करती है। सं ीव ने बा ारवाद की समस्याओं पर कहानियाँ लिखी हैं।

सं ीव अपनी कहानियों के बारे में कहते हैं-"कहानी मेरे लिए मौ ा-मस्ती का अंग नहीं है ो गुदगुदा सके। हाँ ख्म और फफोले हैं, वहाँ सो ा को भटकाना मैं घन्य अपराध मानता हूँ। अतः उस तरह के अफ़ीम के व्यापारियों से हमारी राह अलग है।

अगर ख्म रिसते हैं तो इस हकीकत को छुपाना, कराह और आक्रोश के कष्ठस्वर को रोकना, आत्मघात और कायरता है। इसीलिए निदान के लिए इसी तरह के तर्कसंगत प्रयासों के ुबान देना मैंने अपना फ र् सम ा है।"[13]

इनकी कुछ कहानियाँ इस प्रकार हैं-गोलेक, टीस, धावक, किस्सा एक बीमा कंपनी की ए ेंसी का, बा ़, प्रेम मुक्ति, फुटबाल, पुन्नी माटी, ब नशा पड़ता है, कदर, कठपुतली आदि।

सं ीव के उपन्यास मूलतः पिछड़े, अपेक्षित, व र्ित क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा को वाणी देते हैं। उनके उपन्यास ग्रामीण आं ालिक, मेहनतकश, उपेक्षित तथा शोषित वर्ग की कहानी प्रस्तुत करते हैं। एक तरह से उनके उपन्यास प्रेम ंद, रेणु की विरासत को वर्तमान संदर्भों में निष्ठा से आगे ब ़ाते हैं। इनके उपन्यास परंपरा का पिस्ट पोषण नहीं करते युगीन परिप्रेक्ष्य में उसका मूल्यांकन करते हैं। उनके अंदर की लोकधर्मी कलाकार के त्रासद ीवन के पीछे स्थित कुटिल सादिशों की पोल खोलकर बुनियादी तथ्यों का उद्घाटन करते हैं। फिर ाहे पिछड़ा अं ाल हो, सर्कस की दुनिया हो, कोयलां ान हो, न ातीय ीवन हो या लोक कलाकार का ीवन। सं ीव के अब तक प्रकाशित 'किशनग ़ के अहेरी' (1984), 'सर्कस' (1984), 'सावधान! नी े आग है' (1986), 'धार' (1990), 'पाँव तले की दूब' (1995), ' ंगल हाँ शुरू होता है' (2000), 'सूत्रधार' (2002) और 'आकाश ंपा' (2008) इन उपन्यासों के आधार पर इसे परखा ा सकता है।

---

[13] सं ीव की कथा-यात्रा, पहला पड़ाव-सं ीव-पृ.10

'किसनग ़ के अहेरी' सं ीव का पहला उपन्यास है। यह एक लंबी कहानी है, िसे उपन्यास का रूप दिया गया है। इस उपन्यास में भारत के पिछड़े अं ालों में व्याप्त शोषण का भयानक रूप और संघर्षमय ीवन आया है। पूं ीपतियों द्वारा निम्न वर्ग का शोषण अत्या ार का ित्रण इस उपन्यास में दिखाई पड़ता है। स्वतंत्रता के बाद भी उनके ीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। वे आ भी सामा िक विषमता के कारण निम्न स्तर की िंदगी ी रहे हैं। यह उपन्यास यह प्रश्न उठाता है कि-"आज़ादी किसके लिए-कैसी आज़ादी? उनके लिए ो महलों में रहे हैं, या उनके लिए ो दोहित और शोषित हैं।"[14] रा नीति, पूं ीपतियों द्वारा किया गया शोषण, धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास, अज्ञान, पिछड़ापन, आर्थिक विषमता, सांप्रदायिकता आदि के कारण किसनग ़ ग्रसित होता है। इनसे मुक्ति दिलाने के प्रयास में ाय और ाँदनी अपना सर्वस्व खो बैठते हैं। ाय की हत्या की ाती है। ाय के संघर्षमय ीवन का यथार्थ ित्रण सं ीव ने किया। सं ीव इस उपन्यास द्वारा सामंती मानसिकता, ाति भेद आदि का यथार्थ ित्रण करते हैं।

सं ीव का दूसरा उपन्यास 'सर्कस' है। भारतीय सर्कस के सौ साल पूरे होने पर सं ीव ने 'सर्कस' उपन्यास लिखा। इस उपन्यास के माध्यम से पूरे भारत का ित्र हमें सं ीव दिखाते हैं। इसमें उपेक्षित कलाकारों की व्यथा और सर्कस की अंदरूनी दुनिया की वास्तविकता का ित्रण हुआ है। उपन्यासकार ने कड़ी मेहनत से पूं ीवादी व्यवस्था, सर्कस मालिकों की कुटिलाएँ, कलाकारों की उपेक्षा, शोषण उनके प्रति विषमता की त्रासदी को गहराई से रेखांकित किया है। सर्कस के ानवर ही नहीं, कलाकार भी सर्कस के पिं रे से बाहर निकलना ाहते हैं। वे कई सालों से सर्कस में काम तो करते हैं, लेकिन अंततः अपनी इस बंदित ीवन से घृणा करने लगते हैं। इस उपन्यास की मुख्य पात्र ' ारना' है। ' ारना' पिता की असहमति के बाव ूद सर्कस में आती है। ारना यहाँ की कुटिलताओं, कलाकारों के प्रति मालिकों का व्यवहार और शोषण आदि को देखकर वह कुंठित हो ाता है। अंत में पिं ाड़े से

[14] किशनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.125

मुक्ति पाकर वह अपनी पसंद की ि ंदगी ीना ाहती है। ि त्रकार विकास से शादी करती है, लेकिन वहाँ पर भी उसका मोहभंग होता है। ारना से मुख ीं बाबू कहते हैं-"सर्कस तो एक कोसला है बेटी, ि ंदगी तो ऐसी-ऐसी कवायदें कराती हैं कि खैर, तुम्हें मिल गया न ावाब।"[15]

सं ीव 'सर्कस' को भारतीय समा ा मानते हैं। सं ीव के इस 'सर्कस' उपन्यास में भारतीय ीवन ीवंत हो उठता है।

'सावधान! नी े आग है' उपन्यास कोयला खदानों की समस्याओं को लेकर लिखा गया है। सं ीव का कोयला खदानों से संबंध होने के कारण इस उपन्यास में कोयला खदान म ादूरों का ीवन ीवंत हो उठा है। इस उपन्यास की कथावस्तु बिहार के कोयलां ाल क्षेत्र की खदान है, ो ालप्लावन की शिकार बन गई थी। उपन्यास में खदान म ादूरों का दयनीय ीवन, ठेकेदार-दलतों की कुटिलताएँ, शोषण तंत्र के नए रूप और व्यवस्थागत विसंगतियों का यथार्थ ि त्रण हुआ है। इन म ादूरों की ी-तोड़ मेहनत के बाव ूद उनकी ि ंदगी में सुधार नहीं हो पाता है। उपन्यास के प्रारंभ में कोयलां ाल का स्वरूप और वहाँ के म ादूरों को दिखाया गया है। अंत में ालप्लावन की घटना और उस पर प्रशासन की दुर्लक्षता का ि त्रण उपन्यास में मिलता है। ि स उद्देश्य से ाँ ा कमीशन को रखा ाता है, वह उद्देश्य पूरा नहीं होता है। कमीशन की रिपोर्ट सबको हैरान कर देती है। सं ीव का यह उपन्यास कोयला खदान म ादूरों, मालिकों का वास्तविक ि त्र हमारे सामने रखता है।

'धार' उपन्यास की कथावस्तु भी कोयलां ाल से ुड़ी हुई है। इसमें आदिवासी मज़दूरों का यथार्थ ि त्रण मिलता है। उपन्यास में संथाल परगना बांसवाड़ा के संथाल आदिवासियों का ीवन आया है। इस उपन्यास के माध्यम से सं ीव पूं ीवादी व्यवस्था, शोषण तंत्र, माफिया गिरोह का आतंक, राष्ट्रीय संपत्ति की लूट, मेहनतकश आदिवासियों की अभिशप्त ि ंदगी तथा व्यवस्था की

---

[15] सर्कस, सं ीव-पृ.240

विसंगतियों को उ ागर करते हैं। आदिवासियों में र ानात्मक ोतना और संघर्ष करने का प्रयास अविनाश शर्मा और उपन्यास की प्रमुख पात्र अशिक्षित आदिवासी स्त्री 'मैना' के द्वारा किया गया है। मैना बहुत ही संघर्षशील, म ाबूत और विद्रोही है। वह शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाती है। आदिवासियों की ाी तोड़ मेहनत के बाव ाूद उन्हें दो ाून की रोटी नसीब नहीं होती। वे अपनी ाीविका के लिए भटकते हैं, भीख माँगते हैं। इसीलिए मैना कहती है-"हमारा अपना कोई पता-ठिकाना नहीं-काये नई-इस खातिर कि हम अपना किस्मत उनका पास बंधक रख छोडा है? कोयला का ख ााना पे हम रएता है, फिर भी कंगाल? कब तक आइसा माफिक ालेगा ...?"[16]

आदिवासियों को इससे मुक्ति दिलाने और स्वतंत्र ाीवन हेतु ाीने हेतु मैना, अविनाश शर्मा आदिवासी सहकारिता के परिप्रेक्ष्य में ान खदान का निर्माण करता है। ान खदान तो प्रगति कर लेती है लेकिन व्यवस्था उसे पह ाानने से इनकार करती है। व्यवस्था के खिलाफ लड़ती मैना अमर हो ाती है। एक नई ोतना की ओर संकेत करनेवाला प्रभावशाली उपन्यास है, ाो व्यवस्था के खोखलेपन को सामने लाता है।

'पाँव तले की दूब' एक लघु उपन्यास है। उपन्यास केंद्र में ाारखंड का पं ापहाड़ क्षेत्र है। यह वही क्षेत्र है ाहाँ ाारखंड आंदोलन की शुरुआत है। इस उपन्यास की कथावस्तु डोकरी ताप विद्युत संस्थान के इर्द गिर्द घूमती है। उपन्यास का उद्देश्य औद्योगीकरण के कारण गाँव तथा आदिवासियों के हो रहे विस्थापन को दिखाता है। फिलिप विस्थापन के दुख को सभा के सामने अभिव्यक्त करता है। "यह धरती, हमारी धरती सोना उगलती है और इस सोने की धरती की हम कंगाल संतान हैं।"[17] पूं ाीपति और प्रशासन केवल आदिवासियों का ही शोषण नहीं कर रही है, तो वे देश की संपत्ति को भी लूट रहे हैं। इनके कारण आदिवासियों का ाीवन दूभर हो गया है। ाो परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करता है। लेकिन परिस्थितियाँ उसे

[16] धार, सं ाीव-पृ.57

[17] पाँव तले की दूब, सं ाीव, हंस, सितंबर, 1990-पृ.76

आत्महत्या करने पर म ाबूर करती है। सुदीप उपन्यास के केंद्र में होकर भी उपन्यास की कथा उसकी नहीं है।

सं ाीव का उपन्यास ‘ ांगल ाहाँ शुरू होता है’ में ान ाातीय गायन का एक ाित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है। उपन्यास के केंद्र में बिहार का ‘मिनी ांबल’ से पह ााना ाानेवाला प. ांपारण क्षेत्र है। इसमें धारन आदिवासियों की त्रासदी और डाकू समस्या का ाित्रण है। डाकुओं के अन ाुलन के लिए डी.एस.पी. कुमार ‘आपरेशन ब्लैक पाइथॅन’ ाालाता है। यह उपन्यास का प्रमुख संदर्भ है। डाकू-पुलिस के मुठभेड के ाालते ांगल रणभूमि में तब्दील होता है। इस क्षेत्र में कोई अपनी म ार्ी से डाकू नहीं बना है, वे यहाँ की सामाा ाक, आर्थिक, रा ानीतिक परिवेश की उप ा है।

ााति, धर्म, पं ाीवादी व्यवस्था, शोषण, रा ानीति, प्रकृति, डेवियेटेड संस्कार ाैसे कई कारक यहाँ व्यक्ति को डाकू बनाते हैं। परेमा, नोनिया, परशुराम, काली, बिंद्रा, नरैन, ाागन, नारायण, श्यामदेव ाैसे युवा विवशतावश डाकू बनते हैं। काली का पश ााताप यही तो दर्शाता है "हमने नहीं ाुनी थी यह ाांदगी। नहीं बने थे हम इन राहों के लिए। फिर भी देखो कैसे धकेल दिये गये।"[18]

इससे मुक्ति ााहने के बाव ाूद उन्हें मुक्ति नहीं मिलती। उपन्यासकार ने इसके माध्यम से समा ा में पनप रही ांगली व्यवस्था, सामाा ाक विसंगतियाँ और विडंबनाओं को भी प्रस्तुत किया है। ांगल तो माध्यम है इसके परिप्रेक्ष्य में व्यवस्था में पनपा ांगल सामने आता है। रा ानीति इस ांगल को खाद डालती है। हर पार्टी का ांगल पार्टी से संबंध है। मुरली पांडे ाैसा शख्स इस देवभूमि को पवित्र रखने की अपनी ओर से पूरी कोशिश करता है। मौलिकता, व्यापक फलक, प्रतिकात्मकता, मानवीय सरोकार, समा ाशास्त्रीय दृष्टि कथ्य के ठोस बिंदु हैं। इसमें डकैत समस्या का न केवल यथार्थ प्रस्तुतीकरण है बल्कि उसके कारणों का गहराई से अन्वेषण भी है।

---

[18] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.96-97

सं ीव के उपन्यास 'सूत्रधार' में भो ापुरी के नटसम्राट भिखारी ठाकुर का ीवन ीवंत हो उठा है। यह ीवनीपरक उपन्यास है। इसमें भो ापुरी लोक ीवन एवं लोक संस्कृति का ित्र दिखाई पड़ता है। इस उपन्यास को लिखने से पूर्व सं ीव ने गहन शोध किया। इस कारण लोकवादी भिखारी ठाकुर के ीवन को उपन्यासकार ने अत्यन्त आत्मीयता एवं सूक्ष्मता से रेखांकित किया है। इसमें भिखारी ठाकुर के ीवन का समग्र एवं पूर्ण ित्र मूर्त हुआ है। यह उपन्यास 19 वीं सदी के ग्राम ीवन का ताम विसंगतियों को उ ागर करता है।

सं ीव ने लंबे समय के बाद 'आकाश ंपा' उपन्यास को लिखा है। 'आकाश ंपा' शीर्षक से उपन्यास का उद्देश्य सम ा में आता है। 'आकाश ंपा' वृक्ष की तरह हर व्यक्ति को अपनी गलतियों को सुधारने का अवसर प्राप्त होता है। इससे वह अपनी गलतियाँ सुधार कर एक नया ीवन शुरू कर सकते हैं। उपन्यास की कथा मास्टर मोतिलाल के इर्द गिर्द घूमती है। वे ब्राह्मण होने के बाव ूद उससे मुक्ति ाहते हैं, इसीलिए वे अपने नाम से मिश्र को हटा देते हैं। नेऊ को निकाल फेंकते हैं। वे एक नए सो ा के व्यक्ति हैं। मोतिलाल स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेनेवाले कर्मनिष्ठ आदर्शवादी और प्रगतिशील शिक्षित व्यक्ति हैं। आ ादी मिलने के बाद गाँव से दूर कस्बे में आकर रहते हैं। उस कस्बे में एक वैश्य व्यापारी अग्रवाल सेठ के द्वारा अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति में खोले गये हाई स्कूल में शिक्षक के पद पर काम करते हैं। नयी नवेली दुल्हन के साथ रहते हुए उस कस्बे को अपनी कर्मभूमि बना लेते हैं। कुछ समय बाद वे हाईस्कूल सरकार के अधीन हो ाता है, वे उसके हेड मास्टर भी बनते हैं।

आज़ादी के बाद ो सपने देखते हैं, वे टूटते नज़र आते हैं। वे अपने आदर्शों, नैतिक मूल्यों के सहारे एक नया समा ा को देखना ाहते हैं, लेकिन वह नहीं ान पाते कि उन्हें आ ा अपने ही परिवार और समा ा सबसे संघर्ष करना होगा। इन कारणों से वे सबकी नज़रों में मूर्त सा प्रतीत होते हैं। वे िस नीम के पेड़ के सामने रहते हैं, उस पर आज़ादी के पाँ ा दीवाने नौ ावानों को अंग्रेज़ों ने फाँसी पर लटका दिया था। मोतिलाल उन पाँ ा शहीदों के बारे में ानना ाहते हैं, और

अंततः पंक ा की सहायता से ाानकारी हालिस करते हैं। लेकिन अपने परिवार के सदस्य उनकी पत्नी, बेटा ज्ञान कोई उनकी सहायता करना नहीं ाहते हैं। ाब वे विरेंद्र सिंह नामक ान पक्षधर नेता के साथ रहते हुए अपने आदर्शों को हकीकत बनाने में कार्यरत हो ाते हैं। वे आ ा की रा ानीति और भ्रष्टा ाार के खिलाफ संघर्ष कर दुश्मन बना लेते हैं। अंत में विरोधियों द्वारा मारे ाते हैं और उसी नीम के पेड़ पर लटका दिये ाते हैं। इतिहास की व्याख्या करनेवाले मोतिलाल खुद इतिहास बन ाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आ ा के समय में आदर्श और नैतिकता का कोई मूल्य नहीं है, सब सपनों की तरह टूट ाते हैं।

कहानी और उपन्यास के अलावा सं ाीव ने एक नाटक 'ऑपरेशन ाोनाकी' लिखा। 'सात समंदर पार' यात्रा वृत्तांत है। सं ाीव ने दो बाल उपन्यास-1) 'रानी की सराय', 2) 'डायन' लिखे। इस प्रकार सं ाीव एक बहु प्रतिभामुखी र ानाकार हैं। उनका समग्र साहित्य मानव समा ा की मुक्ति का साहित्य है। उन्होंने एक कमरे में बैठकर साहित्य नहीं र ाा, उन्होनें र ानाओं के लेखन के लिए फील्ड वर्क भी किया। इस कारण इनकी र ानाओं में व्यक्त यथार्थ ाीवन के यथार्थ के निकट है।

2.9 पुरस्कार एवं सम्मान

सं ाीव को अपनी र ानाओं पर अनेक पुरस्कार मिले हैं। वे इस प्रकार हैं-

1. अपराध (प्रथम पुरस्कार), आखिल भारतीय भाषा कथा प्रतियोगिता (सारिका), 1980
2. प्रथम कथा-क्रम सम्मान, लखनऊ (1997)
3. गण मित्र सम्मान (1998)
4. ांगल ाहाँ शुरू होता है, इंदू शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान, लंदन (2001)
5. प्रेम ांद सम्मान (40 वंग) 2002
6. भिखारी ठाकुर लोक सम्मान, 2003
7. पहल कथा सम्मान, (2005)

8. ानपद सम्मान, सुल्तानपुर (2006)

9. सुधा कथा सम्मान, भागलपुर (2008)

निष्कर्ष

सं ीव का ीवन अभावग्रस्त होने पर भी सं ीव स ृन के मो र्े पर संघर्षरत हैं। सं ीव का संपूर्ण साहित्य मानव मुक्ति का साहित्य है। सं ीव मार्क्सवादी वि ारधारा से प्रभावित है, लेकिन मार्क्सवादी साहित्यकारों की तरह पार्टी के आदेश पर साहित्य की र ाना नहीं करते हैं। सं ीव मार्क्सवादियों की आलो ाना भी करते हैं। सं ीव के कथा-साहित्य में हाशिए के लोगों की समस्याओं का यथार्थ ित्रण हुआ है। खासकर आदिवासी और दलितों का। इन्होंने अपने उपन्यासों के लिए फिल्ड वर्क भी किया। इनकी र ाएँ शोध परक हैं। कोयला खदानों के म ादूरों की समस्याओं का ित्रण इनके उपन्यासों में हुई है। पूं ीपति और प्रशासन द्वारा आदिवासियों और भारत की संपत्ति की लूट को बारीकी से सं ीव ने रेखांकित किया है। वे डाकुओं की समस्याओं और डाकुओं के प्रति प्रशासन की भूमिका को भी अपनी र ाओं में व्यक्त करते हैं। लोक कलाकार भिखारी ठाकुर का ीवन अपने उपन्यास में सं ीव के लोक साहित्य और लोक ीवन से संबंधित रु ि और ज्ञान का पता ालता है। इस तरह ये र ाकार गहरी मानवीय संवेदनाओं से युक्त है।

* * *

तृतीय अध्याय

सं ीव के उपन्यास :
लोक ीवन के विविध आयाम

तृतीय अध्याय
सं ीव के उपन्यास :
लोक   ीवन के विविध आयाम

3.1 सामा िक आयाम

3.2 सांस्कृतिक आयाम

3.3 धार्मिक आयाम

3.4 आर्थिक आयाम

3.5 रा नीतिक आयाम

3.6 प्रशासनिक आयाम

3.7 शैक्षणिक आयाम

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में नई भावभूमि को लेकर उभरे कथाकरों में सं ीव अपनी अलग एवं महत्वपूर्ण पह ान रखते हैं। सं ीव भीड़ से अलग अपनी राह ालनेवाले एक परिश्रमी, प्रतिबद्ध एवं बे ैन कथाकार हैं। ये समकालीन ीवन के यथार्थ को गहराई से रेखांकित करनेवाले कथाकार हैं। इनकी हर र ना में गहन अध्ययन, िंतन, मौलिकता और शोध दृष्टि ालकती है। इन्होंने उपन्यास विधा के माध्यम से अछूते संदर्भों की कलात्मक प्रस्तुति करते हुए उस क्षेत्र की ुनौती स्वीकार कर नई पहल की है।

सं ीव के उपन्यास मूलतः पिछड़े, उपेक्षित, व ित क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा को वाणी देते हैं। इनके उपन्यास ग्रामीण, आं लिक, मेहनतकश, उपेक्षित तथा शोषित वर्ग की कहानी प्रस्तुत करते हैं। एक तरह से इनके उपन्यास प्रेम ंद, रेणु की विरासत को वर्तमान संदर्भों में निष्ठा से आगे ब ़ाते हैं। सं ीव के उपन्यासों में ित्रित परिवेश रोमानी नहीं, यथार्थ है। इन्होंने उस वर्णित क्षेत्र के लोक ीवन का आत्मीयता और तटस्थता के साथ ित्रण किया है। युगीन सामा िक, सांस्कृतिक, रा नीतिक, धार्मिक परिदृश्य को वे समा शास्त्रीय दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। परिवेश निर्मिति की दृष्टि से इनके सभी उपन्यास उल्लेखनीय हैं। अभी तक इनके आठ उपन्यास तथा दस कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनकी कहानियों का मुख्य स्वर भारतीय रा सत्ता और व्यवस्था का वास्तविक रूप पाठकों के सामने प्रस्तुत करना है।

3.1 सामा िक आयाम

सं ीव अपने उपन्यासों में सामा िकता का ित्रण यथार्थ रूप से हमारे सामने रखते हैं ो लोक और लोक ीवन से संबंध रखता है। इसका स्पष्टीकरण निम्न रूप से बताया ा सकता है-

अस्पृश्यता

'सूत्रधार' सं ाीव का लोकप्रिय उपन्यास है ािसमें भो ापुरी अं ाल के प्रख्यात लोक-कलाकार और र ानाकार 'भिखारी ठाकुर' के बारे में बताया गया है। वे एक नाई ााति के थे, ािसका एहसास उन्हें ािंदगी भर करना पड़ता है। वह भी उन्हीं लोगों से ाो कि इसी समा ा से ाुड़े हुए थे ाो सवर्ण ााति के थे। ब ापन में भिखारी ाब स्कूल प़ने ााता है तब उसे उसी कक्षा के ब ाों और गुरू ाी द्वारा ाातिगत अपमान सहना पड़ता है और वह उसका पहला अपमान है ाो कि आगे ालकर और भी सहने पड़ते हैं। ासे-"ई को ह-अ रे?" बड़ ाात का कोई ब ाा कनमना कर खड़ा हो गया, ासे बलिष्ठ पिल्ले किसी मरगिल्ले पिल्ले के आते ही ाौकन्ने हो ााते हैं।

"नउवा!"

"नउवा...? ई हो प़ेगा? प़-लिख के तें का करेगा रे?"

"नौवा कौवा, बार बनौवा!" प़-लिख के तें का करेगा रे?"

"ह ाामत के बनाई?"

"नहरनी ले ले बाड़े रे, तभी नह काट दे।"

तरह-तरह की बोलियाँ- ासे आदमी के ब ाों के रूप में वे पशुओं के ब ाे थे!

वे ही क्यों?

गुरु ाी को भी लगता कि मुफ्त का टहलुआ मिल गया, "तनी टीप दे तो।" वे बाह या पाँव पसार देते।"[1]

सं ाीव अपने इस उपन्यास में बताते हैं कि समा ा के अंतर्गत रहते हुए भी लोग एक-दूसरे के प्रति सम्मान और समानता की दृष्टि नहीं रख पाते हैं। आ ा भी लोग मनु की मनु स्मृति का पालन करते हुए ााति-प्रथा को ब़ावा दे रहे हैं। इसका एक उदाहरण सं ाीव ने सूत्रधार में दिखाया है, ाो भिखारी ठाकुर के ब ापन में

---

[1] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.17

सवर्णों द्वारा किया ाता है। गाँव के सभी (ब्राह्मण) बाबा ी लोग यज्ञ करने का निर्णय लेते हैं और उसका कार्य भी होने लगता है उस समय वहाँ भिखारी भी उपस्थित रहता है। उसके लिए कुछ और बाहर के काम सौंप दिये ाते हैं। उसके मन में ि ाज्ञासा उत्पन्न होती है कि देखें यज्ञशाला में क्या हो रहा है, तब एक पुरोहित ने उसके गैर वर्ण, सुंदर व्यक्तित्व को देखकर ब्राह्मण सम ा बैठता है और यज्ञशाला को रंगीन अक्षत से ौक पूरने का काम सौंप देता है। थोड़ी ही देर में एक दूसरा व्यक्ति आया। काला भीमकाय बदन, पीला-पीला मोटा ानेऊ! आते ही उसने पूछा-"ई के ह-अ?"

"काहे का बात है?" पहले पंडित ी ने पूछा।

"आपको ब्राह्मण नहीं भेटाया ो नाई के लड़के से ग्गशाला भरस्ट करवा रहे हैं?"

"ई नाऊ है?"

" ावो ब ा दूसरा काम देखो। एक बात सुन लो, ात मत छिपाना, पाप लगेगा।" भिखारी के हाथ-पाँव सुन्न। ैसे कोई ूक हो गई हो।"[2]

यहाँ सं ीव का उद्देश्य यह है कि एक ही समा ा में रहते हुए भी मनुष्य-मनुष्य के बी ा ये कैसी दूरी है ि ासके ालते वे समा ा से अलग और भिन्न किये ा रहे हैं। ि ानको अछूत कहते हैं उनके द्वारा ही सभी कार्य संपन्न किये ाते हैं ैसे सं ीव ने भिखारी द्वारा बताया है कि-"गंगा ाल नाई या कहार ोकर ले आए थे, लकड़ी लोहार फाड़ रहा था। दूध-दही अहीर के घर से आया होगा, कलशा-परई कुम्हार दे गया होगा, दोना-पत्तल नट और डोम दे गए होंगे। आम के पल्लव एक मल्लाह का लड़का तोड़ कर गिरा रहा था, यह उसने खुद देखा, अक्षत बनिया की दुकान से आया होगा, कपड़े और दूसरी ीज़ों को भी ब्राह्मण ने नहीं ही बनाया होगा। मगर ये सारे लोग उन्हें छू भी नहीं सकते।"[3]

---

[2] सूत्रधार, सं ीव-पृ.21-22

[3] सूत्रधार, सं ीव-पृ.22

‘आकाश ांपा’ उपन्यास में सं ीव ने ाति प्रथा के एक नये रूप को आँका है। समा ा के बुद्धि ीवी वर्ग में भी यह ाति प्रथा का ाड़ किस तरह से फैला हुआ है, इसका ित्रण एक स्कूल के शिक्षकों के माध्यम से दिखाया गया है। दलित समा ा से ाुड़े हुए मास्टर के.के. पहली बार स्कूल में प्रवेश करते हैं तब अन्य शिक्षकों द्वारा उनका अपमान किया ाता है, वह भी ाति को लेकर। सवर्ण ाति के शिक्षक मंडन मिश्र के द्वारा इस तरह अपमानित किया ाता है-"श्रीमान ाी आपका परि ाय?" के.के. ने प्रति प्रश्न किया।

"आप के.के. हैं तो मैं एम.एम., मंडन मिश्र। आपसे दो स्टेप आगे।"

"के.के.माने?"

"नियुक्ति पत्र मैंने हैडमास्टर साहब को दे दिया है।"

"अहा रुष्ट क्यों होते हैं श्रीमान, नाम के रहस्य को प्रकट करने में कोई कष्ट है? खैर आश्रम (ाति) क्या हुआ श्रीमान?"

"कहार!"

"कहीं कालू कहार तो नहीं?"[4]

एक प े-लिखे नागरिक होने के बाव ाूद सवर्ण होने का गर्व और मनु की मनुस्मृति का नितांत पालन करनेवाला मंडन मिश्र ाैसे लोग नाम और ाति को लेकर दलितों को अपमान किये ाा रहे हैं। क्या यही है नागरिकता? यही है शिक्षितों और बुद्धि ाीवियों का लक्षण? इनसान को इनसान के रूप में नहीं देख सकते? क्या उसका दलित होना गुनाह है?

इसी संदर्भ में मंडन मिश्र कहते हैं कि नाम भी ाति को दिखाना ाहिए, इसी बात को मनुस्मृति में कहा गया है, ऐसा कहते हुए बताता है-"मनुस्मृति में कहा गया है कि नाम ऐसे रखे ााने ाहिए ािनसे पता ाल ाये कि कौन किस ाति का है-

मांगल्यम् ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रिस्य बलान्वितम्

वैश्यस्य धनसंयुक्तम् शूद्रस्य तु ाुगुप्सितम्।।

---

[4] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.121

माने कि ब्राह्मण का नाम मंगल से ापना ाहिए, श्रत्रिय का बल, पराक्रम सू ाक, वैश्य का धन-सू ाक और शूद्र का नाम ुगुप्सापूर्ण रखना ाहिए। धन्य हैं वे माता-पिता ि न्होंने शास्त्र-सम्मत आ ारण किया, नहीं तो इस कलियुग में सब कुछ उलटा ही उलटा हो रहा है। अब एक हैं रा ापूत, नाम है फेंकू सिंह, पूछे, 'ऐसा क्यों ा ामान', तो बोले, 'ि ांदा रहने के लिए ऐसा घिनौना नाम रख दिया माँ-बाप ने।' ऐसे ीने से क्या फायदा-अँय?"[5]

क्या यह ारूरी है कि ााति के अनुसार नाम हो, ााति तो पेशे के कारण बनाया गया, नाम तो नहीं! कब तक मनु-स्मृति का सहारा लेते रहेंगे। लेखक ने इसी प्रश्न को उपरोक्त व्याख्या में अंतर्निहित किया है।

के.के. के लिए ााति का अपमान यहाँ तक ही सीमित न रहा बल्कि विद्यार्थियों के अपमान का भी सामना करना पड़ा। " ाब वे नवीं कक्षा में पहली बार कदम रखा, ब्लैक-बोर्ड पर उनका ाातिगत इतिहास स्वयं उनका स्वागत कर रहा था। बोर्ड के एक कोने में पालकी ोते दो कहारों का ि ात्र अंकित था, दूसरे कोने में बहँगी ोते दो कहारों का।"[6]

यानी ााति के सामने किसी भी योग्यता का कोई अस्तित्व नहीं रह ााता है, ाहे वह मास्टर हो या कोई उ ा अधिकारी। सं ीव के 'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास में भी ऐसा ही एक प्रसंग देखने को मिलता है, ो कि एक निम्न ााति के स ि दा प्रसाद स्टेशन मास्टर के रूप में किसनग ़ में आता है। उनके परि ि ात शिव बाबू ने पहले ही दिन उनको टोका था-"मरने के लिए और कोई ागह नहीं मिली थी तुम्हें?"

"क्यों-क्यों भैया? कितनी कोशिश की, पैरवी की, घूस दिया, तब ाकर ट्रान्स्फर मिल पाया और आप कहते हैं कि..."

---

[5] आकाश ांपा, सं ीव-पृ.122

[6] आकाश ांपा, सं ीव-पृ.123

‘अगर यहाँ के बड़कवे यह ान गए कि तुम अमुक ाति के हो तो सारी स्टेशन मास्टरी की अकड़ ाति रहेगी। ातुर्थ श्रेणी के कर्म ारियों की ूतियाँ ोते उमर कटेगी।’

सि ादा प्रसाद ने पूछा ‘भैया आप कैसे टिके हुए हैं यहाँ?" आप भी तो...।’

‘हम! हम तो रा ापूत हैं यहाँ...।’

‘तो हमको भी वैसा ही कुछ बनाइए।’

‘वो मैं नहीं ानता। टोकना मेरा काम था, मैंने टोक दिया। बाकी तुम सम ो-तुम्हारा काम।’

‘तो भैया मैं कायस्थ बन ाता हूँ।’"[7]

इस कथन से लेखक यह कहना ाहता है कि समा ा से ुड़े हुए इन निम्न ाति के लोगों को सवर्णों के साथ रहना हो तो अपने अस्तित्व को भी छिपाना पड़ेगा साथ ही ाति को भी।

इस उपन्यास में दलितों के बारे में और उन पर सवर्णों द्वारा किये ानेवाले व्यवहार को अपने अंदा ा में बताया गया है। ैसे कि "कहारों के साथ डोली ोते हुए भी उनकी पंगत से नी ा ाति कह कर निकाले ाने पर और दूर ीमन को बाध्य किये ाने पर वह खिसिया कर रह ाते, गाँव में भी तो बसने के लिए गाँव के छोर पर सम्मानितों की पंगत से अलग ही ागह मिल पाई थी उन्हें। लेकिन सबसे बेहुदी स्थिति तब होती, ाब उन्हीं की ाति के लड़के-लड़कियाँ उन्हीं के सामने ूठी पत्तलों पर टूट पड़ते।"[8]

एक ही समा ा में रहते हुए भी पराए कहलाते हैं, उन्हें समा ा से दूर और बाहर रखा ा रहा है। उनके लिए दो ून की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती और वे इस स्थिति का स्वयं अनुभव करते हुए भी असहाय रह ाते हैं। वे अपने दर्द को ाहर की तरह निगलते रहते हैं।

---

[7] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.110

[8] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.27

इस ातिवाद का ाड़ शिक्षा के क्षेत्र में भी इस तरह से फैला हुआ है, ि सका ि त्रण लेखक ने 'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास में किया है। ाब वार्षिक परीक्षाओं का समय आता है, तब ये सारे सवर्ण अपनी बिरादरी के ब ों को पास कराने में ुट ाते हैं। ाब मौखिक परीक्षा लेने का समय आता है तब इन्हीं सब लोगों के बी ा रहे ाति विद्वेशों का पर्दाफाश होने लगता है।

ैसे-"ओरल में नंबर देने में सारे मास्टर नंगे हो रहे हैं, ठाकुर ंदरमा सिंह, 'सिंह-सिंह' उपाधि देख कर दस में नौ-नौ दे रहे हैं, तिवारी, द ूबे आदि को सात या आठ और पिछली तथा दलित ातियों को तीन से लेकर एक।"[9]

इसी तरह अन्य ाति के लोग भी अपने-अपने ाति के लोगों को ूँ ़ कर अंक वितरण कर रहे थे। ैसे-राय-ब्राह्मणों को, यादव-यादव को।

ातिवाद का एक ि त्रण यह भी मिलता है कि किसी की मदद करने में भी ाति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सं ीव इस विषय को अपने उपन्यास ' ंगल ाहाँ शुरू होता है' में दिखाते हैं। एक निम्न वर्ग का फेंकन अपनी पत्नी की सवर्ण पांडे द्वारा शारीरिक शोषण होने पर उसके खिलाफ पं ाायत बैठाता है, तब "पं ाायत ने एक स्वर से यह फैसला दिया कि पांडे या उनके साले ऊँ ाी ाात के आदमी फेंकन बहू ैसी नी ा ाति के साथ यह कर्म कर ही नहीं सकते।"[10] ला ाार फेंकन थाने ााता है, मगर कुछ नहीं होता। डाकू परशुराम यादव के पास ााता है लेकिन वहाँ भी उसे निराशा ही हाथ लगती है। परशुराम यादव यह कहकर उसे भे ा देता है कि-"वह ामरों, दुसाधों, धोबियों, कुम्हारों, लोहारों और नोनियाओं का केस नहीं लेता।"[11] तो यह सम ा सकते हैं कि निम्न ाति के लोगों के लिए न ही कोई पुलिस और न ही कोई डाकू इनकी मदद करने को तैयार होते हैं, क्योंकि वे नी ा, दलित और पिछड़े ाति के हैं।

---

[9] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.73

[10] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.92

[11] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.92

सं ीव के लेखन में अनेक प्रकार की ाति-प्रथा का ित्रण देखने को मिलता है। वे अपनी हर र ाना में अस्पृश्यता व ाति की बात कहते हैं और उनके साथ उनके दुष्प्रभाव को भी दिखाते हैं। निम्न ाति में भी अस्पृश्यता का ित्रण हम देख सकते हैं। ैसे कि सूत्रधार में बताया गया है कि भिखारी की शादी के लिए धोबिन को बताया ाता है कि सब काम संभाले, लेकिन देखा ाता है कि-"लोग उसे घिना करते हैं, बरतन तक छूने नहीं देते, अंदर आने देने को कौन कहे। पउनी है ये। मगर पउनी तो वह भी है। तब एक फरक है, उसका छुआ पानी ालता है और धोबइन भौ ी का नहीं।"[12]

यानी ातिगत व्यवस्था का फैलाव समा ा के हर स्तर पर रहनेवालों पर हावी हुआ है। िास समा ा में उनको अछूत कहकर दूर रखा ाता है, वही लोग अपने से छोटी ाति के लोगों को अछूत करार दे रहे हैं। यही विडंबना है भारत वासियों की, िानके अंदर मनुस्मृति का और सवर्ण ाति के व्यवहार का प्रभाव स्पष्ट है।

सं ीव इसी बात को अपने उपन्यास के माध्यम से कहना ाहते हैं और वह ाहते हैं कि इस ातिगत व्यवस्था का अंत होना ाहिए, ताकि सामाािक असमानता का ित्र मिट ाए। ाति के ालते कितने ही भयावह घटनाएँ घटी है और उसके ालते लोग बंटे हुए हैं। उनके भीतर घृणा का भाव पैदा हुआ है। वे नहीं ाहते कि कोई निम्न ाति का व्यक्ति उनके समान दर्ो पर पहुँ ो। वे आ ा भी उसी मानसिकता के बने हुए हैं ाो कि पहले हुआ करते थे। इस संदर्भ में सं ीव अपने उपन्यास 'किसनग ़ के अहेरी' में एक ागह कलिका पंडित के द्वारा बताया है-"हर ाति की दर्ानों उप ाााियाँ हैं और हर एक का स्वयंभू इतिहास! सबका सबसे काम पड़ता है, फिर भी एक नहीं, अलग हैं ये। अहं की टंकार का यह फल है कि अब खेत खलिहान मा ाा तो दूर-दूआर, मोहार पर साने में भय लगता है। पता नहीं सोहगत की तरह कब कोई आकर काम तमाम कर ाए निंदियारी रात को?"[13]

---

[12] सूत्रधार, सं ीव-पृ.30

[13] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.110

इस कथन से स्पष्ट होता है कि ाति के लते लोगों में दरार उत्पन्न हुए हैं। समा में रहते हुए भी वे एक-दूसरे से अलग हैं, अछूत हैं। इसीलिए वे एक-दूसरे से डरते हैं और हर पल अपने आपको ब ाने की कोशिश करते हैं।

सं ीव ऐसी व्यवस्था पर अपने उपन्यासों के माध्यम से खरा प्रहार करते हैं। क्योंकि वे ाति-प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले एक समर्थ लेखक हैं। वे इस विषय को लेकर अपने उपन्यासों में व्यंग्य भी करते हैं। किस तरह समा के सामंतवादी मानसिकता वाले अपनी ाति को ब ाने के लिए कितने ही कुकर्म करते हैं। इसका एक उदाहरण यह देते हैं कि-" ाहे ो हो ाय बहन से ही शादी क्यों न करनी पड़े, मगर भगत की कबीलाई बिरादरी वाले अपनी शुद्धता कायम रखते लेंगे। ाहे ो हो ाए, मर ाद की लक्ष्मण रेखा लांघी नहीं ा सकती।"[14]

यानी बिरादरी और ाति को ब ाने के लिए वे अपनी नैतिकता को भी भूल ाते हैं, और वे किसी भी सीमा तक पहुँ ने के लिए तैयार हो ाते हैं।

शादी-ब्याह में तो अस्पृश्यता आ भी गाँव में देखी ा सकती है। भो न के समय इन निम्न ाति के लोगों को अलग बिठाया ाता है, और सवर्ण ाति को अलग। वहाँ उनका खाना अलग किसम का होता है। सवर्णों को सारे खाद्य पदार्थ खिलाने के बाद ो ब ा रहता है, वह उन लोगों को परोसा ाता है, िनको अछूत कहकर बुलाया ाता। ऐसी ही स्थिति का 'भिखारी ठाकुर' को भी सामना करना पड़ता है बकि वह एक कलाकार है और लोग उन्हें न ानियाँ कहके दूर रखते हैं क्योंकि वह एक दलित है, नाई ाति का। सं ीव ने इसका ित्रण अपने उपन्यास 'सूत्रधार' में बखूबी किया है। ब यह सब देखता है भिखारी ठाकुर तो वे उनसे प्रश्न करते हैं और वे इनकार करते हैं खाने से। "हमेशा ऐसा ही होता है। खाने में भी देखो, दही-बुनिया न्नन की तरह छिड़ककर ले गये, ैसे हम 'अदमी' ही नहीं है। तुम सभी को खाना हो तो खाओ, हमसे तो नहीं खाया ाएगा ऐसे।"[15]

---

[14] किसनग . के अहेरी, सं ीव-पृ.110

[15] सूत्रधार, सं ीव-पृ.122

ाति-प्रथा के ालते लोग इतने गिर ुके है कि वे आदमी को आदमी तक नहीं सम ाते। प ा-लिखा होने पर भी उसे ाति के नाम पर अछूत ही कहा ाता है। लेखक इस विषय में ाति-प्रथा का रूप दिखते हुए कहते हैं कि पशुओं को भी वे भगवान स्वरूप मान लेते हैं, लेकिन वे कभी एक निम्न ाति के आदमी को आदमी नहीं मानते। इसको उन्होंने ‘आकाश ंपा’ उपन्यास में ाब शिक्षकों के बी ा ाति की बात ालने लगती है तब दलित ाति के शिक्षक के.के. द्वारा अपनी बात व्यक्त करते हैं। "प ने क्या, छूने भी नहीं देते। का, तो परछाई से ही छुवा ाएगा। "...अरे हम क्या बोले?"

"गाय मैला खाये, वो पवित्र, पू ानीय। उसका छुवा पवित्र, उसका पेशाब-पखाना भी पवित्र, लेकिन आदमी-नह! आदमी अछूत लेकिन उसका धन, उसकी लड़की, सब पर लार टपकती रहेगी।"[16]

यानी कहने का तात्पर्य है कि गाय को पवित्र मानकर उसे छू सकते हैं, पू ाा कर सकते हैं, लेकिन अपने ही समा ा के आदमी को अछूत कहकर दूर रखा ाता है, ये कैसी विडंबना है? ाो पशु से भी बदतर मनुष्य को मानता है। पर उसका छुवा हुआ धन, उसकी लड़की सब पर वे अपना अधिकार मानते हैं, क्या यही मानवता है?

इस ातिगत वैषम्य से ब ाने के लिए लोग अपने आपको बदलना ाहते हैं, और वे ाहते हैं कि वे भी सवर्णों की तरह ाीवन बिताए। अब की अवस्था के लिए वे पिछले ान्म के कर्म को मानते हैं ि ासके ालते आ ा वे अछूत बनके ान्म लिये हैं, इस ान्म में कोई बड़ा पुण्य काम करे तो अगले ान्म में किसी अ छी ाति में ान्म होगा। लेखक इस नादानगी को अपने उपन्यास ‘सूत्रधार’ में एक ागह दिखाते हैं। भिखारी ठाकुर द्वारा यह वक्तव्य दिया ाता है।

समा ा में प्र ालित ाति-प्रथा को देखकर भिखारी ठाकुर खिन्न हो ाते हैं, वैसे वे कहने को तो नाई ब्राह्मण है लेकिन समा ा की नज़र में वे नाई ही है। यह पूछने पर उनके बाबा कहते हैं कि पुरुव ानम की कमाई है। सो ाता है कि पुरुव

---

[16] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.126

ानम में ारूर कोई बड़ा पाप किया होगा कि इस ानम में नाई के घर पैदा हुआ। यह प्रश्न करते हैं कि " ाो बड़ ाात में ानमे हैं, उन्होंने कोई बड़े पुन्न का काम किया होगा। तब एक बात, बड़ ाात में ानम लेकर फिर से वही पाप करने लगे हैं ये, इनका क्या होगा अगले ानम में?"[17] लेखक भिखारी के माध्यम से यह सीधा प्रश्न उस समा ा को दागते हैं ाो अपने को सवर्ण मानता है। अगर अ छे कर्म करने पर ऊँ ाी ााति का हो ााता है तो अभी ाो पाप करने में लगे हैं, क्या फिर से वह निम्न ााति में ान्म लेगा।

इस संदर्भ में भिखारी ठाकुर के मन में अगले ान्म के संदर्भ में ि ास तरह का भाव उमड़ने लगते हैं उनका विवरण लेखक यूँ प्रस्तुत करते हैं "सपने में उनका नया ान्म हुआ, और वे ऊँ ाा ब्राह्मण वंश के हुवे। उनका नाम भिखारी-मिसिर। स्वस्थ, सुधड़, लंबी कद-काठी, दिपदिपाता गौर वरन, माथे पर त्रिपुंड, कंधे पर ानेऊ। काशी के बड़का पंडित महरा ा, भिखारी मिसिर, कुतुबपुर, छपरावाला।"[18]

इस कथन से यह बताना ााहते हैं कि भिखारी का ाीवन किस तरह से तनाव ग्रस्त रहा है, ााति के ालते। वे इस समा ा की, और समा ा से ाुड़ी हुई ााति की स्थिति को देखकर दुःखी होने लगते हैं। वे सम ाते हैं कि समा ा में सम्मान प्राप्त करना हो तो ऊँ ाी ााति का होना आवश्यक है। इसीलिए वे सपने में अपने-आपको एक ऊँ ाी ााति के ब्राह्मण के रूप में देखते हैं और लोगों द्वारा सम्मान प्राप्त करता है। याने समा ा उन निम्न ााति के लोगों को अपनी ााति बदलने के लिए म ाबूर करती है।

कलाकार होने के बाव ाूद भिखारी ठाकुर को कभी अपने समा ा द्वारा सम्मान, समानता नहीं मिली ाबकि वे मीरगं ा में प्रदर्शन करने ााते हैं वहाँ उनके साथ किये ाानेवाले व्यवहार को देखकर बहुत ही खुश हो ााते हैं। एक बार खाने के समय उन्हें बुलाया ााता है और सबके साथ बिठाकर खिलाया ााता है, इसी व्यवहार से वह प्रसन्न मन से कहते हैं कि-"शादी-बियाह में अब तक हम लोगों को

---

[17] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.157
[18] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.158

ाो भो ान मिलता रहा, वह एक तरह से दूसरे तरीके का होता था, आपका दरबार बहुत बड़ा है, दिल दरियाव है, पहली बार सबको एक ैसा भो ान!"[19]

कितना ही बड़ा कलाकार क्यों न हो, निम्न ााति का होने पर वह उसके साथ वही सलूक किया ााता है ैसे कि अन्य लोगों से। वे अपने शादी-बियाह में उन्हें कभी साथ बैठाके एक समान खाना नहीं खिलाते हैं, लेकिन भिखारी को ाब इस लायक मानकर बालेश्वर सिंह उनको अपने साथ समान रूप से व्यवहार करते हैं तो वे बहुत खुश हो ााते हैं। इस बात पर बालेश्वर सिंह हैरत में कहते हैं कि-"सिर्फ इस भो ान ैसी छोटी बात के लिए इतना बड़ा और सन्नामी कलाकार उन्हें धन्यवाद देने आया है। हाय रे नाशुकरे मेरे देश, भो ान तक कायदे का नहीं दिया ााता है यहाँ किसी कलाकार को। वहाँ भी ाात-पात। वहाँ भी ये पर ाा पउनी ही है।"[20]

इस तरह हम देख सकते हैं कि लेखक अपने कथन को बालेश्वर सिंह के माध्यम से प्रकट करता है कि कैसा देश है, ि ासमें ााति के ालते एक कलाकार को सम्मान ही नहीं बल्कि ंग का खाना भी दुश्वार है। इस ााति-पाँति के आगे सारी कला और सृ ानात्मकता का कोई मोल नहीं।

लेखक ने 'किसनग. के अहेरी' उपन्यास में एक ागह पर ाातिगत विश्लेषण को दिखाते हैं ाो कि दो लोगों द्वारा किया ााता है। वे हैं सि ादा प्रसाद और शिवबाबू अपनी ााति को बदलकर लाला और ठाकुर बने। उनके द्वारा समा ा का विश्लेषण होता है।

"ठाकुर उस्ताद ने कहा, "लला माने ला-ला। ाो घूस न ले वह लाला कैसा?"

'और ि ासे देखते ही आदमी सूख कर कांटा न हो ााए वह ठाकुर कैसा?'

' ाो आदमी की सात पुश्त को न खरीद ले, वह बनिया कैसा?'

'और ि ासे देखते ही आदमी भसम न हो ााए, वह बाभन कैसा?'

---

[19] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.199

[20] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.199

बद्दू साव ने शिव बालक ी का ऋण उतार दिया।"[21]

समा ा में बने वर्ण व्यवस्था को वे लोग अपने ही अंदा ा में व्यक्त करते हैं। यहाँ पर दो तरह से लेखक अपना मंतव्य व्यक्त करता है। ैसे कि वर्ण व्यवस्था के साथ-साथ उसका व्यंग्य रूप हमारे सामने रखते हैं।

ाातिगत वैषम्य और उनके द्वारा अनर्थ कैसे होते हैं इन सारी बातों को उपन्यास के माध्यम से लेखक विस्तारपूर्वक बताते हैं। ैसे-

" ाातिगत द्वंद्वों में सबसे म ोदार तर्क था कलिका के शिष्य कालू का। आत्महीनता से पूरी तरह मुक्त गोरा, लंबा, म ाबूत और दबंग। बाहर वालों को बाभन-ठाकुर का भ्रम हो ााता और वे प्रणाम तक कर बैठते। भिल-भिलाकर हंसता कालू, अपने ही बनाए ााल में कैसे फंसते हैं लोग? उसके अनुसार समर्थ लोगों की कोई ााति नहीं होती। वाल्मीकि बहेलिया थे, गीता के र ानाकार व्यास मद्दे रन के अवैध पुत्र, वशिष्ट वेश्या पुत्र, कौरव, पांडव तकरीबन सभी वर्ण संकर। राम और उनके भाई, सहाय हनुमान, सभी वर्ण संकर। कृष्ण की तो कोई ााति ही नहीं थी। आदमी की सभ्यता में इतनी उथल-पुथल हुई कि कौन माई का लाल कहता है कि उनका खून शुद्ध है। और 'सैंस' कहता है कि दोगला ही सबसे अ छी नस्ल है। ि ातना गेहूँ, धान, गन्ना, मकई, मनई, गोरू, पंछी निक-निक हैं, सब के सब दोगला।"[22]

लेखक द्वारा व्यक्त किये गये वि ाारों में समा ा और उसकी बनाई हुई ााति के प्रति व्यंग्य ि ात्र उभरते हैं। वे 'सैंस' के माध्यम से भी यह बताना ाहते हैं कि दोगला ही सबसे अ छी नस्ल है। यानी (संकर ााति) किसी की कोई ााति ही नहीं।

वर्ण व्यवस्था के दुष्परिणाम किस तरह से हो सकते हैं यह एक उदाहरण हमें 'सूत्रधार' उपन्यास में देखने को मिलता है।

"गंगा, सरयू और सोन से घिरे कुतुबपुर में सिर्फ एक कुआँ था-पंडित ी का। उसी कुएँ से सारा गाँव पानी भरता। पानी नी ो था और गर्मियों में तो और भी

---

[21] किसनग .ं के अहेरी, सं ीव-पृ.119

[22] किसनग .ं के अहेरी, सं ीव-पृ.116

नी े ाला ाता। तह-दर-तह वर्ण व्यवस्था यहाँ भी लागू थी-'पहले बाबा ी लोग पानी भरते, फिर बाबू साहब लोग, फिर वे ातियाँ, िनका छुआ ालता था, तब बारी आती कौमीनों (अस्पृश्य नी ी ातिवालों) की।' उनके घर की औरतें गगरी-गगरा लेकर बैठी रहतीं।"[23]

इस पानी के लिए भी वर्ण व्यवस्था का पालन करना पड़ता है। पहले सब सवर्ण पानी ले तब ाकर ब ा हुआ पानी अवर्ण व अस्पृश्यों के लिए नसीब होता है। यह कैसी वर्ण व्यवस्था है ो कि ंग का ीवन तो प्रदान करती नहीं और न ही उन्हें आवश्यक ीज़ों की पूर्ति करती है।

ऊँ ी ाति के होने का गर्व ब ों से लेकर बू ़ों तक होता है। वे निम्न ाति के लोगों के साथ अपमान ानक व्यवहार करते हैं, उनके सामने न ही कोई बड़ा है और न कोई छोटा, सब बराबर। ऐसा ही ित्रण सूत्रधार उपन्यास में सं ीव ने किया है। ाब भिखारी ठाकुर दूसरे शहर में अपनी कला का प्रदर्शन करने ाते हैं तो वहाँ वर्ण-व्यवस्था के ालते अपमानित होते हैं। "बाहर से एक लंबे- ौड़े बाबू साहब िक उठाकर अंदर ाँकते हैं-"कहाँ बा हो भिखारिया?"

भिखारी अपना ैकेट पहन ही रहे थे कि आवाज़ सुनकर मुड़े-एक तीस साल का ावान एक पैंसठ साल के सम्मानित कलाकार को 'रे-कार' करके बुला रहा था, इसलिए कि वह रा ापूत है और वे नाई! घर की मारी बन में गइलीं, बन में लागल आग। इन्हीं से ब ाने के लिए तो यहाँ आए थे और ातिगत दुर्भाग्य है कि यहाँ भी सूँघते-सूँघते आ ही पहुँ े।"[24]

इस अपमान के बाद भिखारी ाब अपने घर लौटता है तो इसी बात को लेकर सो ाने लगता है कि आदमी कितना भी बड़ा बने या नाम बदले और कितने ही दूर ाला ाए लेकिन यह ाति पीछा नहीं छोड़ती। "ये देशवाले लोग ाहाँ भी ाते हैं अपनी ात-पात, गाँव- ावार का सारा बात-वि ार लिए ाते हैं। अ छे-से-अ छे भी हैं, बुरे से बुरे भी। पहले ो भिखारी से नाई होने के नाते घृणा करते थे,

---

[23] सूत्रधार, सं ीव-पृ.236

[24] सूत्रधार, सं ीव-पृ.288

और अब ो भिखारी से नाई होने के नाते ईर्ष्या करते हैं, वह घृणा, यह ईर्ष्या, दो पहलू हैं मगर सिक्का एक-"और यह सार तो ऊपर उठता ला ा रहा है।"[25]

सूत्रधार उपन्यास के एक संदर्भ में लेखक द्वारा बताया ाता है कि समा में बड़े-बड़े विद्वान, साहित्यकार भी ाति के लते छल-कपट से व्यवहार करते हैं। भिखारी ठाकुर एक साहित्यिक समारोह में ब बैठते हैं तो उनको छोड़कर बाकी सभी विद्वानों का आदरपूर्ण सम्मान किया ाता है। इससे उनका मन खिन्न हो ाता है, वे वहाँ से निकल ाते हैं तो सो ने लगते हैं कि "ि स साहित्य और साहित्यकार को वे इतनी बड़ी ीज़ मानते आए थे, वहाँ भी वहीं कनफुसकिया और ापड़- ालाकी, वही डाह, वही 'बाभन-सूद' लता है क्या!" इसी प्रश्न को वे राम ी से पूछते हुए कहते हैं-"रमा ी, हे राम ी! उसी से ब ने के लिए साहित्य और कला में आये और यहाँ भी वहीं...! ौबे ी की तरह विद्वान होते तो, ... नहीं, नहीं, ौबे ी की तरह विद्वान ब्राह्मण होते तो बात और थी, खाली बाभन भी होते तो भी लता। महेन्दर मिसिर को इतनी छूट क्यों मिली हुई है-बाभन-ए के नाते न! कहा ा रहा है कि एक्कों रंडी से संसरग नहीं किए, कि नोट छापते थे आ ादी के आंदोलन के लिए... वाह रे समा !"[26]

भिखारी ठाकुर के माध्यम से लेखक यहाँ समा से सीधा प्रश्न करते हुए नज़र आते हैं। सवर्ण ाति के होने पर सभी गलतियाँ माफ हो ाती हैं और अवर्ण होने पर कलाकार होना भी पाप कहलाता है। यही है सभ्य समा की नीति।

समा में शोषण और अत्या ार

सामा िक ीवन के अंतर्गत वे सारी ीज़ें देखने को मिलती हैं ो हमारे सामने हर दिन घटित होती रहती हैं। इनमें से हम देख सकते हैं कि शोषण और अत्या ार उन्हीं लोगों पर किया ाता है ो समा के अंतर्गत रहते हुए भी समा का हिस्सा नहीं बन सके।

[25] सूत्रधार, सं ीव-पृ.289
[26] सूत्रधार, सं ीव-पृ.304

विवे य विषय से कथाकार सं ीव अपने उपन्यासों के माध्यम से परि ित कराते हैं। इनके हर उपन्यास में शोषण के विविध रूप दिखाई देते हैं, ैसे सामा िक, आर्थिक, धार्मिक, रा नीतिक, प्रशासनिक और शैक्षिक आदि। उसी प्रकार इन शोषित, पीड़ित वर्ण पर मींदार, पुलिस, पूं ीपति, ठेकेदार आदि के द्वारा अत्या ार भी किये ाते हैं, इसका भी मार्मिक ित्रण लेखक द्वारा किया गया है।

सं ीव का उपन्यास 'किसनग ़ के अहेरी' के माध्यम से शोषण तंत्र का ित्रण किया गया है। इनमें निम्न वर्ग, उनका ीवन संघर्ष पूँ ीपतियों की काली करतूतों को समेटा है। शोषण के भीषण क्रव्यूह में अभिशप्त िंदगी ीनी पड़ती है। आज़ाद देश के नये अंग्रेज़ बुरी तरह से देशवासियों का खून एवं आज़ादी का रस ूसते हैं। इसी आवाज़ में यह उपन्यास प्रश्न करता है, "आज़ादी किसके लिए कैसी आज़ादी? उनके लिए ो महलों में रहते हैं या उनके लिए ो दोहित और शोषित हैं।"[27]

इस उपन्यास के अंतर्गत उदयभान तिवारी, इनरपति सिंह, फौ दार सिंह, रुपई सिंह, ब्रह्म ारी, रामबु ावन राय ैसे पूं ीपति निम्न वर्ण का अमानवीय ंग से शोषण करते हैं। ठेकेदार मंसूर और व्यापारी वृषभानु धर्म की आ ़ में लोगों का शोषण करते हैं। पूँ ीपति हलवाहों को सरकार द्वारा तय म दूरी तक नहीं देते। ब हलवाहे विरोध करना ाहते हैं तो रूपई उन्हें धमकाता है-"काम पर सीधे तौर पर ले आओ वरना सबकी कटवा देंगे। सरकार यहाँ हम हैं तुम्हारी, हम ो कहेंगे, किसनग ़ में वही होगा।"[28]

इन लोगों से निम्न वर्ण के लोग डरते हैं। इसी कारण वे इनका शोषण सहते हैं। उपन्यास का केंद्रीय पात्र ाय के नेतृत्व में ेतना ागती है लेकिन पूं ीपति अंततः ाय की ही हत्या कर देते हैं और उसकी पत्नी का बलात्कार किया ाता है। उपन्यासकार ने किसनग ़ में स्थित सामा िक, आर्थिक, धार्मिक शोषण की विभिन्न परतों को उ ागर किया है।

---

[27] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.125
[28] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.62

इस उपन्यास में एक ागह स्त्री का शारीरिक शोषण धर्म के आ. में कैसे किया ाता है यह लेखक अपने तरीके से बताते हैं। विधवा ब्राह्मण स्त्री राधा का अपने मामा ब्रह्म ारी ी के द्वारा यौन शोषण किया ाता है। इस कुकर्म के लिए भगवान का सहारा लेता है "सारे कर्मों के तुम्हीं तो कर्ता हो, ो ाहते हो, कराकर छोड़ोगे।"[29]

‘ ंगल हाँ शुरू होता है’ सं ीव का सर्वाधिक र् ित उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक यह कहना ाहता है कि आदिवासियों पर कानून और डाकू किस तरह से शोषण और अत्या ार करते हैं। यह उपन्यास प्रशासन और पुलिस व्यवस्था के लिए एक प्रश्न िह्न है। ब बिसराम की पत्नी डाकुओं के कहने पर खाना बना कर भे ती है, इस सू ना को पाकर पुलिस उसे थाने ले ाती है। अगले दिन सुबह होने पर भी घर नहीं लौटती है तो बिसराम कहता है-"अब ई कहाँ का कानून है, हे सुरू महारा , कि ो कोई भी डाकू की मदद् करेगा, पुलिस बिना मानत के बंद कर देगी? मलिकार को तो कभी बंद नहीं करती। सारा कानून गरीब के लिए है?"[30]

यह प्रश्न है उन प्रशासनिक अधिकारियों से िन्होंने कानून सबके लिए एक ैसा बनाया है तो फिर क्यों उन ला ार, बेकसूर लोगों पर इस्तेमाल करता है? उन्हीं पर क्यों अत्या ार करता है?

इस उपन्यास में बताया गया है कि डाकुओं द्वारा गरीब आदिवासी किस तरह से शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना को सहते हैं। एक बार डाकुओं का दल गाँव में घुस आता है। उन्हें गाली-गलौ करते हुए उन्हें पशु की तरह पीटा ाता है। "लगातार ूते की ठोकरों से खून थूकते हुए हलाल किए गए बकरे की तरह तड़प रहे हैं वे।"[31]

---

[29] किसनग . के अहेरी, सं ीव-पृ.16

[30] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.26

[31] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.68

इस उपन्यास के अंतर्गत ऊँ ाी ााति के द्वारा निम्न ााति के स्त्री का शारीरिक शोषण व अत्या ाार किये ााने का एक उदाहरण हमारे सामने रखा गया है। इसके पीछे एक औरत का हाथ होना विस्मय की बात है। इसी बात से काली हैरान हो ााता है। ाब पांडे और पंडाइन ने उस औरत को हाथों से पकड़ रखा था और पांडे का साला उसे दबो ो हुए था। "बाप रे! क्या एक औरत खुद अपने सामने एक दूसरी औरत का बलात्कार करवा सकती है?"[32] यानी सवर्णों के हवस का शिकार एक निम्न वर्ग का ही होता है और वह भी एक सवर्ण स्त्री के द्वारा अवर्ण स्त्री का बलात्कार करवाया ााय, यह कैसी विड़ंबना है समा ा की।

पुलिस ाब पूछताछ के लिए मलारी के पास आती है और न बताने पर उस पर टूट पड़ती है। प्रशासनिक अत्या ाार के ालते यह भी नहीं देखा ााता है कि वह एक औरत है, पुलिस उसे मारने लगती है तब वह कहती है कि-'हाकिम। हमारा कुसूर बस इतना है कि गरीब हैं, औरत ाात हैं, ाो ही आता है, डरा-धमका के ाबरदस्ती करने को मग ाूर (म ाबूर) करता है।' फिर उसके साथ उसी तरह का सलूक किया ााता है, ाो कि एक बड़े डाकू के साथ। राइफल उसके पेट पर रखकर कहते हैं-"बोल भोंसड़ी। रंडी, कुतिया...। बोल, मादर ाोद।... नहीं तो ई राइफल तेरे पेट में डाल देंगे।"[33]

लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से शोषण का ाित्रण और उसके विरोध में बने डाकुओं के बारे में बताने का प्रयास किया है। लेखक अपने पात्रों के माध्यम से स्वयं के वि ाारों को व्यक्त करना ााहते हैं। पुलिस अधिकारी 'कुमार' को कम्युनिस्ट पार्टी के पुराने कार्यकर्ता 'बैठा ाी' के द्वारा शोषण का खुलासा करते हैं " ाहाँ सिर्फ एक प्रतिशत लोगों के हाथ में 90 प्रतिशत ामीन हो, ाहाँ साधारण लोगों के पास सिर्फ 5 प्रतिशत ामीन हो, बाकी पर बड़े लोगों का कब ाा, वहाँ क्या हो सकता है?"[34]

---

[32] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.92
[33] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.92
[34] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.236

इस कथन से स्पष्ट होता है कि प्रशासन द्वारा ही यह शोषण व्यवस्था ाल रही है तो वे न्याय के लिए कहाँ ाएंगे। इतना ही नहीं पूं ीपति और ठेकेदारों के द्वारा भी शोषण का कार्य ालता है। उसका एक उदाहरण "सरकारी रेट है एकतालीस रुपये प्रति क्विंटल और अठारह से बीस रुपये प्रति क्विंटल पर बे ने को म ाबूर है गरीब म ूर। बेंत को छोड़िए, गन्ने को ली ाए न! ीनी मिल के मालिक लूटकर लाल हो गए, मगर किसान...?"[35]

सं ीव के अन्य उपन्यासों में ैसे 'सावधान नी े आग है', 'धार' और 'पाँव तले की दूब' में आदिवासियों का सामा िक, आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण का ि त्रण दिखाया गया है। इनमें आदिवासियों का लोक ीवन और उनके विस्थापन के बारे में बताया गया है। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में औद्योगिकरण के ालते आदिवासियों की मीन हड़प ली ाती है और उन्हें अपने ही मीन से बेदखल करने का षडयंत्र र ाते हैं। शोषण, अभाव और आतंक के ालते आदिवासी पूरी तरह पस्त हैं।

पूं ीपति-ठेकेदार कम मूल्य में उनका श्रम खरीदते हैं तो पुलिस खानापूर्ति के रूप में उनका इस्तेमाल करती है। आदिवासी युवा पी ़ी में इसके ालते आक्रोश की भावना दिखाई देती है। इस उपन्यास का युवक फिलिप अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहता है कि "प्रदेश की दो तिहाई आय हमसे होती है और हमारी हालत- न तन पर साबुत कपड़ा, न पेट में भरपेट भात। दवा-दारू, प ़ाई-लिखाई की बात छोड़ ही दी ाए। बहुत पैसा दिया सरकार ने। सरकार घोषणाएँ करती नहीं थकती लेकिन हम कंगाल के कंगाल।"[36]

'धार' उपन्यास की नायिका मैना भी यही सवाल करती है। विकास के नाम पर न ातियों पर होनेवाले शोषण और विस्थापन का उपन्यासकार ने यथार्थ अंकन किया है। कोयला अं ाल पर लिखे उपन्यासों में व्यवस्थागत विसंगतियों का भयावह रूप सामने आता है। 'सावधान! नी े आग है' उपन्यास में व्यवस्था की

---

[35] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.236

[36] पाँव तले की दूब, सं ीव, हंस, सितंबर 1990-पृ.76

अनेक कुटिलताएँ सामने आती हैं। 'धार' उपन्यास में पूँ ीपति, ठेकेदार, माफिया, दलाल, आदिवासियों के साथ ानवरों सा व्यवहार करते हैं। खादानों में मेहनत आदिवासी करते हैं और संपन्न होते हैं पूं ीपति।

"ठेकेदार ोर-डांगरों की तरह उन्हें काम करने हाँककर ले ाते हैं और ूसकर छोड़ देते हैं, माफिया अब भी उसे अमानुषिक श्रम कराते हैं और रा- रा सी बात पर पीटते हैं।"[37]

'सावधान! नी ो आग है' उपन्यास में लेखक यह बताने का प्रयास करते हैं कि पूं ीपति और प्रशासनकर्मी किस तरह से मज़दूरों का शोषण करते हैं और उसके लिए मज़दूर यूनियन को अपना मोहरा बना लेते हैं। यहाँ "कुर्सी एक ठप्पा है मैने मेंट का यह यूनियन मैने मेंट की, मैने मेंट द्वारा और मैने मेंट के लिए है।"[38]

इनकी शोषण और अत्या ार की नीति यहाँ तक पहुँ ती है कि खादान के अंदर ल-प्लावन के लते लगभग हज़ार आदमी फँस ाते हैं लेकिन अटेंडेंस र िस्टर में सिर्फ सा े तीन सौ के नाम होते हैं। ब इन सबकी मृत्यु हो ाती है, तब इससे ब ने के लिए वे गवाहों की हत्या कर देते हैं। कुछ गवाहों को आतंकित कर अपने पक्ष में किया ाता है। मुआव ा बाँटते समय तक भ्रष्टा ार होता है। आशीष को ठगाकर सबूत हासिल किये ाते हैं। इसी कारण मुकदमे के समय मदन गोराई कहता है "हु ूर, सब सार घूस खाया है सब ई कोर्ट को म ाक बना दिया है सब।"[39]

' ंगल हाँ शुरू होता है' उपन्यास में आदिवासियों का अमानुषिक शोषण उन सभी सवर्ण, मींदार, पुलिस, डाकू और नेता लोगों से है। थारू आदिवासियों की दयनीय स्थिति को लेखक ने दर्शाया है। थारू पुरुषों को मींदार और ठेकेदारों की गुलामी करनी पड़ती है तो नारी मींदार, डाकू और पुलिस की वासना का

---

[37] धार, सं ीव-पृ.129
[38] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.80
[39] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.251

शिकार बनती हैं। शोषण से त्रस्त होकर काली सो ाता है-"क्या वह इन हरामखोरों की बेगार करने और उनकी गाँड धोने के लिए ही पैदा हुआ है? हतक, हतक और हतक! हतक के सिवा कुछ नहीं। ऐसे अन्याय पर उसे क्या करना ाहिए-यह बतानेवाला कोई नहीं-न कोई देवी-देवता, न कोई साधु-फकीर, न कोई लीडर-अफसर! हर तरफ अंधेरा है, हर तरफ घुटन।"[40] इसी शोषण से त्रस्त होकर काली विवशता वश डाकू बन ाता है।

'सूत्रधार' में तत्कालीन समा ा में नाई ैसी छोटी ातियों का उ ा ातियों द्वारा सामा िक शोषण किया ाता है। नाई ाति के होने से भिखारी ठाकुर को हर ागह अपमानित और शोषण का शिकार बनना पड़ता है। ि ससे उनके अंदर का कलाकार बर्बर हो ाता है, और यहाँ तक सो ाने लगता है कि-"पिछले ानम में ारूर कोई ऐसा बड़ा पाप किया होगा कि इस ानम में नाई के घर पैदा हुए।"[41]

'धार' उपन्यास में पुलिस के शोषण के विरोध में सब आदिवासी ुट ाते हैं। इनके नायक 'शर्मा' ाब पुलिस से कहता है-"हम हमेशा हारते रहे हैं साहब, लेकिन अब नहीं। हम ाानते हैं कि आपके संस्कार ही गंदे हो गये हैं लेकिन हम फिलहाल आपसे लड़कर अपनी शक्ति नष्ट नहीं करना ाहते।"[42] यानी वे अब किसी के भी शोषण तंत्र को सहने के लिए तैयार नहीं हैं। वे प्रशासनिक व्यवस्था के शोषणकारी ेहरे का परदाफाश करते हैं।

'आकाश ंपा' उपन्यास में लेखक ने शोषण और अत्या ार का ित्रण अपने अंदा े में किया है। ब्राह्मण समा ा किस तरह से निम्न ाति पर अत्या ार करता है यह महेंदर मिश्र और ज्ञान द्वारा दिखाया गया है। दलित ाति के के.के. ाब सवर्ण ाति के खिलाफ बात छेड़ देते हैं तब मंडन मिश्र कहता है-"गाली दोगे तो गाली खाओगे। यहाँ सारे ब्राह्मण मौगा न होते तो तू गाली देकर इस तरह

---

[40] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.93
[41] सूत्रधार, सं ीव-पृ.157
[42] धार, सं ीव-पृ.143

ब ाकर निकल ााता?"[43] इस बात का ज्ञान पर असर होता है और वह क्रोध में आकर के.के. पर टूट पड़ता है-"ठहरो स्साले, तुम्हारी तो मैं...!" कहते हुए उसने हाथ ाला दी के.के. पर।

उसी तरह शोषण का ित्रण भी हम देख सकते हैं। ज्ञान को सामने रखकर पीछे से पूं ीपति, रा ानीतिक सत्ता गरीब और भोले-भाले लोगों की ामीन हड़पने का षडयंत्र र ाते हैं। स्टडी सेंटर के नाम पर शोषण करने का एक नया तरीका अपनाया ााता है। उन मोहल्ले वालों की ामीन को हथियाया ााता है तब वे गिड़-गिड़ाकर रो पड़ते हैं और वे मास्टराइन से दरख्वास्त करते हैं कि-"हमसे ाो दोखा-पाप हुआ हो, सब छिमा करो। अब आपको कुछ भी बोलें तो हमरा ाीभ काटके फेंक दो लेकिन हमको हिंयाई रहने दो।"[44]

'सर्कस' उपन्यास में सर्कस कंपनी के मालिक दामोदरन का व्यक्तित्व श्रमिक और शारीरिक शोषण करनेवाले व्यक्ति का व्यक्तित्व है। अपने सर्कस के लिए िासे भी लिया ााता है तो वह खोट कहकर सस्ते में खरीद लेने वाले सोनार की तरह है। रामू दादा अपनी बेटी कामिनी को सरकस में लगाने की बात करता है तो दामोदरन कहता है-"ठीक है, काम सीखने दो। ज़रूरत हुई तो रख लेंगे। ट्रेनिंग के वख्त कोई पैसा नहीं मिलता, ाान लो। वैसे भी ाानते हो, ए ा ज़्यादा हो गयी है।"[45]

सर्कस में काम करेनवाली औरतों का सर्कस कंपनी के मालिक द्वारा शारीरिक शोषण भी किया ााता है। 'एवरेस्ट' सर्कस के मालिक नियोगी अपनी सर्कस के एक आर्टिस्ट रीता से शारीरिक संबंध रखता है। शादीशुदा होने के बाव ाूद उसका शारीरिक शोषण किया ााता है। इससे ब ाने के लिए वह इस हद तक गिर ााता है कि रीता से कहता है कि तुम उस बौने से शादी कर लो, तब हमारे लिए कोई शंका

---

[43] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.136
[44] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.188
[45] सर्कस, सं ाीव-पृ.19

की गुं ाइश नहीं होगी। "बात को सम ाने की कोशिश करो। एक ओट ाहिए हमें न? रही बात उसकी तो कभी-कभार ओब्लाइ ा कर दिया करना।"[46]

'सर्कस' उपन्यास के अंत में मैना इस शोषणकारी व्यवस्था के प्रति विरोध करने का फैसला करती है, इसके लिए संदू दीदी उसका साथ देने के लिए तैयार हो ाती है।

'सूत्रधार' उपन्यास में शोषण का एक रूप लेखक ने उस समय की परिस्थितियों के अनुरूप दिखाने का प्रयास किया है। एक नाई से काम लेने पर उसके श्रम के लिए ो पैसे देते हैं वह बहुत ही नाइंसाफी होती है। उसका शोषण किया ाता है।

नाई को दूसरे गाँव में ि ाट्ठी पहुँ ाने के लिए भि वाया ाता है, उसे पहुँ ाने रेल से ाना होगा, बी ा रास्ते में खाने-पीने का इंत ाम भी तो करना होगा, लेकिन इन सबके लिए उसे सिर्फ 'दस' आने दिये ाते हैं। " ा ामान ि ास माई-बाप की सेवा करने ाले हैं, उसकी स्थापना करेगा नाई और इसके लिए नाई को क्या मिलेगा-पौने ार ग ा मरदानी, उटँग, पाँ ा ग ा नानी और दू पैसा-मानो भीख हो।"[47]

अंततः यह कह सकते हैं कि सं ीव के उपन्यासों में शोषण के अलग-अलग पहलुओं का ि ात्रण दिखता है, ो कि समा ा से ाुड़ा हुआ है। आ ा के संदर्भ में भी इस स्थिति को देखा ा सकता है।

पारिवारिक ाीवन

कहा ाता है कि समा ा एक परिवार है। परिवार समा ा का ही एक हिस्सा है। इसका तात्पर्य यह निकलता है कि समा ा और परिवार को अलग करके देखा नहीं ा सकता। विवे ा विषय के संदर्भ में देखा ाए तो सं ीव के लेखन में पारिवारिक संदर्भ का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके हर एक उपन्यास में पारिवारिक

---

[46] सर्कस, सं ीव-पृ.111
[47] सूत्रधार, सं ीव-पृ.163

संबंध, रिश्ते-नाते आदि का ि त्रण मार्मिकता से दिखाया गया है। सं ीव के लेखन से यह सम ा सकते हैं कि वे संयुक्त परिवार के पक्षधर हैं। पारिवारिक संबंधों को उन्होंने अधिक महत्व दिया है। इनके उपन्यासों में परिवार को कहीं पर मातृ सत्तात्मक और कहीं पर पितृसत्तात्मक दिखाया गया है। परिवार के संदर्भ में उन्होंने स्त्री को गौरवमय स्थान प्रदान किया है।

परिवार के अंतर्गत प्रेम, राग-द्वेष, वात्सल्य, करुणा के साथ-साथ कुछ ऐसी भी बातें हो ाती हैं कि उनके संबंधों में विघटन हो ाते हैं। ैसे कि आर्थिक, धार्मिक, सुरक्षात्मक, शिक्षात्मक, अंधविश्वास, शंकाओं के कारण इनमें पारिवारिक समस्याएँ उत्पन्न हो ाती हैं।

सं ीव के 'सूत्रधार' उपन्यास में भिखारी ठाकुर और उनके पारिवारिक संबंधों का ि त्रण बहुत ही गहरा और मर्मस्पर्शी दिखाया गया है। ब भिखारी ठाकुर के घर ब ो के न्म होने का समय आता है, उस समय एक पिता और पति का मन किस तरह से घबरा ाता है, किस तरह वह ब ो के न्म होने पर खुशी के मारे शर्माता है इसका ि त्रण लेखक ने स्वाभाविक ंग से किया है। इस उपन्यास के अंतर्गत भिखारी के बहुत से रिश्ते-नातेदारी को बताया गया है, वह भी संयुक्त परिवार का ही एक हिस्सा बनता देखा ा सकता है। माता-पिता, भाई-बहन, फूफा, बड़की माई, पत्नी, बेटा-बेटी आदि परिवार के सदस्य बने रहे।

परिवार में ब शादी- ैसी रस्म होती है या कोई विशेष संदर्भ में सभी सदस्य एक साथ काम करते हुए, एक-दूसरे की सहायता करते हैं, वह त्यौहार का माहौल बन ाता है। पितृसत्तात्मक समा ा में परिवार के सभी सदस्य पिता की बात पर कोई विरोध नहीं करते हैं। 'सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर अपने पिता से कभी आँख मिलाकर बात करने का साहस नहीं कर पाता था। एक बार भिखारी के घर आने पर उनके पिता ी उनसे पूछ बैठते हैं कि आ ा-कल बाहर यादा रह रहे हो, वे तो कुछ बोलते नहीं, लेकिन उनकी माँ रूर उनको ब ाने का प्रयास करती है। 'देखता हूँ, आ ाकल तुम कुछ यादा ही बाहर रहने लगे हो, क्या बात है?' भिखारी ठाकुर कसमसा ाते हैं, इस पर उनकी माँ कहती है-"स ामु ा के सठिया गए हो

क्या! ावान लड़का है, ो मुँह में आ रहा है, बके ही ा रहे हो।"[48] यह स्वाभाविक बात है कि अक्सर माँ अपेन ब ों का समर्थन करती रहती हैं।

'आकाश ंपा' उपन्यास में पारिवारिक संबंध और उनके बी ा पनपती दूरियाँ, स्वाभिमान आदि का ीवंत ि त्रण किया गया है। मास्टर मोतीलाल का बेटा ज्ञान अपने पिता के साथ मुँह लड़ाता है तब वह बहुत दुखी हो ाता है और वह सो ने लगता है कि क्या उनका अपना बेटा है? ाब शादी की बात आती है तो मोतीलाल अपने बेटे ज्ञान से कहते हैं कि तुम्हें प्रज्ञा के साथ ही शादी करनी होगी। इस बात पर वह अपने पिता का विरोध करते हुए इस प्रस्ताव को ठुकरा देता है। "तो आप भी सुन ली ाए बाबू ी, मु े उस साइकिलवाली मास्टरनी के साथ ' ान-गन-मन' और 'वंदेमातरम्' का कोरस नहीं गाना।"[49] ऐसी ही बहुत सी पारिवारिक समस्याओं का ि त्रण इस उपन्यास में किया गया है, ो कि यह संयुक्त परिवार है।

कभी-कभी परिवार में किसी एक व्यक्ति का अन्य सदस्यों द्वारा उतना सम्मान नहीं होता है, उसके अनेक कारण हो सकते हैं। इस उपन्यास का मूल पात्र मोतीलाल को भी इसी स्थिति का अनुभव करना पड़ता है, और वह परिवार में रहते हुए भी अकेला बना रहता है। इसका कारण पी ़ी, समय और आर्थिक स्थिति है।

'धार' उपन्यास के अंतर्गत परिवार का एक नया रूप हमारे सामने आता है। पारिवारिक विघटन का ि त्रण इस उपन्यास में हमें दिखाई देता है। मैना का परिवार होने पर भी वह विघटन के कारण सब अलग-अलग होते हैं और वह अकेली हो ाती है। मैना के पिता और पति उससे अलग रहते हैं, उसकी बेटी सितवा आर्थिक स्थिति के कारण अपनी माँ से दूर रहने का फैसला करती है और वह बिल्कुल अकेली हो ाती है। एक संदर्भ में मैना से मामा कहता है-"तेरे खानदान को कैसा रोग लग गया है मैना? टेंगर महात्मा से तेरी बनी नहीं, तेरे से सितवा का भी नहीं बनी।"[50]

---

[48] सूत्रधार, सं ीव-पृ.63
[49] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.192
[50] धार, सं ीव-पृ.150

पारिवारिक विघटन के कारण बहुत ही छोटी-छोटी बातें होती हैं, ि निके ालते पूरा परिवार ही टूटने लगता है। पारिवारिक संबंध ुड़ने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ती है, लेकिन उसे तोड़ने के लिए एक संदर्भ व एक गलतफहमी काफी है। सं ीव ने इसी का ि त्रण मार्मिक रूप से हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनके अन्य उपन्यास, सर्कस, सावधान! नी े आग है, ंगल हाँ शुरू होता है में भी पारिवारिक संबंधों का ि त्रण है, ो आर्थिक असमानताओं और सामा िक व्यवहार के कारण विघटित होते हुए नज़र आता है। उनके बी ा ि तना प्यार होता है, अ छे संबंध व वात्सल्यपूर्ण वातावरण रहता है, उसका ीवंत ि त्रण किया गया है। ' ंगल हाँ शुरू होता है' में बिसराम बहु अपने परिवार का इतना ख्याल रखती है कि पति, ब ों का हर तरह प्यार और वात्सल्य भरी सांत्वना देती है। साथ-साथ उसका देवर काली को भी माँ का प्यार बाँटती है। यहाँ देख सकते हैं कि पारिवारिक रिश्तों के घनिष्ठ संबंध गरीब, आदिवासी लोगों में अधिक दिखाई देते हैं।

उधर पुलिस अफसर कुमार के परिवार में भी इसी तरह का वातावरण फैला रहता है। यहाँ संयुक्त परिवार का ही ि त्रण हुआ है। पति-पत्नी के संबंध को उनके बी ा ालनेवाले संवादों को भी सह ा रूप दिया गया है। कुमार अपनी पत्नी से प्यार भरी बातें करता है और वह भी उसके अनुसार स ाने लगती है-"यह साड़ी नहीं, वो पीलीवाली... यह ब्लाउ ा नहीं वो काला वाला... यह बिंदी नहीं, वो... मयूरी हरे पंखवाली।"[51] यह प्रेम, माधुर्य से भिगोने वाली बातें ही तो पारिवारिक संबंधों को और यादा दृ ़ बना देती हैं।

सं ीव के उपन्यासों में परिवार का स्थान अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है। परिवार का बनना, बिगड़ना, टूटना आदि का ो संबंध है वह मुख्य रूप से सामा िक व्यवस्था के अनुकूल, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियों के प्रभाव के कारण ही होने लगता है। इसीलिए कह सकते हैं कि परिवार के सदस्य अपने

[51] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.257

दायित्वों का ही पालन करने पर उनका पारिवारिक ि त्र कभी बिखर नहीं सकता। एक दूसरे में ताल-मेल और संयम का होना आवश्यक गतिविधि है।

3.2 सांस्कृतिक आयाम

संस्कृति का संबंध सामा िक ीवन से अधिक है। ब मनुष्य का एक दल एक ही रीति से कुछ करता है, एक ही विश्वास रखता है, एक ही प्रकार के आदर्श सामने रखता है, अपने पुरखों के कामों को समान रूप से अपने आदर, गर्व और गौरव की बात मानता है, तब संस्कृति का न्म होता है। संस्कृति आदमी के सामा िक ीवन का प्राण है। संस्कृति वि ारों की दुनिया है। मनुष्य संस्कृति निर्माता प्राणी है।

यूरोप में इसे 'कल र' के नाम से पुकारा ाता था। इसका हिंदी रूपांतरण 'संस्कृति' बनाया गया। िसमें उस देश की सारी सभ्यता, रीति-रिवा , आदान-प्रदान, वेश-भूषा आदि की लक दिखाई पड़े। उसे सांस्कृतिक परिवेश कहा ाता है। टायलर का कहना है-"वह टिल इकाई (मानता है) िसके अंतर्गत ज्ञान, विश्वास, कला, आ ार, विधि, रीति और अन्य वे क्षमताएँ और अभ्यास सम्मिलित हैं, िन्हें मनुष्य समा के सदस्य के रूप में अ ित करता है।"[52]

इस तरह वह यह प्रतिपादित करता है कि संस्कृति सामा िक परंपरा से अ ित िंतन, अनुभव और व्यवहार-संक्षेप में, मानसिक और क्रियात्मक व्यवहार की समस्त रीतियों की समष्टि है।

मानव की श्रेष्ठतम अनुभूति साधनाओं की समष्टि का नाम है 'संस्कृति'। संस्कृति का अर्थ 'सम्यक् कृति' है। अर्थात् "मनुष्य व्यक्तिशः 'सम्यक कृति' करता रहे और संघशः 'सम्भूय कृति' भी करें। व्यक्ति द्वारा तथा संघ- ीवन द्वारा िस समय सम्यक् कृति होती है उस समय वह सम्यक् कृति मानव को अति मानव बनाने में समर्थ होती है।"[53]

---

[52] लोक साहित्य और संस्कृति, डॉ.दिनेश्वर प्रसाद-पृ.95

[53] लोक नाट्य एवं संस्कृति, प्रो.ए.अ युतन-पृ.25

संस्कृति का संबंध अंतर्मन से है। मानव ीवन के विविध पक्षों की गुण-अवगुणों की समष्टि है संस्कृति। ाब हर संस्कृति एक स्वतंत्र कार्यात्मक इकाई है तो, न तो किसी संस्कृति को श्रेष्ठ कहा ााना ााहिए और न हीन, न तो महत्वपूर्ण और न महत्वहीन। देश के सांस्कृतिक परिदृश्य में अपने स्थानीय वैविध्य के साथ क्षेत्रीय संस्कृतियाँ अपने वैशिष्ट्य के कारण अलग-अलग दिखायी पड़ती हैं। सांस्कृतिक परिदृश्य में विभिन्न प्रकार के वैविध्य ैसे शहरी और गाँव की अलग संस्कृति का होना लोक-संस्कृति भी कहलाता है।

लोक-संस्कृति वह संस्कृति है ि ान ाातियों के असंस्कृत समुदायों के अवशिष्ट विश्वास, रीति-रिवा ा, कहानियाँ, गीत तथा कहावतें आती हैं। इन सभी का समावेश होना ही लोक संस्कृति है। ि ास साहित्य में संस्कृति का ि ात्रण होता हो, वहाँ की परिस्थितियों का और उनके ीवन स्थितियों का परि ाय होता है उसे संस्कृति परक र ाना कहा ााता है। विवे ाय विषय से संबंधित इस र ानाकार की र ानाओं में वही लोक-संस्कृति की ालक दिखाई पड़ती है। सं ाीव अपने उपन्यासों के माध्यम से समा ा के उन लोगों के ीवन से परि ाय कराते हैं, ि ानको समा ा से उपेक्षित किया गया है। उनकी अपनी अलग पह ाान को, अपनी संस्कृति को लेखक अपने उपन्यासों के माध्यम से हमारे सामने रखता है। देशकाल, वातावरण, परिवेश, सामाि ाक स्थिति, विश्वास, रहन-सहन, पर्व, वेश-भूषा और लोक-गीत आदि के समाविष्ट को लोक-संस्कृति के रूप में लेखक हमारे सामने रखते हैं।

सं ाीव के अधिकांश उपन्यासों में सांस्कृतिक परिवेश का बखूबी ि ात्रण मिलता है।

लेखक अपने उपन्यासों में उस देशकाल वातावरण और परिवेश की संस्कृति को दिखाने से कभी नहीं ाूकते हैं। ैसे कि ‘सूत्रधार’ उपन्यास के अंतर्गत भी उन्होंने सांस्कृतिक परिवेश को इतिहास परक बनाकर हमारे सामने रखने का प्रयास किया है। ‘सूत्रधार’ का सांस्कृतिक महत्व इस बात में है कि भो ापुरी इलाके के सबसे बड़े सांस्कृतिक व्यक्तितत्व को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। हालांकि भिखारी ठाकुर निकटवर्ती के ारित्र हैं पर उनकी स्मृति लोक में कम होती

ाली ा रही थी। उपन्यासकार न सिर्फ उस स्मृति को ठोस और महत्वपूर्ण आकार देता है बल्कि भिखारी ठाकुर के समकालीन अन्य भो ापुरी लोक-कलाकारों-महेंदर मिसिर और ांदी सिंह को भी उपन्यास में पाठकों से मिलाता है। वे दोनों कलाकार भी भिखारी ठाकुर की तरह बीसवी ंसदी में भो ापुरी लोक-संस्कृति के उन्नायकों में रहे। इस संदर्भ में रवींद्र त्रिपाठी का यह कहना उ ित होगा-"'सूत्रधार' का सांस्कृतिक महत्व इस कारण से भी है कि भो ापुरी के विशाल भाषा-वैभव के कई वैसे शब्द प्रयोग इसमें मौ ूद हैं ो आम बोल ाल में तो आ ा भी ालन में हैं पर ि न्हें खड़ी बोली हिंदी आ ा तक आत्मसात नहीं कर सकी है।"[54]

सं ीव ने भिखारी ठाकुर के माध्यम से भो ापुरी समा ा का सांस्कृतिक इतिहास और उसके महत्व को बनाया है। भिखारी ी ि स तरह अपनी लोक-कला के माध्यम से लोक संस्कृति का ो परि ाय कराया है वह आ ा भी सराहनीय है।

भिखारी छोटी ाति का होने पर गाँव के ऊँ ी ाति के लोगों का गौरव और उन संस्कारों का पालन करता है ो कि यह परंपरा पहले से ाली आ रही है। वे कितने ही बड़े कलाकार क्यों न हो ाएं पर वे अपने संस्कारों को नहीं भूलते और अपने उन लोक-नाटकों में भी संस्कारों को समाविष्ट करते हैं। उन्होंने ि न नाटकों का मं ान किया है उनका मूल कथ्य उसी समा ा से है ि ससे वे उप ो हैं और उनके अपने अनुभवों द्वारा बनाया गया।

सं ीव ने सांस्कृतिक परिवेश को दिखाने के लिए अपने उपन्यासों में लोक का सहारा लिया। आदिवासी, ान- ीवन का ि त्रण और शहरी संस्कृति का मेल उनके उपन्यासों का महत्व कहा ाता है। वे उस परिवेश के रीति-रिवा ा, त्यौहार और लोक-गीत, लोक-नाट्य, भाषा आदि का ि त्रण भी हूबहू करते हैं। सूत्रधार उपन्यास में 'सोहरांई' नाम के एक लोक पर्व को बताते हैं। उसी दिन से वे गोधन और भैयादू ा की तैयारी शुरू करते हैं। भैयादू ा में भाइयों को शाप देते हैं ो कि उनके लिए अ छा माना ाता है-"रेंगनी के काँट को बाएँ हाथ की नन्हकी अँगुरी और अँगूठे में पकड़कर सिर के ारों ओर वारते हुए कान से छुआ-छुआकर

---

[54] हंस, नवंबर, 2003-पृ.86

औरतें अपने भाई को सरापेंगी। भैयादू ा का सराप उलटकर वरदान बनेगा भाई के लिए।"[55]

इसी तरह के भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्व मनाये ाते हैं। उस समय पारंपरिक गीत भी गाये ाते हैं। ाहाँ का ो लोका ार हो उसके अनुसार वे सांस्कृतिक क्रिया-कलाप करते हैं। ि से वे पवित्र दृष्टि से देखते हैं और उसे उतनी ही पवित्रता के साथ निभाते हैं।

हर एक की भिन्न संस्कृति होती है और भिन्न आ ार-व्यवहार, खान-पान भी। किसी की संस्कृति में भो ा-उत्सव मनाया ाता है तो वह अपने आ ार के ालते भिन्न प्रकार के व्यं ानों का इंत ाम करता है। 'धार' उपन्यास में 'दिक्' और 'सौंताल' ाति के लोगों की अलग-अलग संस्कृति और आ ार-व्यवहार होते हैं। एक बार भो ा-उत्सव मनाया ाता है तो वह संतालों की परंपरा के अनुसार बछड़े को काटते हैं और उसका मांस खाया ाता है। इस पर भंगर ने शर्मा बाबू से प्रश्न किया, यह क्या है बछड़े का माँस, हम तो हिंदू हैं बछड़े का मांस छू भी नहीं सकते। तब शर्मा बाबू कहते हैं-"सुनिए मंगर ी!" ... सौंतालों की यह परंपरा है, वे भो ा-उत्सव में बछड़े का मांस उसी तरह खाते हैं ैसे हम दिकू लोग बकरे का मांस। यह दिकुओं का भो ा नहीं है, सौंतालों का भो ा है।"[56]

इतना ही नहीं संथालों का यह भी आ ार है कि किसी के गु ार ाने पर उसका क्रिया करम किया ाता है। अगर किसी कारण वश यह नहीं होता तो उसके लिए भी अलग तरीका बताया ाता है। ैसे कि मैना का बेटा ाब मृत्यु की गोद में सो ाता है तो वहाँ उसके क्रिया करम नहीं किया ाता। तब मैना से कैली कहती है कि-"ऊ बे ारा तो सरग गया देवलोक में। लेकिन अन्न खाने वाला ब ाा था, किरिया करम नई होगा तो का? उसका खातिर दू महीना तक एक कटोरी खाना

---

[55] सूत्रधार, सं ीव-पृ.89

[56] धार, सं ीव-पृ.53-54

अलग कर दरवा े पे रख देना। तोर तो अशौ ा हो गाय, ऊ वहीं से बाहर ही बाहर आके खा लेगा।"[57] इस तरह कैली ने संथालों की परंपरा के अनुसार हिदायत दी।

इस उपन्यास के अंतर्गत भी लोक-गीत, लोक-नाट्य या तमाशा का प्रदर्शन करते समय गाया ाता था। िसके ालते उस समय के सामा िक परिवेश व सांस्कृतिक परिदृश्य का ित्रण हुआ करता था। उन गीतों में भो ापुरी संस्कृति की ालक दिखाई देती है, ो आ ा भी उस संस्कृति की एक अलग पह ाान बन ुकी है। लेखक ने भिखारी ठाकुर के माध्यम से लोक-संस्कृति और भो ापुरी संस्कृति को बहुत ही प्रभावपूर्ण ंग से दिखाया है। इस उपन्यास का महत्व इसलिए है कि इसका मूल कथ्य (सांस्कृतिक) लोक-कलाकार भिखारी ठाकुर पर केंद्रित है, और उनकी लोक-कला, लोक-संस्कृति को सम्माननीय स्थान दिलाने का ो प्रयास किया गया है उस पर भी लेखक ने मुख्य रूप से प्रकाश डाला है।

भिखारी ठाकुर अपने समय के उस भो ापुरी क्षेत्र के लोक-कलाकारों में सम्मानीय स्थान प्राप्त कर ुके थे। उनकी ो लोक-कलाएँ हैं उनसे वे अपनी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा और उसको फैलाना ाहते थे। ितने भी लोक-नाट्य, लोक-तमाशा खेले ाते थे, उसमें अपनी समा ा की संस्कृति ओर ीवन-स्थिति को िंदा रखने का प्रयास किया करते थे। अपना सांस्कृतिक नृत्य रामलीला का पहली बार उन्होंने अपने गाँव में प्रदर्शन किया था। और वे अपनी सारी लोक-कलाओं को पहले सांस्कृतिक गीतों से ही शुरू करते थे। ताकि वे अपने मूल को भूल न सकें। वे अपने शिष्यों से यह कहते थे कि कभी भी अपनी संस्कृति को भूलकर उसके विपरीत कोई कला नहीं खेलनी ाहिए।

भिखारी ठाकुर के ितने भी लोक-नाट्य या तमाशा खेले गये हैं उनका कथ्य उस समय के सामा िक परिस्थितियों से लिया गया। ैसे कि उनका प्रसिद्ध लोक-नाट्य 'बिदेसिया' ो आ ा भी उस भो ापुरी क्षेत्र में खेला ा रहा है। बेटी-वियोग, गबर-गिछोर, बहरा-बहार आदि सामा िक ेतना वाले लोक नाट्य थे,

---

[57] धार, सं ीव-पृ.125

ि नके कारण भिखारी ठाकुर उस लोक-संस्कृति के विशिष्ट व प्रसिद्ध लोक कलाकार के रूप में लोक में अपना स्थान प्राप्त किया है।

एक बार भरी सभा में बड़े-बड़े साहित्यकार, कलाकार मं ा पर बैठते हैं, तब उनमें से राहुल सांकृत्यायन कहते हैं-भिखारी ठाकुर भो ापुरी का शेक्सपियर है। इससे सम ा सकते हैं कि वे कितने प्रभावी थे अपने लोक-नाटकों से। आ ा हम भिखारी ठाकुर और उनकी भो ापुरी लोक-कला और संस्कृति को ाानने के पीछे इस उपन्यास के लेखक सं ीव का बहुत बड़ा हाथ है। वे ऐसे उपन्यासकार हैं ि नका कार्य शोधपूरक होता है, वे इतने सक्षम और महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं ि नके लेखन से भारतीय संस्कृति का ि त्रण एक तस्वीर की तरह उभरता है।

'सूत्रधार' उपन्यास में से कुछ पंक्तियाँ ाो लोक-संस्कृति का एक गीत है ाो भो ापुरी लोक-भाषा में ही लिखा गया है-

"धोबी घर-घर नरक बिटोरत, धोई साफ करि देत।
घास बिना फसील सोभित है ि ामि किसान के खेत।"[58]

भिखारी ठाकुर अपना ना ा शुरू करने से पहले शिव और गुरू वंदना के गीत गाते हैं। ैसे-

"वामांके ा विभाति भूधर सुता देवपगा मस्तके
भाले बाल विधुर्गले ा गरलं यस्योरसि व्यालराट
सोऽयं भूति विभूषणः सुरवरः सर्वधिपः सर्वदा
सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनभः श्रीशंकर पातुमाम्
अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन ारा ारम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।"[59]

बिदेसिया का एक गीत प्रस्तुत है-

"हाय नाथ मोहिं सोंप दिए
तोहें भाई बाप महतारी

---

[58] सूत्रधार, सं ीव-पृ.57
[59] सूत्रधार, सं ीव-पृ.153

सत के बंधन छोड़ के स्वामी ी

मत करिह-अ बरियारी..."[60]

पति अपनी पत्नी को छोड़कर विदेश ाता है और उसकी राह में यह गीत गाया ाता है। ऐसे ही 'बेटी-वियोग' में बेटी को बे ने की कुप्रथा का ित्रण हुआ है।

'सावधान! नी ो आग है' में रो ी-रोटी हेतु ंदनपुर खदान क्षेत्र में आए मज़दूरों का एक बहुतमुखी 'लोक' दिखाई देता है। इनमें एक मिश्रित, लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं। उनके ोहन में अक्सर अपने देश का संदेश गूँ ाता है। अपनी मिट्टी से बिछड़े लोगो में एक एक गहरी कसक है। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सिख, आदिवासी, बंगाली, बिहारी आदि लोग यहाँ अनेक बिंदुओं पर सा ी िंदगी ीते हैं। छठ मैया पू ा, बिरहा पार्टी, मेला, दंगल आदि के समय उनमें उल्लास पाया ाता है। सभी अपने अतीत को भूलकर वर्तमान में ीने की कोशिश करते हैं। ऊधम यहाँ की िंदगी देखकर काका से कहता है, "काका, अब तुम भूल ाओ, मू ़ी, मछली, रवींद्र संगीत और मैं भूल ाऊँ सरसों का साग, मक्की की रोटी और पं ाबी धुनें। यह कोयलां ाल है। यहाँ किसी की संस्कृति सुरक्षित नहीं।"[61] रो ी-रोटी के संघर्ष के ालते यहाँ लोक संस्कृति टूटती-बिखरती नज़र आती है।

एक ागह पर स्त्रियों का वर्णन किया गया है ो कि उनके पहनावे को लेकर, उनके सांस्कृतिक वेश-भूषा की-"औसत कद की मोटी-सोटी औरतें, कुछ के पहनावे, घुटनों तक ूलते घाघरे और कुर्ती, पाँवों में मोटे छड़े, हाथ में कड़े। शायद रा ास्थान की हों। भरी-भरी बाँह तक बाले भी रहे हों शायद कभी, मगर अब तो...।"[62] कोयले खदान होने के कारण वहाँ पर काम करने के लिए मज़दूर विभिन्न रा यों, प्रदेशों से आकर बसे हैं और उनका रहन-सहन, रीति-रिवा ा और वेश-भूषा सभी की अलग-अलग संस्कृति होने के कारण उनमें भिन्नताएँ स्पष्ट रूप से

---

[60] सूत्रधार, सं ीव-पृ.260

[61] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.76

[62] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.16-17

दिखाई देती हैं। फिर भी वे यहाँ रहते हुए अपनी संस्कृति को भूले नहीं बल्कि सभी को साथ लेते हुए एक नयी संस्कृति को उ ागर करते हैं, ो कि बाँसगड़ा की संस्कृति कही ाती है।

इनके सांस्कृतिक परिवेश का और एक ित्रण यह भी देख सकते हैं कि किसी पर्व या उत्सव में देवी-देवताओं का दर्शन करने के लिए गाँव के सभी लोग, छोटे-बड़े, औरतें, बू े आदि निकल पड़ते हैं। ऐसे उत्सव में औरतें स ा-ध ा के आती हैं और तरह-तरह के व्यं ान, पकवान देवताओं को समर्पण करने के लिए ले आती हैं। सं ीव के द्वारा 'सावधान! नी े आग है' में छठ देवी और सूर ा देव के पर्व में इसी तरह का वर्णन किया गया है। वे इस लोक-पर्व को और उनकी संस्कृति को अपने अंदा ा में हमारे सामने रखते हैं। इस उत्सव के दौरान लेखक ने कुछ भिन्नताएँ भी दिखाई हैं। ैसे-" ावाहर की पत्नी, िसे उसकी बनारसी साड़ी से अलग ही पह ााना ाा सकता है। उनके पीछे हरि ान-बस्ती की औरतें हैं अपनी नाइलॉन व पटसन की ाटख रंगों की सस्ती उठंग साड़ियों में। दौरे में ा ावे के मीठे पकवान, फल, नारियल और गन्ने हैं, िासके पत्ते दूर तक ागह छेंके हुए हैं। मगर आ ा मृदंग और मादल की ागह प और पिपिहरी ब ा रही है।"[63]

यह एक ऐसा ुलूस है, िासमें हर तरह के लोग शामिल हैं। यह उनके पहनावे से दिखाई पड़ता है और तरह-तरह के व्यं ान और बैंड-बा े के साथ ा ावे के लिए ाते नज़र आते हैं। यहाँ एक सांस्कृतिक पक्ष हमें नज़र आता है।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में लोक संस्कृति के संदर्भ उपन्यास को आकर्षक और म ाबूत बनाते हैं। इसमें लोकगीत ेतना के वाहक रूप में प्रयुक्त हुए हैं। 'ब ाल बहकू ा कथा' संथाली कौम के साहस और लोक संगीत की सामर्थ्य को उ ागर करती है। मा ी हडाम द्वारा बातई लोकमानस में स्थित ' ीनी बू ों की कथा' आदिवासी अस्मिता और त्रासदी की प्रतीक है।

---

[63] सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.144

इस उपन्यास का मुख्य पात्र सुदीप्त स्वयं आदिवासी होने पर वह उस ान- ातीय ीवन से परि ित है और उनकी संस्कृति से भी। ब वह समीर से उनकी संस्कृति की ा ार्ा करता है तो वह बताता है कि-"आदिवासी लोगों की दो कम ोर नसें हैं, अरण्यमुखी संस्कृति और उत्सवधर्मिता! अरण्यमुखी संस्कृति उन्हें सभ्यता के विकास से ुड़ने नहीं देती और उत्सवधर्मिता इन्हें कंगाल बनाती रहती है। हंडिया या दारू ये पियेंगे ही और हर उत्सव को मस्त होकर मनायेंगे। प ़ाई-लिखाई से दूर रहेंगे?"[64] उनकी संस्कृति का रूप मुखर होने पर यह सम ा में आता है कि वे अपने ीवन के हर पल को इसी तरह बिताना ाहते हैं। यह एक तरह से कुसंस्कृति भी कहलाती है।

सं ीव अपने इस उपन्यास में आदिवासियों के ऐतिहासिक पात्रों का परि ाय भी देते हैं िसे उनके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को उभारा है। सुदीप्त के माध्यम से 'ब ाल बटकु ा' व्यक्तित्व को दृष्टव्य करता है। आदिवासी ीवन ारित्र को उ ागर करने के लेखक ने लोकगीतों का भी सहारा लिया है-

"धीरी ओ ोक-ओ ाक क्राते खेत इव बेनाव लेत
वीर पाकड़ माक काते खेत इग बेनाव लेत।"[65]

इसका अर्थ आगे बताते हुए कहते हैं-

"हमने पत्थर हटा-हटा के खेत बनाये
खेत बना-काटकर बी ा रोप धान के
धान काट-काटकर खलिहान ले आये
और खलिहान से उठा ले गया महा ान
सीने पर पहाड़ है कबसे अड़ा हुआ
ऐसे कब तक ालेगा, हे ांदो देवता...?"

ऐसे लोक-गीतों से उनकी संस्कृति और उनका ीवन परि ाय मिलता है, िससे उसके अलग सांस्कृतिक परिवेश का आभास होने लगता है।

---

[64] पांव तले की दूब, हंस, अगस्त, 1990, सं ीव-पृ.72-73
[65] पाँव तले की दूब, हंस, अगस्त, 1990, सं ीव-पृ.83

इनके सांस्कृतिक पर्व भी सं ाीव के उपन्यासों में हम देख सकते हैं। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में आदिवासी अपने एक सांस्कृतिक पर्व का ालसा मनाते हैं और वह बहुत ही उत्साह पूर्ण रूप से इसे मनाने की तैयारियाँ भी करते हैं। उसके संदर्भ में वहाँ की औरतें गीत गाते हुए आनंद उठाते हैं। 'पूरो ाांदो' याने पूरनमासी के दिन वे एक ालसा मनाने की तैयारी करते हैं। उसी संदर्भ को लेकर गीत गाया ाा रहा था।

"ओलोक पाड़हाक ोल ते
आलो पे मेनां नुई दो
... ..."[66]

समीर इस गीत का अर्थ पूछने पर बताते हैं कि "सुनिये, ई लड़की लोग कहता है कि हमको लिखत-प ़ता देख के ई मत सो ाो कि ई सिरिफ लिख प ़ ही सकता है और इसको धान रोपना नहीं गाता। ऊ देखो, बड़का-बड़का बाँध हमारे ही हाथ का बांधल है, ऊ देखो बोहा का खेत में धान, ऊ हमरे ही हाथ का रोपल धान लहलहा रहा है।

' ांगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में सं ाीव ने थारू आदिवासियों की संपन्न लोक संस्कृति का विस्तार से ित्रण किया है। उनकी आस्था, विश्वास, प्राकृतिक साह ार्य, परंपरा, देवी-देवता, लोक गीत, लोक कथा, मेला, रस्म-रिवा ा आदि का उपन्यास में ित्रण मिलता है। इस उपन्यास के अंतर्गत लोक-संस्कृति का ित्रण एक मेले के संदर्भ में हमारे सामने रखा गया है। थारुहट का सबसे बड़ा मेला सहोदरा या सुभद्दरा माई की पू ाा होती है, िसमें शामिल होने दूर-दूर से लोग आ रहे थे। "कोई नेपाल से, कोई रामनगर से। परिवार या गाँव समेत लोग अपने-अपने तरीके से आ रहे थे, साइकिल, घोड़े, बस, ाीप, बैलगाड़ियों से भी मगर यादातर पाँव पैदल। मेले में इतने सारे लोग दिखने लगे हैं उनमें भी अधिकतर स्त्रियाँ।"[67]

---

[66] पाँव तले की दूब, हंस, सितंबर, 1990, सं ाीव-पृ.85
[67] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.15

उनकी अपनी आस्था के कारण मेले में पू ाा-पाठ, ा ़ावा और फूल, अक्षत, पैसे अर्पित करके ओ ाा से आशीर्वाद ले रहे थे। यह सारा दृश्य लोका ाार, लोक-संस्कृति को दर्शाता है। इतना ही नहीं वे मेले के दौरान ना ा-गाने का भी निर्वाह करते हैं। इसमें वहाँ के लोकगीतों को गाते हुए स्त्रियाँ मस्त होकर ना ाती हैं। यह ना ा-गाना रात-भर ालता रहता है। उनके गीत कुछ इस तरह से-

"के ाइहें हा ाीपुर, के ाइहें पटना,

से के ाइहें...

अरे के ाइहें अरे बेतिया नौकरिया,

के ाइहें...?"[68]

लेखक आदिवासी ाीवन की हर एक गतिविधि को बहुत नज़दीक से परखते हैं और उनके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को मार्मिकता से दिखाते हैं। उनकी ाो धार्मिक संस्कृति है, उनकी ाो आस्था है, इसका भी ाित्रण होता है। उनका प्रसिद्ध पर्व या लोक उत्सव का प्रसंग आता है ािसका नाम है-'लखराँव', शिव ाी की पू ाा करने की विधि को ािसमें बताया ााता है। परबती और अन्य लोग माटी के मूर्ति बनाते रहते हैं तब कुमार उनसे पूछता है कि "क्या कह रहे हैं आप लोग? 'हु ाूर, हम हियाँई लखराँव कर लेंगे, एक लाख शिव ाी की पिंडी बनाना है। एक लाख बेलपत्ता...। अब कोई नहीं ााएगा माई के थान, सब अपना-अपना पू ाा करेगा।'"[69] याने वे अपनी संस्कृति को कभी नहीं छोड़ना ााहते हैं और उसका पालन हर हालत में करते हैं।

लेखक आदिवासियों के इतिहास को भी उपन्यास में बताते हैं। कई संदर्भों में ाैसे कि वे रा ापूत परिवार के हैं, मुगलों के हमले के कारण वे भागते हुए यहाँ आकर आदिवासी बन गये। यह ऐतिहासिक ाित्रण है इसके ालते वे अपनी एक

---

[68] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.17

[69] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.169-170

संस्कृति बनाते हैं-"थारू गाय का दूध नहीं पीते, थारू हिरण का मांस नहीं खा सकतेः वगैरह-वगैरह।"[70] यह काली द्वारा कुमार से कही गई बातें हैं।

सं ीव का नया उपन्यास 'आकाश ंपा' में इतिहास के यादों को ता ा करने का प्रयास किया गया है। मोतीलाल नामक पात्र से लेखक ने भारतीय संस्कृति के परिवेश को सामने लाने का प्रयास किया है। लेकिन समय के अनुसार संस्कृति के बदलाव को देखकर वह हताश होने लगता है। वह उन्हीं इतिहास के पन्नों में उल ाने लगता है। आधुनिक समय में ो शहरीकरण होने लगा है उसके ालते पाश ात्य संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखने लगता है। मास्टर मोतीलाल हिंदु संस्कृति से दूर रहना ाहते हैं, इसीलिए वे अपना ानेऊ भी उतार देते हैं। वे अपनी पत्नी के सामने ही इस सांस्कृतिक बंधन से मुक्ति पाने की बात करते हुए कहते हैं कि-"तुम साक्षी हो, आ ा से मैंने इस बंधन का परित्याग किया।"[71] इस तरह वे सांस्कृतिक रू ि यों से दूर रहना ाहते हैं।

इस उपन्यास में पाश ात्य संस्कृति का प्रभाव भी दिखाया गया है, ैसे कि ब्यूटी पार्लर का खोलना और लड़कियाँ का अपने आपको फैशन के साथ ोड़ने की भरपूर कोशिश करना। इस उपन्यास में एक ागह पर (पहाड़ी) आदिवासी ीवन और उनकी पहाड़ी संस्कृति का ि त्रण भी किया गया है। ापण्डा पहाड़ के आदिवासी पहाड़ पर ही ीवन यापन करते हैं, और वे अपने ीवन के हर पल को हसते हुए मस्ती के साथ ीना ाहते हैं "उन्हें यह फिकर नहीं कि पानी रहेगा कि नहीं, दूध होगा कि नहीं, ि ंदा रहेंगे कि नहीं।"[72] उनकी औसत आयु पैंतीस-छत्तीस वर्ष ही बतायी गयी है। मास्टर मोतीलाल इन पहाड़ी लोगों से मिलकर उनकी संस्कृति की प्रशंसा में कहते हैं कि "ता ुब की बात है, आदमी भी पहाड़ पर रहता है, उसकी गाय भी, और पानी भी।"[73]

---

[70] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.137
[71] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.9
[72] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.247
[73] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.247

'सर्कस' उपन्यास में कालाकरों की अपनी-अपनी भिन्न संस्कृतियों को एक साथ दिखाया गया है। उन सबकी संस्कृति एक तरह से बं ारन संस्कृति की तरह होती है,क्योंकि उनका ीवन कहीं एक ागह पर नहीं होता। सर्कस के कलाकारों के ीवन और उनकी वास्तविकता से हमें परि ाय कराया ाता है। इसमें शास्त्रीय संगीत का भी ि ाक्र किया गया है।

'किसनग ़ के अहेरी' एक ऐसा उपन्यास है िासमें किसनग ़ के लोगों का ीवन और उनकी सामंती संस्कृति का ि ात्रण है। लेखक द्वारा बताया ाता है कि "न ाहते हुए भी किसनग ़ की संस्कृति के पहले प्रतीक से ोड़ दिया ाता है। लाल ब ारी पर घूमते हुए ताम्रवर्णी आदिकालीन ीव! धोतियों, गमछों, कुर्ते-पा ाामे, सूट-बूट के थैलों में कसमसाते ीव!"[74]

लेखक उन किसनग ़ के लोगों के बारे में बताते हैं हुए उनकी वेश-भूषा, रहन-सहन का ि ात्रण करते हैं।

सामंतवादी मानसिकता के ालते लोग अपनी बिरादरी की ाो संस्कृति है उसे छोड़ना नहीं ाहते और वे धार्मिक सांस्कृतिक ासे हिंदू और मुसलमानों का सांस्कृतिक शोषण भी करते हैं। इस उपन्यास का पात्र ाय इस सांस्कृतिक शोषण के बारे में कहता है कि-"साला हिंदू धर्म है यह! बारह वर्ष की कन्या तक विवाह कर डालो वरना कन्यादान फल नहीं मिलेगा। उधर मुसलमानों का सांस्कृतिक शोषण तो और भी भयावह है। तीन बार तलाक कह दिया और औरत के रिश्ते खत्म। ाब तक ि ांदा है उन्हें ि ांद की तरह नो ाते रहो, बुरके में लपेट कर ोब में रखे रहो।"[75] ाय को माध्यम से लेखक संस्कृति की आ ़ में होनेवाले शोषण का ि ात्रण करते हैं और उनसे यह प्रश्न भी करते हैं कि ऐसी संस्कृति किस काम की।

इस उपन्यास में गाँव की सामंती संस्कृति ही नहीं बल्कि शहरी सांस्कृतिक मानसिकता का भी ि ात्रण हुआ है। ासे कि शहरी संस्कृति ने गाँव के लड़के-लड़कियों को प्रदूषित कर दिया था। इसका वह शिकार इनर पतीबाबू की बेटी

---

[74] किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.10

[75] किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.99-100

पुष्पलता भी होने लगी थी। उसकी शादी आई.ए.एस. से तय हो ाती है, तो उसे शहरी संस्कृति को अपनाने पर म ाबूर किया ाता है। उनके भैया कहते हैं कल् ार्ड बनो। इसी के ालते वह शहरी संस्कृति को सीखने निकलती है-"दरअसल वह आ रही थी ांदनी के पास शहरी संस्कृति, मैनर्स, गट्स वगैरह सीखने के उद्देश्य से। उसने ल ाते-ल ाते पार्टियों में ना ाने की ट्रेनिंग लेनी ाही थी।"[76] तो इस तरह से गाँव और शहरी संस्कृति का ित्रण बहुत अ छी तरह से दिखाया गया है। और वह भोली-भाली लड़कियों को इस शहरी संस्कृति ने बिगाड़ के रखा है, यह ांदनी के द्वारा हम देख सकते हैं।

'धार' उपन्यास में लोक संस्कृति का व्यापक रूप सामने आता है। िसको हमने पहले बताया था। इनकी लोक संस्कृति में उनके रहन-सहन, खान-पान, संस्कार, पू ा, रस्म-रिवा ा, पर्व-त्यौहार आदि सांस्कृतिक संदर्भों का ित्रण मिलता है। उनके लोक-गीत या सांस्कृतिक पारंपरिक गीत भी उनकी संस्कृति का हिस्सा बन ुके हैं। इनकी संस्कृति निःसंदेह अपने में अलग और विशेष है। इसी कारण शर्मा मंगर से कहते हैं-"आदिवासी औरतें सर पर एक गमछा रख लेंगी ो पीठ के नी े तक फैला होगा, ाहे वे कोयला ही क्यों न ो रही हो। ाबकि दूसरी 'देशवाली' औरतों में ये ीज़ आपको नहीं मिलेगी। आदिवासी संस्कृति तो इस मायने में आर्य संस्कृति से बेहतर थी, भले ही वे साँवले और आर्य गोरे।"[77]

इतना ही नहीं वे हर काम के लिए एक लोक-गीत का आलाप करते हैं ताकि उनमें उत्साह पूर्ण वातावरण उत्पन्न हो और थकान को महसूस न कर पायें।

इस उपन्यास के अंतर्गत भिन्न-भिन्न संदर्भों में आलापे गये सांस्कृतिक व लोक-गीत हैं िनको लेखक ने बहुत ही सह ा ंग से हमारे सामने रखा है। वन विभाग द्वारा कुछ पौधे दिये ाते हैं इन आदिवासियों को सड़क के दोनों ओर लगाने के लिए। तब संथाली गीत के साथ वह वृक्षारोपण शुरू हो ाता है-

"नाड़ाक केदा लाङ दुआर केदा

---

[76] किसनग . के अहेरी, सं ीव-पृ.87

[77] धार, सं ीव-पृ.39

बांद केदा लाङ पुखुर केदा

रोहोयालङ सारी नुथे से तालेदारे

गुं ाुक गुरुक के अतुय तोहन।"[78]

(हमने घर बनाया, द्वार बनाया, बाँध बाँधे और पोखरे खोदे। प्यारे ालो, अब हम आम एवं ताड़ के पेड़ भी लगायें, क्योंकि मृत्यु के बाद यही हमारी यादगार रह ााएंगे।)

एक संदर्भ ऐसा है ि ासमें दिखाया गया है कि लाल ांडे वालों ने ान-खदान में अपना लाल- ांडा फहराया, और वह क्रांतिकारी ऐलान कर दिया गया, तब मैने के नेतृत्व में औरतों ने एक पारस्परिक संताली गीत गाया-

"लेयाड गाड़ा धारे रे, हमन हमन दारे

काहाउ आकान पेड़ा नाइ, वाहा थारे थारे

वाहा लागि हायरे मने, ि ाउंग आखान थारे।"[79]

(बारहों महीने पानी से भरे रहनेवाले छोटे-से नाले के बगल के फूल वाले पेड़ में ागह- ागह फूल खिले हैं रे शिशु। फूल बगी ो में हैं और शिशु है दूर। फूल के लिए आकुल है शिशु)

इनके लोक-गीतों में और सांस्कृतिक गीतों में ोतना ागाने वाले गीतों का भी मुख्य रूप से संथालों के लिए पेश किया ााता थ्ज्ञ।

3.3 धार्मिक आयाम

भारतीय समा ा में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है, ि ासके ालते सारा समा ा अपना अस्तित्व बनाता है। धर्म और समा ा का पारस्परिक संबंध बड़ा ही वि ात्र है। समा ा व्यक्तियों का समुदाय है और समुदाय का सामं ास्य विधान ही धर्म है। किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि असमं ास धर्म ाब विकृत हो ााता है, तब समा ा के लिए घातक हो ााता है। उस समय वह धर्म नहीं होता धर्म की सड़ी लाश होती है,

---

[78] धार, सं ाीव-पृ.144
[79] धार, सं ाीव-पृ.162

ि ासे समा ा अपने कंधों पर ोए फिरता है। क्योंकि यह धार्मिक आस्था सदियों से ालती आ रही है और आगे भी ालती रहेगी। आ ा के समय में धर्म एक ऐसी शक्ति बन गयी है कि उसके बिना मनुष्य का व समा ा का कोई अस्तित्व ही नहीं रह ाता है।

समा ा में ि ातनी भी धार्मिक संस्थाओं की स्थापना हुई है उन सबका एक ही उद्देश्य रहा करता है, सामा ाक समानता मानवता का विकास और सहधर्मिता का भाव। लेकिन ाब इस धर्म की डोर किसी पाखंड या ोंगी या फिर रू ़ वादियों के हाथ लग ााती है तब इसके मूल सिद्धांत का पतन होने लगता है। वे धर्म की अंधश्रद्धा को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं और उनके स्वार्थ प्रयो ानों के लिए भोली-भाली ानता व समा ा को बलि पर ा ़ ाने पर भी पीछे नहीं हटते। वैसे यह धार्मिक शोषण सदियों से ालता आ रहा है, ाो हिंदू धर्म की नीतियों से यह प्रखर रूप लिया है। हिंदू धर्म ने 'मनु स्मृति' को आधार मानकर ऐसी कुसंस्कृति का विकास किया है ि ासके ालते ााति-व्यवस्था का भयंकर रूप सामने आया है। धार्मिक कट्टरता के कारण सांप्रदायिक दंगे होने लगे, इसलिए कि वे अपने-अपने धर्म को ब ााने व ऊँ ाा कर दिखाने के लिए।

धर्म की इस ा ार् के लिए धर्म की परिभाषाओं को भी देखा ााए ि ाससे इस मंतव्य का स्पष्टीकरण हो पाये।

डॉ.बाबा साहेब अंबेडकर का कहना है-" ाो धर्म अपने अनुयायियों को अपने सहधर्मियों के साथ भी मानवीयता अपनाने की शिक्षा नहीं देता, वह धर्म मात्र शक्ति-दर्शन है। ाो धर्म अज्ञानी को अज्ञानी और निर्धन को निर्धन बने रहने की शिक्षा देता है, वह धर्म नहीं हो सकता।"[80] कहने का तात्पर्य यह है कि धर्म अपने से नी ो के लोगों का कभी भला नहीं ााहता उन्हें किसी भी तरह की सहायता नहीं करता और वह उन पर अधिकार बनाये रखता है, यह किसी भी धर्म की नीति नहीं हो सकती।

---

[80] डॉ.बाबा साहेब अंबेडकर, डॉ.सूर्यनारायण रणसूभे-पृ.82

विवेकानंद धर्म को एक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं और उनका मानना है कि धर्म को इस प्रकार होना ाहिए कि दरिद्र व्यक्तियों की सहायता कर सकें। ऐसा धर्म ो मानव कल्याण के लिए उपयोगी हो सके केवल सिद्धांतों में ही न गिरा रहे। वे ऐसे धर्म के पक्ष में हैं ो सर्वव्यापी एवं सर्वग्राह्य हो।

डॉ.राधाकृष्णन ने इस वर्तमान काल की परिस्थितियों के बारे में वि ार व्यक्त करते हुए कहा है कि-"धर्म एक गति है, एक विकास है और सब अ छे विकासों में नूतन, पुरातन के ऊपर टिका है। प्रत्येक धर्म में पुराने के अवशेष विद्यमान रहते हैं।"[81] अर्थात् किसी भी धर्म की प्रतिष्ठा का ब .ना या कम होना सिर्फ उसके पुराने वि ारों पर आधारित है।

धर्म ाब तक किसी पक्ष का समर्थन न करके वह सबको साथ लेकर ालने की कोशिश करेगा तब उस धर्म का गौरव ब ेगा। हिंदू समा ा में बहुत सारी असमानताएँ दिखाई देती हैं िनका कारण धर्म ही है। आ ा भी धर्म के नाम से ही यह ाान लेना ाहिए कि वह मनु द्वारा लिखी गई ‘मनुस्मृति’ के अनुसार न ालकर मानवता के धरातल पर ालना ाहिए उसी से विश्व मानव का कल्याण होगा और वही धर्म की असली पह ाान होगी।

सं ाीव एक ऐसे उपन्यासकार हैं िनके उपन्यासों में समा ा से ुड़ी हुई सारी समस्याओं को वे पाठक के सामने रखते हैं। उनके उपन्यासों के कथानक का मुख्य उद्देश्य समा ा के पिछड़े, दलित और शोषित, पीड़ित लोगों का स ाीव ित्रण करना होता है। समा ा के सामंती मानसिकता के लोग धर्म, ााति के नाम पर साधारण ानता का िस तरह से शोषण करते हैं उसका भी ित्रण उनके लेखन में मिलता है।

‘सूत्रधार’ में भी यह धार्मिक शोषण और असमानता आदि का ित्रण भिखारी ठाकुर और उनके समय के समा ा के माध्यम से किया गया है। भिखारी ठाकुर उस समय के व्यक्ति हैं िस समय भारतीय समा ा में धार्मिक असमानताओं का

---

[81] भारतीय सामा िक िंतन, वि.एन.सिंह-पृ.252

बोलबाला था। उस समय का समा ा 'मनुस्मृति' के आधार पर धर्म और ाति की तुलना करते हुए धार्मिक कट्टरता को ब .ावा दे रहा था।

भिखारी ठाकुर नाई ाति का होने के कारण उन्हें ीवन पर्यंत इस धार्मिक शोषण का शिकार होना पड़ा। वे ब ापन से ही इसका शिकार हो गये थे और वे अपना पहला अनुभव भी ब ापन में ही प्राप्त किये थे। एक बार वे एक साधु-संत ी के द्वारा किये ा रहे धार्मिक प्रव ान को सुन रहे थे। वह प्रव ान हिंदू धर्म को लेकर ाल रहा था। वे कह रहते थे कि धर्म, ाति सब ईश्वर ने बनाया है और वह ऊपर से भी बतायी गयी है और श्रीकृष्ण के मुँह से निकली है, इसे हम कभी इनकार नहीं कर सकते। वे तरह-तरह के प्रव ान दे रहे थे। ईश्वर द्वारा मोक्ष का मार्ग, स ारित्र आदि। भिखारी के मन में शंका होने लगी कि क्या वे इस प्रव ान का पालन भी करते हैं कि सिर्फ सुनाने के मात्र इसका महत्व है। क्योंकि उसके साथ ि ास तरह का व्यवहार होता है उससे वह आश ार्य ाकित हो उठता है।

भिखारी ठाकुर पुरों की रथयात्रा के लिए ाते हैं, वहाँ पर इतने लोग आते हैं कि वह कभी ऐसा नहीं देखा। देश-विदेश से तरह-तरह की बोली, पहनावा, खान-पान और वे सभी हिंदू ही हैं। भिखारी ठाकुर परमानिक दा के साथ ाते, लेकिन उन्हें रुकने के लिए धरमशाला में भी ागह नहीं मिलती, क्योंकि वह छोटे ाात के हैं इसीलिए उन्हें समुंदर के किनारे रहना पड़ता है।

एक संदर्भ में भिखारी का धार्मिक शोषण दिखाया गया है। ैसे वह सूरदास नामक एक पंडित का भ ान सुनकर भिखारी उनसे कहते हैं कि आप ैसे भ ान गानेवाले को कहीं नहीं सुना अभी तक, उनका आशय यही था कि वे भी सत्संग करेंगे उनके सामने और अपनी प्रतिभा को दिखायेंगे। लेकिन सूरदास यह नहीं ाहता था कि नाई ात की कोई प्रशंसा करे और वह सुनता ाय, इसलिए उनसे हाथ दबाने के लिए कहते हैं। "महात्मा ी की रु ि ा, भिखारी ैसे नाई की प्रशंसा सुनने में नहीं थी। बोले, "अरे ए ठाकुर तनी हाथवा टीप न द भगत!"[82] याने हिंदु

---

[82] सूत्रधार, सं ीव-पृ.47

मानसिकता के यह ज्ञानी भी वैसा ही व्यवहार करता है, ौसे कि दूसरे लोग। यानी वे दूसरी ाति के लोगों को कभी अपने समान ब ़ने की इ छा नहीं रखते हैं।

हिंदु धर्म में वर्ण व्यवस्था के कारण निम्न वर्ग को अनेक कष्ट और दुःख सहना पड़ता है। ान्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले सभी घिन्न काम नाई के साथ कराते हैं और ाो पू ाा-पाठ और शास्त्र देखने का काम ब्राह्मण करता है, और वहाँ इतना शोषण होता है कि ब ाा ान्म लेने के बाद उसे पवित्र बनाने के लिए उसे ाार आना दिया ााता है और ब ाी हुई तो दो आना। ब ो का नह काटने, नहाने तक काम ही काम होता है नाई-नाइन को, " ाबकि पंडित बैठे-बैठे ान्मकुंडली और पतरा देखकर बाईस रुपये ऐंठता है।"[83] यह कैसा धर्म है, ाो मेहनत करता है उसका शोषण होता है और दूसरे की भलाई।

धर्म के आ ़ में ब्राह्मण ाि स तरह लोगों का शोषण करते हैं उतना किसी अन्य को मौका नहीं मिलता है। धर्म के नाम से ाितना लोगों का शोषण करना है उतना वे करते हैं। 'सूत्रधार' उपन्यास में इसका ाित्रण किया गया है। ाब एक व्यक्ति की मृत्यु हो ााती है तब वह गरुड़ पुराण सुनाने की ाि द करता है ब्राह्मण। अगर वह नहीं मानते हैं तो कहता है कि मरने वाले की सद्गति कैसे होगी? कर्मकाण्ड के नाम पर वह ब्राह्मण हर तरह से उनका शोषण करने पर तुला हुआ है। उनसे माल खीं ाने के लिए इतने सारे तरकीब निकाल लेते हैं, कर्मकाण्ड में पितरों को समर्पित करने के लिए इतने वस्तुओं का दान करने को बताता है-वस्त्र, रुपैया, सोना, ााँदी आदि ाो कि बाबा के ाोले में ााएगा। यह सारा काम करने के बाद दक्षिणा लेने का मोल-तोल शुरू करता है और वह ाितना ााहता है उतना ले लेता है, लेकिन वहीं काम कनेवाला नाई को शव के ऊपर बिछाये गये कफ़न के अलावा कुछ नहीं मिलता। भिखारी कहता है-"वाह रे ब्राह्मण! माल खीं ाने का कैसा तरीका!"[84]

---

[83] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.161

[84] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.163

धार्मिक आस्था के कारण समा ा में अंधविश्वास फैले हुए हैं। 'सूत्रधार' में भी लेखक ने अंधविश्वास का ि त्रण भिखारी ठाकुर के माध्यम से बताया है। नाग पं ामी के दिन ि ान धार्मिक क्रिया-कलाप होते (करते) हैं, उनका ि त्रण हुआ है। ैसे उनकी माँ कहती है कि साँप का विष ााड़नेवाले के पास ााकर सरसों और बालू को ारवा लाओ। वह लाने पर उसे पीसकर बालू और गोबर में सानकर पूरे घर को गोंठ ााता, ताकि साँप न आ सकें। और घर का प ि छमवाला कोना छोड़ दिया ााता, देवताओं के लिए। उनकी माँ से पूछने पर बताती है-"देवता लोग घर के बाहर-भीतर आ- ाा सकें, इसलिए..."[85] यह बिलकुल एक धार्मिक अंधविश्वास है, ि ासके ालते लोग अंधविश्वासों पर गहरा विश्वास करने लगते हैं।

सं ाीव के लेखन में धार्मिक अंधविश्वास ही नहीं, सांप्रदायिक दंगों के बारे में भी आक्रोश दिखता है। वे उन धर्मभीरु कट्टरों के बारे में बताते हैं कि किस तरह समा ा में वे अशांति फैलाते हैं और सामान्य ानता को अपने धर्म के ााल में फंसाते हैं। धर्म के नाम पर होनेवाले दंगों का मर्मस्पर्शी ि त्रण इनके उपन्यासों में किया गया है। 'आकाश ांपा' उपन्यास में आज़ादी के बाद कुछ हिंदू धर्म के लोग किस तरह अपने भाइयों को उकसाते हैं और मुसलमानों के खिलाफ भड़काकर उन पर हमला करवाते हैं, इसका स ाीव ि त्रण इस में मिलता है। पाखंडी और धर्मभीरु 'ि ायालाल' नामक हिंदू व्यक्ति ाानबू ाकर मुसलमानों के खिलाफ हिंदुओं को भड़काता है। ाब वह कहता है कि-मुसलमान आये। और युनिवर्सिटी के छात्रों को घर में घुसघुसकर काटा और ट्रक में लाश भरकर ले गये। ऐसी ाूठी ाानकारी देकर हिंदुओं को मुसमानों के विरोध में लड़ने की घोषणा करते हैं और वे धर्म की अंधश्रद्धा में उन पर हमला करते हैं और सांप्रदायिक दंगे शुरू करवा देते हैं। इन सांप्रदायिक दंगों में कितने ही मुसलमान भाई मर ााते हैं। ाब धर्म की बात आती है तो लोग किस तरह प्रभावित होते हैं यह एक उदाहरण-"हिंदू लोग भी बदला लेके रहेंगे। कटुआ देखो और काट डालो। ... छोड़ना नहीं है किसी को भी इस बार।"[86]

---

[85] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.188

[86] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.117

इस तरह की बातों से ोा अनर्थ होना था हो ााता है और अगले दिन वे सभी हिंदु छात्र सही सलामत यूनिवर्सिटी में लौटते हैं तो इससे धर्म के नाम पर कूटनीति का खेल ााहिर हो ााता है। क्योंकि अपने धर्म को ब ााने के लिए दूसरे धर्म को कु ालने की सा ाि श ि ायालाल के प्रयास में नज़र आती है।

लेखक ने इसी उपन्यास में एक ागह सांप्रदायिक दंगों का भी ि ात्रण किया है ोा कि आ ा भी भारत वासियों को 'ब्लैकडे' की याद दिलाता है। 1992 दिसंबर 6, को ाब अयोध्या की बाबरी मस्ि ाद को कार सेवकों ने ध्वस्त कर उसकी नींव तक खोदकर सरयू नदी में फेंक दिया और रातों रात एक छोटे-से-राम-मंदिर का निर्माण कर डाला। यह एक कट्टर हिंदू मानसिकता का परिदृश्य है ोा धर्म के सहारे अपना अस्तित्व बनाये रखना ााहता है।

'आकाश ांपा' में वीरेंद्र के माध्यम से लेखक ने साधुओं के असली ोहरे को बेनकाब कर दिया है ोा धर्म की आ ़ में कैसे-कैसे कुकर्म करते हैं और उपदेश देते हैं कि-"माया मोह से मुक्त हो गये हैं।" मास्टर मोतीलाल के पूछने पर वीरेंद्र बताते हैं कि "साधुओं की दुनिया दूर से ि ातनी अ छी दिखती है, अंदर से उतनी ही गली ा होगी, इस बात का पता न था।"[87] धर्म के नाम पर लोगों को लूटना, गाँ ाा, भाँग, ऐय्याशी और समलैंगिकता आदि ौसी गंदी हरकते करते हैं। और उन साधुओं के बी ा में भी दो दल होते हैं आधिपत्य की लड़ाई होती है। लेखक ने इस उपन्यास में ोा हैं उन्हें आ ा के संदर्भ में भी देखा ाा सकता है, ौसे कि बाबा लोगों के द्वारा अभागी बालिकाओं का यौन-शोषण, यह भी धर्म के आ ़ में ही ालता है और कोई उनका कुछ नहीं कर पाता। "अपराधियों के लिए धर्म एक पर्दा है, एक अभयारण्य ाहाँ उपदेश पोंकते हुए ऐय्याशियों और तमाम हरम ादगियाँ कर सकते हैं।"[88] इससे स्पष्ट होता है कि धर्म का सहारा लेकर लोग कितना फायदा उठाते हैं, वह भी भारत के संदर्भ में ाहाँ धर्म एक आस्था ही नहीं बल्कि एक हथियार है, ि ासका ाब ााहे, ौसा ााहे इस्तेमाल किया ाा सकता है। धर्म कुछ

---

[87] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.208
[88] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.209

स्वार्थी लोगों के हाथ में पड़कर एक ऐसा भयंकर रूप लेने लगा है ि सकी तुलना किसी भी नशीले पदार्थ से नहीं की ा सकती।

सं ीव का एक और उपन्यास ' ंगल हाँ शुरू होता है' में भी धर्म की आड़ में धार्मिक शोषण, अत्या ार और अंधविश्वास, रू िवाद को दिखाया गया। एक बार रात के समय ंगल में कुछ आदिवासी एक लड़की को ओ ा के पास ले ाते हैं। वह लड़की साँप के काटने पर मरी पड़ी थी, लेकिन उनके अंधविश्वास के कारण वे ंगल के वनस्पति देवी के पास ले ाते हैं, ब उन्हें पता ाता है कि वह मर ुकी है तब भी वे विश्वास रखते हैं कि मंतर प ने से ि ंदा हो ाएगी-"हिम्मत हार गइल-अ! अरे मंतर से मुअल आदमी भी ि ंदा हो ाता है। राम-राम कर-आ!"[89] धर्म ने ि न अंधविश्वासों को न्म दिया है, उनका शिकार वे लोग हो रहे हैं ि नको पिछड़ा, दलित और आदिवासी कहा ाता है।

धार्मिक आयामों में रू िवाद का भी एक हिस्सा है, ि सका प्र ार-प्रसार सदियों से ला आ रहा है। धर्म के साथ धार्मिक रू ियों को भी बनाया गया था, ताकि कुछ ीज़ों में उनको वैसे ही रहने दे। ि सका अतिक्रमण करने पर धर्म भ्रष्ट हो ाएगा और पाप लगेगा।

' ंगल हाँ शुरू होता है' में लेखक ने थारू आदिवासियों के धार्मिक रू ियों के बारे में बताया है- ैसे कि बिसराम की बेटी दुलारी की साँप के डँसने से मृत्यु हो ाती है तब उसका अंतिम संस्कार के समय गाँव बड़े-बू े लोग कहते हैं कि साँप के डँसने से उसे न लाया ायेगा न गा ा ाएगा, उसे तो पानी में बहाया ाएगा गंगा मैया की गोद में।

एक रू ि इनमें ये भी प्र ालित है कि इस न ाति के लोग गाय का दूध नहीं पीते और न हिरण का माँस खाते हैं। बिसराम की छोटी बेटी दूध के लिए रोने लगती है, लेकिन वह दूध न मिल पाने पर बिसराम उसे सम ाता है कि -"हम थारू लोग

---

[89] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.21

दूध पीते नहीं बिट्‌टी? लेरू की आत्मा कलपती है न! वह तो बा ाी (बाहर से आए) लोगों का काम है।"[90] इस रूि ़ के कारण ब ाी को दूध तक पिलाने से डरता है।

धर्म की आ ़ में पोंगा-पंडित, ओ ाा लोग आदिवासी ानता को अंधविश्वासों में फंसाकर उनका शोषण करने लगते हैं। इस उपन्यास में ओ ाा आदिवासियों के अंधविश्वासों की कम ाोरी को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता है। पू ाा-पाठ, मंतर-वंतर प ़ते हुए औरतों को नीम के पत्तों से मारते हुए कहता है कि देवी का आह्‌वान होगा उन पर। इन सबके लिए ़ूनर, मुर्गा और गाँ ो का ा ़ावा ा ़ाने को कहता है। ओ ाा का मंतर ैसे- ैसे ाोर पकड़ने लगता है वैसे-वैसे बिसराम की बहू हिलने लगती और कुछ गाँव की औरतें भी। ाब वह देवी के स्वर में बिसराम से कहने लगती हैं कि तुम पाप पे पाप किये ाा रहे हो तब वह उसके ारणों पर गिर ााता है। वे उसे पीटती रहती हैं, लेकिन अंधविश्वास के कारण वह कुछ नहीं कहता बल्कि क्षमा मांगने लगता है। लोग देवी की महिमा को ध्यान से देखते हैं और कहते हैं-"देखो, देखो, बाखा कैसे बदल गई।"[91]

इस उपन्यास में लेखक ने यह भी बताया है कि अगर कोई गलत कार्य करने पर पश ााताप करना हो तो वह पू ाा पाठ कर कोई कीमती ाीज़ देवी-देवता को अर्पित करे तो सारे पाप माफ हो ाते हैं। यह धार्मिक संस्कारों का एक विकृत रूप है ि ासको मनुस्मृति में मनु महारा ा ने भी बताया था। मुरली पांडे और कुमार के बी ा ाब वहाँ के प्रसिद्ध लोका ाार 'लखराँव' की बात ालती है तब मुरली पांडे बताते हैं कि शिव-पार्वती की पू ाा करना ही इसका महत्व है। एक लाख पुष्प या बेलपत्र शिव स्रोत के साथ अर्पित करने पर सारे दोष नष्ट हो ाते हैं और वे आगे कहते हैं-"समाप्ति पर एक स्वर्ण बेल पत्र शिव को और एक स्वर्ण बेल पार्वती को अर्पित करें... तो गोहत्या, ब्रह्महत्या, गुरु या पर-स्त्रीगमन, मद्यपान आदि महापातकों का नाश होता है।"[92]

---

[90] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.25
[91] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.30
[92] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.143

इस पर कुमार कहते हैं कि-"धर्म इनमें वह नया आत्मविश्वास भरेगा कि ये फिर से ोरी, डकैती, यौन उत्पीड़न और अपहरण करने लगेंगे।"[93]

धार्मिक संस्कृति में बलि-प्रथा का भी स्थान है। कोई धार्मिक उत्सव मनाता है या फिर किसी को शुद्ध करना हो तो पशु बलि से देवता को प्रसन्न कर यह कार्य संपन्न किया ाता है। यह सिर्फ आदिवासी या अन्य ाति के लिए ही नहीं बल्कि ब्राह्मणों के लिए भी लागू किया ाता है। सुन्नर पांडे एक ब्राह्मण है ो अपनी पत्नी की शुद्धता के लिए पशु बलि देने को तैयार हो ाता है। वह सुअर को लाकर देता है और ओ ा ी एक ही वार में उसका धड़ से सिर अलग कर देता है ि ासके द्वारा वह कार्य संपन्न हो ाता है।

काली और उसके दल के लोग ाब 'राह बाबा' की पू ा कर सुअर को बलि ा.ाकर उसको प्रसाद के रूप में लेते हैं तब वह काली पूछता है कि सुअर की बलि ाबरन क्यों दिया ा रहा था तब फेंकन कहता है-"उसके बिना हमरा धरम-करम नहीं ाल सकता काली भइया।"[94]

'धार' उपन्यास आदिवासी समस्याओं को लेकर लिखा गया है। इस उपन्यास में धार्मिक अंधविश्वासों के कारण लोगों का कैसा शोषण होता है उसमें धर्मभीरू और पाखंडी ओ ा के द्वारा यह भी दिखाया गया है।

उपन्यास की नायिका 'मैना' बताती है कि उसकी माँ को गाँव वालों ने डायन कहके गाँव से भगा दिया है। ते ाब की फैक्टरी का पानी पीकर श्याम की भैंस मर ाती है, तब वह ओ ा शाल के पत्ते में तेल लगा के मंतर प.ता है और कहता है कि मैना की माँ डायन है, उसीने उस भैंस को मारा। आदिवासियों के अंधविश्वासों के कारण उसकी माँ को डायन माना ाता है और उसे मार-पीट कर गाँव से निकाला ाता है।

ओ ा और महेंदर बाबू के द्वारा मैना के साथ भी यही षडयंत्र र ा ाता है। ाब मैन उनके खिलाफ़ आवाज़ उठाती है और सारे गाँव वालों को उनकी असलियत

---

[93] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.146

[94] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.188

बताती है, तब महेंदर बाबू घबरा ाता है और मैना को मारने की सा िश करता है। इसीलिए वह ओ ा का सहारा लेता है, क्योंकि गाँव वालों के अंधविश्वासों का फायदा उठाना ाहता है। ओ ा के कहने पर सारा गाँव मान ाता है। यह खबर पाकर परेमा मैना से कहता है-"मैना ल,ि तना ल्दी हो भाग लें हिंया से। हुआँ सब तुम को डाइन बताकर बेइ त करने का परपं ा कर रहा है।"[95]

लेकिन मैना वहाँ से हिलती नहीं। ब लोगों की आहटें आने लगती है तब और लोग भी कहते हैं कि यहाँ से ली ा, वरना वे लोग मार डालेंगे। यह मोड़ल और बू.ी कैली एक ही सुर में आकर कहते हैं-"मैना भाग। ओ ा महेंदर बाबू से घूस खा ुकल है, तोरा के डायन बता देगा आ । कहता है शंकरवा का भेंड को तू ही मंतर से खीं ा के खून ूस लिया।"[96]

धर्म के सहारे महेंदर बाबू और ओ ा ैसे लोग सामान्य नता व आदिवासियों को अंधविश्वासों में फंसाकर उसका लाभ उठाने लगते हैं। समय आने पर उसका इस्तेमाल कर लोगों का शोषण भी करते हैं।

'धार' उपन्यास में उपन्यासकार ने यह दिखाया है कि धार्मिक अंधविश्वासों में फंसे सभी लोगों ने किस तरह अपने ीवन को नरक बना लिया है और शोषण का शिकार हो रहे हैं। शर्मा के पिता ी ' तुर्भु ा शर्मा' का रित्र वही है, ो धर्म की अंधश्रद्धा में अपना सब कुछ गँवा बैठता है, इसके बाव ूद भी वह यह कहता है कि यह सब ऊपर वाले का खेल है। महेंदर बाबू के यहाँ काम करते समय एक बार वह काम न करके अपनी पत्नी के क्रिया-करम में ाता है, तब महेंदर बाबू उस पर टूट पड़ते हैं और गाली देते हुए आते हैं। तब तुर्भु ा शर्मा कहता है-बेटा कोई कुछ करता, कराता नहीं, सब भोलेनाथ कराते हैं। इस तरह वह शर्मा से कहता है, इस पर शार्म बहुत नाराज़ हो ाता है कि इतनी अंधश्रद्धा वह भी धर्म के लते। शर्मा कहता है-"यह धर्म भी एक नशा है बाबू ी।"[97] यानी ब किसी भी ीज़ की आदत

[95] धार, सं ीव-पृ.122
[96] धार, सं ीव-पृ.122
[97] धार, सं ीव-पृ.160

या नशा हो ाता है तब वह उसी नशे में डूबा रहता है और उसे किसी और ीज़ की सुध नहीं रहती है। वैसे ही धर्म का नशा भी है। एक बार यह ा. ग गया तो िंदगी भर उससे नहीं उबरा ा सकता।

शर्मा अपना धर्म छोड़ सौंताल आदिवासियों के साथ रहने लगता है और उन्हें उस धर्म के पाखंडों के खिलाफ लड़ने को तैयार करता है तब वे लोग घबरा ाते हैं और एक ुट होकर यह वि ार करते हैं कि उन आदिवासियों को कैसे रोका ाय। इसी बात को लेकर बाबू बबनसिंह और डोकानिया ा र्ा करते हैं। बबनसिंह डोकानिया से कहता है कि शर्मा ैसे लोगों के कारण, धर्म भ्रष्ट हो रहा है। इसीलिए आपको एक सेना बनानी होगी ो धर्म की रक्षा करे। वह शर्मा के संदर्भ में कहते हैं कि-"साला बराहमन-भुइंहार से सौंताल हो गया। हिंदू धरम ऐसे ई नहीं डूबा ा रहा है।"[98] उपन्यासकार ने, धर्म के ालते अन्य ाति व आदिवासयों पर ो अत्या ार व अन्याय हो रहे हैं, उनका ीवंत ित्रण किया है। हिंदू धर्म की मानसिकता का भी ित्रण उन्होंने अपने इन उपन्यासों में किया है।

'किसनग. के अहेरी' उपन्यास में सं ीव ने सामंती व्यवस्था और धार्मिक विषमता का ित्रण किया है। धर्म के नाम पर या उसके सहारे किये ानेवाले अत्या ार, शोषण और सांप्रदायिक दंगों को इस उपन्यास में बखूबी विश्लेषित किया गया है।

इनरपति सिंह के लिए योतिषी बाबा ने शास्त्रों का सहारा लिया और सोलह साल की लड़की को फंसाने की यो ना बनायी। ब लड़की वाले कुछ सो ने लगते हैं तब योतिषी बाबा सम ाते हैं कि धर्म शास्त्रों में लिखा है-"सोलह साल की रूपसी कन्या को सुंदर वस्त्र आभूषणों से स ाकर ो ब्राह्मण को दान देता है, उसे ंद्रलोक मिलता है।"[99]

धर्म शास्त्रों की बात कर उन्हें सम ाने का प्रयास करते हैं। इनरपति सिंह ओर योतिषी बाबा दोनों किसनग. के ऐसे व्यक्ति हैं ो धर्म- ाति के नाम पर

---

[98] धार, सं ीव-पृ.192

[99] किसनग. के अहेरी, सं ीव-पृ.22

लोगों का शोषण और स्त्रियों पर अत्या ाार करते हैं। योतिषीबाबा हाथ की रेखाएँ प ़ते थे और अंधविश्वास की कम ाोरी को वे अपनी ताकत बनाकर औरतों का शोषण करते थे।

ब्राह्मण विधवा राधा की कहानी को बहुत ही कारुणिक दिखाया गया है। राधा का पति मरने पर वह अपने ब्रह्म ाारी मामा के साथ रहती है। धार्मिक कुरीतियों के कारण उसे बहुत अन्याय और शोषण सहना पड़ता है। धर्म की आ ़ में मामा उसका यौन-शोषण करता है। कलिका पंडित राधा के बारे में बताता है-"महान हिंदू धर्म के इन आधार स्तंभों ने छोड़ा नहीं रधिया को। उस एक राधा के सामने कितनी-कितनी धोतियाँ खुल ाुकी हैं।"[100] इससे ाान सकते हैं कि धार्मिक नैतिकता का पतन किस तरह होते ाा रहा था। इस धर्म के ालते किसी भी रिश्ते का नैतिक मूल्य नहीं रहा।

मंसूर ठेकेदार और ामड़े के व्यापारी वृषभान सिंह दोनों भी किसनग ़ के हिंदू-मुसलमानों के बी ा सांप्रदायिकता का विष फैलाने में समर्थ थे। स्वार्थपरकता के कारण वे समा ा में धार्मिक असमानताओं को फैलाते थे। इनके बारे में ाा ाा बताते हैं कि-"पहले यहाँ दाहा के वक्त ता ाया पर हिंदू औरतें पू ाा करने और मातम मनाने आतीं। दशहरे और होली में हम लोग भूल ााते कि हम मुसलमान हैं। करीम को दाहा बनाने और रावण-मेघनाथ-कुंभकरण का पुतला बनाने में कोई फर्क नहीं महसूस होता था। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता सब क्या से क्या हो गया। पहले अंग्रेज़ों ने लड़ाने की कोशिश की, फिर देशी बनियों और ठेकेदारों ने।"[101] सामान्य शोषित लोग अज्ञानी और मूर्ख हैं। इसी का लाभ उठाकर अंग्रेज़ बने बनिया और ठेकेदार शोषण की परंपरा आगे ाला रहे हैं। इनका कोई धर्म औ म ाहब नहीं, ाो भी है वह रुपया। शोषितों में धर्म का विष घोलकर रुपये कमाना इनका परम धर्म है। धार्मिक शोषण से ाुड़कर ाातिगत शोषण भी आता है।

इस उपन्यास के युवा नायक ाय और उसकी पत्नी ाांदनी वर्ण-व्यवस्था और धार्मिक रू ़ियों के विरोध में आवाज़ उठाते हैं। गाँव वालों में यह विश्वास

---

[100] किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.15
[101] किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.42-43

दिलाने और उनमें ेतना ागाने के लिए वह खुद ाँदनी से अंत ातीय विवाह करता है। वह धार्मिक परंपरा को तोड़ता है। लेकिन अंत में वह उन्हीं धार्मिक पाखंडों का शिकार हो ाता है। उसी के सामने उसकी पत्नी का सामूहिक बलात्कार होता है और ाय को ान से मार दिया ाता है। इन सबके पीछे उनके खट्टर पिता योतिषी बाबा का हाथ होता है।

'सर्कस' उपन्यास में सं ीव ने सर्कस के कलाकारों के यथार्थ ीवन का ित्रण किया है। ाहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग अपनी ीवनी के लिए आते हैं। उनमें धार्मिक रू ि याँ दिखाई देती हैं। ैनुल और गीता के बी ा ाो संवाद ालते हैं उससे स्पष्ट होता है कि धर्म से ही आदमी की पह ाान होती है। गीता ाुनैल से कहती है कि तुम ाानते हो कि तुम एक मुसलमान हो, और मैं एक हिंदू हूँ।

गीता के यह कहने से ाुनैल का मन व्याकुल हो ाता है और वह कहता है- "ये दीवारें कमज़ोर और बुज़दिलों के लिए होती हैं।"[102]

'सर्कस' कंपनी में ाीविका के लिए पाकिस्तान से आये खान साहब और उनका परिवार हैं। उन दिनों पाकिस्तान से युद्ध छिड़ ाता है। उस समय देशभक्ति और धर्म का नशा हर एक पर ा ा रहता था। पाकिस्तान से ाासूसी करने के अभियोग में एक दिन सुबह पुलिस खान साहब, इम्तिया ा, ैनुल और ामाल को गिरफ्तार करती है। यह खबर पाकर सर्कस के मालिक नियोगी कैंटीन के केशव पंडित को डाँटता है, वह बताता है कि वे लोग भारत को गाली दे रहे थे इसीलिए पुलिस को खबर दी। आगे कहता है-"देखिए साहब, आप धरम को मानें या न मानें, मैं तो छोड़ नहीं सकता, वह कल-कल का लौंडा ैनुलवा, हमारी माँ ाग ाननी पर कुदृष्टि डाले-यह मैं कैसे सह सकता हूँ।"[103]

इससे लेखक यह कहना ाहता है कि धर्म की बात ाब भी आती है तो मानव संबंधों का कोई स्थान नहीं रह ाता। सिर्फ धर्म ही सबसे ऊँ ाा स्थान पाता है। मानवता का परिहास होने लगता है।

[102] सर्कस, सं ीव-पृ.62
[103] सर्कस, सं ीव-पृ.96

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में अंधविश्वासों का ित्रण किया गया है। ारखंड के आदिवासियों में इन अंधविश्वासों को देखा ा सकता है। इसका कारण यह भी है कि सरकार द्वारा इन्हें कोई मुआव ा नहीं मिलता। इसीलिए काली ारण किस्कु ैसे लोग ादू-टोना ैसे अंधविश्वासों का सहारा लेते हैं। सुदीप्त से आदिवासी लोग ाब यह शिकायत करने आते हैं कि उनकी ांगल संपदा को ब ायें, तब सुदीप्त उनसे कहता है तुम लोग वायंट पेटीशन दो, मैं लिखकर दूँगा। तब काली ारण कहता है इससे कुछ नहीं होगा। फिर किससे होगा? सुदीप्त के पूछने पर कहता है-"कोई ारूरत नहीं साहब पिटीशन, आंदोलन का। आप फिकर मत करो। हम उसको मंतर से ठीक करेगा, ान गुरु हमको आइसा-आइसा मंतर सिखला गया है कि...।"[104] वे सम ाते हैं कि सभी काम इस तरह के ादू-टोना, मंतर-वंतर से हो ाएंगे।

आदिवासी अनप़ े थे, ाो अंधविश्वासों का सहारा लेते थे लेकिन ाो प़े- लिखे हैं। उनमें भी अंध विश्वासों का आ ारण ालता है। यह भी उस उपन्यास के माध्यम से सं ीव ने बताया है।

सिन्हा साहब एक पार्टी देते हैं, उसमें सुदीप्त और उसके दोस्त समीर को बुलाया ाता है, और वह पार्टी थी सिन्हा साहब के ब ो की मुंडन छेदन पार्टी। इस पर सुदीप्त अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए समीर से कहता है-"ये साले साइन्स और तकनॉलो ाी की उ ा शिक्षा प्राप्त आधुनिक होने का दंभ पाले हुए लोग हैं और करवा रहे हैं मुंडन छेदन? यू नो, ये ाितने गलत संस्कार हैं ाातिवाद, पुरोहिती, कर्मकांड, अंधविश्वास, दहे ा-सब सालों में समाया हुआ है और माडर्न बंबइया कल ार का कॉक्टेल भी।"[105]

यानी कितना भी प़ा-लिखा क्यों, वह भी अंधविश्वासों, कुसंस्कारों का पालन ारूर करता है।

---

[104] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.77

[105] पाँव तले की दूब, सं ाीव, हंस, अगस्त-1990-पृ.79

उपन्यासकार सं ीव स्वयं एक धर्म को न माननेवाले व्यक्ति हैं ओर वे धार्मिक आडंबरों से दूर रहना ाहते हैं। अंधविश्वास, पुरोहिती, ातिवाद, कर्मकांड, रू ि़वाद आदि से वे दूर रहते हैं और उनका सशक्त विरोध भी करते हैं इसलिए वे अपने उपन्यासों में धर्म का परदाफाश करते हैं और उन सभी धार्मिक कुसंस्कारों को खदेड़ते हैं िनसे समा ा और मनुष्यता के अस्तित्व को आघात पहुँ ाता हो क्योंकि वे स्वयं ाहते हैं कि धर्म की असली पह ाान मानवता की पह ाान से होनी ाहिए।

3.4 आर्थिक आयाम

'अर्थ' मानव समा ा के लिए एक ारूरी वस्तु बन गया है िासके ालते आ ा का समा ा अपने अस्तित्व को बनाये रखता है। कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में लिखा है "अर्थ मनुष्य की ाीविका के सं ाालन में सहायक होता है।"[106] यानी मनुष्य को ाीने के लिए आर्थिक उपा ान करना आवश्यक है। उसके बिना ाीविका ालाना कष्टप्रद हो ााता है। नेहरू ाहते थे कि अर्थ का कार्य क्षेत्र समा ावादी होना ाहिए। लेकिन आ ा के पूं ाीपति इसे बिलकुल भूल ाुके हैं। वे अपनी स्वार्थपरक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रमिकों और म ादूर को लूट रहे हैं। इसीलिए गाँधी ाी मानते थे कि औद्योगीकरण के ब ााय रो ाी-रोटी कमाने वालों का ही कल्याण करें क्योंकि ाो शारीरिक कार्य नहीं करता है वह दूसरों के श्रम पर अपनी आर्थिक स्थिति को ब ़ाता है। मार्क्स ने भी कहा 'शोषण करके पूँ ाीपति वर्ग म ाबूत बना हुआ है।'

पूं ाीपति वर्ग परोप ाीवी है, शोषक है और मेहनतकश वर्ग अपनी मेहनत की कमाई से ाीता है। यह मेहनतकश वर्ग आ ा काफी बड़ा हो गया है, कारखानों और खदानों में तो है ही, खेतों-खलिहानों में भी है और उसका बड़ा सहयोगी समुदाय दफ्तरों, स्कूलों-कॉले ाों आदि में है। इन सबका स्वार्थ परोप ाीवी शोषक

---

106 भारतीय रा ानीतिक वि ाारक, इकबाल नारायण-पृ.43

वर्ग से टकराता है। इसीलिए श्रम और पूँ ी के हितों का टकराव समा ा का बुनियादी टकराव है।

सं ीव का कहना है-"सामंतवाद की तमाम विकृतियाँ ही पूं ीवाद के गर्भ से निकलकर सुरसा की तरह राह रोककर खड़ी है आ ा?"[107] यानी सामंतवाद और पूं ीवाद एक दूसरे के पूरक तत्व हैं। यहाँ दोनों मिलकर श्रमिकों व म ादूरों का शोषण करते हैं। पहले सामंतों के द्वारा शोषण होता था फिर बाद में पूं ीपतियों द्वारा होने लगा।

आलो ाना में खगेंद्र ठाकुर अपने एक लेख में लिखते हैं "ब्रिटिश अर्थशास्त्री एडमस्मिथ ने कहा-पूं ी श्रम से पैदा होती है।"[108]

सं ीव के उपन्यासों में इन तमाम विषयों का ि त्रण हमें देखने को मिलता है। सं ीव स्वयं आर्थिक समस्याओं से ू ते रहे, इसीलिए वे उस पी ़ा को ानते हैं। वे ऐसे लोगों के समर्थक हैं ि न्हें समा ा में पीड़ित, शोषित और प्रताड़ित कहा ाता है। उनके उपन्यासों में निम्न-मध्यवर्ग, मज़दूरों और पूं ीपतियों का आकलन होता है। वे आर्थिक विषमता और असमानताओं का ि ाक्र करते हैं, उनके कारणों को बताते हैं और साथ ही उनके प्रतिरोध का भी प्रस्ताव करते हैं।

सं ीव ने अपने उपन्यासों में पूं ीवाद और सामंतवाद के शोषणकारी तंत्र का ि त्रण किया है। मज़दूरों का ि त्रण उनके कुछ उपन्यासों में दिखता है, ो कारखानों और खदानों में काम करते दिखाई पड़ते हैं ि नका पूं ीपति और माफिया द्वारा शोषण किया ाता है।

उनके पात्रों में अधिकतर, आदिवासी, दलित और म ादूर मिलते हैं। पूं ीपति द्वारा आर्थिक दमन की नीति और आर्थिक असमानता का ब ़ावा और उसका विरोध करते हुए मज़दूर नज़र आते हैं। आ ा के संदर्भ में आर्थिक व्यवस्था के अंतर्गत इन्हीं शक्तियों का शासन ालता है। यह व्यवस्था उन सारी मूलभूत नीतियों का पतन करती हुई नज़र आती हैं, ि नको बड़ी अपेक्षा के साथ गाँधी-नेहरू

[107] पाखी सितंबर 2009-पृ.165
[108] पाखी ानवरी-मा ि 2009-पृ.112

ैसे व्यक्तित्वों ने समा ा के सामने रखा था। औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के ालते आर्थिक असमानता का भयंकर रूप समाने आता प्रतीत होता है। सं ीव ने इन्हीं सारी बातों को अपने उपन्यासों के माध्यम से बताने का प्रयास किया है। और वे अपेक्षा करते हैं कि यह आर्थिक असमानताएँ मिट ाये ताकि गरीब की स्थिति में बदलाव आ ाये।

सं ीव एक ऐसे उपन्यासकार हैं ो समा ा के साथ ालना ाहते हैं और समा ा में फैली इन विषमाओं के प्रति अपनी आवाज़ उठाना ाहते हैं, ताकि लोक- ीवन के हित में निर्णय हो।

निम्न-मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति

सं ीव के नये उपन्यास 'आकाश ंपा' में आर्थिक असमानताओं का ित्रण किया गया है। निम्न-मध्यवर्ग का ो ित्रण है वह बहुत ही मार्मिक और करुणामय है। मास्टर मोतीलाल ाब अपनी नयी-नवेली दुल्हन को शहर लाते हुए बताने लगता है कि यहाँ पर मैं इतिहास का मास्टर हूँ। अग्रवाल ए ा.ई.स्कूल, अग्रवाल ी का है, उनके पिता की याद में बनवाया गया है। तनख्वाह-बीस रुपये। शहर में एक तरफ बड़े-बड़े इमारत में रहनेवाले लोग, एक तरफ-गरीबों का ठेला। वे उसी गरीबों के ठेले में रहते हैं। यहाँ पर लेखक उनकी आर्थिक स्थिति का बयान देते हुए मास्टर मोतीलाल द्वारा अपनी पत्नी से कहलवाते हैं कि-"तीन रुपये के किराये में यह बुरा है क्या? ये डे़ कमरे का खपड़ैल, छोटा-सा आँगन... और हमें ाहिए भी क्या?"[109]

यह आर्थिक स्थिति का ो ित्रण है वह दयनीय है, वे अपनी आर्थिक स्थिति के कारण सम ौता कर ते हुए नज़र आते हैं।

लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से निम्न-मध्यवर्ग का मार्मिक और दयनीय ित्रण किया है। आर्थिक तंगी के कारण मोतीलाल अपने घर-परिवार को ंग का खाना भी नहीं दे पाते हैं। ाब उनका बेटा गली के कुछ ब ों के साथ खेलते हुए

---

[109] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.8

नज़र आता है। मोतीलाल देखता है कि उसका बेटा उन गंदे लड़कों को लाल ी नज़रों से देख रहा था, क्योंकि वे पोखर से मछली मारकर भून कर खा रहे थे। उस वक्त उनके साथ प्रसाद ी भी थे। मोतीलाल अपने बेटे को डाँट रहे थे, तब प्रसाद ी कहते हैं कि तुम मेरे साथ हमारे घर ालो, वहाँ रो ा मछली बनती है। यह सब सुन मोतीलाल घर ाते हैं और अपनी पत्नी से कहते हैं कि तुम अपने बेटे को नहीं संभाल सकती हो? उस पर वे नाराज़ हो ाती है और अपने बेटे से कहती है-"... लाख सम ाया हमारे होगी तो खाएँगे, नहीं तो पानी पीकर रह लेंगे, लेकिन तूँ.....।"[110] इससे यह विदित होता है कि उनकी आर्थिक स्थिति कितनी दयनीय है कि पसंद का खाना भी नहीं खा सकते हैं।

इस उपन्यास में शिक्षकों की एक ैसी आर्थिक स्थिति कैसी होती है, इसका ित्रण किया गया है। लेकिन कुछ शिक्षक अतिरिक्त काम करते हुए यानी ट्यूशन प ाते हुए पैसे कमाते हैं ताकि ीवन सुख से गु ारा ाये। लेकिन मास्टर मोतीलाल अपने नैतिक मूल्यों के ालते यह काम नहीं करते इसीलिए बराबर आर्थिक संकट में पड़े रहते हैं।

निष्कर्ष

मनुष्य समा ा का अभिन्न हिस्सा होता है। अपने समा ा में ही उसे ीवन-यापन करना पड़ता है। इसके लिए उसे आर्थिक संघर्ष भी करना पड़ता है क्योंकि रुपये से ही सब कुछ मिलता है, उसके लिये आदमी हर तरह का काम करने पर म ाबूर है। आर्थिक असमानता के कारण वह अपना अस्तित्व भी खो बैठता है। आर्थिक विषमता के कारण निम्न वर्ग ीविका के लिए सुदूर प्रांतों में नौकरी की तलाश में घूमता है और अर्थ के ालते उनका कोई स्वदेश नहीं रह ाता है।

सं ीव के उपन्यासों में भी यही सब मिलता है। वे निम्न वर्ग की पीड़ा को अ छी तरह सम ाते हैं, इसीलिए वे उनका मार्मिक ित्रण करते हैं। 'सावधान! नी े आग है' में निम्नवर्ग की आर्थिक स्थिति और उनकी वेदना को उन्होंने अपने अंदा ा

---

[110] आकाश ांपा, सं ीव-पृ.37

में दिखाया है। ांदनपुर कोयला खदान में काम करने वाले म ादूर भिन्न-भिन्न प्रांतों से आते हैं। यहाँ आने के बाद वे यहीं के होकर रह ाते हैं। अपने देश और ान्म स्थल को भूल ाते हैं। लेकिन यहाँ पर उनकी हालत बहुत खराब होने लगती है। रायपुर का एक व्यक्ति यहाँ काम करने के लिए आता है लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो ाती है। ऊदम और आशीष इसी कोयला खदान में काम करने आते हैं, तब उनको यह व्यक्ति रास्ते भर दुखद कहानी सुनाते रहता है। कहता है-पहले से हम यहाँ काम करते रहे हैं अब यह बंद होने वाला है, तो हम क्या खायेंगे, कैसे ि येंगे। "ऊ भी अब बंद हो रहा है। हम का खायें और का खिलायें बाल-ब ों को...?"[111] इस कथन से विदित होता है कि खदान के ालते वे ाी रहे हैं, अगर वह बंद हो ाती है तो उनका ाीना मुश्किल हो ाएगा। यानी आर्थिक स्थिति की विषमता का रूप सामने आता है।

निम्न वर्ग के अंतर्गत वे सभी आते हैं ाो समा ा में शोषित, पीड़ित और प्रताड़ित म ादूर, दलित और आदिवासी हैं। उनके ाीवन-यापन और आर्थिक स्थिति का यथार्थ ि ात्रण उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों के माध्यम से हमारे सामने रखा है। 'सावधान! नी े आग है' में मज़दूरों की आर्थिक स्थिति का विवरण दिया है। इस संदर्भ में सं ाीव के बारे में कहना उ ि ात होगा क्योंकि वे भी ऐसे खदानों में रह ाुके हैं और उन्हें नित अनुभव हैं। इसीलिए वे इन म ादूरों के ाीवन का इतनी बारीकी से ि ात्रण करते हैं। म ादूर अपने पेट काटने और परिवार को पालने के लिए किसी भी हालत में काम करने को तैयार हो ाते हैं। सिर्फ परिवार के पुरुष ही नहीं बल्कि स्त्री भी म ादूरी करने पर म ाबूर होती हैं। वे दलालों के द्वारा काम पाते हैं और वह भी कम म ादूरी में वरना वह भी हाथ से निकल ाता है। आशीष के पूछने पर बू . ा बताता है-"...सो ि ाये कोई ि ानगी है हमारी, कुत्ता की तरह काम के लिए पूँछ हिलाओ, काम मिले भी तो पूरा पइसा न मिले। मरद बेकारी का शैतान लिये

---

[111] सावधान! नी े आग है, सं ाीव-पृ.15

घूमें और औरतों को मिले काम।"[112] इस कथन से यह प्रतीत होता है कि म ादूर काम के लिए भटकते हैं और ाब काम मिलता है तो पैसे भी कम मिलते हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में कोई अंतर नहीं आता है। यहाँ औरतों को इस लिए काम दिया ाता है क्योंकि उन्हें कम म ादूरी देकर काम करा सकें। इस तरह से मज़दूरों का शोषण होता है, ि ासके ालते उनकी आर्थिक स्थिति नी े गिरती ाती है।

दलित

सं ाीव का बहुत ार् ाित उपन्यास 'सूत्रधार' में निम्नवर्ग का ि ात्रण भिखारी ठाकुर के माध्यम से दिखाया गया है। नाई ाति के होने से उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय बनी रहती है। ाार पैसे कमाने के लिए कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मेहनत और दिन भर की गुलामी के बाव ाूद भरपेट खाना नहीं खा पाते हैं। गाँव में नाई का ाीवन लोगों की टहलुआई करने में बीतती है। लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हो पाता।

भिखारी की आर्थिक स्थिति ब ापन से ही कष्टप्रद रही, उनके पिता ाी किसी मरे हुए ब्राह्मण की फेंकी गई ाप्पल लेकर आये थे। वहीं पहनता रहा अब तक, उसका तल्ला बिलकुल ही घिस ाुका है। उसे ठीक करवाने के लिए भी उनके पास पैसे नहीं होते। भिखारी ठाकुर अपने बाप के कहने पर नाई का काम करते हैं, लेकिन उससे भी स्थिति में कोई बदलाव नहीं होता, तब उनके पिता कहते हैं-"महंगाई कितनी ब ़ गई है। परदेश में एक दा ़ी का एक अधेला मिल ाता है लेकिन हियाँ तो साल भर ाो हो और मिलेगा क्या छाँटल-छूटल।"[113] इससे यह सम ा ा सकता है कि गाँवों में नाई ैसे दलितों का ाीवन कितना कष्टप्रद होता है। उनसे मेहनत तो लिया ाता है लेकिन उसका सही प्रोत्साहन नहीं दिया ाता। इसीलिए वे गाँव छोड़कर दूसरे प्रदेश निकलते हैं। खड़गपुर ाकर भिखारी, नाई का काम करने

---

[112] सावधान! नी े आग है, सं ाीव-पृ.17
[113] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.25

लगता है। यानी दलितों की आर्थिक स्थिति इतनी दर्दनाक है कि वे उससे संघर्ष करने के लिए बाहर ाते हैं ताकि परिवार वालों का पेट भरा ा सके।

सं ीव ने इस उपन्यास में मज़दूरों की दयनीय स्थिति को भी दिखाया है। ब देश में युद्ध छिड़ा हुआ है और अकाल ऊपर से पड़ा है, लोग दाने-दाने के लिए मोहता ा हो रहे हैं। वे ाहते हैं कि कुछ पैसे कमाया ाय ताकि ीवन ल सके। इसके लिए वे भटकते रहते हैं और दूर-दूर देशों व प्रदेशों में ाते हैं हाँ पैसा कमा सकते हैं। हाँ उनका हाल पूछनेवाला कोई नहीं होता है, फिर भी वे आर्थिक विषमता के कारण कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार हो ाते हैं। लेखक कहता है-"पैसे कमाने के क्कर में ये भाग-भागकर उन गहों पर पहुँ ते हैं हाँ पैसा कमाया ा सके-असम, बंगाल, ाय बगानों, कोयले की खदानों में, मगर एक बार घर से बाहर क्या निकले, तकदीर कहाँ ले ाएगी, किसी को नहीं मालूम। भले ही वह नरक हो, भले ही वह आग की भट्टी हो।"[114] इस कथन से विदित होता है कि पैसे कमाने के लिए वे किसी भी तरह का कष्ट उठाने के लिए तैयार हो ाते हैं। इसीलिए अपनी तकदीर को मकाने के लिए दूर-दूर तक ाते हैं। लेखक ने यहाँ उनके आर्थिक संघर्ष को उ ागर किया है।

'सूत्रधार' उपन्यास में उपन्यासकार एक ऐसे मार्मिक ित्रण को सामने रखता है िसको प.कर पाठक उस यथार्थ का हिस्सा बन ाता है। गाँव के नाई का ो हाल है वह भिखारियों से भी बदतर है। उनके लिए ंग का खाना नहीं मिल पाता और न ही बदन के लिए साबूत कपड़ा। भिखारी के बाप को ब्राह्मणों की टहलुआई करने पर ो कुछ मिलता है उससे संतुष्ट नहीं हो पाता क्योंकि उसे मेहनत के अनुरूप म ादूरी नहीं मिलती थी। यज्ञ-पू ा के समय आखिरी में ो ब ा-खु ा खाना रहता था उसे वे उठा ले ाते थे ताकि परिवार के सदस्यों का पेट भर सकें। उसी तरह कपड़े के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। गाँव के उ ा वर्ग के बू.े के मरने पर उसके ऊपर ो कफ़न डाला ाता था उसे पाने के लिए भी नाई को मेहनत

---

114 सूत्रधार, सं ीव-पृ.72

करनी पड़ती थी। उसी कफ़न से घर वालों को कुर्ता, गमछा बनवाया ाता था। लेखक का कहना है-"मुर्दे पर का कफन तो मिल ही रहा है, अलबत्ता डोम से ागड़ा करके ले सके तब! अब डोम से कफन के लिए ागड़ो। इस तरह डोम और ा ामान से मुर्दे का कफन या उतरन ो भी मिला, उसी कफन से मेहरारू लोगन का ूला (कुर्ती), ुलिया और गमछी बनी। कपड़े का यह हाल और खाना... ब ा-खु ा ूठन, बसियौरा।"[115] इससे यही प्रतीत होता है कि गाँव में दलितों की स्थिति बहुत ही दूभर है। आर्थिक विषमता के कारण उन्हें संघर्ष करना पड़ता है उस कफन और ूठन के लिए। यह कैसी विडंबना है कि आ ा भी आर्थिक असमानताओं से दलित तड़प रहा है।

'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास में दलितों का शोषण व उनकी आर्थिक स्थिति का ित्रण दिखाई देता है। दलितों की आर्थिक स्थिति बिगड़ने के कारण वे ामींदारों के पास काम में लग ाते हैं और ी तोड़ मेहनत करते हैं, लेकिन उन्हें वही ूठन, ब ी-खु ी बांसी रोटी, दाल- ावल मिलता है। िन्हें वे सुखा-सुखा कर खाते हैं। ऐसी दयनीय स्थिति में वे गन्ने के खेत में ाकर गन्ने को ूसते हैं ताकि अपनी भूख को मिटा सकें।

इस उपन्यस का पात्र मटरू एक दलित वर्ग का है। उसके पास न खेत है, न रो ागार है और न ही फूस का छप्पर है। है तो सिर्फ यही काम कि ादू टोना करना लोमड़ियों, संहिंगडे का शिकार करना। लेखक कहता है-"दाना- ाबैना, गुड़, खेतों का गन्ना, शकरकंद, आम, मकई के भुट्टे यही प्रकृत आहार हैं मटरू के, िासे वे किसी की विरुदावली बखानकर हासिल करते या ुरा कर।"[116]

इससे यह सामने आता है कि दलित वर्ग आर्थिक अभाव के कारण न कभी भर पेट खाना खा पाता है और न अ छा ीवन ी पाता है। ऐसे ही अन्य पात्र है िानकी आर्थिक स्थिति एक ैसी है। रा ा और उसकी पत्नी दोनों ामींदार के यहाँ काम करते हैं अपना क ा ुकाने और खाने के लिए तरसते रहते हैं। इस तरह गाँव

---

[115] सूत्रधार, सं ीव-पृ.164

[116] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.46

के कुछ लोग अपनी आर्थिक स्थिति के कारण दूसरे देश में ाते हैं, कुछ लोग यही भूखे मर ाते हैं। लेखक इन असमानताओं का कारण पूं ीपति और सामंती मानसिकता को मानता है।

निम्न वर्ग का ीवन हर पल एक ैसा नहीं होता। वे अपने ीवन-यापन के लिए हर प्रकार के काम करने पर म ाबूर हो ाता है। वह म ादूर बनकर कारखाना, खदान और सर्कस ैसे खतरनाक ागहों पर काम करने ाता है। वह घर-परिवार को छोड़कर पैसे कमाने के लिए कहीं भी ाला ाता है लेकिन ाहाँ भी ाता है वहाँ का शिकार बनता है, इसके बाव ाूद भी वहाँ से लौट नहीं पाता।

‘सर्कस’ उपन्यास में म ादूरों की आर्थिक स्थिति और मालिकों द्वारा उनके शोषण को दिखाने का प्रयास लेखक ने किया है। मैना का बाप ोकर बनकर सर्कस में काम करने के लिए अपना परिवार और गाँव छोड़कर आता है। ऐसे कितने ही पात्र हैं ाो अपनी आर्थिक स्थिति के कारण इस भयंकर मैदान में प्रवेश करते हैं। हर शो के लिए वे ोखिम भरा प्रदर्शन करते हैं, लेकिन क्या उनको उनकी मेहनत के हिसाब से पैसा मिलता है। उन म ादूरों का शोषण किया ाता है, पर क्या करें उनके लिए कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं।

‘सर्कस’ में काम करने वाले बौने, लोगों को हसाने का काम करते हैं, लेकिन वे समा ा के व्यक्तियों से उपेक्षित किये ाते हैं। ाब रिंगमास्टर श्रीधरण के पास काम के लिए ये बौने आते हैं तब वह कहता है-"देखो ोकरों की तनखा यही सौ से यादा नहीं, वह भी अगर बाँध पाये दर्शकों को तो। रो ा दो- ाार आते हैं, दो- ाार ाते हैं। यानी खुश कर पाए तो दाना-पानी ुटा नहीं कर पाए तो क्या...? ...क ा।"[117] इससे बौनों की दर्दनाक आर्थिक स्थिति का ित्रण सामने आता है। वे अपनी ीविका के लिए कम वेतन पर काम करने को भी तैयार हो ाते हैं। सर्कस के मज़दूरों की आर्थिक स्थिति में कभी भी सुधार नहीं हो पाता, वे आर्थिक असमानता के कारण मानसिक और शारीरिक रूप से तनाव भरी ि ंदगी ीते हैं।

---

[117] सर्कस, सं ीव-पृ.61

आदिवासी

आदिवासी समा ा की विभिन्न ान ाातियाँ कबिलाई पद्धति से ांगलों तथा पहाड़ों में रहती हैं, ि ासके पास न रहने के लिए घर है और न उन्हें दो वक्त की रोटी मिलती है। आदिवासी समा ा की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है। अरण्य संस्कृति के कारण वे बाह्य समा ा से उतना संपर्क में नहीं आ पाते हैं। वे अपनी ाीविका के लिए ांगल का सहारा लेते हैं। ांगल से मिले कंद-मूल, फल-फूल, ाड़ी-बूटियाँ निकालकर बे ाते हैं, खेती करते हैं, शिकार करते हैं, लकड़ी, लोहे- ाूट, बाँस तथा मिट्टी द्वारा बनाये गये ाीज़ों को बे ाकर अपना ाीविकोपा ान करते हैं। फिर भी वे आर्थिक रूप से कंगाल ही बने रहते हैं, भर पेट खाना नहीं मिलता और न तन को कने के लिए ंग का कपड़ा ही मिल पाता है। वे अपनी भूख मिटाने के लिए दूसरों के ाूठन पर निर्भर रहते हैं। इन आदिवासियों की ऐसी दयनीय स्थिति बनी रहती है।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में सं ाीव ने आदिवासी ान- ाातियों के ान- ाीवन पर प्रकाश डाला है। यहाँ सं ाीव 'बाघामुंडी' के आदिवासियों के ाीवन का परि ाय देते नज़र आते हैं। उनके पहाड़ी ाीवन और अलग संस्कृति के कारणों से वे साधारण ान- ाीवन से वं ाित रहे हैं। कथानायक सुदीप्त इन आदिवासियों के पक्षधर हैं। वे इनकी सामा ािक और आर्थिक स्थिति को सुधारना ाहते हैं। आदिवासियों की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय रहती है, ौसे रहने, खाने-पीने और कपड़े पहनने के लिए उनके पास किसी प्रकार का विकल्प नहीं रह ााता। वे अपनी इस स्थिति को अपनी तकदीर मानकर ालते हैं।

लेखक इन आदिवासियों का वास्तविक ित्रण करते नज़र आते हैं। 'बाधामुंडी' के आदिवासी कितनी दयनीय स्थिति में हैं इसका विवरण देते हुए कहते हैं-"वे इतने गरीब थे कि कपड़ों के नाम पर ि ाथड़े का क छा पहने हुए थे, पट्टे तक खुले हुए। औरतें ौसे बदन के हुए थी। ब ो कंगालों ौसे।"[118] इस कथन से

[118] पाँव तले की दूब, सं ाीव, हंस, अगस्त, 1990-पृ.72

विदित होता है कि आदिवासियों की आर्थिक स्थिति कितनी दयनीय है और वे कैसे अपने आपको ीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं।

इस उपन्यास में एक ागह यह भी दिखाया गया है कि गरीब आदिवासी के ब े कैसे अपने बाप के साथ ाते हैं ताकि पूं ीपतियों के घर कुछ ब ा-खु ा ूठन मिल ायेगा। इस दृश्य से उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति का पता ालता है।

आदिवासी युवक फिलिप इसी स्थिति का बखान करते हुए प्रश्न करता है कि हम आदिवासियों की आर्थिक स्थिति ऐसी क्यों है। ाबकि सारा ंगल और उसकी अनोखी संपत्ति हमारी है, लेकिन हमारी स्थिति क्यों नहीं बदली?

लेखक अपने वि ारों को फिलिप के द्वारा इस प्रकार व्यक्त करता है-"यह धरती, हमारी धरती सोना उगलती है और उस सोने की धरती की हम कंगाल संतान हैं। प्रदेश की दो-तिहाई आय हमसे होती है और हमारी हालत-न तन पर साबुत कपड़ा, न पेट में भरपेट भात। दवा-दारू, प ़ाई-लिखाई की बात छोड़ ही दी ाए।"[119] इस विवरण से स्पष्ट होता है कि आदिवासी समा ा की आर्थिक व सामा ाक स्थिति कितनी गिरी हुई है। हर तरह से हकदार होने पर भी वे उसका फायदा नहीं उठा पा रहे हैं। मेहनत करने पर भी सुख की रोटी नहीं खा पाते हैं, और न ही उनकी आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन होता है।

'धार' उपन्यास के अंतर्गत संथाल आदिवासियों की उसी आर्थिक स्थिति का ित्रण किया गया है। उनके पास काम न होने के कारण वे अपने परिवार के पालन पोषण के लिए किस हद तक गिर ाते हैं। आदिवासी लोग भीख मांगने तक से पीछे नहीं हटते हैं, सिर्फ इसलिए कि उनके पास न काम है और न पैसा। भीख न मांगने पर लगता है उनका ीना मुश्किल हो ाएगा। काम भी बहुत कम लोगों को मिलता है, बल्कि बहुत से लोग बेकार रहते हैं। शर्मा बाबू के सू ाना देने पर वे कोयला निकालने का काम शुरू करते हैं िासे कि उनकी स्थिति में कुछ बदलाव आ ाए। शर्मा इस संदर्भ में मंगर से इनकी आर्थिक स्थिति के बारे में बताते हैं-"अभी धान

---

[119] पाँव तले की दूब, सं ीव, हंस, सितंबर-पृ.76

की रोपनी का वक्त है-कुछ अपने खेत, कुछ म ूरी, थोड़ी ाहल-पहल नज़र आ रही है। अभी... अवैध कोयला खनन भी गड्ढों में पानी भर ाने से बंद है। .... रात भर अवैध कोयला खनन में काम करने के बाद दिन को सोना।"[120] यहाँ आदिवासियों में ीवन संघर्ष नज़र आता है। वे अपने आर्थिक सुधार के लिए ी तोड़ मेहनत करते हैं और आर्थिक संघर्ष को ारी रखना ाहते हैं।

'धार' उपन्यास में गरीबी के कारण मैना और उसका सारा परिवार कोयला बे ने लगते हैं। लेकिन उससे उनकी स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हो पाता। फिर भी मैना हार नहीं मानती। लेकिन गाँव के कुछ ावान लड़कियाँ गलत रास्ता ुनकर आर्थिक स्थिति में बदलाव लाना ाहती हैं। मैना के ब े भी ट्रेन में गीत गाते हुए भीख माँगने लगते हैं, उसकी बेटी सितवा भी अन्य लड़कियों की तरह गलत काम करने पर म ाबूर हो ाती है। ाब मैना यह दृश्य देखती है तब वह बौखला ाती है, वह सो ाती है-"तो इसका मतलब यह हुआ कि आसनसोल, लक्ष्मीपुर की तरह यहाँ भी रात को ाकला ालने लगा।"[121]

इस कथन से विदित होता है कि आदिवासियों की कुछ ावान लड़कियाँ अपना शरीर बे ाकर पैसा कमाती हैं ताकि उनकी आर्थिक स्थिति को सुधार सकें। इन आदिवासियों को किस प्रकार उनकी आर्थिक स्थिति ने कंगाल करके रखा है यहाँ देख सकते हैं।

' ंगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में थारू आदिवासी समा ा के ान ाति ीवन का ित्रण किया गया है। वे ंगल में रहते हैं और वहाँ थोड़ी सी ामीन में खेतीबाड़ी करके ीविकोपा ान का समुपा ान करते हैं। यह भी नहीं होता तो वे अपनी ीविका के लिए ामींदार व ठेकेदारों के यहाँ बंधुआ मज़दूर बनकर रह ाते हैं। इस उपन्यास में ान ाति की आर्थिक स्थिति का लेखक ने मार्मिक ित्रण किया है। वे आर्थिक अभाव के कारण दयनीय ीवन बिताते हैं। इस उपन्यास के पात्रों में बिसराम की आर्थिक दुर्दशा को सामने रखा ाता है। पैसे न होने के कारण उसके

---

[120] धार सं ीव-पृ.37

[121] धार, सं ीव-पृ.114

घर में परिवार के लिए पर्याप्त खाना भी नहीं बन पाता। भात के माँड में नमक डाल कर वह पी लेते हैं। उसकी पत्नी बीमार पड़ने पर भी उसे इला ा कराने के पैसे भी नहीं रह ाते। दवा के नाम पर नीम-तुलसी गुड़ का का ़ा दिया ाता है।

आदिवासी बिसराम की आर्थिक स्थिति के बारे में लेखक बताते हैं " ंगलों में बेंत हैं, हाथ में हुनर है, ूडी, खाँ ी तो बना ही सकता है वह, लेकिन उसे लोन कौन देगा? बेंत का ठेकेदार एक ल्लाद... कहाँ से ले आए रकम घूस-पाति के लिए।"[122] इससे यह बताना ाहते हैं कि थारू आदिवासी बिसराम आर्थिक अभाव के लते वह कुछ कर नहीं पाता। उसका भाई काली अपने भाई की स्थिति को देखकर परेशान रहता है। वे ाहते हैं कि उनके मीन के लिए लनेवाला मुकदमा ीत ायें और वे नेपाल की नागरिकता लेना भी ाहते हैं। लेकिन आर्थिक स्थिति उनका साथ नहीं देती। काली ठेकेदार के यहाँ काम पर लग ाता है लेकिन वहाँ पैसे नहीं मिलने पर कु ़ ाता है, उसके भाई से ब मुकदमे वाली बात करता है तो कहता है-"उधर मुकदमे का यह हाल है कि पैसों के लते ही मुकदमा खारि ा होने ा रहा है। पैसों के लते ही नेपाल की नागरिकता का सवाल ख ़ाई में पड़ गया।"[123] इस कथन से विदित होता है कि आर्थिक अभाव के लते वे किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते और नित्य उनका ीवन आर्थिक संघर्षों से ू ाता रहता है।

यह सिर्फ अकेले बिसराम की ही बात नहीं बल्कि पूरे आदिवासी समा ा की यही दास्तान है। कुछ आदिवासी इस आर्थिक असमानता व विषमता को दूर करने के लिए गलत रास्ता ुन लेते हैं, िसका परिणाम उनके ीवन के लिए खतरनाक साबित होने लगता है। ोगी उनमें एक है ो कि ोरी कर बैल बे ने से लेकर लड़कियों को बे ने तक के कुकर्म करता रहा, अपने इस आर्थिक स्थिति व अभाव

---

[122] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.23

[123] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.83

के कारण। लेखक कहता है-" ोगी-बैल ुराकर बे ाने से लेकर लड़कियाँ बे ाने तक का कोई भी कुकर्म उससे छूटा नहीं है।"[124]

इस कथन से स्पष्ट होता है कि आदिवासियों की आर्थिक स्थिति कितनी दयनीय बनी हुई है कि वह ऐसे कुकर्म करके अपना पेट भर लेते हैं।

पूँ ीपति

आ ा के संदर्भ में पूँ ीपतियों का व र्स्व अत्यधिक विद्यमान नज़र आता है। पूं ीपति अपनी पूं ी ब ़ाने के लिए वे सारे काम करते हैं बल्कि यह कहना उ ित होगा कि वे औद्योगिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। आ ा ि ातना भी औद्योगिकरण हुआ है वह इन पूं ीपतियों के द्वारा ही हुआ है और हो रहा है। पूं ीपतियों की आर्थिक स्थिति सुविधा ानक रहती है, वह सुविधा भोगी तथा ऐशो आराम की ि ांदगी ीता है। उसके लिए आर्थिक अभाव का होना अप्रसंग सा लगता है, क्योंकि वे अपनी आर्थिक ाड़ों को म ाबूत बनाकर रखते हैं।

सं ीव के उपन्यासों में पूं ीपतियों का विवरण स्पष्ट रूप से दिया गया है। सं ीव इस अर्थ-व्यवस्था की असमानताओं का कारण इस पूं ीपति वर्ग को ही मानते हैं। इसीलिए इनके उपन्यासों में पूं ीति, ामींदार और सामंतों का स्वार्थपरक, निर्दयी और शोषणकारी के रूप ही मिलता है। इनका मानना है कि वे अपनी आर्थिक स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए किसी भी हद तक उतर ाते हैं, ैसे शोषण, हत्या, धमकी और भ्रष्टा ार।

'किसनग ़ के अहेरी' में इनरपति सिंह, इकबाल सिंह, उदयभान तिवारी, योतिषिबाबा तथा रूपई आदि ऐशो आराम की ि ांदगी बिताते हुए दिखाई देते हैं। ाँदनी के पूछने पर रा ा काका बताते हैं-"ठीकेदार लोगइ सबसे समर्थ और धनी हएना... ठीकेदार रामबु ावन यादव के ईंटों की ि ामनी हमारे बाएँ बा ू आ लगी है। ... कोयले की खदान... दो पंपिग सेटों के अलावा डी ाल ालित यह तीसरा पंप

[124] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.84

बैठाया गया है।"[125] इस कथन से यह स्पष्ट हो ाता है कि वही ठेकेदार लोग ओर सामंती लोग धनवान हैं ि ानके पास ेर सारे कामों का ठेका लिया होता है। इसीलिए वे आर्थिक रूप से म ाबूत और सुखी ाीवन बिताते हैं।

‘ ांगल ाहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में राधोबाबू, ांद्रदीपसिंह और भौरोपुर के लल्लन बाबू, रा ागि ़या ाी ामींदार हैं, और वे पूं ाीपति वर्ग के प्रतिनिधि भी। ौसे रा ागि ़या ाी तीन- ाार सौ एकड़ ामीन के मालिक हैं। यह उनकी आर्थिक स्थिति का प्रमाण है। इसी पूं ाीपति वर्ग के दुबे ाी मंत्री बने। वे अपनी बेटी के विवाह को धूम-धाम से मनाते हैं। लेखक इसका वर्णन करते हुए लिखते हैं-"सुंदर स ो पंडाल में ााड़-फलूस, पँखे और बेंत के फर्नी ार। गेंदे, गुलाब, बेले और र ानीगंधा की ाालरें और तोरण। सारा कुछ भव्य और अभि ाात्य भरा। कतारबद्ध कुर्सियों पर बैठे मंत्री, सेठ, ठेकेदार... शहनाई, नगाड़े, पुलिस बैंड की धुनें और बीसियों तरह के गहमागहमी के शोर हैं।"[126]

इस कथन से लेखक का मंतव्य है कि आर्थिक स्थिति से म ाबूत होने पर वे किसी भी कार्य को संपन्न करने में पीछे नहीं हटते। वे लोग पैसों को काग ा की तरह उड़ाते हैं और अपनी औकात को सबके सामने प्रदर्शित करते हैं।

‘सूत्रधार’ उपन्यास में भिखारी ठाकुर ‘बटोर’ करवाना ाहते हैं। इसके लिए उनके पास पैसे कम पड़ ाते हैं तो वे पैसे मांगने गाँव के ामींदार रामसूरत सिंह के पास ााता है। ाब वह पैसे मांगता है, तब रामसूरत सिंह इस तरह से पैसे फेंकता है, ौसे कोई भिखारी हो। लेखक कहता है-"रामसूरत सिंह ौसे उदार संरक्षक ने ि ास ंग से पैसे फेंके, वह बहुत ही अपमान ानक लगा।"[127]

यह उस सामंती मानसिकता का एक उदाहरण है। पूं ाीपति और ामींदारी के घमंड से वे अपनी आर्थिक स्थिति को दिखाते हैं।

---

125 किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.81
126 ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.37-38
127 सूत्रधार, सं ाीव-पृ.231

'आकाश ांपा' उपन्यास में सेठ अग्रवाल और सेठ पूरनमल ौसे पूं ीपति लोगों का ित्रण किया गया है। वे अपने पूं ी के बलबूते निम्न वर्ग के इंसान को भिखारी की तरह देखने लगते हैं। वे पैसे ख ि करना ाहते हैं लेकिन अय्याशी करने में न कि किसी की सहायता में। अग्रवाल तो मास्टरों की तनख्वाह में भी शोषण करके अपनी संपत्ति ब ़ाने वाले पूं ीपति हैं। ाब मास्टर मोतीलाल सुखौती में स्कूल खोलना ाहते हैं, उसके लिए पैसे मांगने सेठ पूरनमल के पास ाते हैं। वे अपने पास धन होने के गर्व को दिखाते हुए उनसे बहुत कुछ कहते हैं और अपने आपको उन तमाम सामंती मानसिकता के लोगों के साथ तुलना करते हैं। लेखक उनके घमंड को सेठ के शब्दो में इस तरह कहते हैं-"कौन ीज़ के मास्टर हो आप लोग, इतना भी नहीं पता कि हर रा ाा, बादशाह और बड़ा आदमी रखनी रखता था, बड़े-बड़े हरम होते थे?"[128]

इस कथन से यह विदित होता है कि पूं ीपति लोग ऐशो आराम की िंदगी बिताना ाहते हैं और अपने पैसों से अय्याशी करना ाहते हैं।

'धार' उपन्यास में महेंदर बाबू ते ाब फैक्टरी के मालिक हैं ाो म ादूर और आदिवासियों का शोषण करके आराम की िंदगी ाीता है। उसे कोई आर्थिक संघर्ष करने की ारूरत नहीं पड़ती, वह तो पूं ीपति बना रहता है। 'सर्कस' उपन्यास में भी सर्कस कंपनी के मालिक सैंड और नियोगी आर्थिक रूप से दृ ़ रहते हैं और ऐशो आराम से ाीते हैं। 'सावधान! नी ो आग है' में रा ागि ़या, 'पाँव तले की दूब' में सिन्हा साहब भी पूं ीपति हैं, ाो औद्योगीकरण के नाम पर आदिवासियों का शोषण कर अपनी पूं ी ब ़ाते हैं।

लेखक अपने उपन्यासों में यह बात सामने रखना ाहते हैं कि औद्योगीकरण के ालते पूं ीवाद शोषणकारी नीति को अपनाता रहा है। पूँ ीपति पहले वहाँ के स्थानीय लोगों का विश्वास ाीत कर औद्योगिक क्षेत्र बनाते हैं यह कहकर कि उन्हें काम दिलायेगा। बाद में उनका ही शोषण करता नज़र आता है।

---

[128] आकाश ांपा, सं ीव-पृ.86

'धार' उपन्यास में महेंदर बाबू को ते ाब की फैक्टरी खोलने के लिए टेंगेर अपनी सारी ामीन मुफ्त में दे देता है ताकि उसके गाँव के आदिविासयों का भला हो और कुछ काम मिले। लेकिन वह आदिवासियों का शोषण करता है, फैक्टरी से ि ातना फायदा मिलना था उतना फायदा ले लेता है बाद में उसे बंद कर देता है। मैना और शर्मा बाबू महेंदर बाबू के विरोध में क्रांति ालाते हैं ि ासमें संथाल आदिवासी अपने हक की लड़ाई लड़ने को तैयार हो ाते हैं।

'सावधान! नी ो आग है' उपन्यास में ांदनपुर कोयला खदान के बनने पर लोग म ादूरी करने आते हैं, लेकिन उनका शोषण इस तरह किया ाता है कि कम पैसे देकर यादा काम लेना और र ास्टर में सौ की ागह प ास के नाम लिखकर काम कराना। रा ार्ग ि या ी इसी तरह शोषण करके पूं ीपति बनते हैं। औद्योगिकरण के नाम पर आदिवासी, मज़दूरों का शोषण ाल रहा है। रा ार्ग ि या के इस कथन के द्वारा लेखक बातते हैं-"पाप? इसी पाप से तुमने दान-पुण्य किया है। तब तुमने नहीं सो ा, यह शान-शौकत और तुम्हारी फि ाूली ख र्ा का पैसा कहाँ से आता है? सब यही करते हैं।"[129]

रा ार्ग ि या ी अपनी पत्नी के पूछने पर इस तरह बताते हैं।

'सर्कस' उपन्यास में भी यही सब कुछ ालता है। सर्कस कलाकार और मज़दूरों का शोषण करते नियोगी और सैंड ैसे पूँ ीपति मालिक। अंत में इनका विरोध करने कामिनी सर्कस से बाहर आ ाती है और वह संधूदी के साथ मिलकर उनका विरोध करने लगती है।

'पाँव तले की दूब' में औद्योगिकरण के नाम पर आदिवासियों को विस्थापित किया ा रहा था। और उनके यहाँ के कोयले को पूं ीपति बाहर ब ाते थे, ि ासे आदिवासियों का आर्थिक शोषण किया ा रहा था। इसके लिए आदिवासी युवक फिलिप 'डायरेक्ट ऐक्शन' की बात करता है। ि ासका उद्देश्य ो आदिवासी नहीं हैं उनसे कोई संबंध न रखना। महतो कहता है-"... ो आदिवासी नहीं हैं ो हमको

---

[129] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.35

पेड़ के ैसे काट डाला, उनसे कोई संबंध नहीं रखेंगे। डायरेक्ट ऐक्शन डायरेक्टली स्टार्ट्स फ्रोम होम।"[130]

लेखक अपने उपन्यासों में पूं ीवादी व्यवस्था और उनके द्वारा गरीबों के शोषण को दिखाते हुए उससे लड़ने की शक्ति व ेतना लोगों में उत्पन्न करने का काम करते हैं।

3.5 रा नीतिक आयाम

समा के लिए हर वक्त किसी न किसी रूप से रा नीति का कार्य क्षेत्र अनिवार्य बनता दिखता है। यह मनुष्य की सत्ता का निर्माण करने में योगदान देता है। इसीलिए ग ानन माधव मुक्तिबोध का मानना है कि-"मनुष्य की सत्ता का निर्माण करने का एकमात्र मार्ग रा नीति है।"[131] इन शब्दों के आलोक में हम सह ही यह कह सकते हैं कि हमारे समय में मनुष्य की हालत से सीधा साक्षात्कार रा नीति से ही संभव है। रा नीति से यहाँ आशय किसी पद के लिए उखाड़-पछाड़ और दंद-फंद से नहीं, बल्कि उस र नात्मक कर्म से है ो व्यवस्था को नियंत्रित करके मनुष्य ीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

लेकिन आ के संदर्भ में देखा ाए तो यह बिल्कुल ही व्यर्थ साबित होने लगा। क्योंकि आ रा नीति का लक्ष्य स्वार्थपूर्ति का एक साधन व कड़ी बनकर रह ाता है। उसका मूल उद्देश्य रा य के व्यक्तियों व समा की स्थिति को बेहतर बनाना नहीं होकर अपनी स्थिति को बेहतर बनाना हो गया है। वे अपने अस्तित्व को ब ाए रखने के लिए लोगों की कम ोरियों का सहारा लेते हैं, उन्हें ूठे आश्वासन देकर भ्रम पैदा करते हैं और स्वयं को म बूत करते रहते हैं।

आ के संदर्भ में रा नीति में कोई नैतिक मूल्य नहीं रह गया। ो नेता रा नीति में प्रविष्ठ हो रहे हैं उनका रित्र और नैतिक मूल्यों का पतन हाशिये पर है। ुनाव क्षेत्र में उनका ो रंग बदलते देख सकते हैं, उसे देखकर वह गिरगिटिया

---

[130] पाँव तले की दूब, सं ीव, हंस, अगस्त, 1990-पृ.76
[131] आलो ना, अप्रैल- ून 2002-पृ.116

भी घबरा ाएगा। वे उस समय अपने ीत के लिए असंभव कहे ानेवाले आश्वासन और वादे करते हैं। इस संदर्भ में 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना' ने ो व्यंग्य किया वह सही लगने लगता है-"गिरगिट को भी अपना रंग बदलना अपमान ानक लगेगा, वह आत्मरक्षा के लिए रंग बदलता है, आप शिकार के लिए रंग बदलते हैं।"[132]

यहाँ सिर्फ उनके स्वार्थ की ही लक दिखाई देती है। वे न तो किसी का भला करना ाहते हैं और न किसी को करने देते हैं। देश के देशवासियों की समस्याओं से उनका कोई संबंध नहीं होता। वे सिर्फ अपनी कुर्सी, पद, धन और अधिकार को ब ाने में ही मशगुल नज़र आते हैं।

रा य

रा य अंग्रेज़ी शब्द 'स्टेट' का हिंदी पर्याय है। रा य के तत्व, स्वरूप और उत्पत्ति के बारे में वि ार करते हुए 'हेरोल्ड ो लास्की' ने कहा है-"रा य मनुष्यों का ऐसा समूह है िसका उद्देश्य सामान्य ीवन की उन्नति है। अन्य समुदायों के समान यह भी एक समुदाय है। ... दूसरों से इसमें यह भेद है कि इसकी सदस्यता इसके क्षेत्र के निवासियों के लिए अनिवार्य होती है। और बल पूर्वक यह अपनी प्र ा से उनके उत्तरदायित्वों को पूरा करा सकता है।"[133]

रा य मनुष्यों का समूह है, िसका मूल उद्देश्य सामान्य ानता की उन्नति है। दूसरे समुदायों की तरह यह भी एक समुदाय है। फिर भी इसकी एक प्रमुखता है कि इसकी सदस्यता अनिवार्य होती है ो यहाँ के निवासी हैं और वह रा य उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

कौटिल्य के अनुसार-"रा य एक प्राकृतिक संस्था नहीं है, वरन् उसका रूप एक ऐसी मानव-निर्मित संस्था का है, िसका आधार सामा िक सम ौता है।"[134]

---

[132] ार ो और ारखे, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना-पृ.234

[133] नागरिक शास्त्र के मूल सिद्धांत, नवीन नारायण अग्रवाल-पृ.65

[134] नागरिक शास्त्र के मूल सिद्धांत, नवीन नारायण अग्रवाल-पृ.47

यानी रा य प्राकृतिक संस्था नहीं बल्कि एक मानव-निर्मित संस्था है। ो समा ा से सम ौता करता है।

रा य व रा ानीति समा ा से ुड़े रहने के कारण वह रा य संपूर्ण रूप से बनता है। रा य में ो रा ा व नेता बनता है वह रा य के हितों के बारे में सो ाने लगता है और प्र ा के लिए अपना कर्तव्य निभाने में समर्पित रहता, तब ाकर रा य का एक शक्तिशाली रूप बनने लगता है।

कोशों में 'रा य' के कई अर्थ उपलब्ध होते हैं, ैसे "रा य प्र ा पालन की व्यवस्था है, ि ासमें हुकूमत, शासन पूरा अधिकार खूब ालता है। ि ासके सं ाालन के केंद्र में एक रा ा का होना ारूरी है, अर्थात् रा य का मतलब एक रा ा द्वारा शासित प्रांत या देश है।"[135]

रा ानीति

अंग्रेज़ी 'पॉलिटिक्स' का हिंदी पर्याय 'रा ानीति' है। यह शब्द युनानी शब्द 'पोलिस' से है ि ासका अर्थ है नगर। इसलिए प्रा ीन युनानी वि ाारक इसे नगरों की बातों से संबंधित ज्ञान मानते थे। रा ानीति का मतलब शासन के सामयिक प्रश्नों और समस्याओं से है। ये समस्याएँ आ ा रा ानीतिक कम, आर्थिक अधिक है या कम-से-कम मिली ुली है।

अरस्तु ने 'पॉलिटिक्स' और प्लेटो ने 'रिपब्लिक' नामक ग्रंथों में मुख्य रूप से नागर-रा यों की रा ानीतिक समस्याओं का ही विवे ान किया है। रा ानीति के नैतिक अध्ययन का विज्ञान है, रा ानीतिक विज्ञान। प्रा ीन भारत में दंडनीति, रा ाधर्म, रा ाशास्त्र और नीति शास्त्र आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में रा ानीति की ही ा ाा मिलती है। रा ानीति राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्र की सशक्त व्यवस्था भी है। हर राष्ट्र की अपनी विशिष्ट रा ानीति होती है, उसकी छत्र-छाया में ही देश की उन्नति-व-अवनति की नींव पड़ी है। हर

---

135 हिंदी विश्व कोश, संकलनकर्ता, नरेंद्रनाथ वासु-पृ.488

रा ानीति का अपना विधान सम्मत व्यकरण होता है, एक सीमा होती है। ाीवन का हर क्षेत्र सामाा िक, सांस्कृतिक, धार्मिक या आर्थिक रा ानीति से प्रभावित होता है।

ोम्स विल्फोर्ड गार्नर ने रा य और रा ानीति के बारे में कहा है-"रा य के तीन उद्देश्य हैं, सर्व प्रथम व्यक्ति की भलाई करना, तत्पश ाात संगठित व्यक्तियों के सामूहिक हितों की ओर ध्यान देना और अंत में सभ्यता की उन्नति और विश्व की प्रगति करना।"[136]

गार्नर का यही उद्देश्य है कि व्यक्ति और संगठित व्यक्तियों के हितों की ओर ध्यान देकर उनकी भलाई करना और सभ्यता की उन्नति के साथ विश्व की प्रगति करना ही रा ानीति है। वैसे तो रा ानीति हमारे ाीवन का एक अंग बनकर रह गयी है। विवे य विषय के सदर्भ में कहा ााय तो सं ाीव एक ऐसे लेखक है ि ानके लेखन में रा ानीति का संदर्भ प्रस्फुटित होने लगता है। उनके व्यक्तित्व को देखा ााय तो वे रा ानीति को एक सार्वभौमिक स्तर पर देखनेवाले प्रतीत होते हैं। इनके उपन्यासों में रा ानीति को व्यंग्य परक शैली में दिखाया ााता है और आ ा के समकालीन रा ानीतिक व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप का परदाफाश करने में भी सफल सिद्ध होते हुए दिखाई देते हैं।

सं ाीव के लेखन में रा ानीतिक संदर्भ के बारे में 'प्रियदर्शन' का वि ाार है कि-"ऐसा नहीं है कि सं ाीव यह भावनात्मक तीव्रता सिर्फ शब्द ााल या किस्सागोई की सामर्थ्य से हासिल करते हैं। इससे वह हासिल भी नहीं की ाा सकती। वस्तुतः समकालीन रा ानैतिक-सामाा िक यथार्थ की नब ा पर सं ाीव की पकड़ खासी गहरी है। वे इस व्यवस्था के कम ाोर और खोखले पायों को कायदे से देख पाते हैं, इसके विरुद्ध हो रहे संघर्ष की र ानात्मक संभावनाओं और सीमाओं को भी। नक्सलवादी रा ानीति उनके लेखन में बार-बार आती रही है और बाद के दौर की उनकी कुछ कहानियों में इसकी आलो ाना का पुट भी मिलता है। इस रा ानैतिक सामाा िक सम ा

[136] रा ानीति मेरी प्रेयसी, अरुण ओले-पृ.111

का रसायन वह दूसरी व ाह है ाो सं ाीव के लेखन को टिकाऊ और हमारे समय की एक ारूरी ाी ा बनाता है।"[137]

'प्रियदर्शन' के इस कथन से विदित होता है कि सं ाीव समकालीन रा ानीतिक सामा ािक समस्याओं पर पकड़ है और वे इस व्यवस्था की कम ाोरियों को अपने लेखन द्वारा सामने रखा है। इसलिए वे आ ा के समय के एक महत्वपूर्ण लेखक हैं।

सं ाीव के अब तक के कथा-साहित्य में रा ानीति का स्फुट कहीं-न-कहीं दिखाई पड़ता है। क्योंकि वे लोक- ाीवन से इसको ाोड़कर देखते हैं। उनके उपन्यासों के संदर्भ में कहा ााय तो वे मुख्य रूप से आदिवासी ान ाातियों के ाीवन के माध्यम से रा ानीति को देखते हैं। उनका रा ानीतिक दृष्टिकोण समा ा के पीड़ित-शोषित, दलित और आदिवासियों के ाीवन से संबंधित मिलता। नेताओं का द्वंद्व नीति और सरकार के न कामियाब यो ानाओं पर उनका कड़ा प्रहार मिलता है।

विवे ाय विषय के संदर्भ में सं ाीव के उपन्यासों में रा ानीतिक आयामों का ाित्रण खुलकर हुआ है। नेताओं का ाित्रण, संसद, विधायक और मंत्री महोदय का असली रूप के साथ-साथ सरकार द्वारा किये ाानेवाले कार्यक्रम और नीतियों का खुलासा किया गया है।

नेता

'आकाश ांपा' उपन्यास में रा ानीति के दो पक्षों को दिखाया गया है। वीरेंद्र प्रताप सिंह ाो कि ानपक्ष पार्टी के विधायक हैं, वे एक स ाे और ईमानदार नेता के रूप में प्रतीत होते हैं। वे अपना ाीवन लोगों के लिए ाीना ााहते हैं और उन भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ने लगते हैं।

एक तरफ वे नेता हैं ाो अधिकारी के स्वपक्षीय पार्टी के होते हुए अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल करते नज़र आते हैं। अ ाय और ाय के स्टडीसेन्टर

---

[137] हंस, मई 2001-पृ.83

गरीबों के ज़मीन कब्ि ायाकर बनाया ाता है। इसके लिए नेता ी की सहायता मिलती है। ाब वे इस विषय पर बात करते हैं तो नेता ी कहने लगते हैं कि इस स्टडी सेंटर से मेरा ो शेयर मिलना है वह मिलता रहे, और तुम लोगों की ो भी परेशानी है वह मैं संभालूँगा।

नेता ी कहते हैं-"ये आपकी क्रेडिट है कि आपने या आप तीनों ने इतना बड़ा रिस्क लेकर इतना बड़ा स्टडी सेंटर खड़ा कर दिया। बाकी अवाल-बवाल मैं देख लूँगा। मेरा शेयर एकाउण्ट में ामा होता रहे, इतना याद रहे, नंबर मैं दे दूँगा..।"[138]

इस कथन से लेखक कहना ाहता है कि ो नेता बनकर लोगों के हित के लिए काम करना ाहिए था, वह खुद उनका शोषण करने पर आमादा है। गरीबों को बेघर करके पैसे हड़पने में नेतागिरी का इस्तेमाल कर रहा है।

'किसनग . के अहेरी' उपन्यास के रूपई एक युवा नेता के रूप में सामने आता है। यह कांग्रेस के तरफ से किसनग . के नेता बनकर सारा काम अपने इशारों पर करते हैं। लोगों को डरा-धमका कर उनसे काम कराता है। हर छोटे-बड़े काम के लिए उसी नेता के यहाँ ाना पड़ता है। रुपई के खिलाफ ो भी बोलता है उसे सीधा कर दिया ाता है। एक बार लोग काम करने से इनकार कर रहे थे कि म ूरी सरकार की तय की हुई मिलनी ाहिए, तब रुपई उन पर अपना बल प्रदर्शन करते हुए धमकाता है।" काम पर सीधे तौर पर ाले आओ वरना सबकी कटवा देंगे। सरकार यहाँ हम हैं तुम्हारी, हम ो कहेंगे, किसनग . में वही होगा।"[139] इस कथन से विदित होता है कि नेता होने के कारण वहाँ की सरकार वही लोग बनना ाहते हैं, और गरीबों पर अत्या ार कर उन्हें डरा-धमकाकर अपना काम करवाते हैं। इससे उनकी शोषणकारी मानसिकता का भी परदाफाश होता है।

---

[138] आकाश ांपा, सं ीव-पृ.216

[139] किसनग . के अहेरी,, सं ीव-पृ.62

इस उपन्यास के नायक ाय एक क्रांतिकारी नेता के रूप में सामने आता है ो इस समा की स्वार्थपरक रा नीति के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाता है। देश के नेताओं की असलियत को लोगों के सामने रखने का प्रयास करता है।

 ाय के माध्यम से लेखक के ये वि ार सामने आते हैं ैसे-"ि तने ोंगी साधू संन्यासी हैं फरेबी हैं, सब यहाँ। कैसा म ाक ल रहा है यहाँ। इन्हें नष्ट करने को कौन कहे, प्रसाद लिए फिरते हैं, हाथ दिखवाने के लिए बुलाते फिरते हैं ये बौनी अपाहि मानसिकता वाले नेता! इनमें नैतिक बल होता तो यह नौबत क्यों आती?"[140] इस कथन में लेखक नेताओं की मानसिकता को उ ागर करते हुए कहते हैं कि सब ोंगी हैं, अपने स्वार्थ के लिए लोगों को धोखा देते रहे हैं। आ देश ऐसा नहीं होता अगर इनके अंदर नैतिक बल होता।

'आकाश ंपा' उपन्यास में ो भ्रष्ट नेता होता है वह हत्यारी भी होता है। ब उसके खिलाफ नपक्ष के नेता वीरेंद्र सिंह और मास्टर मोतीलाल लड़ते हैं, तब वह उनकी हत्या करवा देता है। ि सके द्वारा स को वहीं समाधी में गा ़ देता है। लेखक यह बताना ाहता है कि आ के समय में नैतिकता व ईमानदारी का कोई अस्तित्व नहीं रह गया। ो भी इनके द्वारा समा में पैदा होता है, उसे समा के अंदर ीने की इ ात नहीं देती है ऐसी रा नीति। और ऐसे नेताओं का ही सम्मान होता है ो शोषणकारी व्यवस्था को लाते हैं। लेखक इन हत्यारे नेताओं का ि त्रण करते हैं, ब मोतीलाल को मार दिया ाता है तब वह नेता कहता है-"... सुबह ब यह खबर फैलेगी तो एक नया बवाल खड़ा हो ाएगा। एक वीरेंद्र सिंह की हत्या की बात ही नहीं सँभाल पा रहे हैं हम और उस पर यह दुर्घटना।"[141] इस कथन से यह विदित होता है कि नेता लोग ऐसे होते हैं कि अपने स्वार्थ के लिए किसी की भी हत्या करने से पीछे नहीं हटते और उनको इस बात का अफसोस नहीं रहता कि वे हत्या किये हैं, बल्कि इस बात की परवाह है कि इससे कैसे ब निकले। नेता को लोगों के हित में रहना ाहिए, लेकिन यहाँ उल्टा हो रहा है।

---

[140] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.100
[141] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.295

विधायक

विधायक का कर्तव्य है कि अपने लोगों के हित में काम करना और उनकी समस्याओं को सरकार के सामने रखना, ि ासके द्वारा उन समस्याओं का समाधान ूँ. सके। विधानसभा में विधायकों का कर्तव्य होता है कि प्र ाा की समस्याओं के बारे में ा ाा करें और रा य की घटनाओं पर, लेकिन आ ा के संदर्भ में यह बिल्कुल नहीं हो रहा है। अगर कोई एक विधायक या किसी पार्टी ने यह मुद्दा उठाया भी है तो अन्य सदस्य उसका समर्थन नहीं करते हैं।

लेखक ने यह दिखाया है कि विधान सभा की संस्कृति के अनुसार विधायकों को उपहार दिया ाता है। उस समय उनका ाो व्यवहार होता है वह बेहद शर्मनाक नज़र आता है। विधायकों में उपहार लेने की होड़ म ाी थी कि सूटकेस में पैसे, रेशम का थान और घड़ी-वड़ी और कलम डायरी वगैरह है। लेखक इस दृश्य को देखते हुए कहते हैं-" ांद हज़ार रुपयों के उपहार के लिए माननीय विधायक ऐसे टूट रहे थे ैसे वे अकाल पीड़ित क्षेत्र से आये हों।"[142]

इस कथन से यह बताना ााहते हैं कि लोगों के प्रतिनिधि के रूप में एक विधायक विधानसभा में ााता है, वह इस रा ानीतिक षडयंत्र में फंसकर इतना भ्रष्ट हो ााता है कि सिर्फ अपने ही क्षेत्र को देखता है। इतना लाल ाी बन ााता है कि ांद रुपयों के लिए गुंडों की तरह लड़ बैठता है।

मंत्री महोदय

' ांगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में मंत्री दुबे का ाित्रण किया गया है। वे इस इलाके के मंत्री बने ाहाँ डाकुओं का मुख्य क्षेत्र है। ाुनाव में इन्हीं डाकुओं की सहायता से ाीते थे। वैसे तो वे कांग्रेसी नेता थे, लेकिन ईमानदारी का व ान ही कितना। उन्हें लगा कि वे नहीं ाीत पाते तब वह परशुराम, बिंदा और गोकुल को खबर भि ावाये और ाुनाव ाीत गये।

---

[142] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.226

लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि मंत्री बनने के लिए वह क्या-क्या करते हैं ुनाव क्षेत्र में-"पिछले ुनाव में इन डाकुओं ने लाख-लाख वसूल कर दिये थे, पारटी फंड में। अकेले अपने बल-बूते प ास बूथ घेरे रहा बिंदा।"[143]

इस कथन से विदित होता है कि ुनाव ीतने के लिए नेता लोग हर गलत रास्ते को अपनाते हैं, िनके उन्मूलन के वह काम करना था उनकी ही सहायता से वह ुनाव ीत कर उनकी रक्षा करते हैं।

लेकिन ाब मंत्री ी की बेटी की शादी में डाकुओं का आना ताकि उनकी बेटी को आशीर्वाद दें और आये हुए पुलिस वालों का उन पर फाइर करना, पुलिस अफसर कुमार के हाथ दो डाकुओं का एन्कौंटर होना यह सब मंत्री ी के आंखों के सामने होता रहा। याने वे समय पर उनका इस्तेमाल करते और उन्हें मार गिराते भी है। कहा ाता है कि मंत्री ी के घर डाका डालने आये हैं डाकू। यह सब रा ानीति का एक खेल है, अगर ऐसा न होता तो उनकी कुर्सी संभालना ही मुश्किल पड़ ाता।

'सर्कस' उपन्यास में सर्कस के मेले को हटाने का प्रयास किया ाता है, उनके न मानने पर कहा ाता है ाब तक मंत्री ी का ुनावी भाषण नहीं हो ाता तब तक सर्कस बंद रखने का आदेश दिया ाता है। संधूदी और अन्य लोगों के पूछने पर विकास बताता है कि इस मामले में स्वयं मंत्री ी का हाथ है, इसीलिए कुछ नहीं कर सकते हैं। "देखिए, बात डी.एम. तक होती तो कहीं कहा-सुना भी ाता, ाब मंत्री खुद इन्वाल्व्ड हैं तो..."[144]

इस कथन से विदित होता है कि मंत्री ी के ुनावी भाषण के लिए वे सर्कस के गरीब कलाकारों की रो ी-रोटी को छीनना ाहते हैं। अगर वह सर्कस का मेला खुल ाय तो मंत्री ी का ुनावी भाषण सुनने को कौन ाएगा। इसीलिए वे अपने स्वार्थ के लिए गरीबों को मोहरा बनाते हैं।

---

[143] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.34
[144] सर्कस, सं ीव-पृ.257

सरकार की नीतियाँ

सरकार उसी रा नीति के सदस्यों से बना है ि निके द्वारा यह सरकार लती है। सरकार द्वारा कुछ नीतियों को बनाया ाता है ताकि लोगों की भलाई हो। गरीब, दलित, आदिवासियों तक यह सुविधाएँ पहुँ े। लेकिन यह कभी साकार नहीं हो पाता है। सं ीव ने अपने उपन्यासों में इस विषय की ा ा की है। ि स तरह सरकार आदिवासियों के लिए यो नाएँ बनाती हैं कि उनकी ाति खत्म न हो और उनकी आबादी कम न हो, लेकिन उन तक यह सारी यो नाएँ नहीं पहुँ ा पाती हैं।

'आकाश ंपा' उपन्यास में पिंडा पहाड़ के आदिवासियों के बारे में ा ा की गयी है। उनके लिए सरकार बहुत सारा पैसा ख र् करती है फिर भी उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं है। उनके लिए हॉस्पिटल, स्कूल सड़क, सोलर बत्ती सब है लेकिन नहीं के बराबर। बीमार पड़ने पर उनको कोई दवा नहीं मिलती वे ऐसे ही मरते हैं म छर की तरह। मास्टर मोतीलाल के पूछने पर वह बताते हैं कि-"अब सरकार की ि ंता है कि हमरा आबादी कम न हो... कहता है यादा ब ा पैदा करो। ... पैदा तो कर दिया लेकिन खिलाएँ क्या? यादा ब ा माने, यादा गरीबी और सब एक-एक कर मर ाता है। मक्खी की तरह मर ाता है, म छर की तरह मर ाता है हम लोग। दवाई कहाँ से लाएगा?"[145] कहने का तात्पर्य यह है कि सरकार यो नाएँ तो बनाती है लेकिन सफलतापूर्वक उनका निर्वाह नहीं कर पाती। दिखावे के लिए सब करती है वास्तव में वह कुछ नहीं होता। इस संदर्भ में लेखक कहता है कि-"सरकार थी, मिशनरियाँ थीं, नव-कल्याण की संस्थाएँ थीं, युनीसेफ था, मगर लगता था, सब हाथी के दाँत हैं।"[146] याने सब कुछ तो है लेकिन कुछ भी नहीं के बराबर।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में ारखंड क्षेत्र में आदिवासियों के लिए सरकार द्वारा ो यो नाएँ बनायी ाती हैं वह सब अन्य लोगों के लिए, अफसरों के

---

[145] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.248
[146] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.248

लिए फायदेमंद होने लगते हैं। औद्योगीकरण के नाम पर आदिवासियों को सरकार यह आश्वासन देता है कि उनको नौकरी मिलेगी उनकी स्थिति को सुधारा ाएगा। लेकिन यह वास्तविकता के विरुद्ध होने लगता है। ारखंड खनि ा संपदा का भंडार है, नये-नये उद्योग लगाये ा रहे हैं, ताकि उनकी नयी दुनिया बन ाये। अगर सरकार ईमानदारी से इनका हक दे दे तो एक ही छलांग में कई मं िलें अपने आप तय हो ाती हैं। यह लेखक के वि ार हैं ो कि सरकार की कुनीति का ि त्रण करता है।

इस मामले में उपन्यास का नयाक सुदीप्त अपने मित्र से कहता है कि- "आदिवासियों को, ि नकी मीन पर ये कारखाने लग रहे हैं, उन्हें टोटली डिप्राइव किया ा रहा है। इस संपत्ति में उनकी भागीदारी तो खत्म की ही ा रही है, उन्हें मीन से भी बेदखल किया ा रहा है मुआव ा भी अफसरों के पेट में।"[147]

इस कथन से विदित होता है कि आदिवासियों के लिए शुरू की गयी यो नाओं से ही उनका अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है। उनको मुआव ा देना तो दूर उनका हर तरफ से शोषण किया ा रहा है। सरकार द्वारा यह नीति आ के संदर्भ में भी देखी ा सकती है। बाघामुंडी के आदिवासियों की स्थिति बहुत दयनीय बन ाती है। सरकार उन्हें पूरी तरह नज़रअंदा करती है इसीलिए वे क्रांति का रास्ता ुनते हैं। 'डायरेक्ट ऐक्शन' के नाम से मो ा बनाते हैं, ि समें मुख्य रूप से वही बात होती है कि सरकार हमारे लिए बहुत सी यो नाएँ तो बनाती है लेकिन वह हम तक नहीं पहुँ तीं। बाघामुंडी के लोगों का सरकार कितना ध्यान रखती है। सब करती है सरकार लेकिन माला-माल तो कोई और हो रहा है, ब फिलिप एक सभा में कहता है कि सरकार किस तरह उन्हें कंगाल कर रही है-"बहुत पैसा दिया सरकार ने, सरकार घोषणाएँ करती नहीं थकती लेकिन हम कंगाल के कंगाल। मालो-माल कोई और हो रहा है, हमने कहा, हमें अपने करम पे छोड़ दो, लेकिन वो नहीं

---

[147] पाँव तले की दूब, सं ीव, हंस, अगस्त 1990-पृ.42

छोड़ते। सोने के ख ााने पर कुंडली मारकर बैठा सांप क्यों छोड़ दें?"[148] इससे स्पष्ट होता है कि उन आदिवासियों को सरकार अपनी ूठी उम्मीदें देकर उनका शोषण कर रही है, इसीलिए वे सरकार के खिलाफ लड़ने का फैसला करते हैं।

'धार' उपन्यास में आदिवासियों का शोषण और उन पर हो रहे अत्या ार को दिखाया गया है। थारू आदिवासियों को ब काम नहीं मिलता है तब वह एक ान खदान की स्थापना कर अपनी रो ी-रोटी कमाते हैं। शर्मा और मैना मिलकर इस ान खदान को लाते हैं। इसके बारे में सरकार को सारी ानकारी देते रहते हैं, लेकिन उनके ान खदान को सरकार किसी तरह का आश्वासन नहीं देती है। एक बार यहाँ ानखदान में सांसद आते हैं, सारा दृश्य का मुआयना करते हैं लेकिन घूस न मिलने के कारण वे महेंदर बाबू के खान पर ाते हैं और उनके द्वारा दिये गये पैसे लेकर उस गैर कानूनी खदान को राष्ट्रीय ानखदान घोषित किया ाता है और वह सरकारी बन ाता है-"...महेंदर बाबू और डोकानिया की इललेगल खदान के आगे इंदिरा गाँधी की मूर्ति लग गई है और उसका नाम इंदिरा गाँधी खदान कर दिया गया है।"[149] यानी सरकार लोगों के लिए न होकर पूं ीपतियों के लिए बनी हुई नज़र आती है।

' ंगल हाँ शुरू होता है' उपन्यास में सरकार के द्वारा ो घोषणाएँ की ाती हैं वह समय के अनुसार बदलती ाती हैं। यहाँ पर सरकार की रा नीति का एक अ छा उदाहरण हम देख सकते हैं। प्रधानमंत्री द्वारा घोषणा कर दी ाती है कि डाकू उन्मूलन के लिए 'ऑपरेशन ब्लैक पाइथॅन' को शुरू किया ाय। बकि उन डाकुओं के मंत्री रहे दुबे ी, ब तक उनसे काम निकालना था, निकाल लेता है और बाद में उनका ऐन्कॉउण्टर करवा देता है। ब ुनाव सर पर आ ाते हैं तब इस ऑपरेशन को रोक दिया ाता है। डी.आई. ी. बताते हैं कि-".. अब ूँकि

---

148 पाँव तले की दूब, सं ीव। हंस, सितंबर 1990-पृ.76
149 धार, सं ीव-पृ.201

एलेक्शन आ गया है, सो, ऑपरेशन का यह ारण, हम यहीं छोड़ रहे हैं, हमारे सारे आफिसर्स अपने-अपने डिस्ट्रिक्ट हेड क्वार्टर्स को रिपोर्ट करेंगे।"[150]

इससे यह विदित होता है कि सरकार द्वारा दोहरी रा ानीति किस तरह इस्तेमाल की ााती है। ुनाव के समय ऐसे कार्यक्रम करने पर तो प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए वे उसको रोक देते हैं।

इस उपन्यास में ाातिगत रा ानीति का भी ित्रण हमारे सामने आता है। डाकुओं को एक अ छा रास्ता रा ानीति ही लगती है, इसीलिए परेमा और परशुराम ैसे डाकू रा ानीति में उतरते हैं और ुनाव के लिए तैयार हो ााते हैं। यहाँ भी ाातिगत रा ानीति का ही इस्तेमाल होता है। परशुराम ाात से ब्राह्मण है और वह उस इलाके के सत्तर परसेंट बैकवर्ड क्लॉस के वोट पाकर मंत्री बनना ाहता है।

उसी तरह विपक्षीय नेता लल्लन बाबू और मंत्री महोदय दुबे ाी अपने-अपने आँकड़े देखते हैं। विपक्षीय नेता होने के बाव ूद लल्लन बाबू मुख्यमंत्री और अन्य लोगों से काम करवाते हैं। ाब वह कुमार से यह बात कहता है कि तुम्हारी सिफारिश मैं मुख्यमंत्री से करवाता हूँ, तब कुमार आश ार्य में पड़ ााता है। लल्लन बाबू कुमार से कहता है कि यह रा ानीति है तुम नहीं सम ाोगे। "आप सो ा रहे होंगे, लल्लन बाबू तो विरोधी पक्ष के हैं, फिर ाीफ मिनिस्टर से क्या बात करेंगे। अरे भैया, ये पॉलिटिक्स है, आपकी सम ा में नहीं आएगा।"[151] इससे स्पष्ट होता है कि रा ानीति में कोई किसी का दुश्मन या विरोध नहीं होता, यह सब दिखावा है। अंततः हम कह सकते हैं कि सं ाीव अपने समय के एक ऐसे लेखक साबित होते हैं ाो कि रा ानीतिक कुशासन का खुलासा करने में अग्रणीय हैं।

3.6 प्रशासनिक आयाम

भारत की प्रशासनिक व्यवस्था सरकार द्वारा बनायी गयी है। ऐसी व्यवस्था ािसके द्वारा समा ा के लोगों तक सरकार की नीतियाँ व यो ानाएँ पहुँ ाा सकें।

---

[150] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.217
[151] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.54

प्रशासनिक व्यवस्था को विविध प्रकार के अधिकार दिये ाते हैं और उसके अनुसार अधिकारियों की नियुक्ति होती है। वैसे तो इनका कर्तव्य होता है, नता की सेवा करना क्योंकि वे इस काम के लिए ो वेतन लेते हैं, वह नता का ही होता है। प्रशासनिक व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व हैं, ि सको बनाने के लिए संविधान का सहारा लिया ाता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत ि सका भी ायन होता है वह योग्य माना ाता है। वह उ ा शिक्षा प्राप्त कर सारी योग्यताओं की पूर्ति करता है, तब ाकर वह अधिकारी बनता है।

वैसे तो कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में पहले ही ा ा की थी कि रा य के लिए एक सशक्त प्रशासनिक व्यवस्था का होना अनिवार्य है। और उन्हें आवश्यक अधिकार देकर के नियुक्त करना भी होगा ताकि रा य के सभी कार्य सु ारू रूप से हो सकें। इसलिए वे उनके वेतन के बारे में भी ा ा करते हैं। और उनका कहना है कि कर्म ारियों की कार्य योग्यता के अनुसार वेतन दिया ाय, ताकि वे किसी अन्य प्रलोभन में काम न कर सकें। कौटिल्य के अनुसार-"कर्म ारियों को उनके कार्य, शक्ति व स्तर के अनुसार रा य की ओर से वेतन दिया ाना ाहिए, ि ससे वे अपनी शक्ति भर तथा बिना किसी प्रलोभन के रा का ा कर सकें।"[152]

इतना ही नहीं उनका मानना है कि सेवाकाल के बाद भी कर्म ारियों को उनके निर्वाह के लिए उ ित व्यवस्था की ानी ाहिए, क्योंकि सेवाकाल के समय वे भविष्य की ि ंता कर किसी भी तरह के भ्रष्टा ार या शोषण की ओर प्रलोभित न हों।

वैसे देखा ाए तो प्रशासन विधायिका द्वारा निर्मित कानूनों को लागू करने की प्रक्रिया है। ि न कानून व नीतियों का निर्माण किया ाता है उसीके अनुरूप निर्वाह व लागू करने के लिए प्रशासन को बनाया भी ाता है ो इस व्यवस्था का सु ारू रूप से पालन कर सके।

---

[152] भारतीय र ानीतिक वि ारक, डॉ.इकबाल नारायण-पृ.69

सं ीव एक ऐसे उपन्यासकार हैं ि निके लेखन में व्यवस्थागत विषमताओं और उसके परिणामों के बारे में यथार्थ रूप से ि त्रण होता है। वे सरकार द्वारा बनाई गई प्रशासन व्यवस्था एवं उसकी कार्यान्विति को बताने का प्रयास करते हैं। मुख्य रूप से वे पुलिस के कुशासन और शोषणकारी व्यवस्था का यथार्थ ि त्रण करते हैं।

पुलिस का नारी पर अत्या ार

पुलिस समा ा की एक ऐसी व्यवस्था मानी ाती है ि ासके कारण समा ा ैन की नींद सो पाती है। वैसे तो पुलिस का कर्तव्य ऐसे लोगों की रक्षा करना है ो सामाि ाक व्यवस्था से पीड़ित और शोषित हो रहे हैं। पुलिस की भूमिका के बारे में बी.एम.शर्मा लिखते हैं-"कल्याणकारी रा य में पुलिस की भूमिका एक समा ासेवी संगठन की होती है। उसे कानून तथा व्यवस्था बनाए रखने तथा अपराधों की रोकथाम करनेवाली बुनियादी भूमिका निभानी होती है।"[153]

उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि पुलिस समा ासेवी संगठन है और अपराधों की रोकथाम करनेवाली बुनियादी व्यवस्था है। इतना ही नहीं उसे निरपराधों की रक्षा भी करनी ाहिए। लेकिन आ ा यह स्थिति नहीं रही, इसका कारण अधिकांश पुलिस अधिकारी हैं ो अपराध और शोषणकारी व्यवस्था का साथ देते हैं। इसी कारण आ ा ानता की दृष्टि पुलिस के संदर्भ में बदलती ा रही है। आ ा अगर आम आदमी अधिकारी या शोषकों के खिलाफ रपट लिखाने ाता है तो उसे मोहभंग का ही सामना करना पड़ता है। आम ानता के ऊपर पुलिस अपना अधिकार दिखाने में कतई पीछे नहीं हटती, वहीं पूं ाीपति, उ ा वर्ग से सम्मान से पेश आती है। पुलिस व्यवसथा को यह कभी नहीं भूलना ाहिए कि उनकी सेवाओं के लिए ो वेतन दिया ाता है, वह इसी ानता की कमाई का हिस्सा है। फिर भी इस भोली-भाली ानता पर उसके द्वारा अमानुष अत्या ार किया ा रहा है।

---

[153] वर्ग वि ारधारा एवं समा ा, सं.एन.के.महला-पृ.243

‘आकाश ंपा’ उपन्यास में लेखक बताता है कि ामुई के एक गाँव की दुर्गा नामक महिला ने अपने पति की हत्या की है। पुलिस उसे एरेस्ट कर कोर्ट में न ले ाकर थाने में ही रखकर तीन दिन तक सामूहिक बलात्कार करती रही। वीरेंद्र बाबू द्वारा कमीश्नर को पत्र लिखकर घटना से अवगत कराने के बाव ूद भी उनके खिलाफ कुछ भी कार्रवाई नहीं होती। लेखक का कहना है-"माने कि पुलिस के सामने कमीश्नर, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट सब फेल।"[154] इस कथन से विदित होता है कि पुलिस ाब किसी पर अत्या ार या किसी का शोषण करती है तो ाहकर भी कोई उसका कुछ नहीं कर सकता।

पुलिस का व्यवहार एक आम आदमी के लिए सामान्य रूप में भी नहीं होता है, लेकिन एक नेता के लिए वह अनोखा होता है। एक नेता को ाब कुछ लोगों के हाथों से ब ाना पड़ता है तब वह पुलिस थाने में रह लेता है ताकि वह सुरक्षित रह सके। उस नेता के रहने का इंत ाम बड़े पैमाने पर किया ाता है, उसके लिए अलग से कमरा बनवाया ाता है या पुराने कमरे की मरम्मत की ाती है। सारी सुविधाओं का इंते ाम भी किया ाता है। यह है पुलिस की नौकरशाही या गुलामगिरी।

‘ ंगल हाँ शुरू होता है’ उपन्यास में थारू ान ाति पर पुलिस द्वारा किये ानेवाले अत्या ारों का ित्रण दिखाई देता है। बिना किसी अपराध के बिसराम के घर पुलिस आकर उसे ूँ ती है। वह न मिलने पर उसकी बीमार पत्नी को उठाकर ले ाती है और स ा के नाम पर उसका बलात्कार किया ाता है। ाब बिसराम अपनी ब ी को सम ाता है कि दूध पिलाने के लिए तुम्हारी माँ नहीं है उसे तो पुलिस ले गई है। और आगे कहता है-"का, करें? तोहार माँ तो थानेवालों को दूध पिलाने गई है।"[155] इससे स्पष्ट होता है कि पूछ-ताछ के नाम पर पुलिस स्त्रियों पर अत्या ार करती है।

‘धार’ उपन्यास में भी आदिवासी स्त्री पर किये गये अत्या ार को दिखाया गया है। उपन्यास की नायिका स ा काटने ेल ाती है, तो वहाँ पुलिस अधिकारी

---

[154] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.264

[155] ंगल हाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.23

द्वारा उस पर अत्या ाार किया ााता है और वह एक ब ो को भी पैदा करती है। इसकी ाानकारी देते हुए मंगर से कहती है-" ोल में ोलर हमारे साथ ाबर्दस्ती किया, उसी खातिर ब ाा उसका मुँह पे मार के हम ाला आया।"[156]

इस कथन से विदित होता है कि पुलिस अधिकारी अपने अधिकारों का किस तरह गलत इस्तेमाल करते हैं। स्त्रियों के लिए ोल भी सुरक्षित नहीं है। उन ला ाार औरतों पर पुलिस अपनी हवस की भूख मिटाते नज़र आती है।

लेखक का यह मानना है कि पुलिस व्यवस्था अपने नैतिक मूल्यों को भूलकर पशु की तरह उन गरीब स्त्रियों पर टूट पड़ती है। िासके कारण वे ानता के रक्षक नहीं बल्कि भक्षक माने ााते हैं।

पुलिस का शोषण एवं अत्या ाार

पुलिस व्यवस्था ऐसी महत्वपूर्ण व्याख्या िासका मूल उद्देश्य पिछड़े, दलित और आदिवासियों की रक्षा करना, उनको न्याय दिलाना होना ााहिए। लेकिन आ ा पुलिस का ाो रूप है वह बदल गया है। वह सिर्फ रिश्वतखोरी, पूं ाीपतियों की दलाली और ाूठे इल् ााम लगाकर मासूम लोगों पर अत्या ाार करना, उन्हें गाली देना आदि के लिए, कुख्यात हो गयी है। समा ा की गंदगी को मिटाना पुलिस का काम होना ााहिए, लेकिन वह अपराधी, डाकू और अशांति फैलानेवाली शक्तियों से हाथ मिलाकर भ्रष्ट व्यवस्था का अंग बन गयी है।

' ांगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में पुलिस थारू ान ााति के लोगों पर अत्या ाार करती है। पुलिस आदिवासियों को पूछताछ के लिए ले ााकर उनको मारती-पीटती है। डाकुओं का पता बताने को कहकर उन पर अत्या ाार करती है। आदिवासी युवक नोनिया, बिसराम और लंगड़ा के साथ बं ाोगी को भी पुलिस के अत्या ाार को सहना पड़ता है। नोनिया को पकड़कर उससे हथियार के बारे में पूछती है। नहीं बताने पर पुलिस अफसर पांडे उसके नाखून दबो ा लेता है। और वह पुलिस सिपाहियों से कहता है कि एक-एक कर उखाड़ दो। लेखक का कहना है-

---

[156] धार, सं ाीव-पृ.12

" ाार सिपाहियों ने नोनिया को दबो ा रखा था, उन्होंने सँड़सी को बेरहमी से अंदर तक खुभोकर ाोर से खीं ाा और एक ाीत्कार के साथ ि ांदा रक्तरं ि ात नाखून सँड़सी की ाों ा में था। अंगूठे से पिलपिलाकर लाल खून बह रहा था।"[157] इस कथन से यह नज़र आता है कि पुलिस स ा उगलवाने के लिए अपने अमानुष व्यवहार के द्वारा उन पर अत्या ाार करती है।

वैसे तो बिसराम मासूम है, लेकिन उसका कसूर सिर्फ इतना था कि डाकू काली का भाई था। बिसराम के घर काली को खो ाने आयी पुलिस तब बिसराम और सारे गाँव के घरों में तलाशी लेती है। यह दृश्य भयावह प्रतीत होता है। पुलिस इतनी कठोरता से पेश आती है और उनकी भाषा भी गालियों से भरी है, ि ाससे लोग डर ााते हैं। पुलिस कहती है-"कहाँ छुपा रखा है उस मादर ाोद कालिया को? ... ाोप साला। अगवार-पिछवाड़ स ा करो। न मिले तो एक-एक घर छान मारो। ााएगा कहाँ साला।"[158] इस कथन से विदित होता है कि पुलिस का आतंक डाकुओं से भी भयानक है। वे ानता को कभी मनुष्य की तरह देख नहीं पाते हैं, ैसे उनको हर व्यक्ति में अपराधी ही नज़र आता हो।

ाब किसी से कुछ पता नहीं ालता तब वे उन पर टूट पड़ते हैं और उन आदिवासियों को पीटा ााता है। इस अत्या ाार का ि ात्रण लेखक यूँ करता है-"सत्रह घरों का ाप्पा- ाप्पा छाना ाा रहा था। उधर थानेदार के लात-घूसों और बेंत की छड़ी की मार से हलाल किए ाा रहे बकरे की तरह अलला रहे थे बिसराम, बिसराम बहू और उनकी दुधमुँही ब ाी।"[159]

इससे स्पष्ट होता है कि पुलिस आदिवासी ानता पर अत्यन्त क्रूरता से पेश आती है। उन पर अत्या ाार करती है और उन्हें बिना मतलब स ाा देती है। इससे पुलिस के अनैतिक कार्यों का पता ालता है।

---

[157] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.163
[158] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.123
[159] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.123

मकरंदापुर गाँव के लंगड़े को पुलिस पकड़ कर मारती है। उससे पूछती है कि हथियार कहाँ रखता है, न बताने पर उसे प्रताड़ित किया ाता है। ाब वह बरदाश्त नहीं कर पाता तो वह मलारी के यहाँ कहता है। मकरंदापुर वाली मलारी को पुलिस पकड़ती है और उसे बेरहमी से मारती है, तब वह कहती है-"हाकिम। हमरा कसूर बस एतना है कि गरीब हैं, औरत ात हैं, ो ही आता है, डरा-धमका के ाबरदस्ती करने को मग ूर करता है।"[160] इतना कहने पर भी पुलिस उस पर रहम नहीं खाती और यादा यातना देने लगती है।

लेखक के शब्दों में-"सहसा सुदर्शन का ौड़ा हाथ उसके मुँह पर पड़ा और वह खाट पर सीधे ा भहराई। प्रेम प्रकाश ने सीधे राइफल तान ली, बोल भोंसड़ी। रंडी, कुतिया...। बोल मादर ोद! ... नहीं तो ई राइफल तेरे पेट में डाल देंगे।"[161]

उपर्युक्त कथन से ज्ञात होता है कि पुलिस गरीब, ला ार स्त्रियों पर अमानुष अत्या ार व असभ्य व्यवहार करती है। पुलिस अपनी ताकत सिर्फ ऐसी अबलाओं पर ही दिखा सकती है इस बात को कहने का प्रयास लेखक ने किया है।

'धार' उपन्यास में बँसगड़ा के आदिवासी रात में कोयला निकाल कर सुबह शहर में बे ा लेते हैं। इस पर पुलिस आपत्ति करती है। ाब मैना के पति को पुलिस पकड़कर ेल में डालती है तब वह ाकर रिश्वत देकर उसे छुड़ा लाती है। मंगर ाब यह सो ाकर कि पुलिस वसूली करके लौट गई, वह कोयला खोदना फिर शुरू करता है। अ ानक टॉ ि की बीम पड़ती है उस पर वह अ ाक ा ाता है। तब पुलिस के सिपाही उसे गाली देते हुए बाहर निकलने को कहते हैं-"तो वहाँ क्या अपनी माँ... रहा है। निकल नहीं तो तोप देंगे इसी में।"[162] इस तरह गाली देकर उसे थप्पड़ मारते हैं। मैना पैसे लेकर आती है और कहती है कितनी बार देना होगा साहब, इससे पहले पुलिस को दिये थे अब आप। वह उन्हें पैसे देकर मंगर को छुड़वा लेती है। मैना के शब्दों में-"देखिए, आप लोग आपस में फैसला कर

[160] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.196

[161] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.196

[162] धार, सं ीव-पृ.98

लीि ाए, अभी-अभी पुलिस को दिया, अब आप लोग आये हैं, कितना देगा?"[163] इस कथन से विदित होता है कि पुलिस गरीब आदिवासियों का कितना शोषण करती है। पैसे न देने पर उन पर अत्या ाार भी करती है।

 ानखदान की स्थापना कर शर्मा, मैना और अन्य मज़दूर ाब कोयला निकालना शुरू करते हैं, तब पुलिस अफसर श्रीवास्तव वहाँ पर आता है और काम रोकने को कहता है, तब शर्मा पूछता है क्यों रोकें काम? उसी समय कमांडेंट भी वहाँ पहुँ ाता है। वह कहता है कि इसकी परमिशन नहीं है इसलिए काम रोक दो नहीं तो बीस ह ाार दो। इस पर सारे म ादूर इनकार करते हैं। पुलिस के सिपाही शर्मा से कहते हैं-"अब उनके लिए कुछ दान-दक्षिणा का बंदोबस्त करो। बीस हज़ार माँग रहे हैं ानाब।"[164] यानी शोषण का तंत्र बेखौफ ालता ाा रहा है। रिश्वत लेने में भी उन्हें शर्म नहीं आती है, वे सिर्फ अपना ोब भरना ााहते हैं, नहीं माने तो उनको धमकी देते हैं।

पुलिस के अत्या ाार से आदिवासियों में इतना खौफ़ फैल ााता है कि उनके पास ााने से भी वे डरते हैं। मंगर को रात में थाना ााकर रिश्वत की रकम देना है लेकिन वह डर के मारे नहीं ााता है। मैना ाब पुलिस थाना ााने लगती है तब वह महसूस करती है-"इतनी रात को अकेले थाना ााना मरघट ााने से भी यादा भयावना है।"[165] इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी ानता पुलिस के खौफ़ से पीड़ित है।

'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास में मिश्र ाी की हत्या इकबाल सिंह के हाथों से होती है, लेकिन उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता क्योंकि सबको पैसों से तौल रखा था उसने। इस मामले में दरोगा ाब भी आता तब उसका सत्कार करना उनके लिए ला ामी हो ााता है। यहाँ पर लेखक पुलिस का शोषणकारी ि ात्रण दिखाता है-"... न ाराने के लिए एक मटके में रखी मछलियाँ किलबिल किलबिल

---

[163] धार, सं ीव-पृ.98
[164] धार, सं ीव-पृ.143
[165] धार, सं ीव-पृ.105

कर रही थीं। और भी बहुत कुछ था... पाँ ा किलो घी, खांड का एक टिन, बासमती ावल का एक बोरा, पके पपीतों और अमरूद की दो पेटियाँ...। लेकिन न राने में दरोगा ी ने िस ीज़ की माँग कर दी थी, उसकी कल्पना भी नहीं की थी ब्रह्म ारी ी ने। ... मु े राधा ाहिए, सिर्फ राधा!"[166] इससे विदित होता है कि भ्रष्ट पुलिस अधिकारी घूस ही नहीं खाता है बल्कि वह विधवा राधा को भी पाना ाहता है।

इतना ही नहीं पुलिस भोली-भाली नता पर भी बिना किसी कारण के अत्या ार करती है। उपन्यास में पुलिस के अन्याय का एक उदाहरण द्रष्टव्य है। रा ा मुसहर को बिना व ह ऊँट से नी े खीं कर गंदी-गंदी गालियाँ दी ाती हैं, िन्हें सुनने से आम आदमी के मन में घृणा पैदा होती है। "साले बि ली इस देश पर गिरी तो तू क्या िंदा रहेगा। इस देश के लिए महात्मा गाँधी, वाहरलाल ने कितनी कुर्बानी दी तब ाके आ ाद हुआ। साले ुतिए बहन ो..., मार ो..., बेटी ो... सा िश करते हैं, नता और सरकार के खिलाफ...।"[167]

इस तरह के अन्याय-अत्या ार करनेवाले पुलिसवालों को गाँधी, नेहरू अन्य देशभक्तों के नाम लेने का अधिकार है? मुसहर ैसे आदमी के लिए यह अधिकार नहीं है? ऐसे शोषित व्यक्ति कैसे विद्रोह कर सकता है। फिर भी पुलिस अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल कर उसे गाली देती है। यानी सामान्य नता के लिए पुलिस एक शोषणकारी व्यवस्था ही है।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में पुलिस बेकसूर आदिवासियों पर अत्या ार करती है। सिंहा के यहाँ काला गुलाब का शब गमला ोरी होने के मामले में पुलिस बिसुन को पकड़ती है और उसे गाली देते हुए, बेरहमी से पीटती है-"बताता है कि नहीं साला... ई बेटी ो... ऐसे नहीं उगलेगा, रुकिये...।"[168] इस तरह पुलिस ला ार आदिवासियों पर पाशविक अत्या ार करती नज़र आती है।

---

[166] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.17-18
[167] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.121
[168] पाँव तले की दूब, सं ीव, हंस, अगस्त, 1990-पृ.81

पुलिस के विरोध में लोक

समा ा में पुलिस के अत्या ार को सहने वाली सामान्य ानता ि न्हें लोक कहा ाता है वह उसका प्रतिरोध करने के लिए भी तैयार रहती है। कोई भी व्यक्ति व समा ा एक सीमा तक अपने ऊपर होनेवाले अत्या ार व शोषण को सहता है, लेकिन ाब सहनशक्ति की सीमा टूट ाती है तो वह आक्रोश में आ ाता है और व्यवस्था के विरोध में खड़ा हो ाता है।

सं ाीव अपने उपन्यासों में व्यवस्था व भ्रष्ट प्रशासन के खिलाफ लड़ने की बात करते हैं। अपने उपन्यास के नायक व आदिवासियों को शोषणकारी पुलिस तंत्र के विरोध में खड़ा करते हैं।

'आकाश ांपा' उपन्यास में वीरेंद्र बाबू का पात्र एक क्रांतिकारी नेता के रूप में ि ात्रित किया गया है। वे अपने सामने होनेवाले अन्याय के प्रति लड़ने में तत्पर रहते हैं। एक बार पुलिस अपने अधिकार के बल पर एक व्यवसायी परिवार के घर में घुस कर औरतों से गलत तरीके से व्यवहार करती है और उन्हें मारती-पीटती भी है। इस अत्या ार के खिलाफ वह कुछ लोगों को साथ लेकर ाौराहे पर बैठ ाता है। ाौबीस घंटे बीतने के बाद वहाँ डी.एस.पी. अपने पुलिस फोर्स आता है और सिपाहियों से बंदूक निकाल लेने के लिए ललकारता है ताकि वह डर ाए। लेकिन वीरेंद्र बाबू एक ाटके में उठकर उस पुलिस की गर्दन पकड़कर उससे कहता है-"तुम्हारी गोलियाँ वहाँ क्यों नहीं ाली ाहाँ औरतें बेइ ात की ाा रही थीं? हमने सिर्फ अन्याय का विरोध किया है ताकि तुम्हारा ध्यान उस समस्या की ओर खीं ा सकें।"[169] इस कथन से लेखक का मंतव्य यह है कि पुलिस के अमानुष व्यवहार और अत्या ार का विरोध करना ाहिए, उन्हें यह दिखाना ाहिए कि पुलिस सिर्फ सत्ताधारियों के लिए नहीं बल्कि आम ानता के लिए भी है।

' ांगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में पुलिस के पाशविक अत्या ार के ालते आदिवासी ानता उनके विरोध में आ ाती है। ाब पुलिस परेमा की बीबी

---

[169] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.212

ओर ब ो को थाने ले ाने आती है तब बाकी आदिवासी उन पर टूट पड़ते हैं और पुलिस वहाँ से भाग ाती है। उस युवती को पकड़कर ीप में लादे ाने तक उसके मुँह से ब ाओ। ब ाओ! की आवाज़ आती है। उसे सुनकर भीड़ ुट ाती है और मारो-मारो का शोर म ाने लगती है। लेखक कहता है-"... भीड़ ुट आई 'मारो-मारो' का शोर म ाने लगी। हाय! ... ेले, पत्थर बरस रहे थे। गालियाँ और ललकार ऊपर से। थोड़ी देर और हुई कि भीड़ उन्हें िंदा खा ाएगी।"[170] यानी आदिवासी ानता की सहनशक्ति टूटने पर वह पुलिस की प्रताड़ना का विरोध करने के लिए तैयार हो ाती है।

'धार' उपन्यास में पुलिस बल ानखदान के मज़दूरों को पकड़ने आती है, तब म ादूर पुलिस बल को घेर कर उनसे कहते हैं कि अब तक वे हारते रहे लेकिन अब नहीं। शर्मा पुलिस से कहता है कि "हम हमेशा हारते रहे हैं साहब, लेकिन अब नहीं। हम ानते हैं कि आपके संस्कार ही गंदे हो गये हैं, लेकिन हम फिलहाल आपसे लड़कर अपनी शक्ति नष्ट नहीं करना ाहते..., ाले ाइये और अब से आइये तो रौब-दाब को थाने या कैम्प में छोड़कर आइये, ... ईमानदार सरकारी कर्म ारी बनकर आइये...।"[171] इस कथन से विदित होता है कि पुलिस के अत्या ार व शोषण के विरोध में लड़ना ही नहीं बल्कि लेखक उन्हें बदलने की आकांक्षा भी करता है।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में भी आदिवासियों का आक्रोश और ेतना दिखाई देती है। पुलिस ाब आदिवासी युवक काइता और बिसुन को छोरी के इल ाम में मार-पीट कर ले ाने की सो ाती है तब वहाँ के आदिवासी युवक फिलिप और अन्य लोग पुलिस का विरोध करते हैं और उन्हें वहाँ से मार भगाते हैं।

इसी तरह 'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास में भी गाँव के सारे लोग ाय के नेतृत्व में दरोगा का विरोध करते है, ाय ने तो उस भ्रष्ट दरोगा के मुँह पर ोर से तमा ा दे मारा। उस प्रकार से शोषित, पीड़ित सामान्य ानता अपना प्रतिरोध द ा

---

[170] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.157-158
[171] धार, सं ाीव-पृ.143-144

कराती है। लेखक का मनना है कि बरसों से यह पुलिस के अत्या ार और शोषण सहते रहे हैं, लेकिन अब वक्त आ गया है कि उसका विरोध करें। इस पुलिस व्यवस्था के ो नैतिक मूल्य हैं उन्हें फिर से स्थापित करने में सहयोग दें। और सबके मन में ेतना को गाए ताकि आगे का ीवन बेफिक्र होकर ीया ाए। यही लोक- ीवन का मुख्य उद्देश्य है।

प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा शोषण

वैसे तो प्रशासनिक व्यवस्था सरकार द्वारा बनाया गया एक संगठन है िसके द्वारा लोगों की भलाई की ा सके। लेकिन वे सब भ्रष्टा ार के लते शोषण के क्र में फंसे हुए हैं। वे साधारण नता की समस्याओं व उनके समर्थन में कोई काम नहीं करते। पैसों के लते गरीब को ही मोहरा बनाया ाता है।

'सावधान! नी े आग है' उपन्यास में व्यवस्था की अनेक कुटिलताएँ उ ागर हुई हैं। कोयला खदानों की तो पूरी व्यवस्था ही लूट और शोषण की है। यहाँ युनियन तक मह ा एक खानापूर्ति है व्यवस्था की पालतू है।

यहाँ "कुर्सी एक ठप्पा है मैने मेंट का-यह यूनियन मैन मेंट की, मैन मेंट द्वारा और मैने मेंट के लिए है।"[172] यहाँ प्रशासन का मुख्य उद्देश्य दिखाया गया है। ल-प्लावन के लते खदान में लगभग ह ार आदमी फँस ाते हैं लेकिन अटेंडेंस र िस्टर में मात्र सा े तीन सौ के नाम होते हैं। एन्क्वायरी मह ा एक खानापूर्ति बन ाती है। गवाहों को आतंकित कर अपने पक्ष में किया ाता है। राहत कार्य तक एक छलावा होता है। मुआव ा बाँटते समय भी भ्रष्टा ार होता है क्योंकि िनको मिलना था उन्हीं को नहीं मिलने की सा िश होती है और सिर्फ तीन सौ एकावन लोगों को मिलता है। ईमानदार सर्वेयर मणीन्द्र सही बयान देगा इस डर से उसकी हत्या की ाती है। ऊधम की डायरी में सारे सबूत रहते हैं, उसे आशीष अधिकारियों को देता है, लेकिन वहाँ उसे धोखा दिया ाता है और उसे भी डराया ाता है। ाँ ा के दौरान मृत म दूरों के नाम लिस्ट से गायब होते हैं। इसी कारण

---

[172] सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.88

मुदकमे के समय मदन गोराई कहता है-"हु ूर, सब सार घूस खाया है, सबई कोर्ट को म ाक बना दिया है सब।"[173] इस तरह नी े से लेकर ऊपर तक व्यवस्था में भ्रष्टा ार फैला हुआ है और वह 'ऑल औउट थ्री फिफ्टी वन' पर मुहर लगाकर व्यवस्था दुर्घटना की फाइल बंद कर देती है।

'धार' उपन्यास में भी व्यवस्था के दोगलेपन को लेखक सामने लाता है। पूं ीपति के शोषण से ब ाने के लिए आदिवासी ानता शर्मा बाबू और मैना मिलकर ' ानखदान' का निर्माण करते हैं। वे समय-समय पर इसकी सू ाना सरकार को देते हैं, लेकिन व्यवस्था उन पर ध्यान नहीं देती। शर्मा ाहता है कि ो कोयला निकाला ाा रहा है उसमें से आवश्यक कोयला अपने लिए रखकर शेष कोयला राष्ट्र को सौंप दिया ााए। इस संदर्भ में शर्मा द्वारा सरकार को बार-बार पत्र लिखने पर भी कोई खबर नहीं ली ााती।

अंततः अधिकारी खानापूर्ति की मानसिकता से खदान का मुआयना करते हैं। ानखदान का सु ाारू ंग से संपन्न कार्य उन्हें रास नहीं आता। "काम का ंग, रख-रखाव, श्रमिकों का मनोबल सारा कुछ देखकर वे निराश हुए, उन्हें खोट ाहिए थी, मगर वह नहीं मिल रही थी।"[174] इससे प्रतीत होता है कि अधिकारियों को रिश्वत लेने के लिए कुछ-न-कुछ खोट नज़र आना ाहिए वरना वे इस तरह सही मायने में खादान का राष्ट्रीयकरण नहीं कर पाते। ऐसी मानसिकता के लोग हमारी प्रशासनिक व्यवस्था में भरे पड़े हैं।

वैसे तो वे अधिकारी ानखदान को नज़रअंदा ा कर रिश्वत लेकर महेंदर बाबू की खदान का राष्ट्रीयकरण करते हैं।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में भी औद्योगीकरण कर आदिवासियों की भलाई करने की बातें कर सरकार उनका शोषण करती है। आदिवासियों को उनकी ामीन और संपदा से बेदखल कर देती है। कथा नायक सुदीप्त एक अधिकारी होने के नाते उस आदिवासी ानता की सहायता करना ाहता है लेकिन, ऊपर के बड़े

---

[173] सावधान! नी े आग है, सं ाीव-पृ.251

[174] धार, सं ाीव-पृ.155

अधिकारी उसे दोषी ठहराकर दूर रखते हैं। प्रशासनिक अधिकारी रिश्वत लेकर सरदार प्रीतम सिंह और ठेकेदार सुक्खू सिंह ैसे लोगों की सहायता करते हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था के इस दोगलेपन को लेखक ने अपने उपन्यासों के माध्यम से हमारे सामने रखने की बेहतर कोशिश की है।

3.7 शैक्षणिक आयाम

प्रकृति मनुष्य की विराट पाठशाला थी। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, पर्वत-नदी, कीट-पतंग और ाड़ वस्तुएँ तक मनुष्य की शिक्षा की वर्णमाला के सामने थी। रमेश देव का मानना है-" ाहे वेदों की र ाना हो, या विश्व की किसी भी सभ्यता के आदिम ग्रंथों की, सभी ागह मनुष्य की प्रथम पाठ्य पुस्तक प्रकृति ही थी। मनुश्य ने समू ा ध्वनि-तंत्र, उ ारण-तंत्र प्रकृति से प्राप्त कर वाणी में उतारा था। हमारी वा िकता ने एक वैभवशाली लोक-शिक्षण प्रणाली र ी थी, ि से आ ा की भाषा में आनंददायी लोक-शिक्षा का प्रथम प्रतिमान कहा ा सकता है।"[175] याने शिक्षा प्रकृति की देन है और सदियों से ो शिक्षा हमारे लोक में प्र ालित है वह प्रकृति द्वारा दी गई शिक्षा ही है।

अर्थ

शिक्षा का अर्थ व्यापक व सीमित रूप से सम ा ा सकता है। व्यापक अर्थ में "एक ऐसी क्रिया है ो ीवन-भर ालती रहती है और ीवन के प्रत्येक अनुभव से इसके भंडार में वृद्धि होती है। शिक्षा को ीवन का मुख्य साध्य भी कहा ा सकता है।"[176]

इस तरह शिक्षा का अर्थ एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया से लिया ाता है, ि ससे मानव के व्यक्तित्व का विकास होता है, वह विश्व के तमाम विषयों से अवगत होते हुए उनसे संबंध स्थापित करता है।

---

[175] वागर्थ, सितंबर, 2001-पृ.97

[176] समा ा दर्शन की रूपरेखा, ो.एस.मेकें ी-पृ.97

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में-"शिक्षा से मेरा तात्पर्य आधुनिक प्रणाली की शिक्षा में नहीं, वरन् ऐसी शिक्षा से है ो भावात्मक हो तथा िससे स्वाभिमान और श्रद्धा के भाव ागें। केवल किताबें प ़ा देने से कोई लाभ नहीं। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, िससे ारित्र-निर्माण हो, मानसिक शक्ति ब ़े, बुद्धि विकसित हो, और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।"[177]

इसका तात्पर्य है कि शिक्षा औरप ारिकता न होकर, आत्मनिर्भरता प्रदान करनेवाली होनी ाहिए। हमारे अंदर सभ्यता, संस्कार के साथ-साथ ारित्र-निर्माण और मानसिक शक्ति का विकास करने में शिक्षा उपयोगी होनी ाहिए ताकि शिक्षा प्राप्त मनुष्य स्वावलंबित हो सके।

गाँधी के वि ार हैं-"स ी शिक्षा का अर्थ दिमाग में तथ्य और आँकड़े भर लेना नहीं है और न ही विविध पुस्तकें प ़कर परीक्षाएँ पास कर लेना है, बल्कि उसका अर्थ है ारित्र-निर्माण।"[178] गाँधी ी के यह वि ार विवेकानंद के वि ारों से मिलते हैं। इनका भी वही अभिप्राय है कि शिक्षा औप ारिक न होकर ारित्र-निर्माण करने वाली होनी ाहिए।

शिक्षा को इन व्यापक अर्थों में सम ाने के बाद अब हम सम ा सकते हैं कि उसका अधिकतर भाग अथवा कभी-कभी महत्वपूर्ण अंश भी हमें अन ाने में ही प्राप्त हो ाता है। शिक्षा हमें अपनी ीवन समस्याओं के समाधान, प्रकृति के प्रभाव और सु ावों, दूसरे साथियों के साथ व्यवहार तथा प्रायः अपनी असफलताओं और कष्टों द्वारा भी प्राप्त होती है।

अंततः शिक्षा का अर्थ-हमारी शक्तियों के विकास और सुधार के लिए ेतनापूर्वक किये गये प्रयासों से लिया ाता है।

वैसे इन विवे य उपन्यासों के लेखक सं ीव शिक्षा को महत्वपूर्ण शक्ति मानते हैं। क्योंकि आ ा वे इस तरह का लेखन कर पाते हैं तो उसका कारण शिक्षा ही है। इसीलिए वे अपने उपन्यासों के माध्यम से यह संदेश देते नज़र आते हैं कि

---

177 शिक्षा सभ्यता और आधुनिकता, पवन कुमार गुप्त-पृ.5

178 शिक्षा सभ्यता और आधुनिकता, पवन कुमार गुप्त-पृ.7

शिक्षित बनना देश के हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। शिक्षित होने पर ानता के अंदर प्रश्न करने की शक्ति आ ाती है। वह समा ा में सभ्य कहलाता है और स्वस्थ समा ा का निर्माण करने में सहायक बनता है। इसीलिए सं ीव अपने उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से शिक्षा का महत्व और उसकी आवश्यकता को बताते हैं। मुख्य रूप से उन लोगों के लिए ि ानको समा ा में उपेक्षित और अनागरिक माना ाता है और उनके लिए ि ान्हें समा ा की सभ्यता से बाहर कर उनकी अपनी सभ्यता और समा ा को विस्थापित किया ाा रहा है, यानी दलित, आदिवासी और मज़दूर, शोषक वर्ग को। उनका मानना है कि इनको अगर शिक्षा से पृथक किया ााय तो वह इनके ाीवन को बदलने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

मुरली पांडे, भिखारी ठाकुर, मोतीलाल, शर्मा, ाय आदि ैसे कथानायक द्वारा लेखक शिक्षा का प्रसार-प्र ाार करने में सफलता प्राप्त करता है।

'सूत्रधार' उपन्यास में शिक्षा के संदर्भ में उस समय का परिवेश कैसा था यह बताया गया है। भिखारी ठाकुर ब ापन में शिक्षा के अभाव में रहते हैं। क्योंकि निम्न ााति का होने के कारण उन्हें शिक्षा प्राप्त नहीं होती। प ़ाई बी ा में छोड़कर ह ाामी का काम करने के लिए उनके पिता ाी ाोर देते हैं। लेकिन भिखारी ठाकुर की प ़ने की इ छा कम नहीं होती। वह एक दिन भगवान साहू के पास ाता है। उसके पूछने पर भिखारी दौड़कर अनुनय में भगवान साहू के दोनों हाथ पकड़ लेता है, "हमारा के प ़ा द-अ!"[179] इस तरह से वह अपनी इ छा प्रकट कर प ़ाई-लिखाई शुरू करता है। गुरु माटी पर ाो भी पाठ प ़ाते, शिष्य दियारे के ाारागाह में उसका अभ्याय करता।

अगर भिखारी ठाकुर ने काम ालाऊ प ़ाई भी न की होती तो आ ा इतने बड़े कलाकार को हम शायद नहीं पा सकते थे। उन्होंने ि ातनी शिक्षा प्राप्त की उससे ही अपना लोक-नाट्य सारे गीत, नाटक लिखे और उनके द्वारा उन्होंने समा ा में क्रांति लाने का प्रयास किया।

---

[179] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.25

‘आकाश ंपा’ उपन्यास में मास्टर मोतीलाल स्वयं एक इतिहास के मास्टर होने के कारण शिक्षा के महत्व को ानते थे। इसीलिए वे प ़ाने में रुि रखते हैं, पाठशाला में प ़ाने के बाद ो समय ब ाता था, उस समय पर घर के सामने गरीब ब ों के लिए स्कूल खोल रखा था, िससे कि वहाँ के मुहल्ले के ब े प ़-लिख सकें। इसे आगे ब ़ाने में वे अपने छोटे भाई श्रीप्रकाश की सहायता लेते रहे। मोतीलाल ने सुखौती नामक गाँव में पाठशाला भी खोला वहाँ के दाताओं से राशि लेकर स्कूल भवन का शिलान्यास करवाया। गाँव की सबसे बु ुर्ग महिला दुःखनी देवी से। इसी तरह वे ापण्डी पहाड़ के आदिवासियों के लिए शिक्षा की आवश्यकता को महसूस करते हैं। वे कहते हैं कि-"इनके लिए अ छा स्कूल ाहिए था। ... ो उन्हें शेष दुनिया से ोड़े ताकि ये घुल-मिल सकें और तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अपनी बेहतरी के उपाय ूँ ़ सकें।"[180] यानी शिक्षा न होने के कारण वे बाहरी दुनिया से कटे हुए हैं, इसीलिए उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है िससे वे बाकी दुनिया से संबंध रख सकें और अपनी िंदगी को बेहतर बना सकें। यह सिर्फ शिक्षा के माध्यम से संभव हो सकता है।

‘धार’ उपन्यास में आदिवासी ान ातियों का ीवन दुर्बर बना रहता है। उनके लिए न कोई काम मिलता है और न ही कोई म ादूरी। आर्थिक अभाव के कारण उनकी कुछ लड़कियाँ गलत रास्ते पर ालती हैं। यह सब खबर मिलने पर मैना का मन उद्विग्न हो ाता है और वह अपने ब ों को प ़ने के लिए कहती है ताकि उनकी स्थिति भी वैसी न हो। मैना का कहना है-"तू सबका भी हालत ऐसा ई होगा। न प ़ना न लिखना। कल से टैम निकालकर शर्मा बाबू के पास नई प ़ने गये तो खाना बंद।"[181] मैना प ़ी-लिखी न होने के बाव ूद वह प ़ाई के महत्व को ानती है, इसीलिए अपने ब ों को प ़ने के लिए कहती है।

शर्मा ो एक प ़ा-लिखा युवक है, वह ाहता है कि बँसघड़ा के सभी आदिवासी प ़-लिख सकें। वह कहता है कि उनकी भाषा में भी सुधार आ ाए ताकि

---

[180] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.248

[181] धार, सं ीव-पृ.87

वे शुद्ध रूप से उ ारण कर सके। शर्मा कहता है "रुकिए, कुछ ारूरी बातें रह गई हैं। ... अब आप थोड़ा प ़ना-लिखना भी सीख लें। ताकि 'केतना' को 'कितना' और 'कायें' को 'क्यों' बोल सकें।"[182]

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में कथानायक सुदीप्त बाघमुंडी की आदिवासी ानता को शिक्षित करना ाहता है ताकि वे कुछ अक्षर ज्ञान प्राप्त कर सकें। ाब वह अपने मित्र से कहता है-"... बू ़े-ब ो, स्त्री-पुरुष सभी का अक्षर ज्ञान यहाँ अनिवार्य है। अब पूछोगे इतने मास्टर कहाँ से आये तो यहाँ मास्टरी का हाल यह है कि ाो ि ातना प ़ा है, अपने से कम प ़े को प ़ाता है। यादातर मास्टर तो पहली, दूसरी द ाा तक ही प ़े हुए हैं, अक्षर ज्ञान के लिए उतना ही पर्याप्त है-है न अद्भुत!"[183]

यानी उन्हें अक्षर ज्ञान की ि ातनी आवश्यकता है उसे हासिल करते हैं, और अपने से कम प ़े को वह ज्ञान प्राप्त कराते हैं ि ासे वह सबको अक्षरज्ञान प्राप्त हो ााता है। इतना ही नहीं गोपाल, फिलिप ौसे नौ ावान आदिवासी स्वयं शिक्षा देने में तत्पर रहते हैं, ताकि वे अपनी ााति का उद्धार कर सकें। इस तरह वे शिक्षा के महत्व को हमारे सामने रखते हैं।

' ांगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में मुरली पाण्डे ौसे गांधीवादी पात्र द्वारा लेखक शिक्षा के महत्व और उससे आदिवासियों में लाए ाानेवाले परिवर्तन को दिखाता है। मास्टर मुरली पाण्डे आदिवासी युवकों को शिक्षा देकर उन्हें डाकू बनने से रोकता है। मुरली पाण्डे शिक्षा के माध्यम से उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास करते हुए नज़र आते हैं। वे एक आदर्श पात्र के रूप में दिखाई देते हैं। वे एक अ छे समा ा की परिकल्पना करते हैं। अंत तक वे उसी लक्ष्य के लिए खड़े दिखाई देते हैं।

'सर्कस' उपन्यास में लेखक ने सर्कस में ाीवन का यथार्थ का ि ात्रण किया है। सर्कस के सभी कलाकार अपनी ाीविका के लिए प्रदर्शन करते हैं, लेकिन वे

---

[182] धार, सं ाीव-पृ.157

[183] पाँव तले की दूब, सं ाीव, हंस, अगस्त, 1990-पृ.72

बाहर की दुनिया से कटे हुए दिखते हैं। अधिकतर उनमें शिक्षित नहीं हैं, लेकिन उपन्यासकार ने प्रसाद बाबू नामक पात्र के द्वारा शिक्षा को स्थान दिया है। प्रसाद बाबू सर्कस के कलाकारों को शाम के समय अक्षर ज्ञान प्रदान करते हैं, ताकि वे बाहर की दुनिया से परि ित हों। इस तरह लेखक वहाँ भी शिक्षा को स्थान देकर उसका महत्व ब ़ाने का प्रयास करता है।

'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास में गाँव के दलित अशिक्षित होने के कारण शोषित होते हैं। उन्हें शिक्षित बनाकर उनमें ेतना ागाने का प्रयास ाय और ांदनी करते हैं। ांदनी किसान सभा की मड़ई में स्कूल खोलकर वहाँ के ब ों को प ़ाती है और ाय गाँव के प्रौ ़ों को। इस तरह लेखक सं ीव शिक्षा को आगे ब ़ाने का भार इन दोनों पर रखते हैं।

अंततः लेखक का मूल उद्देश्य यही रहा कि भारत के सभी गाँव शिक्षित बनें और वे आधुनिक समा ा से संबंध स्थापित करें।

निष्कर्ष

सं ीव एक ऐसे कथाकार हैं ि िनके उपन्यासों में सामान्य ानता के तमाम ीवन का ि ात्रण दिखाई देता है। वे कभी भी अपने आं ालिक परिवेश को छोड़ नहीं पाते हैं। अपने सारे उपन्यासों में वे गाँव के परिवेश और वहाँ के लोक- ीवन से पाठकों को परि ित कराते हैं; क्योंकि वे मानते हैं कि उनका सारा ीवन इसी गाँव के अं ाल से ुड़ा हुआ है वे आ ा भी ाहते हैं कि गाँव में उनका ीवन बीते। लोक और लोक- ीवन से अ छे संबंध होने के कारण उनके उपन्यासों में लोक- ीवन के तमाम आयामों को हम विस्तार से देख सकते हैं।

इनके उपनयासों के माध्यम से लोक- ीवन की वास्तविकता का ि ात्रण हुआ है। समा ा में पनपे ाति, अस्पृश्यता को सं ीव ने अपने उपन्यासों में ीवंत रूप में ि ात्रित किया है। ाति के नाम पर सामा िक असमानताएँ और दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्ग के प्रति अस्पृश्यता का भाव ैसी सामा िक कुरीतियों

को उकेरा गया है। आ ा भी ाति के नाम पर उस समा ा का शोषण और उन पर अत्या ार हो रहा है।

सांस्कृतिक आयाम में दलित और आदिवासियों की संस्कृति, सभ्यता और लोक-पर्व, लोक-गीत आदि का विश्लेषण हुआ है। इस समा ा की अलग पह ान उनकी संस्कृति से ही मिलती है। उनका रहन-सहन, रीति-रिवा ा आदि की भूमिका महत्वपूर्ण है। क्योंकि अपनी सभ्यता के कारण वे समा ा के अंतर्गत अपनी अस्मिता और अस्तित्व को बनाये रखते हैं। सं ीव के उपन्यासों में आदिवासी ान ाति का ीवन ि त्र, थारु, संथाल आदिवासियों की भाषा, गीत, पर्व और ना ा सभी के सुंदर रूप में दिखाई पड़ता है। आ ा वे अपने भाषा, अपेन गीत और रीति-रिवा ों के माध्यम से अपनी संस्कृति की पह ान कराते हैं।

धार्मिक आयाम में अंधश्रद्धा, कुरीतियाँ और धर्म के नाम पर किये ानेवाले शोषण का ि त्रण मिलता है। धर्म की आ ़ में दलित और आदिवासी नता का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण किये ानेवाले पोंगा पंडित, ओ ा ैसे लोगों का ि त्रण सं ीव के उपन्यासों में मिलता है। आ ा भी समा ा में धार्मिक रू ़ियों के ालते असमानताओं का फैलाव हो रहा है। लेखक अपने उपन्यासों में मुख्य पात्रों के माध्यम से वे इस धर्म के छल-कपट को सामने लाते हैं और धार्मिक असमानताओं के प्रति ेतना ागृत करते हैं।

आर्थिक विषमता का ो ाक्र है वह सदियों से ाला आ रहा है। समा ा में आ ा भी आर्थिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती हैं। दलित, आदिवासी और निम्न ातियों की तुलना में उ ा ाति व पूं ीपतियों की आर्थिक स्थिति ऊं े स्थान पर है। गरीब की स्थिति ैसे पहले हुआ करती थी, आ ा भी वैसी ही है और उ ा वर्ग की स्थिति में दिन-प्रतिदिन और अ छी होती ा रही है। पूं ीपतियों के शोषण के कारण दलित और आदिवासियों का आर्थिक ीवन बिगड़ता ा रहा है। यह देश की कैसी विडंबना है कि एक ओर ऊँ ी-ऊँ ी इमारतें, ऐशो-आराम की ि ांदगी और दूसरी ओर ोंपड़ियाँ ो दो- ून की रोटी पाने को तरसती हैं। सरकार

इन गरीबों के लिए बहुत सारी यो ानाएँ तो बनाती है लेकिन क्या उन तक वह इन यो ानाओं को पहुँ ाा पाती है?

रा ानीति के बिना किसी भी रा य की कल्पना नहीं की ाा सकती। क्योंकि रा य का मूलाधार रा ानीति ही है। इसीलिए रा य के निर्माण के लिए रा ानीति का होना आवश्यक माना ाता है। रा ानीति के द्वारा रा य के भविष्य का निर्माण किया ाता है। रा ानीति को एक आदर्श के रूप में देखा ाता था लेकिन आ ा के संदर्भ में यह धारणा गलत साबित हो रही है। आ ा के नेताओं का मुख्य उद्देश्य स्वयं का विकास करना हो गया है। वैसे तो ानता द्वारा, ानता के लिए काम करना उनका कर्तव्य होना ाहिए, पर अब ऐसी उम्मीद भी उनसे की ाा सकती है। सरकारी नीतियों को बनाने वाले ये रा ानेता उनको आम ानता तक पहुँ ाने नहीं देते और पूं ाीपतियों की सहायता कर दलित और आदिवासी म ादूरों का शोषण करते हैं।

सरकार द्वारा बनायी गयी प्रशासनिक व्यवस्था का मूल कर्तव्य यह होता है कि बेसहारा, गरीब और पिछड़ी ााति के लोगों की सहायता करना। उनके लिए बनाई गई यो ानाओं को उन तक पहुँ ााना और उन्हें शोषण के भीषण ाक्र से बाहर निकलाना। लेकिन आ ा प्रशासन व्यवस्था पंगू होती नज़र आ रही है। पुलिस अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल करके गरीब, दलित और आदिवासी ानता का शारीरिक, आर्थिक और मानसिक शोषण कर रही है। उ ा अधिकारी पूं ाीपतियों की सहायता करते हैं मासूम ानता पर ाूठे इल ााम लगाकर उन पर अत्या ाार करते हैं। स्त्री का शारीरिक शोषण करते हैं और बेकसूर आदिवासियों की हत्या करते हैं। लेखक ने उपन्यासों के माध्यम से प्रशासनिक व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है।

लेखक कहता है कि शिक्षा के बिना मनुष्य के अस्तित्व पर प्रश्न ि ाह्न लगा रहेगा। उपन्यासों में शिक्षा का महत्व और उससे समा ा के परिवर्तन को बताने का प्रयास किया गया है। कथा नायक आदिवासी, दलित और निम्न वर्ग के लोगों में शिक्षा के प्रति रु ि ा ब ़ाने और उन्हें समा ा से ाोड़ने का काम करते हैं। आ ा भी भारत की अधिकतर ानता ि ानमें आदिवासी और दलित वर्ग अधिक हैं, वह शिक्षा क्षेत्र से अभी भी बहुत दूर है। उनके लिए शिक्षा की उ ि ात व्यवस्था न होने के कारण

उनको शिक्षा प्रदान करने के लिए रात की पाठशालाएँ और प्रौ -शिक्षा, अक्षर ज्ञान ैसे प्रयोग किए ा सकते हैं। यहाँ लेखक ने भी अपने उपन्यासों में यही कर दिखाने का प्रयास किया है।

अंततः सं ीव ैसे समा धर्मी उपन्यासकार देखने को कम ही मिलते हैं। वे अपने ीवन से प्रेरित होकर और वहाँ के परिवेश, वहाँ की स्थितियों से संबंध स्थापित कर अपने उपन्यासों की कथा वस्तु बनानेवाले कथाकार हैं। उनके उपन्यासों में लोक- ीवन का ित्रण हर एक पात्र और परिवेश में लकता है, इसीलिए उनके उपन्यासों में लोक- ीवन की सारी बातों का ीवंत विश्लेषण मिलता है।

* * *

ातुर्थ अध्याय

सं ीव के उपन्यासों में शिल्प-विधान

ातुर्थ अध्याय

सं ीव के उपन्यासों में शिल्प-विधान

4.0 विषय प्रवेश

4.1 कथानक या कथावस्तु

4.2 पात्र-यो ाना एवं ारित्र-ि ात्रण

4.3 संवाद-यो ाना

4.4 देशकाल एवं वातावरण

4.5 शैली

4.5.1 आत्मकथात्मक शैली

4.5.2 वर्णनात्मक शैली

4.5.3 संवादात्मक शैली

4.5.4 पत्रात्मक शैली

4.5.5 पूर्वदीप्ति शैली

4.5.6 डायरी शैली

4.5.7 भाषण शैली

4.5.8 व्यंग्यात्मक शैली

4.5.9 फंतासी (फैंटेसी) शैली

4.6 भाषा

4.6.1 भो ापुरी का प्रयोग

4.6.2 बांगला का प्रयोग

4.6.3 अवधी का प्रयोग

4.6.4 आदिवासी बोलियाँ

4.6.5 बोल ाल की भाषा

4.6.6 विभिन्न भाषागत शब्द

4.7 उद्देश्य

4.0 विषय प्रवेश

कथा-साहित्य में समा ा के विभिन्न पहलुओं को प्रत्यक्ष रूप से सामने लाने का प्रयास किया ााता है। यह कार्य र ानाकार अपनी र ानाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अभिव्यक्ति का प्रभावी और कलात्मक होना र ाना की सफलता का एक महत्वपूर्ण मानदंड है। समकालीन कथा-साहित्य इस दृष्टि से अत्यधिक स ाग दिखता है। उपन्यासकार का अपना अनुभव अभिव्यं ाना के रूप में प्रकट होता है। सामाि ाक यथार्थ को अन्वेषित करने में उपन्यास का अपना महत्व है। कथा-साहित्य में केवल मौलिक कथ्य की ही खो ा नहीं होता बल्कि उसकी कलात्मक प्रस्तुति भी होती है।

उपन्यास कला के परिप्रेक्ष्य में भी सं ाीव के उपन्यास अपनी पह ाान रखते हैं। मूलतः उनके उपन्यास आं ालिकता की धरोहर पर खड़े हैं, कथानक में मौलिकता और लोकधर्मिता ालकती है। वे धारदार, उ ार्स्वित कथ्य के अनुरूप उसका ताना-बाना बुनने के हिमायती हैं। इसी कारण उनके उपन्यास शिल्प की दृष्टि से भी उल्लेखनीय हैं।

शिल्प विधान वह र ाना कौशल है ाो उपन्यासकार के आंतरिक द्वंद्व को आत्मविश्लेषण को एकाग्रता प्रदान कर यथार्थ को पाठक के सामने प्रस्तुत करने में सहायता करता है। किसी भी उपन्यास की मौलिकता उसकी शिल्प विधि पर ही निर्भर होती है।

4.1 कथानक या कथावस्तु

किसी भी र ाना को बुनने के लिए कथावस्तु की आवश्यकता होती है। वह र ाना कर्म का मूलभूत तत्व है। र ानाकार ाब किसी र ाना का सृ ान करना ाहता है तो तब वह एक कथा की संर ाना करता है। कथानक के बिना उपन्यास का सृ ान नहीं किया ाा सकता। यह कथा यथार्थ भी हो सकती है, काल्पनिक भी हो सकती है या दोनों का मिश्रण भी हो सकती है। उपन्यासकार कथानक के माध्यम से ही समा ा की विभिन्न घटनाओं एवं विभिन्न संदर्भों को, बुराइयों एवं अ छाइयों को पाठकों के

सामने रखने का प्रयास करता है। कथावस्तु किसी भी र ाना के लिए महत्वपूर्ण होती है उपन्यास के लिए वह री ़ की हड्डी है। डॉ.प्रतापनारायण टंडन कथावस्तु के बारे में कहते हैं-"वस्तुतः कथानक वह मूलभूत तत्व है, ि ासके अभाव में उपन्यास के अस्तित्व की कल्पना नहीं की ाा सकती।"[1] क्योंकि कथानक के आधार पर ही तो उपन्यास का विकास होता है। उपन्यास को महत्वपूर्ण बनाने के लिए कथानक रो ाक, कौतुहलपूर्ण तथा सरस ौसे इत्यादि गुण होने ााहिए। किसी भी र ाना की सफलता उसके शीर्षक से लेकर शुरुआत, मध्य और र ाना के अंत पर आधारित होता है। उसी से पाठक उस र ाना में अपने को देखने लगता है, यह सब कथानक का ही प्रभाव होता है।

सं ाीव के उपन्यासों का कथ्य मौलिक और अछूते संदर्भों को उ ाागर करता है। सं ाीव के उपन्यासों की बुनावट पूर्णतः देशीय है। इसका ताना-बाना आं ालिकता की धरोहर पर खड़ा है और इसमें लोक ाीवन की धड़कन मौ ाूद है। सं ाीव के उपन्यासों में एक ओर लोक संस्कृति के मूल्यवान संदर्भों की अभिव्यक्ति हुई है तो दूसरी ओर उनकी दृष्टि वैज्ञानिक है। उन्होंने अपने उपन्यासों में लोकगीत, लोककथा, लोकसंगीत, लोकनाट्य आदि का कलात्मक प्रयोग किया है। उन्होंने संघर्षवादी ोतना को कलात्मक र ााव दिया है। इनके उपन्यासों में गाँव की समस्याएँ, श्रमिकों की समस्या व संघर्ष, मानवीय संबंध, नारी ाीवन, कोयलां ाल की समस्या, ांगल, पहाड़ में रहनेवाले आदिवासी और दलितों की समस्याओं का कथानक प्रमुख रूप से मुखरित होता है। इसीलिए वे बेहद सरल और पठनीय हैं। इनके सभी उपन्यास यथार्थ का ि ात्रण करते हैं। वैसे भी इनके उपन्यास प्रेम ांद और रेणु की र ाना-प्रक्रिया से मेल खाते हैं। क्योंकि प्रेम ांद ौसा ग्रामीण ाीवन और रेणु की आं ालिकता का यथार्थ एवं आदर्शमय ि ात्रण देखने को मिलता है।

सं ाीव के उपन्यासों का प्रारंभ विविधतापूर्ण दिखाई देता है। वैसे इनके उपन्यासों के शीर्षक ही इतने आकर्षक एवं कौतुहलपूर्ण होते हैं कि ये पाठक को प ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। वहीं पर एक र ानाकार की सफलता का आभास

[1] डॉ.प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास कला-पृ.132

होता है। ैसे-आकाश- ंपा, सूत्रधार, ंगल ाहाँ शुरू होता है, पाँव तले की दूब, धार, सावधान! नी ो आग है, सर्कस और किसनग ़ के अहेरी। इन सभी शीर्षकों में विविधता है। शीर्षक के माध्यम से वे एक प्रतीक को उ ागर करते नज़र आते हैं।

सं ीव के उपन्यास अधिकांश वर्णन से ही शुरू होते हैं। उनके उपन्यासों में आत्मकथात्मकता भी होती है और अन्य विधियों का भी मिश्रण होता है। 'आकाश ाम्पा' उपन्यास की शुरुआत मुख्य पात्र के विवरण द्वारा होती है ैसे-"यह देखो, परेड का मैदान है, काफी बड़ा है। है न! पुलिस के सिपाही कवायद करते हैं यहाँ... और उस तरफ कलक्टरी, क ाहरी है-यहाँ मुकदमों के फैसले होते हैं... वो रहा एम.पी. साहब का बंगला और वो कलक्टर साहब का। ..."[2]

र ानाकार हमें कथानक से पहले ही परि ित करना ाहते हैं कि वह किस परिवेश का कथानक है। दूसरा उदाहरण देखते हैं-"काउ सम ात है। किसनग ़वालन को...? दादी प्रायः इसी अंदा ा में शुरू किया करतीं किसनग ़ के अहेरियों की कहानी। दादी ही क्यों, हर बताने वाले का अंदा ोबाया एक-सा होता।"[3] इस तरह आत्मकथात्मक शैली भी इनके उपन्यासों में मिलती है। इसी के कारण उपन्यास को प ़ने में पाठक तत्पर होने लगता है और वह आगे की कथावस्तु को ाानने की इ छा रखता है।

उपन्यास की कथावस्तु व्यक्तिपरक न होकर वह समा ापरक और यथार्थपरक तथ्यात्मक होता है। सं ीव अपने उपन्यासों को रो ाकता के साथ आगे ब ़ाता है और पाठक को भी अपने साथ लिवा ाता है। उनके उपन्यासों को प ़ने के बाद हमें यह ाानने की ि ाज्ञासा उत्पन्न हो ाता है कि उसका समापन किस अंदा ा में हुआ है या उपन्यास को पाठक के सामने किस स्थिति में छोड़ा है। ैसे कि वह सो ाने पर मजबूर करता है या फिर ोतना का आग्रह करता है या आदर्शवादिता का ि ात्रण। यही सं ीव के उपन्यासों में हमें दिखाई देता है, और वह एक सफल कथानक बनकर हमारे सामने प्रतिष्ठित होता है।

---

[2] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.7

[3] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.9

4.2 पात्र-यो ना एवं ारित्र-ि ात्रण

पात्र उपन्यासों को सं ालित करने में विशेष महत्व रखते हैं। आधुनिक उपन्यासों के पात्र सामा िक परिवेश से ुड़े हुए हैं। उपन्यास मानव ीवन का ि ात्रण है, पात्र मानव ीवन के विविध पक्षों के प्रतिनिधि होते हैं। उपन्यासकार में एक असाधारण प्रतिभा होती है। मानव- ीवन के सभी पक्षों का पात्रों के माध्यम से उनका ारित्र निर्माण किया ाता है। इसमें उपन्यासकार कुछ समाा िक परिवेश से भी लेता है, कुछ अपने नि ी अनुभवों द्वारा भी पात्रों को लेता है। उनका ारित्र-ि ात्रण भी अपने कौशल से करता है, साथ ही कुछ ाने पह ाने या परि ित व्यक्तित्वों का निर्माण करने में सहायता लेता है। यह पात्र एवं ारित्र यथार्थ, मौलिक भी हो सकते हैं या काल्पनिक भी। लेकिन वह समा के अंतर्गत रहनेवाले पात्र एवं ारित्र होते हैं। डॉ.प्रतापनारायण टंडन के मतानुसार "पात्रों में अनुकूलता, स्वाभाविकता, सप्रमाणता, सहृदयता एवं मौलिकता के गुण आवश्यक हैं।"[4] यानी उपन्यासकार ि न पात्रों का ारित्र-निर्माण करता है वे पात्र कथावस्तु के अनुकूल अपने गुणों का इस्तेमाल कर वह अपने किरदार को सह रूप में प्रस्तुत करते हैं।

डॉ.भगीरथ मिश्र ारित्र-ि ात्रण की दो प्रमुख विधियों का होना आवश्यक मानते हैं। "1. विश्लेषणात्मक, 2. नाटकीय। प्रथम में उपन्यासकार स्वयं ही ारित्रों के भावों, मनोवृत्तियों, वि ारों आदि का तटस्थ भाव से विश्लेषण करता है और द्वितीय में अन्य पात्रों के कथोपकथन द्वारा किसी पात्र के ारित्र पर प्रकाश पड़ता है। उपन्यासकार स्वयं ही अपना निर्णय दे, इसकी अपेक्षा पात्र के कथन, व्यवहार तथा पात्रों पर पड़े प्रभाव के विश्लेषण द्वारा ारित्र का स्पष्टीकरण हो यह अधिक आधुनिक प्रणाली है।"[5] स्पष्ट है कि उपन्यासकार को तटस्थ होकर पात्रों का ारित्र-ि ात्रण करना ाहिए, यह विश्लेषणात्मक विधि द्वारा संभव है। कथोपकथन द्वारा

---

[4] हिंदी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास, डॉ.प्रतापनारायण टंडन-पृ.89-90

[5] भगीरथ मिश्र, काव्य शास्त्र-पृ.85-86

अन्य पात्रों के ारित्र पर प्रकाश डालना यह दोनों विधि आधुनिक प्रणाली कहे ाते हैं।

पात्र एवं ारित्र-निर्माण में परिवेश का भी योगदान होता है। िास परिवेश का कथानक, उपन्यासकार तैयार करता है, उस परिवेश के अनुकूल पात्र एवं ारित्र- ित्रण भी बनाता है। ो ग्रामीण, आं ालिक, शहरी आदि से लिया ाता है।

पात्रों का वर्गीकरण भी उसी आधार पर किया ाता है ैसे परिवेश के आधार पर। पात्रों के वर्गीकरण के बारे में डॉ.प्रतापनारायण टंडन का वि ार है कि- "प्रत्येक उपन्यास के पात्र प्रायः विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि रूप में सामने आते हैं और अपने-अपने वर्गों का दृष्टिकोण और वि ारधारा प्रस्तुत करते हैं। ... अतः वे अपनी ाारित्रिक विशेषताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न वर्गों में विभक्त किए ाते हैं।"[6] अर्थात् किसी वर्ग और व्यक्ति के रूप में वे भिन्न-भिन्न पात्रों के प्रतिरूप सामने आते हैं ैसे-पूँ ीपति, महा ान, मज़दूर, नेता और पुरोहित आदि। व्यक्ति स्वयं की विशिष्टता से प्रकट होता है।

उपन्यासकार सं ीव के उपन्यासों के पात्र यथार्थ की भूमि पर खड़े हाड़-माँस के मनुष्य हैं। उनमें मानवो ित गुण-दोष हैं। उनके हर उपन्यास में संघर्ष करनेवाले अकाट्य साहसी पात्र मिलते हैं।

अ) <u>प्रमुख पात्र</u> :- उपन्यास के प्रमुख पात्र आरंभ से अंत तक अपना रोल निभाते रहते हैं। उपन्यास उन्हीं की छाया में विकसित होता है। सं ीव के उपन्यासों के प्रमुख पात्रः'आकाश ाम्पा' उपन्यास का 'मास्टर-मोतीलाल', 'सूत्रधार' उपन्यास का 'भिखारी ठाकुर', ' ांगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास का 'कुमार', 'पाँव तले की दूब' उपन्यास का 'सुदीप्त' आदि।

आ) <u>खल पात्र</u> :- खल पात्र उपन्यास के प्रमुख पात्रों के कार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं। उनके कारण नायक या नायिका दुःख ेलते हैं। इन पात्रों द्वारा अनीति, असत्य, पाप और अधर्म का ित्रण होता है, िन्हें खलनायक के रूप में

---

[6] हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास, डॉ.प्रतापनारायण टंडन-पृ.78

दिखाया गया है। ‘ ंगल ाहाँ शुरू होता है’ उपन्यास के मंत्री दूबे, लल्लन बाबू, ोगी, खोखाइन, परशुराम, नोनिया आदि। ‘धार’ उपन्यास के महेंदर बाबू, ‘सावधान! नी े आग है’ उपन्यास के रा ागी ़या साहब, रामबु ाारथ सिंह, ाावेद साहब और अनूप सिंह आदि। ‘सर्कस’ उपन्यास के नियोगी, ‘किसनग ़ के अहेरी’ उपन्यास के इनरपतिबाबू, योतिषी, कलिका पंडित, रूपई आदि। उपर्युक्त पात्रों में पूँ ाीपति वर्ग के ही अधिकांश पात्र हैं।

इ) <u>आदर्श पात्र</u> :- आदर्श पात्र उपन्यास की मूल ेतना बनकर सामने आते हैं। वह पात्र इसलिए आदर्श है कि वह समा ा की समस्याओं के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाते हैं और वह शोषित, पीड़ित समा ा का नेतृत्व करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। वे अपने लिए न लड़कर सामा ाक विषमता, वर्गभेद, भ्रष्ट व्यवस्था, शोषण, ााति प्रथा आदि के खिलाफ संघर्षरत होते हैं। ‘सूत्रधार’ उपन्यास का नायक ‘भिखारी ठाकुर’, ‘आकाश ाम्पा’ उपन्यास के मास्टर मोनिलाल, विरेंदर बाबू, ‘धार’ उपन्यास की नायिका ‘मैना’ और अविनाश शर्मा ‘पाँव तले की दूब’ उपन्यास के सुदीप्त, समीर और माधो हंसदा, ‘सर्कस’ उपन्यास की नायिका ारना, इब्राहिम खान, ‘सावधान! नी े आग है’ उपन्यास के ऊधमसिंह, आशिष, ‘ ंगल ाहाँ शुरू होता है’ उपन्यास के मुरली पांडे, ‘किसनग ़ के अहेरी’ उपन्यास के ाय, ााँदनी आदि पात्र। यह आदर्श पात्र पाठकों के लिए सो ाने का ारिया छोड़ देते हैं, उनमें वह उमंग, विश्वास और साहस एवं लक्ष्य होता है।

ई) <u>नारी पात्र</u> :- सं ाीव के उपन्यासों में नारी पात्रों का भी महत्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है। नारी प्रधान पात्र के रूप में र ाा गया उपन्यास-‘सर्कस’, ‘धार’ की ‘मैन’ भी संघर्षमय पात्र है। वह पूँ ाीपति, शोषणकारी व्यवस्था और सामा ाक स्थिति से संघर्ष करती नज़र आती है। ‘ ंगल ाहाँ शुरू होता है’ उपन्यास की ‘मलारी’, ‘पाँव तले की दूब’ उपन्यास की ‘शिला केरकेट्टा’, ‘किसनग के अहेरी’ उपन्यास की ाँदनी, राधा आदि पात्र उपन्यास को और अधिक प्रभावपूर्ण व रो ाक बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

ऐ) <u>मज़दूर वर्ग के पात्र</u> :- सं ीव के अधिकांश उपन्यासों में मज़दूर वर्ग के पात्रों का गठन होता है। वे मज़दूर पात्र उस कथानक के परिवेश के अनुरूप बने हैं और वह उनके उपन्यासों की मूलभूत सामग्री बने हुए हैं। 'सावधान! नी े आग है' उपन्यास में ंदनपुर कोयला खदान के परिवेश को लिया गया है। उसके अनुरूप बनाये गये पात्र उपन्यासों में उभर कर सामने आते हैं।

मकबूल साहब, ानू, विष्टूदा, आशीष, ोखूकाका, ऊधम, मुकुल दा, ड्राइवर रामसिंह, हेंब्रम, मंगूत आदि पात्र हैं। 'धार' उपन्यास में मैना, शंकर, फोकल, सितवा, टेंगर आदि। 'सर्कस' उपन्यास में रामूदादा, बुलबुल, प्रसाद बाबू, रघुनाथ, ैनुल, ट्रेनर खान तथा सूर ा बौना आदि मज़दूर वर्ग के पात्र। 'पाँव तले की दूब' में भी हम मज़दूर वर्ग के पात्र काली ारण किस्कू और गोपाल के माध्यम से देख सकते हैं। सं ीव के उपन्यासों के म ादूर वर्ग के पात्र एक स्थिति में शोषण व अत्या ार के खिलाफ और पूँ ीपतियों के खिलाफ संघर्ष करते नज़र आते हैं।

4.3 संवाद-यो ाना

संवाद उपन्यास के प्राण होते हैं। पात्रों के बी ा ो वार्तालाप ालता है वही संवाद कहलाता है। संवाद उपन्यास के ारित्रों के ारित्र- ित्रण में सहायक होते हैं। वे कथावस्तु को गति प्रदान करते हैं। उपन्यास के संवाद विशेष प्रकार के वातावरण की सृष्टि में भी सहायक सिद्ध होते हैं। संवादों के कारण उपन्यास में कलात्मकता का प्रवेश हो ाता है। कथोपकथन सह ा स्वाभाविक, मर्मस्पर्शी होने ाहिए। संवाद के बारे में 'श्यामसुंदर दास' का कहना है कि-"हम किसी पात्र का ैसा ारित्र- ित्रण कर रहे हों और ि ास स्थिति में तथा ि ास अवसर पर वह कुछ कह रहा हो उसी के अनुकूल उसकी बात ीत भी होनी ाहिए। साथ ही वह बात ीत सुबोध, सरस, स्पष्ट और मनोहर होनी ाहिए।"[7] यानी, संवाद समय और परिस्थिति के अनुकूल होने ाहिए। वह सुनने में सरल, सरस और सुबोध भी हो।

[7] साहित्य र ाना-पृ.155

पात्रों के संवादों का उतार- ा.ाव उपन्यास के विकास में सहायक सिद्ध होता है। वैसे सं ाीव के उपन्यासों में संवाद यो ाना स्वाभाविक, यथार्थ एवं विश्वसनीय प्रतीत होने लगते हैं।

'आकाश ाम्पा' उपन्यास के ाो संवाद हैं वे स्वाभाविक और यथार्थ परिलक्षित होते हैं- ाैसे मास्टर मोतीलाल कहते हैं-"ये यहाँ का सबसे बड़ा बाज़ार है, छोटे-छोटे सामान तो हम वहीं खरीद लेंगे लेकिन बड़े सामान के लिए हमें यहीं आना होगा। बा ाार के इस ओर बड़े लोगों का शहर है और उस पार हम ाैसों का। यह देखो शुरू हो गया हमारा पुराना यानी असली शहर। ... हाँ सड़क ारूर थोड़ी खस्ता है, सरकार की मेहरबानीं...।"[8]

पात्रानुकूल संवादों का भी महत्वपूर्ण ाित्रण होता है, क्योंकि वह किस परिवेश और पात्र का है इसको व्यक्त करता है। ाैसे-'सर्कस' उपन्यास के पात्र उस परिवेश के अनुकूल संवाद कहते हैं-"भैया हमारे सरकस में फिलिम बना लो, बोला दुत! ... बोई छोकड़ी ाो नया-नया आया है-कामना। कामणा नहीं कामणी।"[9] यह संवाद की भाषा पात्रानुकूल दिखाई पड़ती है। ाो अपने सह ा रूप में है।

उपन्यास के संवाद ऐसे भी होते हैं कि वह कथानक और पात्रों के उद्देश्य को स्पष्ट कर सकें। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में एक संवाद ऐसा है ािसमें वह लोगों (आदिवासियों) का मुख्य उद्देश्य के बारे में ा ार्ा होती है-सुदीप्त और समी के बी ा का संवाद है-

"मुआव ाा या फिर नौकरी, नहीं तो छोड़ो डोकरी।

यह नारा तुम्हारा दिया हुआ लगता है।

तुम्हें तो लगता है, सारे नामकरण, सारे नारे और साहित्य हम साहित्यकारों की बपौती हैं और ानता निरी पोंगा।

खैर छोड़ो तुम्हारे हंसदा और मनीष कहाँ हैं अभी?

क्यों? अपने-अपने फ्रंट पर हैं, और कहाँ?

---

[8] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.8

[9] सर्कस, सं ाीव-पृ.104

यही फ्रंट क्यों   यादा महत्वपूर्ण लगा तुम्हें?

यू नो,   ारखंड खनि   संपदा का भंडार है, नये-नये उद्योग लगाये   ा रहे हैं, नयी दुनिया की पगध्वनि? अगर सरकार ईमानदारी से इनका हक दे दे तो एक ही छलांग में कई मं िलें अपने आप तय हो   ाती हैं पर अन्याय देखो।

आदिवासियों को,   िनकी   मीन पर ये कारखाने लग रहे हैं, उन्हें टोटली डिप्राइव किया   ा रहा है-इस संपत्ति में उनकी भागीदारी तो खत्म की ही   ा रही है, उन्हें   मीन से भी बेदखल किया   ा रहा है, मुआव   ा भी अफसरों के पेट में।"[10] इस संवाद से उनका उद्देश्य परिलक्षित होता है,   ो कि उपन्यासकार अपने कथानक का उद्देश्य बनाता है।

उपन्यासों में संवाद-यो   ना, स   ीवता, आकर्षण एवं   ि ज्ञासा उत्पन्न करने वाली होनी   ाहिए। यह कथानक को अधिक सह   ा व सफल बनाता है।

'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास के पात्रों में कुछ संवाद ऐसे बनाये गये हैं कि आकर्षक उनमें स   ीवता परिलक्षित होती है। क्योंकि वह यथार्थ लगने लगते हैं। कलिका पंडित और   योतिषी बाबा के बी   ो संवाद   ालते हैं, वह   योतिषी बाबा के बेटे के नामकरण को लेकर ये बहुत ही रो   ाक हैं-

"एक काम नहीं करते   योतिषी भैया?

क्या?

तुम   िस तरह के काम में लिप्त हो, ईश्वर की उपासना करने की फुरसत तो तुम्हें है नहीं।

हाँ, वह तो है।

तो क्यों न अ   ामिल की तरह तुम भी भगवान को धोखे में ही डाल कर रखो।

कैसे।

---

[10] पाँव तले की दूब, सं   ीव, हंस, अगस्त, 1990-पृ.73

नाम रख दो ायशंकर। ाब- ाब बुलाओगे भगवान शिव को भ्रम होगा कि तुम उनकी ै- ैकार कर रहे हो।"[11]

यह हँसी-म ाक का ही संवाद है पर यथार्थ की ओर हमें संकेत करता है।

सं ीव के उपन्यासों में शिक्षित और नागरिक पात्र भी होते हैं। उनके संवादों में भाषा का अलगाव स्पष्ट होता है, वे नागरिकता के प्रतीक होते हैं। वह संवाद धर्मिता उपन्यास में एक अलग वातावरण की परिकल्पना कराती है। ' ंगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में पुलिस अफसरों की मीटिंग सर्किट हाऊस में ालती है। उसमें सभी अफसरों को अपना कर्तव्य बोध कराते हुए उप-पुलिस महानिरीक्षक सिन्हा साहब कहते हैं-"अपने इनफरमेशंस, अपनी स्किल, अपनी स्ट्रेट ी को शेयर करके आपको इस अभियान को सफल बनाना है। सब कुछ आपके इंट्यूशन, प्रे ेन्स ऑफ माइंड, विट और समयबद्ध सटीक प्लानिंग के कार्य पर निर्भर करता है। मैं सिर्फ क्या करना है, 'डू ा' और क्या नहीं करना है 'डू नॉट्स' को फिर से याद दिला दे रहा हूँ।"[12]

इसी तरह सं ीव के अन्य उपन्यासों में भी शहरी ीवन के माध्यम से शिक्षित पात्रों का ि त्रण किया गया है। साथ ही वहाँ के परिवेश, स्थिति, उनकी योग्यता आदि के आधार पर संवाद यो ाना की गयी है ाो बहुत ही स्वाभाविक और सरस है।

4.4 देशकाल एवं वातावरण

उपन्यास को यथार्थ के धरातल पर रखने के लिए वातावरण की ारूरत होती है। ीवन की विभिन्न परिस्थितियों से ू ाते रहने के कारण कथानक, पात्र, कथोपकथन आदि तत्वों का एक ही स्थान पर सं ाालन करना ही वातवरण की सृष्टि कहलाती है। इसके संबंध में डॉ.श्यामसुंदर दास का मंतव्य उल्लेखनीय है-"देश-काल से हमारा तात्पर्य उसमें वर्णित आ ाार-वि ाार, रीति-रिवा ा, रहन-सहन और

---

[11] किसनग . के अहेरी, सं ीव-पृ.30-31

[12] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.8-9

परिस्थिति आदि से है।"[13] इसके साथ एक और मंतव्य को भी देखना उ ित होगा। प्रतापनारायण टंडन का कहना है-"देशकाल के अंतर्गत सामान्य रूप से किसी भी देश अथवा समा ा की सामा िक, धार्मिक और रा ानीतिक परिस्थितियाँ, आ ार-वि ार, रहन-सहन, रीति-रिवा ा तथा समा ा की कुरीतियाँ या विशेषताएँ आदि सम ी ाती है।"[14] इन दो कथनों से यह स्पष्ट होता है कि कथावस्तु ि ास देशकाल से ली ाती है, वह उस समय की या उस समा ा की विशेषताएँ व कमियों का व्यापक रूप से ि ात्रण ही वातावरण कहलाता है।

सं ीव ने अपने उपन्यासों में इस वातावरण को दर्शाया है। वे अपने सभी उपन्यासों के देशकाल एवं वातावरण को कथानक के अनुकूल स ाकर हमारे सामने लाते हैं। इनके अधिकांश उपन्यास आं ालिकता के वातावरण पर बने हैं। इसीलिए वहाँ के लोक साहित्य, लोक कला, लोक संस्कृति, लोक-नाट्य, लोक गीत और लोक- ीवन से समाहित होते हैं। साथ ही शोषण, अत्या ार, सामा िक विषमताएँ और प्राकृतिक वर्णन आदि भी देखने को मिलता है।

'सर्कस' उपन्यास में वहाँ की दुनिया, ग्लैमर, ाका ौंध, प्रदर्शन, शो के दौरान की ाहल-पहल, थियेटर का माहौल, कला का प्रस्तुतीकरण आदि का ि ात्रण सर्कस के वातावरण को उभारता है। सर्कस का अंदरूनी ि ात्रण ैसे मालिक के द्वारा शोषण, भटकावू ि ांदगी, समा ा में उनके प्रति हीन भाव आदि का वातावरण यथार्थ का बोध कराता है। 'सर्कस' का ि ात्रण करते हुए "कान फोड़नेवाला वाद्य यंत्रों का शोर, नौकरों की भागदौड़, माइक की एनाउंसिंग के साथ खेल-कूद शुरू हुआ..."[15] ारना ाब सर्कस के तंबू में प्रवेश करती है तो वहाँ का माहौल देखकर स्तब्ध हो ाती है। उसके सर्कस के प्रति बहुत से ख्याल थे, लेकिन प्रत्यक्ष में सर्कस का ीवन-देख-भोग कर वह इस निष्कर्ष पर पहुँ ाती है "बन ारों ैसी ि ांदगी, शायद उनसे भी गई बीती।"[16]

---

[13] श्यामसुंदर दास, साहित्य लो ान-पृ.158
[14] डॉ.प्रतापनारायण टाडन, हिंदी उपन्यास कला-पृ.300
[15] सर्कस, सं ीव-पृ.17

‘सावधान! नी े आग है’ उपन्यास का वातावरण पूर्णतया कोयलां ाल का बना हुआ है। वहाँ हर पल भय, विपदा और भूख से लोग ीते हैं। ाब ऊदम इस कोयलां ाल में प्रवेश करता है, तब यह सो ाने लगता है-"आग की नदी दामोदर और धुआँ का शहर ारिया! कुआसा नहीं धुआँसा... ाहाँ-तहाँ रेल लाइनों के ााल, पंक्ति-पंक्ति खड़ी मालगाडियाँ, उ छवास फेंकते स्टीम इं ान! डिब्बीनुमा मकान और सर पर रह-रहकर काले खौफनाक परिंदे-सी गु ारती रोप-वे की डालियाँ।"[17] यहाँ लेखक अपनी लेखन कला से कोयलां ाल का ीवंत ि त्रण करते हुए वहाँ के वातावरण से परि ाय कराते हैं।

‘पाँव तले की दूब’ उपन्यास का देशकाल वातावरण बाघमुंडी, डोकरी मे ाया इस ाारखंड मुक्ति आंदोलन और आदिवासी ीवन का इस उपन्यास में अंकन हुआ है। ाब इनकी आदिवासियों की बदहाली देख-सुनकर सुदीप्त डर-सा महसूस करता है। "लड़के-लड़कियाँ और बू े लकवा के मारे-से दीख रहे थे और उस पर उनके स्याह ेहरों की भयावनी उ ाली आँखें। भरी दोपहरी मु ा पर प्रेतों और डायनों का साया मंडराने लगा।"[18] इस कथन से उनकी सामा ाक और वास्तविक ीवन का ि त्रण हुआ है।

अ) प्राकृतिक वातावरण

उपन्यास के अंतर्गत परिवेश के साथ-साथ प्राकृतिक वर्णन भी हमें मोहित कर देता है। वह एक प्रकार का उत्वाह, आनंद और सुंदरता को उखेरता है। ‘आकाश ंपा’ उपन्यास में मास्टर मोतीलाल सुखौती के लिए निकलते हैं स्कूल खो ाने, तब वह उनके सामने दिखने लगा है सुंदर और उतना ही भयंकर प्राकृतिक वातावरण। "कहीं-कहीं पानी के घटवन से थोड़ी-बहुत खेती भी हो रही थी। कहीं गेहूँ के मरियल पौधे सूख रहे थे। ंगल पलाश के फूलों से दहक रहा था। आगे महुए के पेड़ थे। पीले मोती-से बेशुमार महुए के फूल ारे पड़े थे। महुए की

---

[16] सर्कस, सं ीव-पृ.116

[17] सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.10

[18] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.69

महिमहाती भारी गंध से हवा बोि ल हो रही थी। दुनिया में इतनी खूबसूरत और इतनी बीहड़ ागहें भी हैं-उन्हें इस भयानक सौंदर्य का पहली बार उत्कट एहसास हुआ।"[19]

यहाँ वातावरण का विश्लेषण सूक्ष्मता के साथ दिखाया गया। सं ीव के उपन्यासों में वातावरण की दृष्टि से प्रकृति का सुंदर व बिंबात्मक प्रयोग किया गया है। िसके कारण उपन्यास का सारा परिवेश एक सह ा वातावरण का एहसास कराता है।

आ) भौगोलिक वातावरण

भौगोलिक वातावरण की स्थिति को उपन्यास में रखने के कारण वह आकर्षक और सह ा लगने लगता है। किसी भी भौगोलिक स्थिति का ि त्रण करने से वह उसका परिवेश और सामाि क स्थिति का ज्ञान होता है। भौगोलिक स्थिति कथानक के अनुकूल होनी ाहिए, िससे विश्वसनीयता ब ़ती है। ' ंगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में उप-पुलिस अधिकारी सिन्हा साहब पंश्ि ाम ंपारन की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं-"यहाँ की भौगोलिक और सामाि क स्थिति भी उनके अनुकूल पड़ती है। उत्तर में पड़ोसी देश नेपाल, पश्ि ाम में पड़ोसी प्रांत उत्तर प्रदेश, बी ा में प्रायः दुर्भेध्य ंगल पहाड़ मीलों फैले गन्ने के खेत, नारायवी नदी के तिलस्मी कछार।"[20]

इसी तरह 'सावधान! नी े आग है' उपन्यास में भी वहाँ के भौगोलिक वातावरण का ि त्रण है। सं ीव के उपन्यासों में यह ि त्रण देखने को मिलता है और वह उपन्यास के कथानक को सक्षम बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

सं ीव के अन्य उपन्यासों में भी देशकाल और वातावरण का मार्मिक ि त्रण हुआ है। वे उपन्यास को आकर्षक, कौतुहल और रोमां ाक बनाने के लिए इस विधि को अपनाते नज़र आते हैं और वे इसमें सफल भी हुए हैं।

---

[19] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.19
[20] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.8

4.5 शैली

हर र ानाकार की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है, ो उसे दूसरे र ानाकारों से भिन्न खड़ा करती है। लेखक िस ंग से अपनी बात को सामने रख रहा है, या लेखन कर रहा है उसी को शैली कहा ाता है। उपन्यास का कथानक, पात्र, वातावरण आदि का संबंध शैली के साथ होता है। उपन्यासकार विभिन्न शैलियों के द्वारा कथानक को बनाता है, ो उसे विशिष्ट पह ान दिलाती है। शैली की विशिष्टता को बताते हुए डॉ.त्रिभुवन सिंह कहते हैं-"उपन्यासों के माध्यम से यथार्थ ित्रण में शैली का विशेष महत्व होता है, यदि हम यह स्वीकार करते हैं कि 'यथार्थ' उपन्यास का प्राण है तो हमें वहीं यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि 'स्वाभाविक' शैली ही वह पं ातत्व है िसके द्वारा 'यथार्थ' का स्वरूप निर्मित होता है। यदि उपन्यासों के अंदर शैली की स्वाभाविकता नहीं है तो यथार्थ से यथार्थ घटना और कथावस्तु के होते हुए भी उपन्यास कभी भी यथार्थ ित्रण में समर्थ नहीं हो सकता और न तो उसमें मानव ीवन की अभिव्यक्ति ही यथार्थ रूप में हो पायेगी।"[21]

इससे हमें यह ज्ञात होता है कि उपन्यास की सफलता उसके स्वाभाविकता पर निर्भर होती है िसका उपन्यास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। अगर यथार्थ का बोध कराना हो तो स्वाभाविकता और सह ाता का होना अनिवार्य माना ाता है। सं ीव ने अपने उपन्यासों को विशिष्ट बनाने और कथानक को रो ाक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के शैलियों का प्रयोग किया है। ो एक सफल लेखन का लक्षण माना ाता है। इनके अधिकांश उपन्यासों में वर्णनात्मक और आत्मकथात्मक शैली का रूप सामने आता है। साथ ही उनके उपन्यासों में संवाद, भाषण, पत्रात्मक, पूर्वदीप्ति और फंतासी आदि शैलियों का प्रयोग परिलक्षित होता है।

[21] हिंदी उपन्यास: शिल्प और प्रयोग, डॉ.त्रिभुवन सिंह-पृ.96

4.5.1 आत्मकथात्मक शैली

इस शैली में लेखक किसी-न-किसी रूप में (अपने संबंध में बहुत कुछ) कथानक को प्रस्तुत किया ाता है। इसमें मुख्य पात्र अपनी कथा स्वयं सुनाते हैं। इस शैली में ‘मैं’ का प्रयोग किया ाता है ि ासके माध्यम से कथानक का विकास होने लगता है।

‘आकाश ंपा’ उपन्यास में मास्टर मोतीलाल कई बार स्वयं के बारे में प्रथम पुरुष शैली में कहते नज़र आते हैं। उसका एक उदाहरण देखिए-"मैं इस पहेली का हल नहीं निकल पा रहा हूँ कि वही सेठ ाो हमें रास्ता ालते प्रणाम करते थे, पैसे माँगने के सवाल पर इतने बेमुरौवत क्यों हो गये?"[22] सेठ के बर्ताव पर मोतीलाल ैसे खुद से सवाल करते हों।

‘पाँव तले की दूब’ उपन्यास में सुदीप्त का मित्र समीर अपने में ही बात करते हुए वह अपने वि ारों को व्यक्त करता है। सुदीप्त से मिलने आता है और वह उसे ूँ़ते हुए अपनी प्रतिक्रिया को आत्मकथात्मक शैली में व्यक्त करता है। ैसे-"मैं ा़ते- ा़ते रुककर बादलों को देखने लगता, ाो मु ो छू-छूकर निकले ाा रहे थे। आगे बाद थे और पीछे गहराती धुंध और अंधेरे में डूबी हुई घाटी ाहाँ बि ालियाँ ाबुक-सी सटकार रही थीं और एक ि ान्नानी आवाज़ रह-रहकर गुंगुआ रही थी मानो कोई विराट गुफा पूछ रही हो-यह मानव की बू कहाँ से आ रही है?"[23]

एक और उदाहरण देखें-"मैं सिगरेट सुलगाकर कपड़ों का तकिया बनाकर ाौकी पर नि ़ाल हो ाता हूँ। दो एक कश खीं ाते ही तनिक राहत मिलती है।"[24] इन कथनों से यह स्पष्ट हो ाता है कि सं ाीव के उपन्यासों में आत्मकथात्मक शैली का सुंदर और समयानुकूल प्रयोग किया गया है। वे इस प्रयोग में सफलता प्राप्त करते हुए नज़र आते हैं।

---

[22] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.43
[23] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.71, हंस-1990, अगस्त
[24] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.71, हंस-1990, अगस्त

4.5.2 वर्णनात्मक शैली

इस शैली में लेखक पात्रों की मनस्थिति, घटना, वस्तुस्थिति का वर्णन स्वयं करते हैं। या अपने पात्रों के माध्यम से इस शैली का प्रयोग करते हैं। उपन्यास के लिए वर्णनात्मक शैली का महत्वपूर्ण स्थान है ि ासके कारण उपन्यास को गति प्रदान होती है और कथानक में रो ाकता उत्पन्न हो ाती है। यह वर्णन प्रकृति, घटना और किसी व्यक्ति या परिवेश का हो सकता है। सं ीव के उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली का बहुत प्रयोग हुआ है और वह उपन्यास को और आकर्षक, रो ाक बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

'सूत्रधार' उपन्यास की शुरुआत लेखक के वर्णन से ही शुरू होती है-"नि ार दुपहरिया वैशाखी की, तपता हुआ दूर-दूर तक का दियारा। न कोई आदमी है, न ि ारई, न ि ानावर। बरम्ह बाबा के पीपर के बाद उत्तर ि ारॉंद तक एक भी पेड़ नहीं, ाहाँ एक कर छँहाया ा ा सके। बस हैं तो इक्की-दुक्की कँटली ाड़ियाँ-वह भी बबूल की! छोटे-छोटे बवंडर उठते हैं तो इन ाड़ियों में उल ा कर फनफना उठते हैं, ैसे मरकहे भैंसे की नाथी पकड़ हो कोई। फिर ि ान्न की तरह ना ाते हुए आगे निकल ाते हैं। सारा सीवान (सीमांत) आँवा की तरह धधक रहा है। लंबे- ौड़े उस गोरे-गँठीले ावान ने गमछे से कस कर सिर को लपेटा और उस धधकते आँवे में प्रवेश कर गया।"[25]

इसमें भो ापुरी परिवेश का वर्णन दिखाया गया और साथ ही उस भिखारी ठाकुर की यातना का भी।

'आकाश ंपा' उपन्यास में वीरेंद्र बाबू के साथ मास्टर मोतीलाल विधान सभा देखने निकलते हैं। इस दृश्य का वर्णन लेखक ने बहुत ही सुंदर तरीके से हमारे सामने रखने का प्रयास किया है। "उस अकेली ीप में पार्टी के ार अन्य विधायक, एक ड्राइवर, एक वीरेंद्र बाबू और सातवे सवार के रूप में मोतीलाल, हकस-पकस कर बैठे लोग। मोतीलाल अपराधबोध से गड़े ा रहे थे। ीप

---

[25] सूत्रधार, सं ीव-पृ.11

विधानसभा के फाटक पर आकर रुक गयी। ोकिंग हई। आई-कार्ड देखे गये, ये? इशारा मोतीलाल की ओर था।

'मेरे गेस्ट हैं।'

पास बना और ीप अंदर दाखिल हुई। लालबत्ती गाड़ियाँ आ-आकर रुक रही थीं और धवल पोशाकों में विधायक और मीडियाकर्मी उतर रहे थे। कुछ एक ने वीरेंद्र बाबू से दुआ-सलाम किया।"[26]

इस एक वर्णन से वह सारा दृश्य हमारे सामने ि ित्रित होने लगता है। यह लेखक की कुशलता है।

' ंगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास की शुरुआत भी वर्णनात्मक शैली में हुई है। "विदा में हिल रहे हाथ ओ ाल होते गए। मुख्य सड़क पर आते ही उसने ड्राइवर से स्टीयरिंग अपने हाथ में ले ली। छह फीट की गोरी, सुंदर, स्वस्थ काया, आग-सी धधकती उम्र और कुछ कर गु ारने की तमन्ना... एक मामूली मास्टर का लड़का है तो क्या हुआ। बिना किसी पैरवी के आ तो गया पुलिस उप-अधिक्षक की पोस्ट पर।"[27] यहाँ कथानायक का वर्णन किया गया है। सं ीव के उपन्यासों की यह महत्ता है कि वे वर्णनात्मक शैली द्वारा कथानक को और भी रो ाक बनाते हैं।

सं ीव के अन्य उपन्यासों में भी यह वर्णनात्मक शैली का प्रयोग परिलक्षित है। कहना उ ाित होगा कि इस शैली का संदर्भो ाित प्रयोग करने में लेखक सफल हुए हैं।

4.5.3 संवादात्मक शैली

संवाद मूलतः नाटक से संबंधित है। इस संवाद शैली के कारण नाटकीयता का आभास होने लगता है। क्योंकि संवाद शैली में संवाद सरस, स्पष्ट और छोटे वाक्यों में प्रयोग किया ाता है। ि ासे कथानक आकर्षक एवं प्रभावी होता है। सं ीव के उपन्यासों में इस शैली का अधिक मात्रा में उपयोग किया गया है। यही

---

[26] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.225

[27] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.7

कारण है कि उनके उपन्यासों में नाटकीयता का ि त्रण अधिक दृष्टिगो ार होने लगता है।

‘आकाश ंपा’ उपन्यास में मास्टर मोतीलाल और पंक ा मिलकर ापण्डा पहाड़ ाते हैं, वहाँ पर एक कैम्प में ाकर उन लोगों से आदिवासियों के बारे में पूछताछ करते हैं। वे संवाद बहुत ही सरल और स्पष्ट हैं।

"... आप हमारी कुछ मदद करेंगे?"

"कैसी मदद ाहते हैं?"

"कुछ पहड़िया लोगों से मुलाकात करवाते।"

"आप टिके कहाँ हुए हैं?"

"टिकने की कोई गह ही नहीं मिली। बड़रवा उतरे, सीधे ले आये।"

"दो-एक दिन रुकना पड़ेगा।"

"रुकना तो पड़ेगा ही। मगर अन ान गह है न!"

"आप हमारे कैम्प में रुक सकते हैं।"

"और भो न-पानी?"

"कैम्प में हम अपने भो न की व्यवस्था करते हैं, आपकी भी कर देंगे।"[28]

इस संवाद में नाटकीयता की लक दिखाई पड़ती है।

‘सावधान! नी े आग है’ उपन्यास में ब मज़दूर खदान के अंदर मर ाते हैं, तब उनकी लाशें निकाली ाती हैं, वहाँ एक संवाद मिलता है ो कि सरल और छोटा है।

"यह कौन है?"

"ऊधमसिंह।"

"ि ंदा है?"

"ना।"

"तलाशी में कुछ मिला?"

---

[28] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.241

"न-न-क-कुछ भी नहीं।"[29]

'सूत्रधार' उपन्यास में भिखारी ठाकुर के पास एक आदमी आता है, उनके ना ा मंडल में शामिल होने। उसके साथ भिखारी का संवाद एकदम छोटे और सरल होते हैं।

"ना ाना आता है?"

"ना।"

"ब ााना?"

"ना।"

"कभी किसी ना ा में काम किए हैं?"

"ना।"

"फिर...?"[30]

इस संवाद से ज्ञात होता है कि एक वाक्य के शब्दों में भी संवाद बनते हैं। यह लेखक की प्रतिभा को उ ागर करता है। और वह संवाद ो कहना ाहता है वह कह देता है। सं ीव के अन्य उपन्यासों में भी ऐसी ही संवादों का ि त्रण मिलता है, ि ासके द्वारा वे अपने उपन्यास को सफल बना पाते हैं।

4.5.4 पत्रात्मक शैली

उपन्यास विधा में पत्रात्मक शैली का उपयोग किया ाता है। क्योंकि पत्र एक ऐसा माध्यम है ि ासके द्वारा पात्रों की मनःस्थिति व उनके अंदर छिपी भावनाओं को व्यक्त करने में सहायक सिद्ध होता है। ि ासमें उपन्यासकार अपने किसी पात्र के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इससे कथानक का विकास ही नहीं होता बल्कि वह ो कहना ाहता है, उसे स्पष्ट रूप से कहता है। ि ासमे उपन्यास को एक गति प्रदान होती है। सं ीव के उपन्यासों में यह शैली देखने को मिलती है।

[29] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.217
[30] सूत्रधार, सं ीव-पृ.95

‘आकाश ंपा’ उपन्यास में मास्टर मोतीलाल का भाई आत्महत्या कर लेता है, उसके ेब से एक खत मिलता है। उसमें अपनी मनोवेदना को अक्षरबद्ध करता है श्रीप्रकाश। ैसे-

"पू ानीय भैया,

एक आदर्श शिक्षक के रूप में आपको पाकर गौरवान्वित हआ और आपके बताये रास्ते पर, प्राण-पण ालने की कोशिश भी की, स ा यह है कि समा ा में अगर कोई सबसे फालतू ीज़ है तो वह है शिक्षा। ि ासे कोई काम नहीं मिलता, वह शिक्षक हो ााता है और शिक्षक अगर ईमानदार है तो अकेला होता है, बाकी सब- समा ा, परिवार और छात्र तक उसके शत्रु। अभिमन्यु की तरह आपकी सिखायी विद्या उसमें प्रवेश का मंत्र तो दे सकती है, निकलने का नहीं। … भूल- ूक के लिए क्षमा। इ छा यही हो रही थी कि नीम की डाल से ही ूल ााऊँ, लेकिन उन पाँ ा सुरा ायों की बराबरी में खुद को हीन पाया, सो उनके कदमों के नी े ही…!

आपका अभागा भाई

श्री प्रकाश"[31]

‘पाँव तले की दूब’ उपन्यास में सुदीप्त मे ाया गाँव के आदिवासी मा ी हड़ाम को पत्र लिखता है-

"आदरणीय दादा,

पता नहीं हम और आप ैसे लोग गलत थे, ि ान्होंने आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ आदिवासी हरि ान… सभी दमित वर्गों की ेतना के विकास को भी उतना ही महत्व देना ााहा या ये ि ानकी लड़ाई मात्र आर्थिक स्तर तक सिमट कर रह गयी है… आपने कहा था, यह लड़ाई लेखक और अफसर की है, नहीं दादा, यह लड़ाई आदमी और इस आदमखोर व्यवस्था की है.. पहले आदमी ब े लेखक को

---

[31] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.57-58

फिर कभी ूँ. लेंगे और वह ायेगा कहाँ यहीं कहीं अपने बेकाबू हो गये पात्रों के पीछे भटक गया होगा?

आपका

........"[32]

इस पत्र के माध्यम से सुदीप्त अपनी वेदना और वि ारों को व्यक्त कर अपने आपको हल्का महसूस करने लगता है।

' ंगल हाँ शुरू होता है' उपन्यास के अंतर्गत पत्रात्मक शैली का अधिकांश प्रयोग किया गया है। काली पुलिस अफसर कुमार को खत लिखता है-

"आदरणीय कुमार साहब,

प्रणाम!

भैया पर पुलिस ि ास ंग से अत्या ार कर रही है, उसका एक भाई होने के नाते मु ा पर क्या बीत रही है, यह मैं बयान नहीं कर सकता। .. आपसे मिलना ाहता हूँ। मु ासे डरिए नहीं, पहली गोली मेरी ओर से नहीं ालेगी-वादा रहा। शर्त मं ूर हो तो आ ाइए। तारीख, समय, मुकाम हम बताएँगे सही मौका त ाबी ा कर!

एक बदनसीब भाई,

काली।"[33]

इस तरह सं ीव अपने उपन्यासों में पत्रात्मक शैली के प्रयोग सफल हुए हैं।

4.5.5 पूर्वदीप्ति शैली

पूर्वदीप्ति शैली में पात्रों के अतीत का वर्णन किया ाता है। यह पात्र के ीवन में घटित यथार्थ ि त्रण को अतीत में दिखाया ाता है, क्योंकि वह घटनाएँ अतीत की ही होती हैं। किसी विशेष संदर्भ में वह अपने अतीत को याद करता है, ि ससे आ ा की स्थिति से संबंध रखता हो। वैसे तो सं ीव के उपन्यासों में इस

---

[32] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.75

[33] हाँ ंगल शुरू होता है, सं ीव-पृ.134

शैली का उतना अधिक प्रयोग नहीं है, फिर भी वह शैली का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है।

'आकाश ंपा' उपन्यास में मोतीलाल अपनी ब ापन की यादों को ता ा करते हुए अतीत में ाला ाता है ि ासमें वह अपने गाँव और परिवार की यादों को दोहराता है। "गंगा के उत्तरी छोर पर कभी गाँव हुआ करता था खं ापुर। मोतीलाल के पूर्व ा खं ापुर से कब आकर बंशीपुर में बसे, किसी को याद नहीं। बा ़ आती तो खेत डूब ाते, बा ़ खत्म होती तो खेत कभी निकलते, कभी नही। .. इसी भूमि संघर्ष में मारे गये पिता पं.बुद्धिनाथ मिश्र। ... गहने बे ा-बे ाकर माँ प ़ा रही थीं बेटे को भागलपुर में... एम.ए. वाइन ही किया था कि निषेधाज्ञा तोड़कर सभा करने ाल दिये। पकड़े गये। ेल हुई। ... ेल में ही हृदयविदारक सू ाना मिली कि साँप के काटने से माँ गु ार गई।"[34]

'सर्कस' उपन्यास में 'फ्लैश बैक' शैली का प्रयोग किया गया है। साधारणतः घटनाएँ कामिनी के अवलोकन बिंदु से कहीं गई हैं। लेकिन इस एक अवलोकन बिंदु का निर्वाह सर्वत्र नहीं हुआ है। कई स्थानों पर विवश होकर लेखक को खुद बोलना पड़ा है।

'फ्लैश बैक' का अर्थ होता है प्रकाश और बैक का अर्थ होता है पीछे। 'फ्लैश बैक' अथवा पिछले ीवन को प्रकाशित करना आत्मकथात्मक शैली इसके लिए सर्वाधिक अनुकूल ठहरती है। यानी उपर्लिखित उद्धरण से स्पष्ट होता है कि पात्रों के अतीत का ि ात्रण ही पूर्वदीप्ति शैली कही ाती है। इसमें लेखक सर्वथा सफल होते हैं।

4.5.6 डायरी शैली

डायरी शैली में मुख्य पात्र अपने ीवन की विशिष्ट व विविध/विभिन्न विषयों का विवरण देता है। डायरी से हम सम ा सकते हैं कि वह किसी एक व्यक्ति द्वारा (लिखी गयी) स्वयं के बारे में वह भी दिन ार्या के रूप में लिखी ानेवाली

---

[34] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.11-12

पुस्तक है। इस शैली में लिखे ाने वाले कथ्य विवरणात्मक होते हैं। सं ीव के उपन्यासों में से ‘सावधान! नी ो आग है’ में इस शैली का ित्रण मिलता है। ऊधम अपनी डायरी में लिखता है-

"26 दिसंबर

आ । पहला दिन ीक-पुकार, दहशत और उत्ते ित बातों में बीता। छेदीलाल दुबे, मोहन यादव, कलीमुद्दीन सूफी, तो पैनेल में काम कर रहे थे। ... कहीं से ध्वनि संकेत आ रहे हैं-दीवारों से। लगता है, कुछ और अभागे हैं हमारी तरह।"[35]

"पहली ानवरी

नये साल की शुरुआत सूखन बाउरी की मौत से हुई। मंगलू को छोड़कर उसके पास कोई न था। ... बस, आव देखा न ताव, सूखन की लाश की ओर ाते हुए लोग पलट पड़े मंगलू की ओर।

पहली ानवरी

लोग विक्षिप्त हो रहे हैं...?"[36]

"तेरहवीं ानवरी

हाथ-घड़ी में तेरह तारीख अस्पष्ट नीलेपन में ामक रही है। वक्त आठ ब े का। सुबह या शाम इसकी कोई िंता नहीं। उन्नीसवें दिन के आठ ब े दीवार से सर टिकाकर बैठ गया है ऊधमसिंह। न तन की सुधि है, न मन की। ... इसी श्मशान भूमि में कैसे सोये पड़े हैं, माइनर-निशि ात्ता की नींद।"[37]

सं ीव ने इस उपन्यास में डायरी शैली का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। ऊधम सिंह का उन्नीस दिनों का ीवन संघर्ष का ित्रण अपनी डायरी में लिखकर वह उस भीषण एवं भयंकर दृश्य का यथार्थ ित्रण हमारे सामने रखता है। यह डायरी शैली का ही महत्व है ो ऐसी यथार्थ विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत कर सका है।

---

[35] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.168-169
[36] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.170-171
[37] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.182

सं ीव का एक और उपन्यास 'पाँव तले की दूब' में भी इस डायरी शैली का प्रयोग किया गया है, वैसे यह आत्मकथात्मक शैली का आभास होने लगता है। फिर भी यह डायरी शैली का ही एक सादृश्य बनकर सामने आता है।

सुदीप्त का मित्र समीर उसे ूँ.ते हुए गुफा में प्रवेश करता है। और वह इतमिनान कर लेता है कि यह उसकी रहने की ागह है। सुदीप्त का लिखा हुआ उसे मिल ााता है और उसे प. लेता है।

"सम ा में नहीं आता, कहाँ से शुरू करें, काली से,

मे ाया से, मनसा से गोपाल से, या हंसदा से...?"

"... राम राम साहब! अरे मिठाई-विठाई मंगवाइये। आप ाो ाहते रहे, वह तो हो गया न! ... मैं पंडित का मुँह नहीं लगना ाहता था, वैसे भी अपनत्व भरे आ ारण के ालते ािसके ाो भी ाी में आता है, मुँह पर बोलकर ाला ााता है, फिर भी अभी पंडित का ाख्म हरा था और उसकी कोई दवा मेरे पास न थी।"[38]

अंततः कह सकते हैं कि सं ीव के उपन्यासों में डायरी शैली का प्रयोग संदर्भानुकूल किया गया है ािससे उपन्यास सफल हो सके हैं।

4.5.7 भाषण शैली

उपन्यास के पात्रों द्वारा (कथानुसार) संदर्भो ित इस शैली का प्रयोग किया ााता है। ािसमें कोई मूल पात्र अपने साथियों व ानता को संबोधित करते हुए भाषण देता है, ािससे वह अपने विषय को प्रकट करता है। सं ीव के उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

'आकाश ांपा' उपन्यास का नायक मोतीलाल ानपक्ष पार्टी के नेता वीरेंद्र सिंह के साथ गाँव-गाँव घूमता है, भीड़ को संबोधित करते हुए भाषण देने लगते हैं- "क्या व ाह है भैये कि दलाल तुम्हें हाँककर ले ााते हैं... ाबकि ये बहादुर सूरमा, ाो बिना किसी स्वार्थ के तुम्हारे दुःखों के खात्मे के लिए तुम्हें संघर्ष की राह पर

---

[38] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.75, हंस, अगस्त 1990

आने को ललकारते हैं, ... कहाँ भागे ा रहे हो भैये। इस बा ार की मरीि ाका के पीछे...?"[39]

इस कथन में मोतीलाल समा ा के उन लोगों को ाागृत करने के लिए भाषण दे रहे हैं ाो कि पिछड़े, शोषित, दमित और पीड़ित हैं। भाषण का मुख्य उद्देश्य ानता को ाागृत करना, उनमें ेतना ागाना होता है। 'धार' उपन्यास में अविनाश शर्मा आदिवासी मज़दूरों के मन में ेतना ागाते हुए भाषण देते हैं-"तो साथियों, यह धार ही हमारी शक्ति है और धार का भोथरा होना ही मौत। यहाँ ही नहीं, ाहाँ-ाहाँ भी साम्यवादी सरकारें हैं, यह उपमा लागू होती है। ... यह छोटी-सी ानखदान भी किरकिरी बन गई है आँख की। ... इसीलिए हमें धार की ारूरत है, सतत सान से ता ाा होती धार- ााहे हमें कोई भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े।"[40]

अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए उन्हें संघर्ष का रास्ता ुनने को प्रेरित करते दिखाई पड़ता है यह भाषण का उदाहरण। सं ाीव के अन्य उपन्यास 'पाँव तले की दूब', ' ांगल ाहाँ शुरू होता है' और 'किसनग . के अहेरी' आदि में इस शैली का सफलतापूर्वक प्रयोग हुआ है।

4.5.8 व्यंग्यात्मक शैली

ाीवन के कुछ ऐसे अंश होते हैं ाो कि यथार्थ के रूप में सामने आते हैं। उनके अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य का सहारा लेना पड़ता है। यह शैली प्रभावशाली मानी ााती है। ि ान विषयों को संवाद के रूप में सीधे नहीं कह पाते या फिर किसी के मन पर सीधा प्रहार न करके किसी अन्य शैली का सहरा लिया ााता है। उसी को व्यंग्यात्मक शैली कहा ााता है। सं ाीव के उपन्यासों में इस व्यंग्यात्मकता का प्रयोग औि ात्यपूर्ण किया गया है।

'आकाश ांपा' उपन्यास में एक संदर्भ में पाण्डेय ाी वीरेंद्र सिंह को सम ााते हुए कहते हैं-"आप क्या सम ाते हैं सिंह साहब, फिल्म में अकेला नायक

---

[39] आकाश ांपा, स ाीव-पृ.286
[40] धार, सं ाीव-पृ.165

सारे पापियों को पीटकर ठंडा कर देता है तो आप भी कर देंगे? कोई भी गोली ाली तो रुद्राक्ष, ईश्वर का ामत्कार या 786 आपको ब ा लेगा? ... अपने 'ग्रुप सेवन' क्यों बनाया? अकेले ही भिड़ ाते अमिताभ ब ान की तरह और सारे अपराधियों को पीट-पीटकर ठंडा कर देते!"[41] यानी समा ा की विषमताओं के खिलाफ अकेले अमिताभ की तरह लड़ना आसान नहीं है, क्योंकि वह फिल्म नहीं है। मिलकर लड़ा ाना ाहिए असली िंदगी में। इस तरह व्यंग्य का रूप दिखाया गया है।

' ंगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में डाकू राम ातन नोनिया अपने इस पेशे के बारे में कहता है-"अपना काम में ला ा काहे का? अरे भइया दिल्ली से यहाँ तक ाो भी कुरसी पे बइठा है, सभे तो डाकू हैं। सब बंद कर दें, हम भी कर दें।"[42]

इससे स्पष्ट होता है कि सं ाीव ने अपने उपन्यासों में समा ा में फैले विषमता व कुरीतियों के ऊपर व्यंगयात्मक शैली में करारा प्रहार किया गया है।

4.5.9 फंतासी (फैंटेसी) शैली

यथार्थ से कटकर पलायन को सुविधा देना इस शैली की विशेषता है। फैंटसी का सामान्य अर्थ है अतिरं ाना या स्वैर कल्पना। फैंटसी में उन असंभाव्य संभावनाओं का ित्रण होता है िानको सिर्फ स्वैर कल्पना के माध्यम से ही किया ाा सकता है। इस शैली का प्रयोग बीते हुए या अपने इतिहास के कुछ पहलुओं को स्वरूप देने के लिए, उनसे बोध कराने के लिए किया ाता है। ग ाानन माधव मुक्तिबोध का कहना है-"फैंटसी में संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदनाएँ रहती हैं। कृतिकार को लगातार महसूस होता रहता है कि उसका अनुभव सभी के लिए महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।"[43] यानी लेखक के अनुभवों से लाभ उठाने का मौका इस शैली द्वारा प्राप्त होता है। सं ाीव ने अपने उपन्यासों में फैंटासी का प्रयोग किया है।

---

[41] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.210
[42] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.151
[43] एक साहित्यिक की डायरी, ग.मा.मुक्तिबोध-पृ.22

‘आकाश ंपा’ उपन्यास में वीरेंद्र सिंह अपनी कहानी बताते हैं मोतीलाल को। एक संदर्भ में वीरेंद्र सिंह डी.एस.पी. के गलत व्यवहार के कारण उनका गला पकड़ लेते हैं। इसका वर्णन करते समय मोतीलाल कल्पना करते हैं कि उन्होंने डी.एस.पी. का गला पकड़ लिया। "मास्टर साहब ने डी.एस.पी. का गला तब भी पकड़े रखा था ाब वीरेंद्र बाबू बाथरूम गये थे। वह तो अ छा हुआ कि थानेदार सस्पेंड किया गया, तब ाकर ाी.टी.रोड का नाम हटा और मास्टर साहब के हाथों डी.एस.पी. को मुक्ति मिली।"[44] स्वैर कल्पना में ही मोतीलाल ने अपने प्रतीकार को शांत किया है। ऐसे बहुत से ागहों पर वे अपने अंदर की असंभाव्य भावनाओं को फैंटसी द्वारा पूरा करते हैं।

‘ ंगल ाहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में ाौकीदार परबती कहता है-"ह ाूर, बनसपती देवी हैं, भटका रही हैं। डाकुओं की देवी हैं। कभी कोई रूप धर लेती हैं, कभी कोई। और ऊ दिन भी ऊ लड़की लड़की थोड़े ही थी, उन्हीं की माया थी।"[45]

इसमें वह ाौकीदार कल्पना के आधार पर यह वक्तव्य कहता है। यह रोमां ा और कौतुहल उत्पन्न करता है।

‘धार’ उपन्यास में ‘मैना’ को बुलडो ार से रौंदा ााता है और मैना की मौत हो ााती है, फिर भी "आगे फिर मैना खड़ी थी। अगल-बगल देखा, तो दोनों बा ाुओं पर मैना ाुगुनुओं की वैसी ही ागमगाहट! बुलडो ार मरकहे भैंसे-सा मैना को कु ाल रहा था मगर वह...? अ ाीब न ाारा था।"[46]

ऐसे ही अन्य दृश्य सं ाीव के उपन्यासों में परिलक्षित होते हैं। वे अपनी भावनाओं को कुंठा को तृप्त करने के लिए फैंटेसी का उपयोग करते हैं। इस कथानक के अनुकूल और पात्रानुकूल संदर्भोाि ात प्रयोग किया गया है।

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि सं ाीव ने अपने उपन्यासों में उपर्युक्त लिखित शैलियों का प्रयोग औाि ात्यपूर्ण, स्वाभाविक रूप में किया है। शैलियों का

---

[44] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.213
[45] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.21
[46] धार, सं ाीव-पृ.119

प्रयोग नितांत कलात्मक, समयानुकूल और कथानक को गति प्रदान करने में किया गया है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि वे अपने इस कला में बेहद सफल साबित हुए हैं।

4.6 भाषा

भावाभिव्यक्ति का माध्यम ही भाषा है। भाषा ि ितनी सरल, सरस, भावाभिव्यं ाक होती है वह उतनी ही प्रभावशाली भी होती है। ाब साहित्य की भाषा ान भाषा के निकट होनी ाहिए आ ाकल के साहित्य की भाषा प्रा ीन परंपरावादी के लिए कदा ात् एक उपभाषा या बोली सी है।

भाषा के संबंध में डॉ.श्याम सुंदर दास कहते हैं-"भाषा ऐसे सार्थक शब्द-समूहों का नाम है ाो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरे के मन तक पहुँ ाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होते हैं। अतएव भाषा का मूल आधार शब्द है।"[47] यानी भाषा एक माध्यम है ाो दो व्यक्तियों के बी ा कड़ी की तरह काम करके वह दोनों की अभिव्यक्तियों का आदान-प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती है।

भाषा, ि ारित्र व कथानक के विकास में सहायक होनी ाहिए। सं ाीव के कथा साहित्य की भाषा कथानक एवं ारित्र के अनुसार निर्मित हुई है। उनकी भाषा में 'लोक' भाषा की ालक मिलती है। वे अपने उपन्यासों में ि ास परिवेश को ाुनते हैं, उस परिवेश के अं ाल की भाषा का ही उपयोग करते हैं। इनके अब तक के उपन्यासों में यह देखा ाा सकता है। भो ापुरी, अवधी, बंगाली, आदिवासी बोलियाँ तथा बोल ाल की भाषा आदि का प्रयोग दृष्टिगो ार होता है। सं ाीव के साहित्य की भाषा सरल, ान साधारण एवं लोक के निकट है।

4.6.1 भो ापुरी का प्रयोग

सं ाीव के 'आकाश ांपा', 'सूत्रधार', ' ांगल ाहाँ शुरू होता है' आदि उपन्यासों में वहाँ के परिवेश के अनुरूप भो ापुरी भाषा का प्रयोग किया गया।

---
47 साहित्यालो ान-पृ.231

'सूत्रधार' उपन्यास में भो ापुरी परिवेश के लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के माध्यम से भो ापुरी भाषा की सुंदरता को सामने लाते हैं सं ीव।

" ाब तुम ना ा रहे हो, तो ौन बाकि नॅहार सभे कुछ ना ी, सभे कुछ ताल बताई। एक ताल समा ी माने ब ावैया के तबला, ोलक, ोड़ी, सारंगी से निकरी, ओही ताल ाब देह की सारंगी से बा ो सागी, तब समसे (पूरी) देह धमकी... और दोनों ताल मिलकर एक...।"[48]

'आकाश ंपा' उपन्यास में मिथिलां ाल का प्रयोग दिखाई पड़ता है। इसमें भो ापुरी का भी प्रयोग किया गया है।

"ऐ मनु बाबा, आपको कहो ूँटी काट रहा है?" ... आपने तो शुरुए से रि ारमेशन कर रखा है। ीनी-मरनी, बियाह पू ा-सब पर कब ा है। खाली पैदा करने में ो भी कष्ट हो, बाकी इंत ाम पी ़ी-दर-पी ़ी का आप कर ही ुके हैं।"[49]

' ंगल ाहाँ शुरू होता है' उपन्यास में पश्‍ि ाम ंपारण के परिवेश की भो ापुरी बोली का प्रयोग दृष्टिगो ार होता है।

" ाब ई ानते हो तो कुरमी लोगन का पार्टी में काहे घुसुरने ा रहे हो? हम बनसप्ती देवी का किरिया खाकर कहते हैं कि हियाँ के सत्तर परसेंट बैकवर्ड हैं, ऊ एक हो ाएँ तो लल्लन बाबू, शर्मा, वर्मा, सिंह, दूबे के ामानत ाब्त हो ाए।"[50]

सं ीव के अन्य उपन्यासों में भी भो ापुरी का प्रयोग प्रसंगो ि ात नज़र आता है। भो ापुरी पर सं ीव की अ छी पकड़ है ि ासमें वे सफल भी हुए हैं।

4.6.2 बांगला का प्रयोग

सं ीव पश्‍ि ाम बंगाल के बर्द्धमान ि ाले के कुल्टी गाँव में रहते हैं। इस लिए उनके साहित्य में बंगाली भाषा का प्रभाव स्वाभाविक है। उपन्यासों में परिवेशगत स्थिति के अनुकूल व पात्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग किया गया है। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में मुख ाी साहब की पत्नी सुदीप्त से कहती है-"सुदीप्त, ारा एइ

---

[48] सूत्रधार, सं ीव-पृ.110

[49] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.127

[50] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.50

कोविता-ठो की ठीक कर दो प्ली ा! रा ाभाषा कम्पीटीशन में देटोगा। काल ले लोग मुख ाी साहब-हाँ! और कभी आइने घोर पोर...?"[51]

'सर्कस' उपन्यास में बंगाली का असली रूप देखा ाा सकता है-"माँ, कोथा थेके नास्तिकटा एसे पोड़े छे माँ, तोमार अपोमान कोर छे।"[52]

उसी तरह 'सावधान! नी ो आगे है' में भी इसका प्रयोग है। इस उपन्यास में कोथलां ाल के परिवेश के अनुकूल भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रयोग किया गया है। उसमें बंगाली का भी प्रयोग है-"ओ मोये, एइ पूरो एकाकाटार नी ो आगो आधे ाानो?"[53] यह कह सकते हैं कि सं ाीव ने अपने उपन्यासों में परिवेश के अनुकूल व पात्रानुकूल बंगाली भाषा का सार्थक प्रयोग किया है।

4.6.3 अवधी का प्रयोग

'किसनग ़ के अहेरी' उपन्यास के परिवेश को नज़र में रखते हुए अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है। ािससे कथानक में सं ाीव ाीवंतता उत्पन्न करते हैं। "हाँ भैया, एइसन न होईकि फुसिलाय-फुसिलाय मोरि कांकर खांय, सुतइ कि दइयां मूतइ ाांय।"[54] एक और उदाहरण देखिए-"हम तो बैल है बैल, बधिया बैला ािंदगी भर दूसरे का बो ा ोवत डंगराइ गए औ...। सांड है सांड छुट्टा सांड। एहर ओहर मोंह मारत मोवन डकरत पड़ा हएन।"[55] इस उपन्यास के ग्रामीण पात्र अवधी भाषा का प्रयोग करते हैं। सं ाीव के उपन्यासों में इस भाषा का भी उ ाित प्रयोग परिलक्षित होता है।

4.6.4 आदिवासी बोलियाँ

सं ाीव के उपन्यासों में आदिवासी ान ाातियों की बोलियों का अधिक प्रयोग दिखता है। 'आकाश ांपा' उपन्यास में ाापण्डा पहाड़ के आदिवासियों की बोली का

---

[51] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.81, हंस, अगस्त, 1990
[52] सर्कस, सं ाीव-पृ.135
[53] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.29
[54] किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.127
[55] किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.25-26

प्रयोग है-"हमरा गाँव में केकरा संगे मिलना है?..."[56] उसी तरह 'धार' उपन्यास में भी संथाली आदिवासी बोली का प्रयोग किया गया है-"देलावन हि ाूकानराते लॉबीर वयसी बांसगड़ा रे होइया..."[57] सं ाीव का एक और उपन्यास 'पाँव तले की दूब' में भी बाघामुंडी के आदिवासी पात्रों द्वारा वहाँ की बोली का प्रयोग होता नज़र आता है-"हम हूँ सुना है ओकरा बारे में, नामवे इयाद नयँ था... ओकटा... हमारा तो शक है, ऊ बि ाली साहेब का नामवे भी ाानता था कि नयँ।"[58] ' ांगल ाहाँ शुरू होता है' आदि उपन्यासों में भी आदिवासी ान ााति की विभिन्न बोलियों का प्रयोग किया गया है।

4.6.5 बोल ााल की भाषा

सं ाीव के उपन्यासों का परिवेश और कथावस्तु सामा ाक समस्याओं से ाुड़ा हुआ है। इनके उपन्यासों के पात्र भी वहीं सामा ाक ाीवन से ाुड़े हुए हैं, आदिवासी, दलित तथा निम्न वर्ग के। इस कारण उनकी भाषा में सह ाता का भी ि ात्रण होता है। साथ ही बोल ााल की भाषा का अधिक प्रयोग दिखायी देता है। 'आकाश ांपा' उपन्यास में बोल ााल की भाषा का एक प्रसंग देखिए-"इस तरह भिखारियों की तरह दर-दर भटकने से तो अ छा है सीधे अग्रवाल साहब के पास ही धरना दें, आखिर उनके बाप के नाम पर स्कूल है। क्यों मोतीलाल ाी?"[59]

'सर्कस' उपन्यास में बोल ााल की भाषा का अधिक प्रयोग दृष्टिगो ार होता है। सर्कस के बौने आपस में ाो बात ाीत करते हैं वह बोल ााल की भाषा है-"सर्कस का मै ाक कंपनी लोग हंसी को काहे सेलेक्ट करता है क्लाउन के लिए-इस खातिर कि हमको देख के खुद ई हँसी आ ााती। दुनिया में ाो ताकतवाला है, वो कम ाोर पर हँसता, ाो गोर। है वो काला पर हँसता... काहें हँसता? वो ये ई सो ा कि हम

---

[56] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.242
[57] धार, सं ाीव-पृ.54
[58] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.109-110
[59] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.42

वोइसा नहीं है।"[60] इससे स्पष्ट होता है कि सं ीव के उपन्यासों में बोल ाल की भाषा का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग हुआ है और उसमें विविधता भी दिखाई देती है।

4.6.6 विभिन्न भाषागत शब्द

सं ीव के उपन्यासों में विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलते हैं, ि ससे भाषिक सौंदर्य सामने आता है। परिवेश और सामा ि क परिस्थितियों के अनुकूल शब्दों का प्रयोग किया गया है। ि सके अंतर्गत देश ा, विदेश ा शब्दों का प्रयोग मिलता है।

तत्सम शब्द

तत्सम शब्द दो शब्दों के योग से बना है। तत् + सम। 'तत्' का अर्थ है-'उसके' (संस्कृत) और सम का अर्थ है-'समान'। 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत में प्रयुक्त रूप के समान। संस्कृत में प्रयुक्त ाब कोई शब्द यों की त्यों हिंदी में प्रयुक्त होता है तब 'तत्सम' शब्द कहलाता है। ैसे-गतिरोध[61], पशु[62], व्याख्या[63], नवविवाहित[64], लक्ष्य[65], ामत्कार[66], स्थित[67], कर्मकाण्ड[68], ब्रह्म ारी[69], दृश्य[70], परंपरा[71], त्याग[72], सूर्य[73], पुण्यात्मा[74],

---

[60] सर्कस, सं ीव-पृ.63
[61] धार, सं ीव-पृ.20
[62] धार, सं ीव-पृ.20
[63] धार, सं ीव-पृ.25
[64] धार, सं ीव-पृ.25
[65] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.72
[66] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.72
[67] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.80
[68] पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.79
[69] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.15
[70] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.16
[71] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.19
[72] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.16
[73] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.34
[74] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.35

आकृति[75], शेष[76], काया[77], प्रतिक्रिया [78], प्रमाण[79], स्वप्न[80], यथार्थ[81], विष[82], घृणा[83], प्रवेश[84], अपेक्षा[85], शब्द[86], आत्मविश्वास[87], पवित्र[88], छात्र[89], परिवार[90], शलायु[91]।

तत्भव शब्द

मुँह[92], स ा[93], काँटा[94], भैया[95], हार[96], रात[97], हाथ[98], पेड़[99], धरती[100], फूल[101], सिंदूर[102], माँ[103], सूर ा[104], काम[105], नींद[106], निकास[107],

---

[75] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.34
[76] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.34
[77] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.9
[78] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.11
[79] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.11
[80] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.14
[81] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.14
[82] सूत्रधान, सं ाीव-पृ.46
[83] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.80
[84] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.
[85] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.81
[86] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.85
[87] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.44
[88] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.55
[89] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.127
[90] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.257
[91] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.
[92] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.
[93] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.54
[94] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.55
[95] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.48
[96] आकाश ांपा, सं ाीव-पृ.46
[97] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.96
[98] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.97
[99] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.98
[100] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.115
[101] सूत्रधार, सं ाीव-पृ.115
[102] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.31
[103] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.55
[104] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.33
[105] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.34
[106] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.116
[107] ांगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.15

ना ा[108], धीर ा[109], ाँदनी[110], डर[111], दिन[112], डांटना[113], पाँ ा[114], धान[115], दोपहर[116], सांस[117], हँसी[118], दूध[119], पानी[120], पाँव[121], आँख[122]।

सं ाीव के उपन्यासों में देश ा, तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।

विदेशी शब्द (आगत शब्द)

सं ाीव के उपन्यासों में विदेशी शब्द, अंग्रेज़ी, अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग किया गया है ि ासके कारण उपन्यास की भाषा में सह ाता का आभास होने लगता है।

अंग्रेज़ी शब्द

सं ाीव के उपन्यासों में अंग्रेज़ी शब्दों का अधिक मात्रा में प्रयोग मिलता है। स्कूल[123], सेण्ट ौवियर्स[124], गै ोटियर[125], फोटोकॉपी[126], स ोशन[127], रिक्वेस्ट[128],

---

108 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.5
109 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.15
110 किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.13
111 किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.14
112 किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.14
113 किसनग ़ के अहेरी, सं ाीव-पृ.15
114 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.70
115 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.73
116 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.73
117 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.74
118 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.25
119 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.27
120 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.27
121 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.26
122 पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.26
123 आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.7
124 आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.7
125 आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.142
126 आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.142
127 आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.142
128 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.261

टेरर्स[129], ग्रांट[130], केसे ा[131], सीरियसनेस[132], प्लॉट[133], पार्टी[134], मॉडर्न[135], कल ार[136], कॉकटेल[137], ट्रेनर[138], कै ार[139], ट्रैपीज़[140], प्लेटफार्म[141], स्लाइस[142], ांस[143], हाफकॉफी[144], मिक्सड[145], अप्रेंटिसशिप[146], टेस्ट[147], ड्राइवर[148], मैने ार[149] आदि।

अरबी-फारसी शब्द

ि ाद[150], रात[151], आदमी[152], प्यास[153], खरीद[154], सिलसिले[155],

---

[129] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.261
[130] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.261
[131] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.261
[132] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ाीव-पृ.261
[133] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.79, हंस, अगस्त, 1990
[134] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.79, हंस, अगस्त, 1990
[135] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.79, हंस, अगस्त, 1990
[136] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.79, हंस, अगस्त, 1990
[137] पाँव तले की दूब, सं ाीव-पृ.79, हंस, अगस्त, 1990
[138] सर्कस, सं ाीव-पृ.34
[139] सर्कस, सं ाीव-पृ.34
[140] सर्कस, सं ाीव-पृ.34
[141] सर्कस, सं ाीव-पृ.34
[142] धार, सं ाीव-पृ.24
[143] धार, सं ाीव-पृ.24
[144] धार, सं ाीव-पृ.33
[145] धार, सं ाीव-पृ.33
[146] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.11
[147] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.11
[148] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.11
[149] सावधान! नी ो आग है, सं ाीव-पृ.11
[150] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.240
[151] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.240
[152] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.240
[153] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.241
[154] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.241
[155] आकाश ंपा, सं ाीव-पृ.241

कमबख्त[156], आज़ाद[157], बेखुदी[158], शोर[159], शादी[160], कोशिश[161], हुनर[162], ाहिर[163], मुताबिक[164], सुबह[165], म ालूम[166], मुफलिसी[167], शामत[168], खौफनाक[169], मज़हब[170], शबाब[171], कमीज़[172], शोरबा[173], पेश[174], शहनाई[175], सितार[176] आदि।

द्विरुक्त शब्द

सं ीव के उपन्यासों में द्विरुक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है ि ससे कथानक को गति प्रदान हुई है और रो ाकता भी। ैसे-घर-घर[177], सुबह-सुबह[178], बी ा-बी ा[179], अपनी-अपनी[180], हट्ट-हट्ट[181], थू-थू[182], साथ-साथ[183],

---

156 पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.81
157 पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.62
158 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.281
159 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.259
160 सर्कस, सं ीव-पृ.73
161 सर्कस, सं ीव-पृ.73
162 सर्कस, सं ीव-पृ.73
163 पाँव तले की दूब, सं ीव-पृ.61
164 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.167
165 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.167
166 सर्कस, सं ीव-पृ.40
167 सर्कस, सं ीव-पृ.40
168 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.11
169 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.16
170 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.42
171 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.42
172 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.43
173 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.43
174 सर्कस, सं ीव-पृ.47
175 सर्कस, सं ीव-पृ.47
176 सर्कस, सं ीव-पृ.47
177 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.44
178 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.44
179 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.45
180 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.45
181 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.45
182 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.45
183 सूत्रधार, सं ीव-पृ.14

पीछे-पीछे[184], धीरे-धीरे[185], कैसे-कैसे[186], दूर-दूर[187], सँवलाए-सँवलाए[188], मोटी-मोटी[189], अक्षर-अक्षर[190], उ ाला-उ ाला[191], हौले-हौले[192], टटोलती-टटोलती[193], कैम्प-कैम्प[194], आहिस्ता-आहिस्ता[195], ऊँ ो-ऊँ ो[196], पेड़-पेड़[197] आदि।

सार्थक-निरर्थक शब्द

सं ीव के उपन्यासों में अनेक स्थानों पर सार्थक-निरर्थक शब्दों का प्रयोग हुआ है। ैसे-हक्का-बक्का[198], अम्बू-तम्बू[199], अता-पता[200], टे ़ा-मे ़ा[201], क ो-पक्के[202], छोटे-मोटे[203], फोटो-वोटो[204], अगल-बगल[205], दा ़ी-वा ़ी[206],

---

184 सूत्रधार, सं ीव-पृ.14
185 सूत्रधार, सं ीव-पृ.14
186 सूत्रधार, सं ीव-पृ.15
187 सूत्रधार, सं ीव-पृ.15
188 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.24
189 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.12
190 धार, सं ीव-पृ.45
191 धार, सं ीव-पृ.45
192 सर्कस, सं ीव-पृ.12
193 सर्कस, सं ीव-पृ.12
194 सर्कस, सं ीव-पृ.27
195 सर्कस, सं ीव-पृ.27
196 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.57
197 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.57
198 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.240
199 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.241
200 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.241
201 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.242
202 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.243
203 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.243
204 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.9
205 सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.222
206 सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.147

ना ा-वा ा[207], ऐसी-वैसी[208], इधर-उधर[209], लेकिन-फेकिन[210], खुसुर-फुसुर[211], नौकरी- ाकरी[212] आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

अपशब्द

सं ीव के उपन्यासों में अपशब्दों (गाली) का प्रयोग पात्रों के अनुकूल, संदर्भो ात है। लेकिन अधिक मात्रा में अपशब्द नहीं दिखाई देते। ैसे-स्साले[213], भोंसडी[214], मादर ोद[215], छिनाल[216], भडुवा[217], रंडियों[218], ूतिये[219] आदि।

ध्वन्यानुकरणात्मक शब्द

सं ीव के उपन्यासों में स्थिति व घटना का वास्तविक ित्रण करने के लिए ध्वनयानुकरणात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। उदा-कुहू-कुहू! फिर कोकिल बोलो।[220], ...'कल कल' ध्वनि-सी उनकी रुलाईफूट निकली।[221], ...कोई सूअर 'घों-घों' कर रहा था।[222], पंक ा भी-भी-भी-भी हँस पड़ा[223], साँसों की घर्र-घर्र[224], में कों की टर्र-टर्र[225], िंगुरों की ीं- ीं[226], शहनाई की आवा ा... पी-ई-ई-ई पि

---

207 सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.103
208 सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.40
209 सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.16
210 धार, सं ीव-पृ.41
211 धार, सं ीव-पृ.21
212 धार, सं ीव-पृ.11
213 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.136
214 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.196196
215 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.123
216 धार, सं ीव-पृ.21
217 सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.90
218 सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.90
219 किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.109
220 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.13
221 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.81
222 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.211
223 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.230
224 सर्कस, सं ीव-पृ.158
225 सर्कस, सं ीव-पृ.158
226 सर्कस, सं ीव-पृ.158

पि पिं ई-ई-ई-ई-ई-ई[227], अलार्म ब ाता है घन... न... न... न... न...[228], लेरु (बछड़ा) बाँ-बाँ करने लगता है।[229] कठफोवडे की ठक-ठक[230] आदि ध्वन्यात्मक शब्द मिलते हैं।

भो पुरी शब्द

सं ीव के उपन्यासों में अधिकांश शब्द भो पुरी से लिये गये हैं। उदा- हमरा[231], इ तो[232], काहें[233], हमको[234], कइसन[235], पालागी[236], बाम्हो[237], छिमा[238], कुटिया [239], गइली[240], गोड़बा दबादे[241], खइली[242], बतवुली[243], एतनामार[244] आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है तथा अन्य बोलियों का ैसे अवधी, बंगाली और आदिवासी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

भाषिक सौंदर्य का प्रयोग

सं ीव के उपन्यासों में भाषिक सौंदर्य का उ ित प्रयोग दिखाई देता है। उन्होंने अपने उपन्यासों के कथानक को रो क एवं प्रभापूर्ण बनाने के लिए मुहावरों, लोकोक्तियों तथा लोकगीतों का प्रयोग किया है। ि ससे उपन्यास में स्थानीयता का बोध होने लगता है। इन्हीं के कारण एक र ानाकार का उस परिवेश से कितना संबंध

---

227 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.37
228 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.37
229 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.24
230 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.14
231 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.32
232 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.32
233 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.32
234 आकाश ंपा, सं ीव-पृ.32
235 सूत्रधार, सं ीव-पृ.190
236 सूत्रधार, सं ीव-पृ.190
237 सूत्रधार, सं ीव-पृ.190
238 सूत्रधार, सं ीव-पृ.191
239 सूत्रधार, सं ीव-पृ.191
240 सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.14
241 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.13
242 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.266
243 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.266
244 ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.266

रहा है और वह उस लोक ीवन को कितनी गहराई तक पकड़ पाया है यह अवगत होता है।

इस विषय में सं ीव अधिकतर सफल साबित होते हैं। वह रेणु के र ानाओं में आं ालिकता का ितना प्रभाव और पकड़ दृष्टिगो ार होता है, उतना ही सं ीव के उपन्यासों में भी।

मुहावरों का प्रयोग

भाषा में ामत्कार या ओ ा लाने के लिए मुहावरों का सही प्रयोग करना पड़ता है। भाषा के सौंदर्य की वृद्धि के लिए सं ीव ने मुहावरों का प्रयोग किया है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा की स्वाभाविकता एवं आकर्षण ब. ाता है। संक्षिप्त रूप से अपने वि ारों को व्यक्त करने के लिए इसका सहारा लिया ाता है। इसके माध्यम से कही गई बात का पाठकों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। ैसे कुछ उदाहरण हम देख सकते हैं। ाले पर नमक छिड़कना[245], आँक का काँटा है[246], काठ के उल्लू[247], नाक के बाल बन गए[248], तिल का ताड़ बना दिया[249], छोटा मुँह बड़ी बात[250], ुल्लू-भर पानी में डूब मरें[251], साँप सूंघ गया[252], सेर पर सवा सेर[253], आग में घी डालना[254], घिग्गी बँध गयी[255], घोड़े बे ा कर सोये रहे[256] आदि।

लोकोक्तियों का प्रयोग

लोकोक्ति ाो 'लोक' में प्र ालित होते हैं वे स्वतंत्र होते हैं। हरदेव बाहरी का कहना है-"मुहावरे की तरह लोकोक्ति का अर्थ भी व्यापक और लाक्षणिक होता

---

[245] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.41
[246] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.55
[247] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.96
[248] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.104
[249] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.243
[250] किसनग. के अहेरी, सं ीव-पृ.121
[251] सर्कस, सं ीव-पृ.95
[252] सर्कस, सं ीव-पृ.41
[253] सर्कस, सं ीव-पृ.14
[254] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.205
[255] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.163
[256] सावधान! नी ो आग है, सं ीव-पृ.109

है। मुहावरे और लोकोक्तियों में मुख्य अंतर यह है कि मुहावरा तो एक पदबंध, वाक्यांश या वाक्यखंड होता है, परंतु लोकोक्ति एक स्वतंत्र वाक्य है। उस वाक्य में हेर-फेर करने की गुं ाइश नहीं होती।"[257] सं ीव के उपन्यासों में लोकोक्तियों का प्रयोग होता रहा। वह तो आं ालिकता का एक सुंदर रूप के सामने लाते हैं। इन लोकोक्तियों से ैसे-"बड़े-बड़े बह गये, गदहा कहे कितना पानी? [258], बिल्ली रास्ता काट न गयी[259], साँय के लहर सौंतन पर[260], ोर ोरी से ाये, हेरा-फेरी से न ाये[261], न रहेगा बाँस और न ब ेगी बाँसुरी[262], डाला ते ाब और कहता है गंगा ाल[263], उल्टा ोर कोतवाल को डाँटे[264], काम का न धाम का दूसरा हराम का[265], टके सेर भा ी टके सेर खा ा[266], गुड खाकर गुलगुले से परहे ा क्यों करे[267], गरीब की ोरू गाँव भर का भौ ाई होती है[268], ले रे तली का और फटे मसाल ी की[269], अंधों के कंधे पर बैठकर लंगड़ा रास्ता दिखाता है और दोनों पार हो ाते हैं[270], नीम-हकीम खतरे ान[271], खते खाइ गदहा मार खाए ोल्हा[272] आदि। सं ीव ने अपने उपन्यासों में भाषिक सौंदर्य का प्रयोग कर उपन्यास को आकर्षक बनाया है। लोकगीतों के माध्यम से भी इस कार्य को आगे ब ़ाया है िासका पहले से ही हमने ा ाा की है, तीसरे अध्याय के अंतर्गत।

---

[257] हिंदी शब्द-अर्थ, प्रयोग, डॉ.हरदेव बाहरी-पृ.183
[258] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.25
[259] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.35
[260] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.38
[261] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.44
[262] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.89
[263] आकाश ंपा, सं ीव-पृ.98
[264] ंगल ाहाँ शुरू होता है, सं ीव-पृ.106
[265] धार, सं ीव-पृ.173
[266] धार, सं ीव-पृ.181
[267] धार, सं ीव-पृ.39
[268] सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.18
[269] सावधान! नी े आग है, सं ीव-पृ.65
[270] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.41
[271] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.54
[272] किसनग ़ के अहेरी, सं ीव-पृ.160

4.7 उद्देश्य

र ानाकार उपन्यास द्वारा एक उद्देश्य को सामने रखता है। वह व्यक्तिगत हो सकता है और सामा िक भी। उपन्यास ि ास विषय को लेकर ालता है अंततः वह एक उद्देश्य को छोड़ देता है ाो कि प्रश्न या सवाल के रूप में हो या फिर कोई संदेश या सु ााव के रूप में। सं ाीव के उपन्यासों में भी उद्देश्य स्पष्ट रूप से सामने आता है। वे ि ास उद्देश्य से लिखते हैं उसको हमारे सामने रखते हैं ाो हमें सो ाने पर म ाबूर करता है। क्योंकि उनके उपन्यासों का परिवेश उन्हीं सामा िक मुद्दों से ाुड़ा है ाो कि आ ा भी समा ा के अंदर स्थित है। ौसे ‘कोयला खादान’ का परिवेश, ि ासमें मज़दूरों का शोषण और सामा िक ाीवन का यथार्थ ि ात्रण सामने लाते हैं। आदिवासियों का ाीवन-ि ात्रण, उन पर होनेवाले शोषण, अत्या ाार और उनके ामीन से विस्थापन आदि का मार्मिक ि ात्रण मिलता है। सामा िक स्थिति का यथार्थ ि ात्रण उनके हर उपन्यास में मिलता है। ‘सूत्रधार’ में दलितों की सामा िक स्थिति, ‘सर्कस’ में कलाकारों की और ‘किसनग ़ के अहेरी’ उपन्यास में दलितों पर होनेवाले अत्या ाार व शोषण आदि में इसका ि ात्रण मिलता है। सं ाीव एक उद्देश्यपरक लेखक हैं, वे अपने उपन्यासों में संघर्ष और ोतना की बात करते हुए उस पीड़ित, शोषित एवं दमित समा ा को ागाने का प्रयास करते हैं। उनके उपन्यासों के उद्देश्य को मार्क्सवादी दृष्टिकोण मिल ााता है, ि ासका उद्देश्य है संघर्ष करना। अंततः कहना होगा कि सं ाीव के उपन्यासों में उद्देश्यपरकता होना स्वाभाविक है। उनके उपन्यास उद्देश्य युक्त होने के कारण वे एक सफल लेखक साबित हुए हैं।

निष्कर्ष

सं ाीव के उपन्यासों के अंतर्गत शिल्पगत विविधता का सुंदर ि ात्रण हुआ है। किसी र ाना की सफलता उसके कलात्मक अभिव्यक्ति एवं पाठकों की रु ि के विकास में मानी ााती है। समकालीन कथा साहित्य इस दृष्टि से अत्यधिक स ाग मिलता है। सं ाीव कथ्य की कसावट के प्रति स ाग नज़र आते हैं। कथा को व्यापक

धरातल पर प्रस्तुत करते हैं। इनके उपन्यासों का परिवेश आं ालिक अधिक होता है। वह आदिवासी, औद्योगिक एवं कोयला खदान क्षेत्र के भीतर की र ाना को गूंथते हैं। शिल्प की दृष्टि से कथानक, पात्र-यो ाना, संवाद, वातावरण और भाषा के साथ-साथ शैली का भी सशक्त प्रयोग किया गया है। परिवेश एवं पात्रानुकूल कथावस्तु का ायन करके उसे सफलतापूर्वक आगे ले ाते हैं। उनके पात्र उस परिवेश व क्षेत्र को दर्शाने वाले होते हैं तथा संवादों में क्षेत्रीयता का प्रभाव दिखाई देता है। वातावरण की दृष्टि से भी प्रामाणिक साबित होते हैं।

शैली की दृष्टि से सं ीव के उपन्यास सफल माने ा सकते हैं। उपन्यास के अंतर्गत शैली की प्रधानता को दिखाते हुए विभिन्न शैलियों का प्रयोग भी किया है। विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, ीवनीपरक, डायरी तथा पत्रात्मक आदि शैलियों का सार्थक प्रयोग हुआ है। ि ससे उपन्यास में रो ाकता और कौतूहलता ब ़ती है। सं ीव ने संवाद धर्मिता को बखूबी निभायी है। इनके उपन्यासों में पात्रों के बी ा के संवाद छोटे, सरल एवं स्पष्ट होते हैं ि ससे उपन्यास की सुंदरता बन पड़ती है।

भाषा के विषय में उनके उपन्यास उल्लेखनीय हैं। आं ालिक परिवेश के कारण भाषा में वहाँ की बोलियाँ, क्षेत्रीय भाषाओं का अधिक प्रयोग मिलता है। उनके उपन्यासों का क्षेत्र भो ापुरी परिवेश से संपृक्त होने के कारण भो ापुरी, अवधी, मैथिली, बंगाली, बिहारी और आदिवासी बोलियाँ आदि का प्रयोग प्रमुख रूप से होता है। भाषागत शब्द तत्सम, तत्भव, ध्वन्यार्थक एवं विदेश ा के साथ-साथ नये र ित शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। शब्द शक्तियों का उपयोग हुआ है ैसे-मुहावरे, लोकोक्ति आदि। इनकी भाषा में स्थानीयता का यथार्थ बोध होता है। इनके उपन्यासों में संदेशात्मक एवं ेतनामय उद्देश्य रहता है। उनके पात्र संघर्ष करते नज़र आते हैं और उनका उद्देश्य भी वही होता है। कुल मिलाकर सं ीव उपन्यास शिल्प की दृष्टि से अत्यधिक सफल हुए हैं।

* * *

उपसंहार

उपसंहार

'लोक' की अवधारणा आ ा की नहीं है। यह प्रा ीनकाल से ालती आ रही है। 'लोक' में विभिन्न प्रकार के विषय को देखा ा सकता है, ैसे वह प्रा ीन है, आदिम संस्कृति से ुड़ा हुआ है और वह सभ्य संस्कृति से दूर अपनी अलग संस्कृति से संपृक्त है। पहले इसे आदिम सभ्यता का प्रतिरूप माना गया है। इसे उन लोगों से ोड़कर देखा गया ि न्हें अशिक्षित, असंस्कृत और आदिवासी कहा ाता था। लेकिन इसका व्यापक अर्थ तब सामने आने लगा ब इसे यूरोप में 'फोक' के समानांतर सम ने का प्रयास हुआ। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि लोक की व्यापक अवधारणा भारतीय समा ा में वेद काल से ही देखी ा सकती है। वेदों में इसे 'इहलोक' और 'परलोक' कह कर पूरे ब्रह्माण्ड से ोड़ा गया था।

वेदों में भी 'लोक' का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ ह। यह ' ान' शब्द के अर्थ में प्रयोग किया गया है। वेद और शास्त्रों में इसका व्यापक अर्थ मिलता है। 'लोक' के बिना वेद और शास्त्रों की कल्पना नहीं कर सकते। क्योंकि इसी 'लोक' से यह बने हैं। उनका आधार लोक माना ा सकता है। 'लोक' आ ा सीमित अर्थ में न होकर व्यापक अर्थ में लिया ा रहा है। लेकिन आ ा भी वह अपनी अलग पह ान को बनाये रखता है। लोक के ीवन ि त्रण को ही 'लोक ीवन' कहा ा सकता है। क्योंकि 'लोक' में ो अपना ीवन ीते हैं उनकी ीवन शैली का विवरण ही लोक ीवन है। लोक ीवन को इस अर्थ में देख सकते हैं कि- ो आधुनिकता से दूर सभ्य समा ा की संस्कृति से अलग होकर, वह अपनी अलग संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवा ा, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, अंधविश्वास एवं रू ़िवाद आदि

का अनुसरण करते हुए ीवन-यापन करते हैं। ‘लोक- ीवन’ के अंतर्गत लोक-कला, लोक-गीत, लोक-नाट्य और लोक परंपराओं का समावेश होता है। लोक ीवन का ो सीमित अर्थ आ ा तक देखा गया है आ ा वह व्यापक अर्थ में सामने आने लगा है। वह सिर्फ अपने ही सीमित दायरे में न रहकर वह समा ा के साथ ुड़ने का प्रयास कर रहा है।

लोक ीवन का संबंध अभि ाात्य वर्ग से बनता नज़र आ रहा है। वह उससे भिन्न होने के बाव ूद उसके साथ संबंध स्थापित करते नज़र आता है। क्योंकि अभि ाात्य वर्ग का कहीं-न-कहीं ‘लोक’ के साथ संबंध ुड़ा रहता है। वह ‘लोक’ के सहारे ही अपने ीवन को बनाये रखता है। आं ालिकता वह है ि ासका सीधा संबंध गाँव के उन लोगों और परिवेश से है ि ानको हम लोक की संज्ञा देखते हैं। आ ांलिकता और लोक ीवन का गहरा संबंध सामने आता है। ये दो एक दूसरे के पहलू कहलाते हैं। आं ालिकता में वहीं समानताएँ हैं ो लोक में हैं। आं ालिक ीवन और लोक ीवन का स्वरूप एक ैसे ही है। ये भी गाँव अं ाल से संबंध रखते हैं दोनों का सांस्कृतिक परिवेश और पंरपराएँ एक ैसी है। ान ााति- ीवन का एक रूप लोक- ीवन है। क्योंकि वह आदिम संस्कृति का रूप है। इन दोनों की प्रा ीनता समान लगती है। ान ाातियों का ीवन वहीं समा ा से दूर ांगलों, पहाड़ों में देखा ाा सकता है और वे अपनी अलग संस्कृति और सभ्यता के कारण सभ्य समा ा से अलग रहते हैं। वे लोक से अपना संबंध स्थापित करता है। आ ा के संदर्भ में लोक- ीवन को भिन्न स्तरों से ोड़ कर देखा ाा सकता है, ैसे आधुनिकता और भूमंडलीकरण। आधुनिकता के कारण लोक ीवन में विशेष परिवर्तन आ ुके हैं। वे अपने अस्तित्व का बनाये रखने का प्रयास भी कर रहे हैं। आधुनिकता के कारण वैज्ञानिकता का रूप सामने आ ुका है ि ासके ालते लोक ीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन होने लगा है। आधुनिक ीवन शैली से प्रभावित होकर लोक ीवन की शैली में कुछ परिवर्तन आ रहे हैं ि ासके कारण उनकी संस्कृति पर भी यह प्रभाव पड़ने लगा है। आधुनिक युग में भूमंडलीकरण का ो नारा सामने आया है, वह सारे विश्व बंधुत्व की बात करने लगा है। ि ासका मूल उद्देश्य विश्व

के सारे गाँवों को एक साथ मिलाकर वह विश्व व्यापी बनाना। ि ससे ग्लोबल विले । की परिकल्पना कर सकें। इसके कारण लोक ीवन को अपनी संस्कृति और सभ्यता को विश्व संस्कृति के साथ ोड़ने का मौका मिला है। और एक नया ीवन ीने का सहारा भी। कहना उ ित होगा कि आ । लोक- ीवन का परिवेश सीमित न होकर व्यापक रूप ले लिया है।

कथाकार सं ीव का न्म बेहद गरीब परिवार में हुआ है। उनकी परिवार की स्थिति अत्यन्त दयनीय रही है। उनका ब पन गाँव में बीता है। वे गाँव के परिवार से अ छी तरह वाकिफ रहे हैं। उनका शिक्षण कार्य कुल्टी में होने के कारण वे समा । की परिस्थितियों से अवगत हुए है। सं ीव अपनी परिवार की स्थिति के बारे में कहते हैं-"हमारा परिवार निहायत गरीबी की पेट में था।" उनका व्यक्तित्व बहुत ही गंभीर, शांत और अंतर्मुखी है। ि सके कारण वे किसी के साथ भी ल्दी परि य नहीं बना पाते हैं। वे अपने ही खयालों में खोये रहते हैं। उनकी यह सो । ही आगे लकर साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करने का अवसर प्रदान की। उनके साहित्य क्षेत्र में आने के पीछे प्रेरणा स्रोत नरेंद्रनाथ ओ ा को मानते हैं। उनकी प्रेरणा से ही उन्होंने पहली बार प्रधानमंत्री को लेख लिखा, तब से होकर आ । तक वह लेखन ारी है।

उनकी र नाओं में मुख्य रूप से उस परिवेश को देखा ा सकता है ो आ ंलिकता का बोध कराता है। वे गाँव से ुड़े होने के कारण अपनी कथावस्तु को भी वहीं से ुनते हैं। ि ससे सम । सकते हैं कि गाँव से उनका गहरा लगाव है। उनकी र नाओं का विषय समा । में रहने वाले उन तमाम लोगों से ुड़ा रहता है, ि नको पिछड़े, दलित और आदिवासी कहा ाता है। वह निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्गीय ीवन का ि त्रण भी होता है ो आं लिक परिवेश से ुड़े होते हैं। उनकी र नाओं में मार्क्सवादी वि ारधारा का ि त्रण होता है क्योंकि वे मार्क्सवाद से प्रभावित हैं इसलिए उनके पात्र संघर्ष की राह पर लते नज़र आते हैं।

उनके उपन्यासों में लोक ीवन का ि त्रण हुआ है ि समें अं ल क्षेत्र के सभी लोगों का ीवन ि त्रण का यथार्थ रूप सामने लाने का प्रयास है। वे उन तमाम लोगों

का प्रतिनिधित्व करते हैं, ो आ ा भी हाशिए पर ी रहे हैं। इसीलिए उनके उपन्यास अं ाल के लोक ीवन से संबंध स्थापित करते हैं। इनकी प्रतिभा के लिए कई सारे पुरस्कार और सम्मान भी मिले हैं। लेकिन वे आ ा भी अपने लेखन से वही संघर्षमय ीवन को बिता रहे हैं। आ ाकल हंस पत्रिका के कार्यकारी संपादक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

आ ा हिंदी साहित्य में सं ीव को लोक कथाकार के रूप में भी ाना ाता है। इनके अब तक के कथा साहित्य में लोक को माध्यम बनाकर लेखन कार्य हुआ है। उनकी र ानाओं में अं ाल और गाँव का परिवेश समाहित है, उसमें ीनेवाले लोगों का संघर्ष और यथार्थ ीवन ित्रण भी मिलता है। सं ीव के उपन्यासों के संदर्भ में देखा ाए तो यह कह सकते हैं कि उनके उपन्यासों में लोक ीवन का यथार्थ ित्रण हुआ है। अब तक के उपन्यासों में उन्होंने लोक ीवन को ही विविध संदर्भों में दिखाने का प्रयास किया है। लोक ीवन से संबंधित संस्कार, संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवा ा, आ ाार-वि ाार, लोक-गीत, लोक-परंपरा और अंधविश्वासों के साथ-साथ आधुनिक संदर्भ में उनका ित्रण हुआ है। सामा िक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, रा ानीतिक, प्रशासनिक एवं शैक्षणिक आयामों से लोक ीवन का संबंध और उनके ीवन संघर्ष को यथार्थ रूप से दिखाने का प्रयास किया गया है।

अपने उपन्यासों में उन तमाम लोगों का ित्रण करते हैं िनको समा ा से दूर रखा ाता है। िनका ीवन आ ा भी हाशिए पर है िन्हें हम दलित, आदिवासी एवं दमित, शोषित वर्ग कह सकते हैं। उनका ीवन ित्रण, उनका संघर्ष इनके उपन्यासों का मूल पक्ष है। उनका लोक ारित्र अंधविश्वासों में मुखरित होता हे िसका ीवंत उदाहरण ‘धार’ उपन्यास में देख सकते हैं। यहाँ पर अंधविश्वास की आड़ में दलित स्त्रियों का शोषण भी किया ाता है। मैना की माँ को डायन कहकर उस पर अत्या ार किया ाता है और गाँव से भी भगा देते हैं। ‘किसनग ़ के अहेरी’ उपन्यास में योतिष बाबा धार्मिक अंधविश्वासों की पनाह लेकर दलित स्त्रियों का यौन-शोषण करता है। आ ा भी गाँव, देहात में ऐसे ोंगी बाबाओं की

कमी नहीं है। ानतांत्रिक देश में आ ा दलित स्त्रियों की अस्मिता पर ोंगी बाबा की गिद्ध निगाह ामी हुई है।

इनके उपन्यासों में दलित और आदिवासियों की संस्कृति, सभ्यता, लोक गीत आदि का अत्यन्त मार्मिक और स ीव ित्रण किया गया है। किसी समा ा को अलग पह ाान उसकी संस्कृति से ही मिलती है। इसमें उस समा ा का रहन-सहन, रीति-रिवा ा, खान-पान, पर्व-त्यौहार महत्वपूर्ण होते हैं। सं ीव के उपन्यास में दलित और आदिवासी ीवन का अत्यन्त ीवंत ित्रण उन्हीं की भाषा में गीत, पर्व और ना ों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

समा ा के विभिन्न वर्गों की असमानता का मुख्य कारण आर्थिक विषमता है। ाो समा ा आर्थिक रूप से सुदृ ़ नहीं रहता, वह विकास नहीं कर पाता है। शहरी परिप्रेक्ष्य में यह विषमता स्पष्ट नज़र आती है, एक तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें दूसरी तरफ गंदी बस्ती और ोपड़पट्टी। आर्थिक तंगी का सबसे गहरा असर निम्न मध्यवर्ग और निम्न वर्ग पर पड़ता है। सं ीव के उपन्यासों के मुख्य पात्र भी प्रायः यही सब हैं। यहाँ लोक ीवन का यथार्थ रूप भी इसी धरातल पर दिखाई पड़ता है। आधुनिक युग में ीवन का मुख्य आधार अर्थ है और दलित, आदिवासी, निम्न वर्ग इन सब के पास अर्थ-संकट की स्थिति हमेशा बनी रहती है। इस स्थिति से उबरने के लिए ये ाी तोड़ मेहनत करते हैं पर मुख्य धारा और खास कर सवर्ण समा ा को यह कभी मं ाूर नहीं कि ये इससे उभरे, फलस्वरूप तरह-तरह की यातनाओं एवं फरेबों से इस समा ा को गु ारना पड़ता है। सं ीव के यहाँ ये सभी ित्र, ालि ात्र की तरह आंखों के सामने तैरते दिखाई पड़ते हैं।

रा ानीति, सत्ता और शासन को साधने का महत्वपूर्ण मार्ग और हथियार है। रा ानीति के बिना हम किसी भी रा य की कल्पना नहीं कर सकते। प्रा ाीन समय में रा ानीति अनेक सामाि ाक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों से ाुड़ी थी पर आ ा मामला कुछ अलग है। आ ा के नेता, विधायक, सांसद, मंत्री आदि लोक प्रतिनिधियों का मुख्य उद्देश्य स्वयं का विकास करना है, समा ा या देश से उनका कोई सरोकार नहीं। इसका वर्णन उपन्यासकार ने अत्यन्त सह ाता और प्रामाणिकता के साथ किया है।

रा ानीति का यह रूप ‘ ांगल ाहाँ शुरू होता है’, ‘आकाश ांपा’ एवं अन्य उपन्यासों में दिखाई पड़ता है।

आ ा का लोकतंत्र असल में लोक का तंत्र नहीं बल्कि अफसरशाही का तंत्र है। इस बात की प्रामाणिकता हमें रो ा अखबारों एवं आसपास में घटित घटनाओं से मिलता है। सं ाीव के उपन्यासों में भी यह अत्यन्त कुरूप और वीभत्स रूप में उभरकर सामने आया है। सं ाीव ने इन नपुंसक अफसर, क्लर्क, दरोगा, पुलिस के शोषक ारित्र को प्रस्तुत करते हुए लोकतंत्र पर सवाल उठाने का प्रयास किया है। ‘ ांगल ाहाँ शुरू होता है’, ‘धार’, ‘आकाश ांपा’, ‘पाँव तले की दूब’ आदि उपन्यासों में इस तरह के ारित्र दिखाई देते हैं। वे अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रशासनिक अधिकारी और पुलिस तंत्र के वास्तविक ोहरे को सामने लाते हैं। आदिवासी और दलितों पर अत्या ार कर उनका शोषण करते हुए यह प्रशासनिक व्यवस्था पूँ ाीपतियों का पक्ष लेता है। वह घूसखोरी और भ्रष्टा ार के ालते अपनी नैतिकता को भूल ााती है। अंत में इसका विरोध उन्हीं आदिवासी और दलितों द्वारा किया ाता है।

भारत ैसे देश में शिक्षा का अभाव दिखाई देता है। आ ा भी गाँव, अं ालों में शिक्षा से दूर रहते हुए ाीवन-यापन करते नज़र आते हैं। लोक- ाीवन में इस स्थिति का अधिक प्रभाव हमें दिखाई पड़ता है।

सं ाीव के उपन्यासों के पात्र अधिकतर इन अं ालों और गाँव से ाुड़े हुए होते हैं और वे शिक्षित नहीं होते हैं। वे अशिक्षित होने के कारण आधुनिक ाीवन से दूर रहना ाहते हैं। सं ाीव अपने उपन्यासों के माध्यम से शिक्षा का महत्व एवं अनिवार्यता को बताने का प्रयास करते हैं। वे उन समा ा के लोगों को प्रेरित करते हैं ाो शिक्षा से दूर रहते हैं।

सं ाीव की भाषा में वे सारी बातें हैं ाो एक सफल एवं लोक कथाकार में होनी ाहिए। उनके उपन्यासों का परिवेश आं ालिक होने के कारण वहाँ की लोक भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है। आं ालिक भाषा के साथ-साथ वहाँ की लोकोक्तियों, मुहावरों और कहावतों का भी मार्मिक प्रयोग किया गया है। इससे

अपनेपन का एहसास होने लगता है। ‘सूत्रधार’ उपन्यास में भो ापुरी का प्रयोग करके वहाँ की लोक ीवन का ीवंत ि त्रण किया है। शिल्पगत विविधता के कारण उनके उपन्यासों में स ीवता का ि त्रण मिलता है। कथानक, संवाद, पात्र-यो ना, वातावरण आदि का सं ीव ी सरल और सह ा ि त्रण करते हैं, ि ससे वहाँ के परिवेश का बोध होता है। कथानक के अनुकूल विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते हैं। शैलीगत विन्यास के कारण उपन्यास का कथानक रो ाक और कौतुहलपूर्ण बन ाता है। शैली की दृष्टि से उनके उपन्यास अधिक सफल साबित होते हैं। क्योंकि पाठक को आरंभ से अंत तक प . ने पर म ाबूर किया ाता है। लोक ीवन की ालक दिखाने के लिए वे वहाँ की भाषा के साथ-साथ उनके लोक-गीत, उनकी बोलियों का भी प्रयोग करते नज़र आते हैं।

अंततः यह कह सकते हैं कि सं ीव ि तने सामाि ाक है उतने ही लौकिक भी। वे ब ापन से गाँव के परिवेश से ुड़े रहने के कारण वहाँ की हर परिस्थिति से परिि ात हैं। इसी कारण उनके उपन्यासों का परिवेश, कथानक एवं पात्र उसी गाँव और अं ाल से ुड़े हुए नज़र आते हैं। कहीं-कहीं वे अपने कथानक में आवश्यकता से अधिक पात्रों का समाविष्ट कर देते हैं, ि ससे पाठक को सम ाने में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

उनकी भाषा में भी कहीं-कहीं लोक भाषाओं व बोलियों का अधिकांश प्रयोग होने के कारण साधारण पाठक के लिए सम ाने में समस्या उत्पन्न हो सकती है। उनके उपन्यासों के पात्र संघर्षशील होते हुए भी मानसिक रूप से दृ . नहीं दिखाई देते हैं। लेकिन एक बात कहना आवश्यक सम ाता हूँ कि वे एक ऐसे र ानाकार हैं ाो कि अपनी र ानाओं को सिर्फ एक कार्य रूप में न देखकर एक कर्तव्य के रूप में, एक मिशन के रूप में देखनेवाले एक मात्र र ानाकार हैं। इसीलिए उनके उपन्यास शोधपरक होते हैं। इसीलिए वे ीवन के यथार्थ के अधिक निकट होते हैं। उनके उपन्यासों को एक कला के रूप में न देखकर यथार्थ के धरातल पर देखा ाय तो अधिक संगत होगा।

* * *

संदर्भ ग्रंथ सू ी

संदर्भ ग्रंथ सू ी

आधार ग्रंथ सू ी

क्र.सं	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक/संस्करण
1	सं ीव	किसनग . के अहेरी	मीनाक्षी पुस्तक मंदिर, पी-10, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, प्र.सं.1981
2	सं ीव	सर्कस	अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., दिल्ली, प्र.सं.1984
3	सं ीव	सावधान! नी े आग है	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, प्र.सं.1986
4	सं ीव	धार	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, प्र.सं.1990
5	सं ीव	पाँव तले की दूब	हंस (पत्रिका), अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., अंसारी रोड, दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, अगस्त से सितंबर 1990
6	सं ीव	ंगल ाहाँ शुरू होता है	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., ी-17, ागतपुरी, दिल्ली-110051 प्र.सं. 2000
7	सं ीव	सूत्रधार	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, प्र.सं.2004

8	सं ीव	आकाश ंपा	रेमाधव पब्लिकेशन्स प्रा.लि., सी-22, तृतीय तल, आर.डी.सी. रा ानगर, गा ायाबाद-201002, उ.प्र., प्र.सं.2002

सहायक ग्रंथ सू ी

क्र.सं	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक/संस्करण
1	अभर कुमार दूबे	भारत का भूमंडलीकरण	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2003
2	अरुण ओले	रा ानीति मेरी प्रेयसी	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्र.सं.1983
3	आनंदमोहन उपाध्याय	फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोक तात्विक अध्ययन	अमर प्रकाशन, पं.केदारनाथ ौधरी भवन, सदर बा ार, मथुरा-2005
4	इकबाल नारायण	भारतीय रा ानीतिक वि ारक	ग्रंथ विकास, सी-37, रा ापार्क, बर्फकाना, ायपुर
5	ए.अ युतन	लोक नाट्य एवं संस्कृति	शब्द सांगर प्रकाशन, म.नं.12, गली नं.2, मैन 20 फुटा रोड, महालक्ष्मी एन्क्लेव्स, कराबल नगर, दिल्ली-94, प्र.सं.2004
6	एन.के.महला	वर्ग वि ारधारा एवं समा ा	रावत पब्लिकेशन्स, ावाहरनगर, ायपुर-302004, प्र.सं.1994
7	कुमुद शर्मा	भूमंडलीकरण और मीड़िया	ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्र.सं.2003
8	कुंदनलाल उप्रेती	लोक साहित्य के प्रतिमान	भारत प्रकाशन मंदिर, सुभाष रोड़, अलीग ़-202001, तृ.सं.2000
9	कृष्णदेव उपाध्याय	लोक साहित्य की भूमिका	साहित्य भवन प्रा.लि., 93 ीरो रोड़, इलाहाबाद-210003, प्र.सं.2004
10	कृष्णदेव उपाध्याय	लोक संस्कृति की रूपरेखा	लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1, प्र.सं.1988
11	गिरीष काशिद	कथाकार सं ीव	शिल्पायन, 10295, लेन नं.1, वैस्ट गोरखपुर, शाहदरा, दिल्ली-110032, सं.2008

12	ावाहरलाल हण्डु, स्वर्णलता अग्रवाल	लोक साहित्य स्वरूप एवं सर्वेक्षण	भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-570006, सं.1904
13	ो.एस.मेकें ाी	समा ा दर्शन की रूपरेखा	रा ाकमल प्रकाशन प्रा.लि, 1-बी, नेता ाी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, सं.2001
14	दिनेश्वर प्रसाद	लोक साहित्य और लोक संस्कृति	ाय भारती प्रकाशन, 207-बी, मट्टीगं ा माया प्रेस रोड, इलाहाबाद-211003, सं.2007
15	नगीना ौन	आं ालिकता और हिंदी उपन्यास	अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, प्र.सं.1976
16	नवीन नारायण अग्रवाल	नागरिक शास्त्र के मूल सिद्धांत	रं ाीत प्रकाशन, प्र.सं.1967
17	निर्मल वर्मा	कला का ाोख़िम	रा ाकमल प्रकाशन प्रा.लि, 1-बी, नेता ाी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, प्र.सं.1981
18	पीयूष दईया	लोक	भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर (रा ा) 313001, प्र.सं.2002
19	प्रताप नारायण टंडन	हिंदी उपन्यास कला	हिंदी समिति, सू ाना विभाग, लखनऊ, (उ.प्र.) सं.1965
20	प्रताप नारायण टंडन	हिंदी उपन्यासों में कथाशिल्प का विकास	हिंदी साहित्य भंडार-54, ाौपाटिया रोड ाौड, लखनऊ-3, सं.1964
21	ब ान सिंह	आधुनिक हिंदी आलो ाना के बी ा शब्द	वाणी प्रकाशन, 21-2, दरियागं ा, नई दिल्ली-002
23	बापूराव देसाई	लोक साहित्य	विनय प्रकाशन, 70, पशुपतिनगर, नौबस्ता, कानपुर-208021, प्र.सं.1996
24	बालकृष्ण अकिं ान	रहीम का नीतिकाव्य	अलंकार प्रकाशन, 666, ाील, दिल्ली-51, सं.1972
25	भगवान शरण उपाध्याय	भारत की संस्कृति की कहानी	रा ापाल एंड संस, कश्मीर गेट, दिल्ली-110006, सं.2007
26	भगीरथ मिश्र	काव्य शास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, ाौक, वाराणसी-221 001,एकादश सं.

27	महेंद्र भटनागर	समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेम ंद	ज्ञानभारती प्रकाशन, दिल्ली, सं.1982
28	रामनारायण उपाध्याय	लोक साहित्य समग्र	हिंदी प्र ारक पब्लिकेशन्स प्रा.लि. 21/30, पिशा ामो ान, वाराणसी, प्र.सं.1997
29	लक्ष्मीनारायण लाल	हिंदी कहानियों की शिल्प विधा का विकास	साहित्य भवन प्रकाशन प्रा.लि, इलाहाबाद-3, ा.सं.1974
30	वी.एन.सिंह	भारतीय सामा ाक िंतन	विवेक प्रकाशन, दिल्ली, सप्तम सं., 1986
31	श्याम परमार	भारतीय लोक साहित्य	रा ाकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बंबई, प्र.सं.1954
32	श्यामसुंदर दास	साहित्यालो ान	इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन्स), प्रा.लि., प्रयाग, 14 वी, आवृत्ति सं.2009
33	श्यामा ारण दूबे	भारतीय समा ा	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फे ा-II, वसंत कुं ा, नई दिल्ली-110070, प्र.सं.2001
34	शहा ाहान मणेर	सामा ाक यथार्थ और कथाकार सं ाीव	श्रृति पब्लिकेशन्स, 50-क-6, योतिनगर, ायपुर-302005, प्र.सं.2009
35	सं ाीव	सं ाीव की कथा यात्रा (पहला पड़ाव)	वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, सं.2008
36	सत्येंद्र	लोक साहित्य विज्ञान	शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, प्रधान कार्यालय, अस्पताल रोड, आगरा-3, द्वि.सं.1971
37	सत्यनारायण उपाध्याय	आं ालिक उपन्यास और रेणु	सं ाय प्रकाशन, बुलानाला, वाराणसी, सं.1980
38	सत्यप्रकाश प ाौली	शिक्षा के आयाम	आदित्य पब्लिशर्स, अ ाुन पब्लिशिंग हाऊस, 483/24, प्रहलाद गल्ली, अंसारी रोड, दरियागं ा, नई दिल्ली-110002, प्र.सं.2004
39	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	ार ो और ारखे	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.1986

40	सूर्यनारायण रणसूभे	डॉ.बाबा साहेब अंबेडकर	राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी मार्ग, दरियागं ा, नई दिल्ली, प्र.सं.1992
41	हरदेव बाहरी	हिंदी : शब्द, अर्थ-प्रयोग	अभिव्यक्ति प्रकाशन, बी-31, गोविंदपुर कॉलोनी, इलाहाबाद, 211004
42	हरीशकुमार सेठी	भारतीय लोक ीवन के आख्याताःअब्दुल रहीम खानखाना	हस्ताक्षर प्रकाशन, 7/1, ब्लाक ए, प्रेम विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094, प्र.सं.2002
43	हेराल्ड ो लास्की (अनुवादकःवीरेंद्र पाल सिंह)	रा ानीति का व्याकरण	ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा.लि., बी-7, सुभाष ौक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092, प्र.सं. हिंदी 2005
44	त्रिभुवन सिंह	हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	हिंदी प्र ारक पुस्तकालय, वाराणसी, ातुर्थ संस्करण, 2022 वि.
45	ज्ञान ंद गुप्त	आं ालिक उपन्यास अनुभव और दृष्टि	राधा पब्लिकेशन्स, 4378/4-बी, गली मुरारीलाल, अंसारी रोड, दरियागं ा, नई दिल्ली-11002, सं.1995
46	श्रीराम शर्मा	लोक साहित्यःसिद्धांत और प्रयोग	विनोद पुस्तक मंदिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2, प्र.सं.1993

पत्र-पत्रिकाएँ

क्र.सं	संपादक	पत्रिका	अंक
1	अखिलेश	तद्भव	अप्रैल, 2009
2	अपूर्व ोशी	पाखी	सितंबर, 2009
3	अरुण कमल	आलो ना	ानवरी-मा ी, 2009
4	के.आर.शाह	आदिवासी सत्ता	ानवरी 2010
5	ायप्रकाश शर्मा	हरिगंध	मई- ून, 1998
6	परमानंद श्रीवास्तव	आलो ना	ानवरी-मा ी, 2004
7	पीयूष दईया	रंगायन	ुलाई-सितंबर 1999
8	प्रयाग शुक्ल	रंग प्रसंग	ानवरी- ून, 2003
9	बि ोंद्र त्रिपाठी	समकालीन भारतीय साहित्य	मई- ून, 2003

10	रा ेंद्र यादव	हंस	ून-1997, मई-2001, नवंबर 2003, मा ि 2004, अगस्त 2005
11	रामकुमार कृषक	अलाव	ुलाई-अगस्त 2010
12	वि ाय बहादुर सिंह	वागर्थ	अगस्त 2004
13	शैलेंद्र भटनागर	कथाक्रम	अप्रैल- ून 2004
14	सीमा ओ ाा	आ ाकल	ून, 2004
15	हरि नारायण	कथादेश	सितंबर 2001, अक्तूबर 2004
16	हरि भटनागर	साक्षात्कार	ुलाई 2003
17	त्रिलोकीनाथ ातुर्वेदी	साहित्य अमृत	मा ि, 2009
18	ज्ञानरं ान	पहल	फरवरी, 2000

कोश

1. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्से ा, ि ाल्द-5
2. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका, ि ाल्द-9
3. कालिका प्रसाद, रा ावल्लभ सहाय, मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, बृहद हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी-1, प्र.सं.2009
4. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश (भाग-1), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी-1, 2015 वि.सं.
5. नरेंद्रनाथ वासु, हिंदी विश्व कोश, बी.आर.पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली-52, सं.1919
6. राहुल सांकृत्यायन, हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास (षोडश भाग), नालंदा विशाल शब्द सागर, नागरी प्र ाारिणी सभा, वाराणसी, संवत् 2020 वि., आदिश कुमार ैन, आदिश बुक डिपो, दिल्ली-7, सं.1978
7. श्रीवास्तव एवं ातुर्वेदी, हिंदी राष्ट्रभाषा कोश

* * *